विषय सूची

पृष्ठ

प्रथम खण्ड—हिन्दुओं का

द्वितीय खण्ड—मुसल

चतुर्थ खण्ड—ब्रिटिश साम्राज्य।

मानचित्र।

(४) गुप्त साम्राज्य
(५) सातवीं शताब्दीका भारत—हर्ष साम्राज्य
(६) महमूद गज़नवीकी चढ़ाइयाँ
(७) ग़ोरीकी चढ़ाइयां
(८) १४०० ई० का भारत वर्ष—मैसूरकी चढ़ाई
(९) मुग़ल साम्राज्य (१५२६–१६०० ई०)
(१०) „ „ (अकबरके अधीन)
(११) „ „ (औरंगज़ेबके अधीन)
(१२) ब्रिटिश भारत (कार्नवालिसके अधीन)
(१३) „ „ (वेलेसली „ „)
(१४) „ „ (हेस्टिंग्स „ „)
(१५) „ „ (केनिंग „ „)

शुद्धि–पत्र ।

पृष्ठ—	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१६	१३	तर्मिलाई वा त्रिम्मिला	तर्भिलाई वा त्रिम्मिली
२८	३	प्रदेश	प्रदेशके
६१	पैरा	मर्म	धर्म
६६	पैरा	अश्वघाष	अश्वघोष
६८	७	विलासी	विलासी पुरुष तथा
१६५	२४	सदर-रुस-सुदूर	सुदर-रुस-सुदूर
३५६	१४	१७६१ ई०	१७९२ ई०
३६६	पैरा	पजाव	पञ्जाब

15/D

History of India
— Manmath Rao.

(*Frontis piece.*)

Buddha Deva

THE

High School

HISTORY OF INDIA.

प्रथम खण्ड।

हिन्दुओंका प्रभाव।

(१) देशकी बनावटका उसके इतिहासपर प्रभाव।

हमारी जन्मभूमि—हमारा देश कैसा विचित्र देश है। दिनके समय तो जलता हुआ सूर्य्य अग्निवर्षा करता है, और रातके समय चन्द्रमाकी शीतल और मनहरन चाँदनी चारों ओर प्रकाश और शान्ति फैलाती रहती है। कभी गरम हवाके मारे जान तड़पती है तो कभी काले बादल आकर, लगातार पानी बरसाकर उसीको ठण्डा करते हैं। कहीं ऊँचे से ऊँचे पहाड़ हथियारबन्द सिपाहियों की तरह हमारी रखवाली करते हैं, और कहीं लम्बा चौड़ा चौरस मैदान किसानों तथा चढ़ाई करने वालोंका जी लुभाता है। कहीं रेगिस्तान है—जहाँ आगकी चिनगारियोंकी तरह बालू उड़ती रहती है, और कहीं बड़े बड़े पेड़ चारों ओर अपनी हजारों शाखायें पसारकर राहियोंको आश्रय देते हैं। कहीं सघन वनों में अनेक प्रकारके भयंकर जन्तु देख पड़ते हैं, और कहीं

सभ्यताके गुरु आर्योंकी बस्ती है, तात्पर्य यह कि हमारी
जन्मभूमि कोमलता और कठोरताके विचित्र मिश्रणसे बनी हुई।

भारत के नाम—हमारी इस पवित्र जन्मभूमिका
भारतवर्ष है। ईरानके निवासियोंने पहले पहल इसका नाम 'हि
रक्खा। मुसलमानोंने इसे 'हिन्दोस्तान' नाम दिया तथा यूनानि
इसे "Indci" कहकर पुकारा। प्राचीन कथा है कि दुष्यन्तके
भरतके नामसे इस देशका नाम भारतवर्ष पड़ा। ईरान के
लोग 'स' को 'ह' कहते हैं। उन्होंने प्रथमतः सिन्धु नदी
'हेंदु' नाम दिया। पीछेसे सारे देशका नाम हिन्द पड़ गया
मुसलमान हिन्दोस्तान कहने लगे। उस समय हिन्दोस्तान कहने
उत्तरीय-भारत समझा जाता था। ईरानियोंके पश्चात् यूनानी आ
इन्होंने इस देशका नाम Indoi रक्खा, यह शब्द हिन्द शब्द
अपभ्रंश है। आज कल सभ्य संसार इसे India कहता है।

भूगोलका इतिहाससे सम्बन्ध—प्रत्येक देशका इतिहा
उस देशके भूगोलपर निर्भर है। देशकी स्थिति और बनावट
अनुसार उस देशके निवासियोंका रहन-सहन होता है। यदि देश
की जल-वायु अनुकूल हुई, भूमि उपजाऊ हुई लोगोंको भरपे
खाना मिल सका, तो वह देश सभ्यतामें उन देशोंकी अपेक्षा
जहाँकी जलवायु अच्छी नहीं है या पृथ्वी ऊसर है, अवश्य ब
बढ़ी होगी। ऊँचे पहाड़, बड़े बड़े जंगल तथा समुद्र लोगोंके त
बड़ी बड़ी सेनाओंके आने जानेमें बहुत बाधा उपस्थित करते है
इसी प्रकारसे प्रत्येक देशका इतिहास बनता है। इतिहाससे म
ष्योंके जीवनका सम्बन्ध रहता है। अतः जैसे किसी मनुष्य
चरित्र उसकी निकटस्थ अवस्थाके द्वारा गठित होता है, वैसे
प्रत्येक देशका इतिहास उसकी बनावट तथा उसकी इर्द-गिर्द
दशाओं पर निर्भर है। अस्तु, इस देशके इतिहास-वर्णन करनेसे
इसके भूगोलके विषयमें कुछ मोटी मोटी बातें तुम्हें बतला
हैं, जिनका प्रभाव इस देशके इतिहासपर पड़ा है।

पृथ्वीमें भारतवर्षका स्थान—नकशा देखनेसे तुम्हें मालूम होजायगा कि भारतवर्ष एशिया महाद्वीपके दक्षिणमें तीन बड़े बड़े प्रायद्वोपोंमेंसे बीचका प्रायद्वीप है। इसके कारण प्राचीन कालमें तथा मध्य युगमें हमारे देशके साथ प्राचीन सभ्यताका केन्द्र मेसोपोटेमियां, सीरिया, मिश्र आदि देशोंका, तथा मध्य युगमें अरब, ईरान, मध्यएशिया आदि देशोंका बड़ा निकट सम्बन्ध था। इस सम्बन्धका प्रभाव हमारे देशके इतिहास पर कुछ कम नहीं पड़ा है।

भारतवर्षकी चौहद्दी—नकशा देखनेसे और भी पता चलेगा कि हमारे देशकी शकल त्रिभुज ऐसी है। उसके उत्तरमें तिब्बत और तुर्किस्तान है। पूर्वमें ब्रह्मा, श्याम आदि देश हैं। दक्षिणमें भारतीय महासागरकी दो शाखायें अरब सागर तथा बंगालकी खाड़ीके नामसे बह रही हैं। और पश्चिममें अफगानिस्तान, बिलोचिस्तान आदि देश हैं।

परन्तु नकशेकी ओर ध्यान लगाके देखनेसे तुम्हें विश्वास हो जायगा कि इन देशोंके साथ हमारे देशका बहुधा सीधा सम्बन्ध कभी नहीं था। उत्तरकी ओर दुनियांका सबसे ऊंचा पहाड़ हिमालय, हमारे देशको तिब्बत और चीनसे अलग कर रहा है। फिर हिमालयसे ही दो बड़ी बड़ी शाखाय बांह के समान फैलकर पूर्व और पश्चिमकी ओर हमारी स्वतन्त्रताकी रक्षा करती हैं; पश्चिममें सफेद कोह, सुलेमान और खिरथर पहाड़ हमारे देशको अफगानिस्तान और बिलोचिस्तानसे जुदा कर देते हैं; पुनः पूरबमें नागा, पटकोय, खासिया, जयन्तिया, गारो आदि पहाड़ियां इण्डोचीन ब्रह्मा आदि देशोंको हमारे देशसे पृथक् कर देती हैं। एशियाके भिन्न भिन्न प्रान्तोंसे अलग कर दिये जाने ही के कारण भौगोलिक दृष्टिसे भारतवर्षको एक पृथक् महादेश कहते हैं।

भारतकी स्थल-सीमा—अलग कर दिये जाने पर भी यह नहीं समझना चाहिये कि हमारे देशके साथ आस पासके देशोंका

कोई भी सम्बन्ध नहीं रहा है। उत्तर, पूर्व और पश्चिमकी पहाड़ी
ज़मीन किसी किसी स्थानमें नदियों तथा बरफ़की रगड़से घिसकर
नीची हो गई हैं। इन्हीं को दर्रा कहते हैं। इन दर्रोंमेंसे होकर
बहुधा लोग आया करते हैं। यात्रा सुखमय न होने पर भी पड़ोसी
देशोंके साथ हमारे देशका सम्बन्ध है। साथही साथ जहाज़ोंके
लिये समुद्रीय मार्ग सदा खुले रहते हैं। पश्चिममें बिलोचिस्तानके
दक्षिण, समुद्रके किनारे किनारे एक रास्ता है, जिसका नाम
मकरान तट है। प्राचीन समयमें ईरानके लोग इसी रास्तेसे आया
जाया करते थे। बिलोचिस्तानमें बोलन नामका एक दर्रा है, जो
कि अफगानिस्तानसे सिन्धु नदीकी घाटीमें आनेका एक मा
मार्ग है। इसके अतिरिक्त पश्चिमोत्तरके कोनेमें और भी कई द
हैं—यथा खैबर, तोची, गोमल आदि, जोकि अफगानिस्तान औ
पश्चिमोत्तरके देशोंको मिलाते हैं। यहाँ यह कह देना आवश्य
है कि कुल मार्ग बड़े तंग हैं, तथा आस पासके देशभी रूखे औ
ऊसर हैं। इसीलिये इन मार्गोंसे आना जाना बड़ा कठिन है
फिर भी इन कुल पहाड़ोंके नीचा होनेके कारण (उँचाई ८००
फीटके लगभग) प्राचीन काल में खैबर दर्रे ही से एकके बा
दूसरी जातियाँ हिन्दोस्तानमें आईं। आज तक लोग बहुधा खै
और गोमल दर्रेमेंसे होकर आते जाते हैं।

उत्तरकी दशा इनसे भिन्न और स्वतन्त्र है। तुमको बतला
जा चुका है कि उधर दुनियाँका सबसे ऊँचा पहाड़ हिमालय
जो प्राय: १६००० फीट ऊँचा है। पुनः हिमालय पहाड़की ती
श्रेणियाँ प्रायः २०० मीलकी चौड़ाईमें हैं। इसके उत्तरमें तिब्बत
पठार, और दक्षिणमें जंगलसे भरी हुई तराई है। अतएव यह आने
लिये सुगम मार्ग नहीं है। फिर भी काश्मीरमें लेह, शिमला, नैनी
ताल और दार्जिलिंग होकर एक एक दर्रा तिब्बत तक जाता है
ये कुल स्थान इन दर्रोंकी रखवाली करते हैं। ठीक पूर्वोत्त
कोनेमें ब्रह्मपुत्र नदीके किनारे किनारे एक सड़क तिब्बतके स

(*Chap. 1.*)

Physical Map of India.

पूर्वीय बंगालको मिलाती है। मालूम होता है कि प्राचीन कालमें इसी रास्तेसे होकर मंगोल जातिके कुछ लोग भारतवर्षमें आये थे।

बिलकुल पूर्वीय भाग भी आने जानेके लिये उपयोगी नहीं है। पश्चिमकी तरह यह अंश भी पहाड़ोंसे भरा हुआ है। परन्तु अन्तर इतनाही है कि पानी न बरसनेके कारण पश्चिमके देश एक दम उजाड़से प्रतीत होते हैं, और अधिक पानी बरसनेके कारण पूरबके पहाड़ घने जंगलोंसे ढके हुये हैं। इसलिये इधर थोड़ी बहुत बस्ती होने पर भी आने जानेके लिये कोई सुभीता नहीं है। प्राचीन कालमेंभी ब्रह्मा, श्याम आदि देशोंसे हमारे देशका स्थलपर से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं था। ब्रह्मा आजकल भारत साम्राज्य के अन्तर्गत है, परन्तु प्राचीन कालमें यह देश भारतसे पृथक था।

भारतकी जल-सीमा—इस प्रकारसे भारतकी स्थल-सीमा सुरक्षित रहने पर भी जल-मार्गसे आवागमन करनेमें अति प्राचीन कालही से कोई रुकावट नहीं थी। प्राचीन कालमें पश्चिम में अफ्रिका, मिश्र, रोम, ईरान, मेसोपोटेमिया आदि देशोंसे और पूर्वमें इण्डो-चीन, भारतीय द्वीप समूह, चीन, आदि देशोंसे हमारे देशका सम्बन्ध रह चुका है। आज कलकी तो बातही नहीं।

समुद्री किनारा—नकशे की ओर देखने से दो बातें मनमें उठती हैं। एक यह कि भारतीय समुद्र-तट-भूमि में खाड़ी आदि बहुत ही कम हैं, और दूसरी यह कि तट-भूमिके आसपास द्वीप भी बहुत कम हैं। इस लिये यहाँ अच्छे बन्दरगाह बहुत नहीं हैं, तथा इस देशके निवासी भी समुद्री नहीं बनने पाये। टूटा फूटा किनारा होनेसे, तथा तट-भूमिके निकट द्वीप रहनेसे लोगोंके मनका झुकाव अधिक तर समुद्रकी ओर होता है। नदियोंके मुहाने भी बालूसे भरे रहते हैं तथा कम गहरे हैं। समुद्रका किनारा छिछला और बिलकुल चौरस होनेके कारण जो जो खाड़ियाँ हैं भी, वे सब व्यर्थ हैं। इस लिये हमारे देशके इतिहासमें समुद्री शक्तिका

(

उदय बहुतकी कम हुआ है, तभी
समुद्री-शक्ति राज कर रही है।

पश्चिममें मकरान तटसे बम्बई तकक
फिर समुद्रका किनारा छिछला और चौरस
और खम्बातकी खाड़ियोंसे कोई काम नहीं
इस हिस्सेमें कोई बड़ा प्राकृतिक बन्दरगाह न
बन्दरगाह केवल नदियोंके मुहानेपर हैं, जहाँ कि बड़े
आकर टिक सकें। सिन्धु नदीके मुहानेके निकट करांचीक
गाह बना हुआ है; तथा आधुनिक बम्बईके आसपास बहुत
एक न एक बन्दरगाह था। प्राचीन कालमें भृगुकच्छ (
तथा सोपार प्रसिद्ध बन्दरगाह थे। मध्ययुगमें सूरत बन्दर
और आज कल बम्बई है। बम्बईके दक्षिणकी तट-भूमि
छाई हुई है, इसलिये तङ्ग है। इस प्रकार महादेशसे बि
अलग हो जानेके कारण इस भागमें कोई बड़ा बन्दरगाह स्था
रूपसे नहीं बन सका। फिरभी इधर कई एक छोटे छोटे बन्दरगा
हैं, जहाँसे आस पासके स्थानोंका व्यापार होता है।

बिलकुल दक्षिणमें लंकाद्वीप और दक्षिणी भारतके बीच
मनारकी खाड़ी और पाक जल-डमरूमध्य है, जोकि बंगाल
खाड़ीको अरब सागरसे मिलाता है। परन्तु यह रास्ता चट्टानोंसे भ
हुआ है, अतः बड़े बड़े जहाज़ लंका द्वीपसे घूमकर आते हैं। पूर्व
की तट-भूमि पश्चिमसे चौड़ाईमें अधिक है। इसका कारण यह
कि पहाड़ समुद्रके किनारेसे कुछ दूर पर है। फिर अनेक स्थानों
पहाड़ोंके कट जानेसे देशके भीतरी अंशसे इसका सीधा सम्बन्ध
है। तथा नदियोंके आस पास सिंचाईका अच्छा प्रबन्ध होने
कारण उन स्थानोंकी अबादी भी घनी है। अतः इस भागमें छो
छोटे बहुतसे बन्दरगाह हैं। कावेरी नदीके मुहाने पर मोतीक
शिकार होनेके कारण इस अंशमें प्राचीन समयसे कईएक ब
बड़े व्यापारके स्थान बन गये हैं। इनमें कावेरी-पत्तनम् और मुज़ि

पूर्वीय बंगालको मिलाती है। ८) प्रधान थे।
इसो रास्तेसे होकर मंगो गांवके मध्य भागके पीछेकी तट-
आये थे। दलदल और घने वनोंसे भरे रहनेके
बिलकुल पूर्वीय भा किनारे कोई बन्दरगाह नहीं बन सका।
पश्चिमकी तरह यह भी किनारेसे भी अधिक चट्टानोंसे घिरा
इतनाही है कि प कलकत्ता तथा रंगूनके बन्दरगाह नदीके भीतर
उजाड़से प्रतीत
पहाड़ घने के प्राकृतिक विभाग—बनावटके अनुसार हमारा
बस्ती हो चार भागोंमें विभक्त हो सकता है:—
प्राचीन व हिमालय और उसकी तराई।
से कोई उत्तरीय भारतका मैदान।
के अन्त) मध्य भारत तथा दक्षिणके पठार, और
४) तट-भूमि।
था आगे चलकर देखोगे कि बनावटका प्रभाव उस स्थान के
गा हास पर भी पड़ा है।

(१) हिमालय और उसकी तराई—तुमसे पहले ही कहा
चुका है कि क्रमसे हिमालय पहाड़की तीन श्रेणियां प्रायः २००मील
लम्बी हुई हैं। पुनः लम्बाईमें ये पहाड़ लगभग १५०० मीलके, तथा
भ ाईमें लगभग १६००० फीटके हैं। ये पर्वत श्रेणियां अपनी
पृटाई, चौड़ाई तथा उँचाईके कारण हमारे देशको अनेक प्रकार के
यहा पहुंचाती हैं। पहिली बात तो यह है कि इस पहाड़ की बना-
नो तथा ऊँचाईके सबबसे उत्तरकी ओरकी चीनी, तिब्बती आदि
म्बर्ई भी जाति इस देशपर चढ़ाई नहीं कर सकती। फिर पानी
होने ानेवाले बादल, जो कि हिन्द महासागरसे आते हैं, इतने
छो पहाड़को पार नहीं कर सकते। जिसका परिणाम यह होता
तीव कि ये सब बादल जितना पानी लाते हैं, वे सब ठण्ड पाकर
क वारेही देशमें बरस जाते हैं। इसीलिये उत्तरीय भारतमें कितनीही
मुद्दी बड़ी नदियां बहती हैं, जिनसे देशका यह भाग अधिक

उदय बहुतकी कम हुआ है, तभी तो आज हमारे देश पर एक्रेंस समुद्री-शक्ति राज कर रही है।

पश्चिममें मकरान तटसे बम्बई तक की भूमि बड़ी ऊसर है भूमि फिर समुद्रका किनारा छिछला और चौरस होनेके कारण कच्छ और खम्बातकी खाड़ियोंसे कोई काम नहीं निकलता। इसलिये इस हिस्सेमें कोई बड़ा प्राकृतिक बन्दरगाह नहीं हैं। बड़े बड़े बन्दरगाह केवल नदियोंके मुहानेपर हैं, जहाँ कि बड़े बड़े जहाज आकर टिक सकें। सिन्धु नदीके मुहानेके निकट करांची का बन्दरगाह बना हुआ है; तथा आधुनिक बम्बईके आसपास बहुत कालतक एक न एक बन्दरगाह था। प्राचीन कालमें भृगुकच्छ (भड़ोच) तथा सोपार प्रसिद्ध बन्दरगाह थे। मध्ययुगमें सूरत बन्दरगाह था और आज कल बम्बई है। बम्बईके दक्षिणकी तट-भूमि पहाड़ों से छाई हुई है, इसलिये तङ्ग है। इस प्रकार महादेशसे बिल्कुल अलग हो जानेके कारण इस भागमें कोई बड़ा बन्दरगाह स्थायी रूपसे नहीं बन सका। फिरभी इधर कई एक छोटे छोटे बन्दरगाह हैं, जहाँसे आस पासके स्थानोंका व्यापार होता है।

बिलकुल दक्षिणमें लंकाद्वीप और दक्षिणी भारतके बीच मनारकी खाड़ी और पाक जल-डमरूमध्य है, जोकि बंगाल की खाड़ीको अरब सागरसे मिलाता है। परन्तु यह रास्ता चट्टानोंसे भरा हुआ है, अतः बड़े बड़े जहाज़ लंका द्वीपसे घूमकर आते हैं। पूर्व की तट-भूमि पश्चिमसे चौड़ाईमें अधिक है। इसका कारण यह है कि पहाड़ समुद्रके किनारेसे कुछ दूर पर है। फिर अनेक स्थानों पर पहाड़ोंके कट जानेसे देशके भीतरी अंशसे इसका सीधा सम्बन्ध है। तथा नदियोंके आस पास सिंचाईका अच्छा प्रबन्ध होनेके कारण उन स्थानोंकी अबादी भी घनी है। अतः इस भागमें छोटे छोटे बहुतसे बन्दरगाह हैं। कावेरी नदीके मुहाने पर मोती का शिकार होनेके कारण इस अंशमें प्राचीन समयसे कईएक बड़े बड़े व्यापारके स्थान बन गये हैं। इनमें कावेरी पत्तनम् और मुज़िरिस

रैंस (आजकल Cranganore) प्रधान थे।

उत्तरमें महानदी और चटगांवके मध्य भागके पीछेकी तट-भूमि बड़ी उपजाऊ है, परन्तु दलदल और घने वनोंसे भरे रहनेके कारण ठीक समुद्रके किनारे कोई बन्दरगाह नहीं बन सका। ब्रह्माका किनारा पश्चिमी किनारेसे भी अधिक चट्टानोंसे घिरा हुआ है। अतः कलकत्ता तथा रंगूनके बन्दरगाह नदीके भीतर बनाने पड़े।

भारतके प्राकृतिक विभाग—बनावटके अनुसार हमारा देश मुख्यतः चार भागोंमें विभक्त हो सकता है:—

(१) हिमालय और उसकी तराई।
(२) उत्तरीय भारतका मैदान।
(३) मध्य भारत तथा दक्षिणके पठार, और
(४) तट-भूमि।

आगे चलकर देखोगे कि बनावटका प्रभाव उस स्थान के इतिहास पर भी पड़ा है।

(१) हिमालय और उसकी तराई—तुमसे पहले ही कहा गया है कि क्रमसे हिमालय पहाड़की तीन श्रेणियां प्रायः २००मील फैली हुई हैं। पुनः लम्बाईमें ये पहाड़ लगभग १५०० मीलके, तथा ऊंचाईमें लगभग १६००० फीटके हैं। ये पर्वत श्रेणियां अपनी उठाई, चौड़ाई तथा उँचाईके कारण हमारे देशको अनेक प्रकार के लाभ पहुंचाती हैं। पहिली बात तो यह है कि इस पहाड़ की बनावट तथा ऊँचाईके सबबसे उत्तरकी ओरकी चीनी, तिब्बती आदि लड़ाई भी जाति इस देशपर चढ़ाई नहीं कर सकती। फिर पानी बरसानेवाले बादल, जो कि हिन्द महासागरसे आते हैं, इतने ऊंचे पहाड़को पार नहीं कर सकते। जिसका परिणाम यह होता है कि ये सब बादल जितना पानी लाते हैं, वे सब ठण्ड पाकर हमारेही देशमें बरस जाते हैं। इसीलिये उत्तरीय भारतमें कितनीही छोटी बड़ी नदियां बहती हैं, जिनसे देशका यह भाग अधिक

उपजाऊ है। साथही हिमालय पहाड़ एशियाके उत्तरकी ठं
हवाको हमारे देशमें आनेसे रोकता है। यदि हिमालय इतना ऊँ
न होता तथा उत्तरकी ओर न रहता तो सम्भव है कि हम लोग
चीनी लोगोंके साथ मिल जाते और हमारा देश गोवी जैसा म
भूमि बन जाता। तब हमारी ऐसी सभ्यता और स्वतन्त्रता क
रह जाती ?

हिमालयके ठीक दक्षिणमें तराई नामक जंगली प्रदेश है, जो
काश्मीरके पूर्वसे लेकर ब्रह्मपुत्र नदीके मोड़तक फैला हुआ
चौड़ाईमें यह भूमि लगभग पचास मील के है। अधिक पानी ब
सने तथा पहाड़परके बर्फ़ गलनेके कारण तराईकी समस्त भू
दलदल, छोटी छोटी नदियों तथा जंगलोंसे भरी हुई है। अधि
तरीके कारण यहाँ पर मैलेरिया ज्वरका प्रकोप रहा करता है। अ
यहाँकी आबादी बहुत कम है। नैपाल, भूटान आदि रियासतें त
शिमला, नैनीताल, मसूरी आदि स्थान इसी प्रदेशमें हैं। प्राची
काल में अच्छे मार्ग, रेल, तार, आदिके न रहनेके कारण को
विजयी इन देशोंको अपने अधीन नहीं कर पाया।

(२) उत्तरीय भारतका मैदान—तराईके दक्षिणीय भाग
यमुना और सिन्धु नदीके ठीक दक्षिण तक, तथा सुलेमान औ
खिरथर पहाड़से गारो और लुशाई पहाड़के बीचके भूभागक
नाम उत्तरीय भारतका मैदान अथवा हिन्दोस्तान या आर्यावर्त प
है। यह विस्तृत भूमि सिन्धु, गंगा, यमुना और ब्रह्मपुत्र आ
नदियों तथा उनकी शाखाओं द्वारा सींची जाती है। यह भूमि
अतीव चिकनी मिट्टीसे बना हुआ एक समतल देश है, इसलि
बड़ा उपजाऊ है। यहाँकी आबादी भी घनी है।

गरम देशोंमें मनुष्य और पशुओंकी जीवन-रक्षाके लिये पानी
बहुत आवश्यकता होती है। अतः जिन स्थानोंमें पानी अधिक हो
है, उन स्थानोंकी आबादी घनी होती है, परन्तु जिन स्थानोंमें पानी
कमी होती है, वहाँ की आबादी भी कम होती है। मन्दगतिसे प्रवाहि

होने वाली नदियाँ, जिनकी गति चट्टान आदिसे रुक न गई हों, आने जानेके लिये मार्गका काम करती हैं और व्यापार तथा राज्यके फैलावमें सहायता देती हैं। राजनीति तथा व्यापारके द्वारा लोगोंके मनमें एकताका भाव उदय होता है। बड़ी बड़ी राजधानियाँ तथा व्यापारके केन्द्र भी नदीके किनारे किनारे स्थापित होते हैं। नदीकी सहायतासे बड़े बड़े विजयी लोग इसकी तरेटोमें साम्राज्य भी स्थापित करते हैं। आगे चलकर भारतीय इतिहासमें देखोगे कि ऊपर लिखी हुई बातें कहाँ तक सत्य होती हैं।

एक दम पश्चिमकी ओर पूर्व जैसा अधिक पानी नहीं बरसता इस लिये पञ्जाब और राजपुतानेकी ओर न तो उपजाऊ भूमि है और न घनी बस्तीही। अतः इन प्रदेशोंके निवासियोंको अधिक परिश्रम करने पर रोटी मिलती है। इसलिये वे बड़े परिश्रमी और हृष्ट-पुष्ट होते हैं। उपजकी अधिकताके कारण पूरबके निवासी आलसी तथा दुर्बल होते हैं।

आगे चलकर देखोगे कि प्राचीन समयमें मध्यएशियासे कितनी जातियाँ आर्य्यावर्तमें आई थीं। हमारे देशके उत्तरमें हिमालय और चीनके पूर्वी हिस्सोंमें बहुतसे ऊँचे ऊँचे पहाड़ और पठारोंके होनेके कारण एशियाके भीतरी हिस्सोंमें पानीकी कमी है। अतः वहाँ बड़े बड़े मरुस्थल और ऊसर हैं। ऐसे स्थानोंके निवासियोंको भोजनके लिये अन्न तथा रहनेके लिये जगहका बड़ा कष्ट रहता है। इसलिये जीवन निर्वाहके लिये उनको प्रकृतिके साथ सदैव लड़ना पड़ता है। अतः वे बड़े हृष्ट पुष्ट और फुर्तीले होते हैं। प्राचीन कालमें ये लोग अन्नके लिये निकटवर्ती भारतीय-उपजाऊ भूमि पर चढ़ाई करके लूटमार करते थे और अन्तमें इसी देशमें रहने लगते थे।

यहाँ पर भारतके पश्चिमोत्तर भाग तथा पञ्जाबके महत्व समझनेकी आवश्यकता है। तुम जानते हो कि पञ्जाबकी भूमि कैसी रेतीली है तथा पश्चिमोत्तर कैसे ऊँचे ऊँचे पहाड़ोंसे ढका

हुआ है। युद्धके समय ऐसे स्थान चढ़ाई करनेवालोंसे रक्षित रह सकते हैं। और चढ़ाई करने वालोंको भी कष्ट उठाना पड़ता है। तुम देखोगे कि इस देशपर चढ़ाई करने वाले पहले पहल इस देशके पश्चिमोत्तर भागमें अपना प्रभाव अच्छी तरह जमा कर फिर वे पञ्जावको जीतते थे। पश्चात् उसीको केन्द्र मानकर वे सिन्धु वा गंगा नदीके किनारे किनारे आगे बढ़ते थे।

आर्यावर्तकी जलवायु अच्छी कही जा सकती है, परन्तु कहीं कहीं अधिक गर्मी पड़ती है। वर्षाऋतुमें मौसमी हवाके जोरसे वहनेके कारण वृष्टि भी खूब होती है। जाड़ेके दिनोंमें पश्चिमकी ओरसे थोड़ा पानी वरसता है। ऐसे स्थान जहाँ पानीकी कमी है वहां कुंआ, तालाव और नहरोंके द्वारा सिंचाईका काम होता है। भूमि उपजाऊ होनेके कारण वर्षमें उपजकी दो फसलें होती हैं। इस तरहकी उपज पृथ्वीके और दूसरे भागोंमें कदाचित्‌ही होती हो। गर्मीके दिनोंकी उपजको खरीफ तथा जाड़ेके दिनोंकी उपजको रवी कहते हैं। अधिकतर लोग खेतीवारी करते हैं, परन्तु आजकल कच्चामाल जैसे चाय, सन, रूई, चीनी, गेहूँ आदि तैयार करके वाहर भेजा जाता है। खेतीके कामसे छुट्टी मिलने पर वहुतसे लोग अपने अपने घरोंमें थोड़ा वहुत हाथके काम भी करते हैं।

(३) मध्य भारत तथा दक्षिणके पठार—आर्यावर्तकी समतल भूमिके ठीक दक्षिणी भूभागमें ऊँचे ऊँचे पठार हैं। इस प्रदेश को दो भागोंमें विभाजित किया जाता है एक दक्षिणकी मालभूमि, और दूसरा मध्य-भारतका पठार।

दक्षिणकी मालभूमि—यह आकारमें एक वड़े त्रिभुजके समान है। इसके पूरबमें पूर्वीय घाट, पश्चिममें पश्चिमीय घाट और उत्तरमें विन्ध्याचल तथा सतपुरा पहाड़ हैं। इस विस्तृत त्रिभुजकी नोक नीलगिरि पहाड़ है जहाँ पर पूर्वीय तथा पश्चिमीय घाटोंका सम्मेलन हुआ है। पश्चिमोय- घाटकी पर्वतश्रेणी समुद्रसे प्रायः

सटी हुई है और उँचाईमें लगभग ४००० फीट है। परन्तु पूर्वीय-घाटके पहाड़ समुद्रसे कुछ दूर पर अवस्थित हैं तथा उँचाईमें भी कम हैं और ये कई स्थानोंमें कट गये हैं, जहाँ से नदियाँ बहतीं हैं।पश्चिमीय घाटमें ऐसे दर्रे बहुत कम पाये जाते हैं। बम्बईके निकट भोरघाट और थालघाट नामक ऐसे ही दो दर्रे हैं, जिनके द्वारा पश्चिमीय तट-भूमिमें आना जाना होता है। वैसे ही नीलगिरिके पास पालघाट नामक एक और दर्रा है, जोकि पश्चिमीय तट-भूमिको दक्षिणके पठारके साथ मिलाता है।

मध्यभारतका पठार—दक्षिणके पठार और आर्यावर्तके बीचमें मध्य भारतका पठार है। इसके पश्चिममें अरावली पहाड़, दक्षिणमें विन्ध्याचल और उत्तरमें गंगा और यमुनाकी तरेटी है। इसी भूभागमें मालवा, मध्यभारत, तथा मध्यप्रदेश और कुछ अंश छोटा नागपुरके अवस्थित हैं। आकारमें यह भूभाग एक लम्बे त्रिभुजके समान है।

यह भूभाग उत्तर जैसा चौरस तथा नीचा नहीं है, परन्तु समुद्रके सतहसे लगभग ३००० फीट ऊँचा है और चारों ओर पहाड़ तथा नदीकी घाटियोंसे घिरा हुआ है। नदियोंकी गति विकृत है। पहाड़ी देश होनेके कारण नदियोंमें पानीभी अधिक नहीं रहता, इसलिये ये नदियाँ उत्तरीय नदियोंकी भाँति व्यापार-मार्गका काम नहीं देतीं, तथा इनके किनारे बड़े बड़े नगर भी नहीं बस सके। यहाँकी पृथ्वी अधिकतर पथरीली है तथा गहरी नहीं है। पश्चिम और उत्तरकी ओर अवश्य कुछ ऐसी काली भूमि हैं, जहाँ रुई पैदा होती है। यह भूमि अधिक उपजाऊ है। पठारका झुकाव पूर्वकी ओर होनेके कारण कुल बरसाती पानी पृथ्वीमें न समाकर समुद्रमें चला जाता है। हाँ, काली भूमि खूब पानी खींचती है। फलतः यहाँकी भूमि उपजाऊ न होनेके कारण यह देश दरिद्र है तथा बस्तीभी साधारण है। इन्हीं सब कारणोंसे इस भागमें न तो बड़े बड़े धनी राज्य स्थापित

हो सके और न इस देशके इतिहास पर उनका कुछ प्रभाव
पड़ सका।

उत्तरके साथ दाक्षिणका सम्बन्ध—तुमसे प्रथम ही
कहा जा चुका है कि देशकी बनावट और स्थितिके अनुस
इसकी ऐतिहासिक धारा भी भिन्न होती है। आर्यावर्तकी ऐ
हासिक धारा दक्षिणसे भिन्न है। इसका मुख्य कारण यह है
भारतवर्षके इन दो भिन्न विभागोंके बीचमें विन्ध्याचल त
सतपुरा पहाड़, नर्मदा तथा ताप्ती नदी, और विन्ध्याचलके जं
आ पड़े हैं। प्राचीन समयमें जब कि अच्छी सड़कें, रेल, त
आदि नहीं थे, तब इन विभागोंमें पारस्परिक अधिक सम्बन्ध न
रहा। और इसीलिये इन दोनों विभागोंकी सभ्यता भी परस
मिलती जुलती नहीं है। परन्तु ज्यों ज्यों समय बीतता गया, त
त्यों उत्तरीय भारतके लोग नीचे पहाड़ तथा छिछली नदियों
पार करने लगे। उत्तरके राजे दक्षिण पर अपना रोब दाव जमा
की चेष्टा करने लगे। तथा अवसर मिलने पर दक्षिणी लोगोंने भ
उत्तरमें अपना राज्य फैलाया। परन्तु जब तक कि रेल तार आ
नहीं बने थे तबतक उत्तर और दक्षिणका पारस्परिक सम्बन्ध
स्थायी रूपसे नहीं हो सका था। आज दिन रेल और तारक
कृपासे हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं कि मनुष्यके दहिने और बायें हाथ
के समान आर्यावर्त और दाक्षिणात्य एकही महादेशके भिन्न भि
विभाग मात्र हैं।

(४) भारतकी तट-भूमि—भूगर्भविद्याका कथन
कि दक्षिणके विस्तृत पठार बननेके बहुत कालके अनन्तर पू
तथा पश्चिमकी ये दोनों तट-भूमि बनीं। पश्चिमीय भागका विस्ता
बहुत कम है, परन्तु भूमि बड़ी उपजाऊ है। इस भागमें पान
अधिक बरसनेसे आबादी भी बहुत घनी है। पूर्वीय भा
चौड़ाईमें अधिक है और पानी अधिक न बरसने परभी, यह
सिंचाईका उत्तम प्रबन्ध रहनेके कारण नदियों की तरेटीमें घन

आबादी है। मोतीका शिकार तथा सोनेकी खान आदि होनेके कारण कावेरी नदीकी तरेटी अति प्राचीन काल से ही सभ्यता तथा व्यापारकी केन्द्र भूमि बन गई थी। पश्चिमीय तट-भूमिके उत्तरीय अंशका नाम कोंकण है और दक्षिणी हिस्सेका नाम मालाबारका किनारा है। पूर्वीय तट-भूमिका नाम कारोमण्डलका किनारा तथा दक्षिणके सबसे अधिक चौड़े हिस्सेका नाम कर्नाटिक है। पश्चिमीय तट-भूमिमें कोई बड़ी नदी नहीं है, परन्तु पूर्वीय तट-भूमिके बीचसे महानदी, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी आदि नदियाँ बहती हैं।

देशकी बनावटका इसदेशके निवासियों पर प्रभाव— पहाड़ और जंगलोंके कारण भारतवर्षके कुल प्राकृतिक विभाग एक दूसरेसे पृथक् रहते थे। प्राचीन काल में जिस समय एक स्थानसे दूसरे स्थानमें आने जानेका सुभीता नहीं था, उस समय देशके एक प्रान्तके साथ दूसरे प्रान्तका कोई सीधा सम्बन्ध नहीं था और सारा देश संसारकी दृष्टिमें प्रायः छिपा हुआ था। इस निरालेपनका परिणाम यह हुआ कि इस देशके लोग बिना दूसरोंकी सहायतासे अपनेहीं प्रयत्नसे सभ्यताके सर्वोच्च शिखर पर पहुँच गये। इसीलिये इनकी सभ्यता, साहित्य एवं कला-कौशल आदि पृथ्वीकी अन्यान्य जातियोंसे सर्वथा भिन्न है। पृथ्वीकी अन्यान्य सभ्यजातियोंके साथ सहयोग न रहनेके कारण इनके विचार तथा धार्मिक भावोंकी उदारता संकीर्ण हो गई। वे अपने ही को संसारमें श्रेष्ठ समझने लग गये। इस देशकी उपज संसारमें बढ़ी चढ़ी है। अपनी जीविका निर्वाहके लिये तथा आनन्द पूर्वक अपने समय बितानेके लिये प्रायः सभी आवश्यक वस्तुयें हमारे देशमें अधिकतासे मिल सकती हैं। बिना अधिक परिश्रम किये मुट्ठी भर बीज छितरा देनेसे किसानोंको साल भरके लिये भोजनका ठिकाना हो जाता है। इसका फल यह हुआ कि बंगाल, युक्तप्रदेश, मद्राज आदि उपजाऊ प्रान्तोंके लोग सुखी, आलसी तथा शान्ति प्रिय बन गये। प्राचीन समयमें पेट पालनेकी

चिन्ता किसीको न थी। इसी कारणसे वे अधिकतर तत्वज्ञा
होगये थे। संसारिक सुखकी अपेक्षा पारलौकिक सुखकी अ
लोगोंकी अधिक प्रवृत्ति होती गई। इसीसे हमारे देशपर विदेशियों
अनेक आक्रमण हुये और बड़ी सुगमताके साथ उन लोगोंने हम
पूर्वजों पर विजय पाई।

परन्तु महाराष्ट्र, राजपुताना, बलूचिस्तान, पञ्जाब, नैपाल आ
पहाड़ी तथा मरुभूमिके निवासियोंको अपने जीवन-निर्वाहके लि
परिश्रम करना पड़ता है। इसीलिये ये लोग अ
प्रान्तवालोंकी अपेक्षा अधिक हृष्ट पुष्ट और परिश्रमी होते हैं
आज दिन भी मराठे, राजपूत, बलूची, पञ्जाबी आदि इस देश
वीरजातियोंमेंसे माने जाते हैं।

भारतवर्षकी मौलिक एकता—ऊपरके वर्णनसे तुम
विदित होगा कि जिस देशमें प्रान्त भेदके अनुसार वहाँकी ज
वायु, फल-फूल, जीव-जन्तु, तथा निवासियोंके रहन-सहन, री
रस्म में इतना अन्तर है, तो उस देशमें वास्तविक एकताका हो
कठिन है। परन्तु ऐसी धारणा ठीक नहीं। जिस प्रकार सह
शाखाओंके होने पर भी वृक्ष एकही है, भिन्न भिन्न अङ्ग प्रत्यङ्गों
होनेपर भी शरीर एकही है, उसी प्रकार भिन्न प्रकृतिके होने
भी सबकी आत्मा एक सी है। सभी कोई गंगा, कावेरी आ
नदियोंको पवित्र मानते हैं, गौ-ब्राह्मणकी सेवा करते हैं, रामाय
महाभारत और वेदोंका पठन-पाठन करते हैं तथा शिव-वि
आदि देवताओंको मानते हैं। तात्पर्य्य यह कि सभीके चित्त
हिन्दू धर्मके बड़े बड़े सिद्धान्त अच्छी तरहसे जमे हुये हैं।

इसके अतिरिक्त भिन्न भिन्न जातिके लोग एक दूसरेके सा
इस प्रकार हिलमिल गये हैं कि प्रत्येक जातिको अपनी जाति
रीति-नीति प्रायः भूलसी गई है। आर्थिक दृष्टिसे भी इस देशक
एकता प्रदर्शित होती है। इस देशकी पैदावार इतनी अधि
तथा भिन्न भिन्न प्रकारकी है, कि यहां वालोंको कभी दूसरे देशों

पर निर्भर रहनेकी आवश्यकता हुई ही नहीं, और इसीलिये इस देशके अधिकांश लोग खेती वारी पर ही अपनी जीविका चलाते हैं। पृथ्वीके जिस अंशमें यह देश स्थित है, उसके अनुसार तो इस देशको मरुस्थल होना चाहता था; परन्तु चारों ओर पहाड़ों तथा समुद्रोंसे सुरक्षित रहनेके कारण इस देशकी जल-वायु यहाँ के निवासियोंके लिये उपयोगी है तथा मौसमी हवाके बहनेके कारण यहाँ वर्षाकी भी कमी नहीं है।

इस प्रकारकी एकताका भाव हमारे देशमें आजही नहीं उत्पन्न हुआ है, वरन् हमारे पूर्वजोंमें भी एकताका प्रचार रहा है। हिन्दुओंके कुल तीर्थ-क्षेत्र भारतवर्षहीमें अवस्थित हैं। चक्रवर्ती सम्राट् बननेके कारण प्राचीन राजाओंको समुद्रान्त भारत भूमिही पर विजय प्राप्त करनी पड़ती थी। तान्त्रिक ग्रन्थोंमें वर्णित भिन्न भिन्न विभागोंको जोड़नेसे भी भारतवर्षका बोध होता है। पुराणोंमें केवल भारतवर्षकी कर्म-भूमि तथा अन्य देशोंको भोग-भूमि कहा गया है। इस प्रकार वाह्यदृष्टिसे हमारे देशका एकीकरण प्रतीत न होने परभी एकही महाप्राण इसके हृदयमें जागृत हो रहा है।

नवीन परिवर्त्तन—जिस दिनसे पुर्तगीज़ोंने भारतवर्षमें आनेका समुद्री मार्ग खोज निकाला, उसी दिनसे हमारे देशका निरालापन जाता रहा। उसी दिन यह भी निश्चय हो गया कि भारतवर्ष पर जिस जातिको राज्य करना हो उसे एक शक्तिमान समुद्री बेड़ा रखना चाहिये। उसी दिनसे पश्चिमोत्तरी मार्गका महत्व जाता रहा। आजकल इस देशपर वृटिश सरकारका अधिकार है, जोकि समुद्री शक्तिमें पृथ्वीका अन्यान्य जातियोंसे बहुत बढ़ी चढ़ी है। इसीलिये इन्होंने इस देशपर विजय पायी। आज उन्हींके प्रबन्ध तथा रेल और तार आदिके होनेके कारण हमारे मनसे प्रान्तीय भेद-भावका अन्त हो गया है और उसके स्थानमें एक विराट् जातीय-भावका विकास हो रहा है।

(२) भारतकी अनार्य जातियां।

प्राचीन शिला-काल—मानव जाति, जो हाथ और पैरों से काम लेती है और जांघोंके सहारे सीधी खड़ी रहती है उसका उदय सर्व प्रथम किस स्थानमें हुआ था, इसके बारेमें सब विद्वान् सहमत नहीं हैं। परन्तु कुछ लोगोंकी राय यह है कि एशिया महाद्वीपके दक्षिणी भाग यथा ब्रह्मदेश, दक्षिणी भारत जवद्वीप आदि हीमें आदि मानव जातिकी उत्पत्ति हुई थी। इनके रहन-सहनके बारेमें हम लोगोंको बहुत कुछ बातें नहीं मालूम हैं पर विद्वानोंकी राय यह है कि इस समयमें ये लोग पत्थरके हल हथियार बनाते थे। ये हथियार पहले पहल बड़े भद्दे तथा बेढंगे बनते थे, परन्तु धीरे धीरे ये लोग इनकी उन्नति करते गये। इनको घिसकर तेज और नोकदार बनाने लगे तथा तरह तरहके हथियार जैसे कुल्हाड़ी, भाला आदि भी बनाने लगे। ये लोग शिकार करके अपना पेट पालते थे और कच्चा मांस खाते थे। बड़े बड़े जानवरोंके डरसे ये लोग भारी जंगलोंसे दूर रहते थे। गोदावरी तथा नर्मदानदीकी खातमें उनके बनाये हुए कुछ हथियार मिले हैं।

इन दिनों ये लोग बहुधा मद्राजके आस पासके जिलोंमें रहा करते थे और ऐसा मालूम पड़ता है कि जयपुर तथा बुन्देलखण्ड तक इनकी बस्तियां फैली हुई थीं। धीरे धीरे ये लोग रङ्गीन पत्थरोंका व्यवहार करने लगे तथा हथियार आदिके बनानेमें हस्तकौशल दिखाने लगे। तरह तरह के हथियार तथा औजार यथा छूरी, घिसने, छेद करने, खोदने तथा चीरफाड़ करनेके यन्त्र भी इन्होंने बनाये। काम भी सफाईके साथ होने लगा। ये इस समय पहाड़की खोहमें रहा करते थे। करनूलके समीप ऐसी एक गुफा खोदकर निकाली गई है। इसमें बहुतसी ऐसे जानवरोंकी हड्डियां मिली हैं, जोकि आज कल देख नहीं पड़ते इन लोगोंको आग जलाना भी आता था। और आग बार

लिये वे लकड़ी और कंडे काम में लाते थे। वे बड़े ज़बरदस्त शिकारी होते थे और क़रीब २०० हड्डी के बने हुए हथियार भी मिले हैं। ये बड़े मांसाहारी होते थे परन्तु मांस को सेंक कर खाते थे। सम्भव है कि ये लोग भूत-प्रेतकी पूजा करते और आदमी तथा जानवरोंका बलिदान देते रहे हों। वे हड्डियों पर थोड़ा बहुत चित्रकारी भी करते थे।

उन दिनों अफ़्रिकासे लेकर आस्ट्रेलिया तक फैली हुई एक विस्तृत भूमि थी। इनकी सन्तान अभी तक आस्ट्रेलिया, अण्डमान तथा मकरानके किनारे बसी हुई हैं। इनका नाम नेग्रिटो पड़ा है। तामिल लेखकोंने इनका नाम आदि-द्रविड़ दिया हैं।

उत्तर शिला-काल—प्राचीन शिला कालके चिन्ह प्रधानतः दक्षिणी भारतमें ही दीख पड़ते हैं, परन्तु उत्तर शिला-कालके हथियार और औज़ार आदि उत्तर भारतमें भी अधिकतासे मिलते हैं। दक्षिणी भारतमें बेलारी, सालेम, मदुरा आदि स्थान उनकी सभ्यताके केन्द्र थे। उत्तरीय भारतमें ब्रह्मदेशसे लेकर सिन्धु नदीके मुहाने तक इनके बनाये हुए औज़ार आदि मिले हैं। आधुनिक विद्वानोंकी राय है कि वे कोल जातिके थे। वेदोंमें इन्हींका नाम निषाद पड़ा है। पुराणोंमें निषाद जातिके लोगोंकी शकल-सूरतका वर्णन ऐसा लिखा है: 'निषाद जातिके लोग कौएकी तरह काले, और नाटे कदके होते हैं। इनके हाथ छोटे, जबड़े ऊंचे, नाक चिपटी और आंखें लाल होतीं हैं। इनके बाल ताम्बेकी तरह भूरे होते हैं'। *

सम्भव है कि कोल जातिके लोग श्याम और कम्बोडिया देशसे आये हों और धीरेधीरे उत्तरीय भारतको जीत कर दक्षिणको गये हों। वहां ये आदि—द्रविड़ोंके साथ मिल गये। इन लोगोंके आते समय तक भारतवर्ष समुद्रके द्वारा विभाजित हो

* भागवतपुराण ४।१४।४४

कर आज जैसा बन गया था। ये लोग केवल शिकारी ही
थे, परन्तु खेतीबारी भी करते थे। अधिकतर फलादि खाते
लड़ाईके हथियारोंके सिवाय घर-गृहस्थीके सामान भी कुल
पत्थरके बने हुए हैं, जोकि बहुतायतसे मिले हैं। ये
लकड़ीके बने हुए औज़ार भी काममें लाते थे। छोटी
झोपड़ी बना कर उसीमें रहते थे। मिट्टीके भद्दे बरतन
बनाते थे। बेलारी ज़िले और मिरज़ापुरके ज़िलेमें इनकी बनाई
चित्रकारी भी मिली हैं। ये तस्वीरें सेंदुरकी लिखी हुई हैं।

"कम्बल", "लांगल", "ताम्बुल", आदि शब्द कोल-भा
हैं। कुछ स्थानोंके नाम भी कोल-भाषासे निकले हैं। भ
सन्थाल आदि जातियां इन्हींकी सन्तति हैं। आजकल वे
हिन्दू जातिके लोगोंसे मिल गये हैं।

धातु-काल—कोल जातिके आनेके बहुत दिनके बाद
एक जाति उत्तरीय भारतमें आई। वे ताम्बेके व्यवहारसे परि
थे। इस धातुके बने हुए औज़ार आदि बिहारसे लेकर बि
चिस्तान तक मिले हैं। ताम्बेके बने हुए कुल्हाड़ो, तलवार, भा
आदि भी निकले हैं। अँगूठीके आकारका एक तर
सिक्का भी मैनपुरीके ज़िलेमें मिला है। मालूम होता है कि
लोग दक्षिणी भारत तक नहीं पहुँच पाये और अन्त तक
जातिके लोगोंके साथ मिल गये। दक्षिणी भारतके लोग उ
शिला-कालके बाद ही एकदम लोहेका व्यवहार करने ल
सम्भव है कि इन्होंने यह विद्या द्रविड़ लोगोंसे सीखी हो।

द्रविड़ जातिकी चढ़ाई—अभी हालमें पञ्जाबके हड़
(ज़िला माण्टगोमरीमें) और सिन्धके मोहेञ्जो-दारो (ज़िला लरका
नामक स्थानोंमें पृथ्वीके भीतरसे नामाङ्कित मुहर, मिट्टीके चि
बरतन; कब्रमेंसे मुर्दे, तथा घर गृहस्तीके सामान आदि खोद
निकाले गये हैं। इन चीज़ोंके साथ बिलोचिस्तान, तिनेव
मेसोपोटेमिया और ग्रीस देशके पूरबके द्वीप समूहसे निकली

चीज़ोंका बहुत कुछ सादृश्य है। विद्वानोंका निश्चय यह हैं कि ५००० ई० पू० ये लोग अपनी जन्म भूमि, पूर्वीय भूमध्य सागरसे निकल कर एशिया कोचक, मेसोपोटेमिया, फारस आदि देशोंकी सैर करते हुए पश्चिमोत्तरके दर्रेके भीतरसे हिन्दुस्तानमें आये। फिर पञ्जाबको केन्द्र बनाकर धीरे धीरे ये लोग सारे देशमें फैल गये। हिन्दी तथा बङ्गला भाषामें ऐसे बहुतसे शब्द पाये जाते हैं जिनकी उत्पत्ति तामिल भाषासे हुई है। केलात (बिलोचिस्तानमें) के निवासी जङ्गलियोंकी भाषा तामिल भाषासे बहुत कुछ मिलती जुलती है। ताम्रलिप्ति (आज कल तमोलुक, बङ्गालमें) का प्राचीन नाम दमिल-लित्ती था। पाली साहित्यमें इनका नाम दमिल पड़ा है तथा संस्कृतमें द्रमिद पड़ा हैं। हिरोडोटस नामक एक यूनानी लेखक (जन्म ४८४ ई० पू०) का यह कथन है कि क्रीट द्वीपमें रहते समय इनका नाम "तामिलाई" वा "त्रिम्मिली" था। इन्हींकी सन्तान आजकल द्रविड़ नामसे परिचित है।

तामिल जाति वस्तुतः एक बड़ी सभ्य जाति थी। वे लोग हथियार आदि लोहेके बनाते थे। तथा मुर्दोंको मिट्टीके बरतनमें बन्द कर उसके बगलमें खान-पानकी सामग्री, वस्त्र, हथियार आदि रख देते थे। मुर्दा गाड़नेकी यह रीति प्राचीन समयमें क्रीट तथा साइप्रसद्वीपों तथा मेसोपोटेमिय में भी प्रचलित थी। तिने-वली ज़िलेकी कब्रोंकी* परीक्षा करनेसे उनके रहन-सहनके बारेमें बहुत कुछ बातें मालूम हुई हैं। मालूम पड़ता है कि वे खेती-बारी करते थे तथा चावल, ज्वार आदि खाते थे। उनको धोती बुननेकी विद्या अच्छी तरहसे आती थी। सोनेके गहने पहनते थे, मस्तक पर सोनेका मुकुट तथा कड़ा, कुण्डल, हार आदि भी पहिनते थे। मर्द लोग लम्बी दाढ़ी रखते थे, तथा स्त्रियां बड़ी सावधानीके साथ बालोंको सँवारती थीं। हाथी तथा घोड़ेका भी

* A. Rep. in Arch. Annual for 1903-4

व्यवहार करते थे। तथा लोहेके बने हुए तरह तरहके हथि
काममें लाते थे। इनको लिखनेकी विद्या भी आती थी।† ता
लोग अच्छे व्यापारी भी थे। छोटे छोटे जहाजों पर चढ़ कर स
राहसे दूर दूरके देशों तथा चालडिया, बबीलोनिया, असीरि
के साथ व्यापार करते थे। छोटे छोटे राज्योंमें एक २ रा
अधीन होकर रहते थे। ताम्बेके सिक्के भी इस्तेमाल करते
उनका निजी एक धर्म भी था। वह परमात्माको मानते त
शिवजी, भूमिजी, नाग आदिकी पूजा करते थे। वेदोंमें उ
वर्णन ऐसा मिलता है: 'ये लोग इन्द्र तथा अग्निको नहीं मानते
हवन आदि नहीं करते थे, न वेदोंको मानते थे, ब्राह्मणोंसे
करते थे। ये लोग सैकड़ों फाटक वाले बड़े बड़े शहरोंमें एक
राजाके आधीन होकर रहते थे। गाय, घोड़े तथा रथका व्यव
करते थ। ये बड़े धनी होते थे और सोना तथा जवाहि
काममें लाते थे। रथ पर सवार होकर और अच्छे अच्छे ह
यार लेकर लड़ते थे। अपने देवताओंको सन्तुष्ट करनेके लिये ब
चढ़ाते थे। वे लोग आर्य ऋषियों के यज्ञ के अवसर पर बहुत बा
डालते थे'।

बहुत दिन एक स्थान में रहने के कारण ये लोग भी क
जाति के लोगों के साथ मिल गये। भारतीय आर्यों के आनेके
हो से वे लोग दक्षिणमें जाकर बसने लगे थे। पुनः आर्योंके आ
बाद उनकी संख्या और भी अधिक हो गई। अन्त में उत्त
अगस्त्य आदि आर्य ऋषियोंने जाकर उनको बहुत सी
विद्याएं सिखाईं जो कि उन्हें नहीं आती थीं। अतः शुद्ध ता
भाषामें संस्कृत शब्द बिलकुल नहीं मिलते। एक मात्र दार्शनि
ज्ञान-विज्ञान तथा धार्मिक ग्रन्थोंमें ही संस्कृत शब्द पाये जाते
धीरे धीरे आर्य लोग भी उनके देवताओंकी पूजा करने लगे।

† Yazdani in J. Hyderabad Arch. Soc. for 1917.

प्रकार विचारों तथा व्यवहारोंका विनिमय करते हुये द्रविड़ जातिसे भारतीय आर्योंका सम्मेलन हुआ। शक्ति-पूजाके नियम, तथा तान्त्रिक सिद्धान्त आदि इन्हींकी सभ्यताके अंग हैं।

आज कल द्रविड़ जातिके लोग प्रायः चार भाषाओंमें बातचीत करते हैं। इनके नाम ये हैं: तामिल, तेलेगू, कनारी और मलयालम्। इनका साहित्य भी उच्च कोटिका है।

मंगोल जातिकी चढ़ाई—मालूम होता है कि मंगोल जातिके लोग पूर्वोत्तरीय दर्रोंमेंसे होकर भारतवर्षमें आये। परन्तु किस समयमें इस देशमें आये, इसका निश्चय नहीं। वे चीन देशके रहने वाले थे। इनकी सन्तति आजकल बहुधा हिमालयकी तराईमें तथा ब्रह्मदेश, आसाम, और पूर्वीय बंगालमें पायी जाती है। बहुत दिनोंके बाद हूण तथा मुगल जोकि इसी जातिके थे, पश्चिमोत्तरीय किनारेसे भारतवर्षमें आये। बहुत दिनों तक एकही देशमें रहनेके कारण ये लोग भी धीरे धीरे इस देशके मूल निवासियों के साथ मिल गये।

आधुनिक भारतीय प्रजाके अंग—इसी प्रकार अति प्राचीन कालसे छोटी छोटी असभ्यजातियां भारतवर्षमें आकर रहती-सहती धीरे धीरे यहांके मूल निवासियोंके आचार-व्यवहार मानती तथा उनके साथ ब्याह-शादी कर आजकलकी भारतीय जाति बनी हैं। रक्तका मिश्रण इस प्रकार हुआ है कि निश्चित रूपसे कोई कह नहीं सकता कि हमारी शिरामें शुद्ध आर्य ऋषियों का रक्त बहता है। फिर भी इस देशके निवासियों पर द्रविड़ लोगोंके बाद आने वाली आर्य जातिका प्रभाव इतना अधिक पड़ा है कि आज तक हम लोग उन्हीं लोगोंको अपना पूर्वज कहकर मानते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि उत्तरीय भारतके उच्च जातिके लोग तथा दक्षिणके महाराष्ट्र, मालावार आदि देशोंके ब्राह्मणादि जातिके लोग इन्हींकी सन्तान हैं। आर्योंके बाद शक, हूण प्रभृति जातिके लोग इस देशमें बारी बारीसे आकर इस देशके मूलनिवासियोंके

साथ ऐसे हिल मिल गये हैं कि कौन किसकी सन्तान है, आर्य
बातका निश्चय करना कठिन हो गया है। इसका प्रधान का
यह है कि ये लोग बिलकुल जंगली थे। इनके लिये आर्य लो
सीखनेके योग्य विषय इतना अधिक था कि अन्त तक अ
स्वातन्त्र्यकी रक्षा नहीं कर सके। परन्तु मुसलमान अभी
अपनी स्वतन्त्रताकी रक्षा करते चल रहे हैं। कारण, उनका
सम्बन्धीय कट्टरपन और भारतवर्षके बाहर इस्लामी दुनियाके
सीधा सम्बन्ध हैं। फिर भी ऐसी बहुतसी बातें हैं, जहां
मुसलमानोंका पारस्परिक सम्बन्ध है। इसी प्रकारसे भार
महा-मानव जातिका पवित्र तीर्थ क्षेत्र बना है।

(३) आर्य्य जातिकी चढ़ाई।

द्रविड़ जातिके आनेसे कुछ कम २००० सालके बाद अ
जातिके लोगोंका आगमन हुआ। आय जातिके लोगोंका
निवास किस देशमें था, इसका निश्चय अभी तक नहीं हुआ
पं० बालगंगाधर तिलककी राय यह थी कि इनका मूल नि
आर्कटिक महासमुद्रके आस पास था। यूरोपीय विद्वा
सिद्धान्त यह है कि वे मध्य एशियाके रहनेवाले थे।*
कलके कुछ विद्वानोंका कहना है कि वे बिलकुल बाहरसे
ही नहीं और उनका आदि निवास सप्तसिन्धु प्रदेशमें थ
चाहे कुछ हो अधिकतर विद्वानोंका सिद्धान्त यह है कि
भारतवर्षके रहनेवाले नहीं थे और वे उत्तरकी ओरसे ईसाके
करीब ३०००में हिन्दोस्तानमें आये थे।‡ सिर्फ यही नहीं, विद्वा
यह भी सिद्धान्त है कि आर्य जातिकी भिन्न भिन्न शाखायें
मेसोपाटेमिया, एशिया कोचक तथा यूरोपके भी कई देशोंमें अ
बसी थीं। जो लोग भारतवर्षमें आये उनका नाम भा

* Orion
† Das: Rig Vedic I
‡ Max Muller: Biographics of Words.

र्थ वा Indo-Aryan पड़ा है।

भिन्न भिन्न देशोंकी यात्रा करनेके पूर्व इनके रहन-सहनके बारेमें हम लोगोंको बहुत ही कम पता चलता है। फिर भी ऐसे शब्द जोकि हम लोग तथा यूरोपके निवासी सामान्य रूपसे काम में लाते हैं, ऐसे शब्दोंकी परीक्षा कर विद्वानोंने निश्चय किया है कि जब ये लोग एक साथ रहते थे तभी उनको खेतीबारीका काम, पशु-पालन, गृह-निर्माण, गाड़ी तथा नाव बनाना, ताम्बे और लोहेके बर्त्तन तथा हथियार आदि बनाना आता था। उनको ऊन, सन आदि बिनना भी आता था। ये छोटे छोटे समुदायोंमें विभाजित होकर रहते थे। कई कुल मिल कर एक समुदाय बनता था। प्रत्येक समुदायका मालिक एक एक राजा होता था। एक समुदायके लोग दूसरे समुदायमें व्याह-शादी करते थे।

पुनः विद्वानोंका यह सिद्धान्त है कि भारतीय आर्य लोग एक ही साथ गोल बांध कर एक ही रास्तेसे भारतवर्षमें नहीं आये और इस प्रकार उनके आनेमें हज़ार डेढ़ हज़ार वर्षके लग गये। पहिला दल ख़ैबरकी घाटीसे होकर मूल निवासियोंसे लड़-भिड़ कर पञ्जाबमें आकर बसा। पीछे जब इन पर दूसरे दलवालोंका दबाव पड़ा, तब वे गंगा नदीके किनारे किनारे बिहार बंगाल हिमालयकी तराई तथा काठियावाड़ आदि देशोंमें चल निकले। दूसरे दल वाले इन्हींको व्रात्य कहने लगे।

व्रात्य—द्वितीय दलके आर्योंसे व्रात्योंकी रीति-नीतिमें बहुत प्रभेद था। पहिले दलके लोग टेढ़ी पगड़ी, किनारदार धोती तथा चांदीके गहने व्यवहार करते थे। दूसरे दल वाले लोग सीधी पगड़ी, सादी धोती तथा सोनेके गहने पहिनते थे। पूरबमें जाकर उन लोगोंने कई एक शक्तिमान् समुदाय वाले राज्य यथा शाक्य, मल्ल, लिच्छवी आदि स्थापित किये। पहिले पहल इन लोगोंमें जाति-भेदकी प्रथा नहीं थी। पीछे इन लोगोंसे द्वितीय दल वालोंकी सुलह हो गई और वे भी जातिमें लेलिये गये।

द्वितीय दलके भारतीय आर्य जातिके लोग भी पश्चिमोत्तर ओरसे इस देशमें आये। ये आदि निवासी आर्य्योंको भगा सप्त-सिन्धु प्रदेश, (पञ्जाब काश्मीर और गान्धार) ब्रह्माव दोआबमें बसे। आजकलकी दिल्लीके उत्तर थानेश्वरके आ पासके स्थानोंको पहिले ब्रह्मावर्त कहते थे। ब्रह्मावर्त प्रा आर्य ऋषियोंकी कर्मभूमि थी। मनुष्य जातिकी प्राचीन सभ्यत यही पुण्यभूमि थी जो सर्व प्रथम वेद गान सुन कर धन्य हु

इसी स्थानको केन्द्र मानकर आर्य लोगोंने आस-पा देशोंको जीता और अफ़गानिस्तान, पञ्जाब तथा यमुनाके कि किनारे छोटी छोटी बहुतेरी रियासतें स्थापित कीं। इन लोगों रंग गोरा होता था तथा इनके बाल ताम्बेकी तरह होते थे। समय इन लोगोंमें जाति भेदकी प्रथा नहीं उत्पन्न हुई थी। भी पुरोहित तथा सिपाहीका स्थान उच्च समझा जाता था।

तीसरे दलके लोग समुद्रके रास्ते* से आये। इनका सांवला था। अभी हालमें मिश्र-देशसे निकले हुए मिट्टीकी त परके लेखोंसे मालूम हुआ है कि ई० पू० १५०० में सीरिया मेसोपोटेमियामें आर्य भाषा बोलने वालोंकी आबादी थी और लोग वैदिक देवताको मानते थे। अतः सम्भव है कि ये अरबसागरको पार कर काठियावाड़में पहुंचे होंगे। हम लोगों ठीक ठीक मालूम है कि यादव नामका एक समुदाय प्रथम सौ तथा काठियावाड़में बसा था, पीछेसे वे लोग मथुराके आस-पास लगे। सम्भव है ये लोग सेमिटिक महाजातिके साथ मिल थे, अतः उनका रंग साँवला होगया था। इन लोगोंने वैदिक जातिके लोगों के साथ सुलह कर लिया तथा उनके शिष्य गये। मालूम होता है कि मालाबार, महाराष्ट्र, गुजरात आदि देशों उच्चजातियां इन्हीं की सन्तान हैं।

---

* Rig Veda (VI. 20. 12.)

वर्ण-भेद—ऐसेही धीरे धीरे वर्ण भेदकी प्रथा चल निकली। उत्तरसे आये हुए गोरे रंगके ऋषि जातिके लोग, दक्षिणसे पहुंचे हुए सांवले रंगके शिष्यजातिके लोग, तथा यहांके काले मूल निवासियोंके दैहिक रंगोंपर विचार कर पहिले पहल वर्ण भेदकी रीति प्रचलित हुई। गुण और कर्मका किस्सा पीछेसे जोड़ा गया। ऋषि जातिके गोरे रंगके लोग ब्राह्मण वर्णके, सांवले रंगके लोग क्षत्रिय वर्णके, तथा मूल निवासी दास वा शूद्र वर्णके कहे गये। पहिले पहल कुल आर्य "विश्" अर्थात् बसने वाले कहे जाते थे। परन्तु उन दिनों जाति-भेदकी नींव मात्र पड़ी थी और समय समय पर सब लोग सब तरहका काम कर लेते थे। विश्वामित्र तथा देवापिने क्षत्रिय वर्णके होकर भी पुरोहिती की और वसिष्ठने भी लड़ाई जीतनेमें सहायता की। भृगुऋषिके वंशज अच्छे बढ़ई थे। उपयोगिताके कारण सब काम अच्छा समझा जाता था।

उनकी बस्तियां और फैलाव—ऊपर कह आये हैं कि भारतवर्षमें आकर भारतीय आर्योंने सप्तसिन्धु प्रदेशमें और उसके बाद गंगा और यमुनाके दोआबमें अनेक जनसमूहोंके छोटे छोटे राज्य स्थापित किये वेदोंमें बहुतसे राज्योंके नाम पाये जाते हैं। सप्तसिन्धु प्रदेशमें अनु, यदु, तुर्वश, शिवि आदि नामक राज्य थे, तथा गंगा और यमुनाके दोआबके आस पास और बीचमें काशी, कोशल, मत्स्य आदि नामक राज्य थे। हिमालय और विन्ध्या पहाड़, तथा प्रयाग और सरस्वती नदीके बीचकी भूमि मध्यदेशके नामसे विख्यात हुई। इसके अनन्तर विहार देशमें अंग, विदेह, मगध आदि राज्य स्थापित हुए। पश्चात् इसी विस्तृत भूमिका नाम आर्यावर्त पड़ा।

जातियोंका संमिश्रण—तुमको पहलेही यह बात बतलायी गयी है, कि भारतीय आर्य जातिके भिन्न भिन्न समुदायके लोग अन्त तक एक दूसरेके साथ हिल-मिल गये। परन्तु यहीं इस विषयका अन्त नहीं हुआ। ये लोग मूल निवासी विजित जाति

को स्त्रियोंके साथ व्याह-शादी करने लगे । इस प्रकार उनकी रक्तकी शुद्धता जाती रही। फिर द्रविड़ जाति और आ जातिके लोग आपसमें खूब मिलने जुलने लगे ।

दक्षिणमें भारतीय आर्य—इसी प्रकार मूल निवासी तामि जाति और निषाद जातिके लोगोंको हराकर आर्योंने उन्ह अपना गुलाम बनाया । अतः उनका नाम दास पड़ा । हार जाने भी वे इनको बहुत छेड़ते थे। कभी वे उनकी आबादियों चढ़ाई कर लूट मार करते, कभी उनके पलुये जानवरोंको चु ले जाते और कभी उनके यज्ञादि नाश कर देते थे। अ आर्य लोग इनको "राक्षस" "असुर" तथा "दस्यु" कहने लगे परन्तु बहुत दिनों तक एकही जगहमें रहनेके कारण धीरे धी उनका मेल होगया । यहां तक कि आर्योंने अपने समाजमें उन्हें सम्मिलित कर लिया ।

इस प्रकार उत्तरीय भारत हाथ से निकल जानेपर बहुत द्रविड़ लोग दक्षिणकी ओर चल पड़े; कुछ बिलोचिस्तानकी ओर च गये, जहांपर अब भी उनके वंशज पाये जाते हैं। भारतीय आर्यो जब कुल आर्यावर्त अपने अधीन कर लिया, तब उन्होंने दक्षिणकी ओर अपनी दृष्टि फेरी। अगस्त्य नामके एक ऋषि पहिले पहल दक्षिणमें जाकर बसे। तामिल साहित्यसे पता चलता है कि अगस्त्य ऋषिने तामिल भाषामें वर्णमाला, संगीतविद्या, शिल्प शास्त्रकी पुस्तकें लिखीं, और जंगल काटकर शहर बसाया । धी धीरे और भी बहुतेरे आर्य जैसे बभ्रिन्, विश्वामित्रके पुत्र आदि दक्षिणमें जाकर बसे। ऐसेही आर्यऋषियोंने धीरे धीरे स भारतवर्षमें आर्यजातिकी विजय-पताका फहरा दी।

(४) वैदिक युगकी आर्यजाति।

चतुर्वेद—"वेद" शब्दका अर्थ है जानना। परन्तु प्राचीन आर्यऋषि लोग तथा उनकी सन्तान आजतक इसे विशुद्ध ज्ञानकी खान कह कर मानती हैं। उनका यह पक्का विश्वास है कि वेदोंको किसीने बनाया नहीं। वे ईश्वरकी प्रेरणासे बने हैं। इसी लिये इसका दूसरा नाम "श्रुति" भी है; अर्थात् जो कि कानसे सुना गया है। बहुत दिनोंके बाद जब वेदोंका फैलाव बहुत बढ़ गया तब महर्षि व्यासने कुल वेदोंको चार हिस्सोंमें बाँट दिया। वेदोंके नाम यथाक्रमसे—ऋक्, यजुः, साम और अथर्व हैं। ऋग्वेदमें यज्ञ करनेके तथा देवताओंसे प्रार्थना करनेके मंत्र आदि पाये जाते हैं। यज्ञके समय गाने लायक गीत सामवेदमें हैं, यज्ञ करनेके ठीक नियम यजुर्वेद में और झाड़ फूकके मन्त्र आदि अथर्व वेदमें मिलते हैं। इसीमें वैद्यक तथा धनुर्वेदके नियम भी दिये हुए हैं।

वैदिक साहित्य—प्रत्येक वेदके दो अंश हैं। मंत्रका हिस्सा जो कि कवितामें पाया जाता है, उसका नाम "संहिता" है। और गद्यका अंश जिसमें पुरोहितके कर्तव्य और मंत्रोंके अर्थ लिखे हुए हैं उसे "ब्राह्मण" कहते हैं। ब्राह्मणके अन्तिम भागका नाम "आरण्यक" है, और "उपनिषद्" इसीका एक अंश है।

संहिता और ब्राह्मण कर्मकाण्डसे, तथा आरण्यक और उपनिषद् ज्ञानकाण्डसे सम्बन्ध रखते हैं। उपनिषदमें आत्मा, परमात्मा, कर्मफल और मुक्तिके बारेमें बहुत कुछ उच्च कोटिकी बातें हैं। हम लोग पूर्व-जन्ममें जैसा काम करेंगे उसका फल दूसरे जन्ममें भोगना पड़ेगा। वर्तमान जीवनके दुःख-सुख, जन्म और आयु सबका मूल कर्मफल है। अच्छा काम करनेसे सुखकी प्राप्ति तथा बुरा काम करनेसे दुःखकी प्राप्ति होती है।

इसी लिये हमारे देशके विद्वानोंने सुख-दुःख एवं जन्म-मरण से छुटकारा पाकर मुक्ति पद प्राप्त करनेकी खोजमें ही अपना सा समय और बुद्धि लगाई है।

यज्ञ करते समय वेद मन्त्रोंका शुद्ध और निश्चित ढंगसे पाठ करने पर ठीक फल मिलता है, इसी लिये छः वेदाङ्गोंकी उत्पत्ति हुई, जिनके नाम —शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, छन्द, और निरुक्त हैं। शिक्षामें शब्दोंके ठीक ठीक उच्चारण करनेकी रीति बतलाई गयी है। निरुक्त वैदिक शब्द-कोष है। कल्प-सूत्र के तीन विभाग हैं; जिनमें इने गिने शब्दोंमें ही बड़ी बड़ी बातोंका समावेश क्या गया है। इसी लिये इनका नाम सूत्र पड़ा है।

(१) श्रौत-सूत्र—इसमें तरह तरहके यज्ञ जैसे अग्निहोत्र, दर्श पौर्णमास, अश्वमेध, राजसूय आदि करनेकी रीति बतलाई गई है।

(२) गृह्य-सूत्र—इसमें उच्च जातिके लोगोंके जन्मसे मृत्यु पर्यंन्त संस्कार जैसे जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, चूड़ाकरण, उपनयन, विवाह आदि का वर्णन है।

(३) धर्म-सूत्र—इसके ग्रन्थ स्मृति शास्त्रके पूर्वज हैं।

अपरञ्च यज्ञ करनेकी वेदी बनाने तथा होम करनेके समय समिधा रखनेके ठीक ठीक नियम जाननेके लिय ही रेखागणितकी उत्पत्ति हुई। पुनः सामवेदसे गान्धर्ववेद वा संगीत शास्त्रकी उत्पत्ति हुई।

वैदिक कालकी सभ्यता—वैदिक मन्त्रोंकी रचना किस समयसे प्रारम्भ हुई इस बात को आज तक निश्चय नहीं हुआ। भारतीय विद्वानोंकी राय यह है कि ईसाके दस पन्द्रह हज़ार वर्ष पूर्वसे इसकी रचना आरम्भ हुई*। किन्तु यूरोपीय विद्वानोंकी रायमें ऋग्वेद सब वेदोंसे पुराना है, और ईसाके दो ढाई हज़ार वर्ष पूर्वसे इसकी रचना आरम्भ हुई। चाहे जो कुछ हो, इतना

* Das: Rig Vedic Culture.

बात सही है कि ऋग्वेद जिसे कि और वेदोंका पूर्वज कहा गया है, इसके कुल मन्त्र एकही कविने एक ही समयमें नहीं बनाये। इसमें भिन्न भिन्न समयमें भिन्न भिन्न ऋषियोंके बनाये हुए मन्त्रोंका संग्रह है। ऋग्वेदके पढ़नेसे हम लोगोंको वैदिक धर्म तथा तत्कालीन आर्योंकी रीति-नीतिके बारेमें बहुत कुछ बातें मालूम होती हैं।

वैदिक धर्म—वैदिक धर्मकी यह विशेषता है कि यह धर्म बड़ा सरल तथा बड़ा सजीव है। बाहरी ढकोसले तथा मिथ्या आडम्बरके नाम तक इसमें नहीं मिलते। वैदिक युगके आर्योंका मन बच्चोंकी भांति सादा तथा जलके समान स्वच्छ था। वे बालकोंकी भांति ज्योतिके भक्त और स्तावक थे, तथा अन्धेरेसे सदा दूर रहा करते थे। अनन्त नील आकाश (द्यावा); श्यामला पृथिवी, प्रकाशमान सूर्य, उषा, अन्धकारको दूर करने वाली अग्नि, तारागणोंसे युक्त निशा कालीन आकाश मण्डल (वरुण), थकावट दूर करने वाली हवा (वायु), आदि प्रकृतिके भिन्न भिन्न रूप इनके मनमें एक सरल एवं गम्भीर भाव उत्पन्न किये होंगे। अतः उनके मनमें यह प्रतीति हुई कि प्रकृतिके इन रूपोंके भीतर एक एक अधिष्ठाता देवता होंगे, और इनकी स्तुति करनेसे उनको सांसारिक सुखोंकी प्राप्ति होगी। पीछेसे स्तुतियोंके साथ यज्ञ आदि भी जोड़े गये। ऐसे ही इन्द्र, अग्नि, सूर्य, वायु, वरुण, आदि वेदके प्रधान देवता माने गये हैं। अनार्य शत्रुओं पर विजय पानेके लिये, तथा धन सम्पत्ति, दीर्घायु एवं अच्छी सन्तान प्राप्तिके लिये वैदिक आर्य लोग सदा इन देवताओं से प्रार्थना करते थे। ऋग्वेदमें कुल ३३ देवताओंका उल्लेख है। यद्यपि वेदोंमें भिन्न भिन्न देवताओंकी स्तुतियां पाई जाती हैं, तो भी हमारे पूर्वजोंको यह बात ठीक ठीक मालूम थी कि य सब एक ही सनातन तथा अनादि परमेश्वरके अलग अलग रूप मात्र हैं। जैसे "एक ही परमात्माको ऋषि लोग भिन्न भिन्न

नामसे पुकारते हैं। उन्हींको कभी अग्नि, कभी यम, और
मातरिश्वान्के नामसे पुकारते हैं।"*

सामाजिक स्थिति—आर्य लोग अनेक छोटी
रियासतोंमें बँट कर एक एक राजाके अधीन होकर रहते
राजा गढ़ोंमें रहते थे, और बड़ी शानके साथ द
करते थे। दरबारमें मन्त्री, दूत, और दरबारियोंकी बड़ी भ
रहती थी। राजा मनमानी नहीं कर सकते थे। उनको समिति
रायके अनुसार काम करना पड़ता था। समितिमें राजा
उपस्थित रहते थे। लोग उनसे सदा डरते थे। एक ऋषि
प्रार्थना करते हैं कि "हम पर राजा अप्रसन्न न हों, उनका
दूसरे पर सवार हो।" समितिमें सब प्रकारके राष्ट्रीय त
सामाजिक विषयों पर विचार होते थे। राजाका महल लकड़ी
बनता था। उनकी सवारी हाथी वा रथ पर निकलती थ
धनी लोग बड़े सुखसे दिन व्यतीत करते थे। चार घोड़े उ
रथको खींचते थे और पुरोहितोंको खूब दान देते थे। वे स
वैभवमें मग्न रहा करते थे। किन्तु अधिकतर लोग बड़े द
होते थे तथा अधिक सूदके वादेपर रुपया उधार लेते थे।
ऋणसे मुक्त होनेके लिये सदा वरुणसे प्रार्थना करते थे। क
कभी अकाल भी पड़ता था। अधिकतर लोग खेती बारी क
थे। खेत सींचनेके लिये नहरें होती थीं; साथ साथ गाय, भ
बकरी आदि जानवर भी पालते थे।

पुरुष और स्त्री सभी कोई रुई और ऊनके कपड़े बिनते थे।
दुलहिन अपने हाथसे दुलहेकी धोती बिनकर तैयार रखती थी।
लोग तरह तरहके मांसके अतिरिक्त दूध, घी, भात, जौकी रो
फल प्रभृति खाते थे, तथा सोमरस और सुरा पीते थे। सौदा
"सौ दांड़ वाले नावोंपर चढ़कर" दूर दूरके देशोंके साथ व्याप

---

* Rig Veda, I. 164, 46.

करते थे। यात्राके पूर्व इन्द्रकी स्तुति करनेकी प्रथा थी। वर्ण भेदकी प्रथा चल निकली थी, परन्तु जाति-पांतका विचार नहीं था। ब्याह-शादीमें किसी तरहकी रुकावट नहीं थी।

आजकल जैसा घुड़दौड़ होता है, वैसेही उन दिनों रथोंका दौड़ होता था। जीतने वाले घोड़ोंका बड़ा आदर होता था। शिकारी कुत्तों को साथ लेकर लोग सूअर और हाथीका शिकार करते थे। जुआ खेलनेकी चाल थी। चतुरंगिणी सेनायें थीं। क्षत्रियवर्णके लोग अधिकतर लड़ाई-भिड़ाईका काम करते थे। परन्तु ब्राह्मण भी युद्धक्षेत्रमें उपस्थित रहा करते थे। लड़ाईके समय नगाड़े बजाते थे और झण्डा फहराते थे। धनुष, बाण, बरछा, कटारी और गदा, लट्ठ लेकर लड़ते थे।

समाजमें स्त्रियोंका बड़ा आदर था। पतिके साथ साथ स्त्री भी नित्य यज्ञ करती थी। कुछ लोग अपनी कन्याओंको अच्छी शिक्षा भी देते थे। * राजकुमारी घोषा, ममता, अपाला, विश्ववारा आदि स्त्रियोंके रचित मन्त्र भी ऋग्वेदमें मिलते हैं। स्त्रियां कभी कभो लड़ाईमें भी भाग लेती थीं। पर्देकी प्रथा तथा बाल्य विवाहकी प्रथा नहीं थी। कन्याएं स्वयम्बरा भो होती थीं। कोई कोई जीवन भर कुमारी भी रहती थीं।

यजुर्वेदका समय—तुमको पहिले ही यह बात कही गई है कि सामवेदमें यज्ञके समय गाने योग्य गीतें मिलती हैं। ये सब गीतें मुख्यतः ऋग्वेदसे ली गई हैं। अतः ऐतिहासिक दृष्टिसे इनका मूल्य थोड़ा ही है। परन्तु यजुर्वेद एक स्वतन्त्र रचना है। अतः इसका ऐतिहासिक मूल्य है। यजुर्वेदके पढ़नेसे यह पता चलता है कि उस समय तक आर्य लोग सप्तसिन्धु प्रदेशसे निकल कर मध्य देश पर्यन्त फैल गये थे। तथा यज्ञ करनेके विधि-विधान बड़े कठिन होते जाते थे। उन दिनों लोगोंका यह विश्वास हो गया था कि यज्ञादि न करने हीसे पाप होता है।

* Rig Veda, II, 28.9.

तथा यज्ञोंके प्रभावसे देवता भी लोगोंके वश आ जाते
यज्ञके प्रभावको बढ़तीके साथ साथ ब्राह्मणोंका प्रभाव भी
चढ़ा था। वर्ण भेदकी प्रथा अच्छी तरहसे जम गई थी,
धीरे धीरे बहुतसी छोटी छोटी जातियोंकी उत्पत्ति हो रही
इस वेदसे यह भी मालूम होता है कि उन दिनोंके आर्य लोग
निवासियोंके साथ इतने हिल मिल गये थे कि वे उनके दे
नाग आदिको भी मानने लगे थे।

वैदिक धर्मकी अवनति—ऐसेही बाहरी ढकोसलोंने वै
धर्म, जो कि पहले पहल सीधा-सादा था, उसे बिलकुल वि
दिया। एक एक यज्ञ अन्त तक सम्पन्न करनेके लिये कई
बहुतसे धन तथा बड़े परिश्रमकी आवश्यकता होती थी। य
द्वारा ब्राह्मण लोग अधिक शक्तिशाली होनेके कारण पहिले
पवित्र नहीं रहे। अतः जनता धीरे धीरे यज्ञादिसे मुंह मो
लगी। इसीका फल उपनिषद्में दीख पड़ता है।
यज्ञादिसे ज्ञानको अर्थात् ब्रह्मविद्याको श्रेष्ठ माना गया
इसके उपरान्त बुद्धजीने अहिंसात्मक करुण सन्देश सुना
सारी जनताको अपने वशमें कर लिया।

(५) आणु-वैदिककाल (पूर्वार्द्ध)

आणु-वैदिककाल—वैदिक युगके पश्चात्के समय
विद्वान् लोगोंने आणु-वैदिक कालका नाम दिया है। इसी यु
वेदांग और उपनिषद्—जिनका वर्णन वैदिक साहित्यके स
पहिले ही किया गया है, तथा षड्दर्शन, इतिहास और पुराणों
रचना हुई। इसी युगमें दिखौआ ढकोसलोंके विरुद्ध बड़े लोग
बड़ी बड़ी बातें कहीं और आत्मा तथा मुक्तिकी खोजमें अप
सारी बुद्धि भिड़ा दी। इसी समय हिंसात्मक वैदिक-धर्म
विरुद्ध भगवान बुद्धदेवने अहिंसा धर्मका प्रचार किया। इ

दिनों प्रवीन हिन्दू समाजकी रीति नीतिका संकलन हुआ जिसका अबतक हमारे ऊपर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा है। इसी समयसे अनेक प्रकारकी पूजा चल निकली जिसे आजतक हम लोग मानते हैं। अतः भारतके इतिहास पर इस युगका प्रभाव अत्यन्त अधिक है। परन्तु दुःखका विषय यह है कि इस युगका इतना अधिक प्रभाव होते हुए भी, निश्चित रूपसे कालका निर्णय नहीं हो सका। फिर भी काम चलानेके लिये सम्भवतः १५०० ई० पू०से १०० ई० तक समय निर्धारित करना अनुचित नहीं होगा। इसीके अन्तर्गत ६०० ई० पू०से १०० ई० तक बौद्धोंका प्रभाव रहा है।

तन्त्र—बहुतोंका यह अनुमान है, कि महायान नामक बौद्धमतके उदय होनेके बाद तान्त्रिक मतका विकास हुआ। परन्तु ऐसा विचार करना भूल है। तान्त्रिक मतकी प्राचीनता वैदिक समय जैसी है। तन्त्रोंमें मुख्यतः शक्ति पूजाके नियम दिये हुए हैं और साथही साथ ज्ञान, भक्ति, कर्म, आदि विषयोंका विचार है। पुराणोंके ऐसा इनमें आचार, नियमादि, योग तथा प्राचीन कथायें भी बहुत हैं। उत्तर कालीन वैदिक साहित्य पर भी यथा उपनिषदमें केन और श्वेताश्वतर आदि पर इसका कुछ असर पड़ा है। तथा नवीन हिन्दू धर्म पर भी इसका असर कम नहीं पड़ा। तान्त्रिक सिद्धान्तोंके सहारे हीसे महायान मतकी इतनी उन्नति हुई थी। अन्तमें बौद्ध तथा तान्त्रिक सिद्धान्तोंका एकत्र समावेश हो गया और तन्त्रोंकी स्वतन्त्रता जाती रही। अन्तिम दिनोंमें जब अयोग्योंके हाथ यह अनमोल शक्ति लगी, तभीसे इसमें कुनीतिका समावेश हुआ। यहां पर यह बात कह देनेकी आवश्यकता है कि मारण, उच्चाटन, स्तम्भन, आदि कर्म पीछेसे जोड़े गये थे।

स्मृतियां पुस्तकें—कल्पसूत्रका वर्णन करते हुए तुमसे यह कहा गया है कि धर्म-सूत्रकी पुस्तकें कल्पका एक अङ्ग

हैं, तथा वे स्मृतिके पूर्वज हैं। धर्म-सूत्र तथा स्मृतिकी पुस्तक अन्तर यही है कि धर्मसूत्रकी पुस्तकें संक्षेपमें लिखी गई और स्मृतिकी पुस्तक कवितामें लिखी गई हैं, दोनोंमें प्रकारके विषयोंके वर्णन किये गये हैं। दोनोंमें शुद्धाशु जात-पांत, प्रायश्चित्त, विवाहादि संस्कार, दण्डादि विषयों विचार है। धर्मसूत्रकी पुस्तकें बहुत सी मिलती नहीं स्मृतियोंमें मनु और याज्ञवल्क्यकी स्मृतिका आदर आज हिन्दू करते हैं। इनके अतिरिक्त हारीत, विष्णु, आपस्त अत्रि आदिकी लिखी हुई स्मृतियां भी हैं। परन्तु म धर्मशास्त्र सबसे प्राचीन है।

मानव धर्मशास्त्र—मनु रचित धर्मशास्त्रके पढ़नेसे लोगोंको आणु-वैदिक कालकी सामाजिक अवस्थाके बारेमें पूरा ज्ञान होता है। इन दिनों उच्च जातिके लोग वर्णा धर्मको मान कर चलते थे। तीनों उच्च वर्णके लोग पढ़ते थे, परन्तु पढ़ाने वाला ब्राह्मण होता था। शादी-ब्याहमें कोई रुकावट न रहनेके कारण अनेक प्रकारकी छोटी छोटी जातियां बन गईं थीं। इनमेंसे कुछ तो समुदायके नामसे परिचित हुईं; जैसे मागध, आभीर आदि। कुछ लोग जिस देशमें बसे थे उस देशके नामसे परिचित हुए; जैसे बैदेह, आदि। कुछ लोग अपने पेशेके नामसे परिचित हुए; जैसे आदि। समाजमें ब्राह्मणोंकी बड़ी प्रधानता थी, इनको अपराध कर दण्ड कम मिलता था, राजकर नहीं देना पड़ता था, तथा कर्ज लेनेसे सूद भी कम देना पड़ता था। वे नौकरी नहीं थे। राजाका बड़ा आदर था। लोग उसको देवता तुल्य थे। आठ मन्त्रियोंकी सहायतासे वह राज काज चलाता मादक-वस्तु, जुआ और शिकार आदिसे दूर रहना पड़ता रण-भूमिमें मृत्यु होनेकी बड़ी प्रशंसा होती थी। लोग प्याज, लहसुन आदि नहीं खाते थे। देवता को

कर मांस खानेकी रीति थी। विधवा स्त्रियोंके लिये जल-मरनेकी प्रथा तब तक नहीं चली थी। स्त्रियां पति भक्ता होती थीं तथा पतिकी मृत्युके उपरान्त विधवा होकर रहती थीं। जातिके अनुसार अपराधियोंको दण्ड मिलता था। इसके अतिरिक्त उन्हें सामाजिक दण्ड भी दिया जाता था। युद्धके नियम कठोर न थे। देश पर विजय प्राप्त करनेके अनन्तर विजयी पहिले राजाके किसी सम्बन्धीको सिंहासन देता था तथा प्रचलित रीति-नीतिमें हेरफेर नहीं करता था। राज-कर पैदावारका छठां भाग था। लोग प्रायः वैदिक धर्मके अनुयायी होकर यज्ञादि करते थे। परन्तु साथ ही साथ मन्दिरोंमें देवताकी भी पूजा होती थी तथा देवल ब्राह्मणोंको लोग नीच समझते थे।

जाति भेदकी प्रथा—ऋग्वेद हीमें सर्व प्रथम वर्ण-भेदकी कथा लिखी है। इसके अनुसार परब्रह्मके सिरसे ब्राह्मणोंकी, बाँहसे क्षत्रियोंकी, जाँघसे वैश्योंकी और पाँवसे शूद्रोंकी उत्पत्ति हुई थी। इसका प्रकृत अर्थ यह है कि सामाजिक शरीरके ये कुल भिन्न भिन्न अङ्ग मात्र हैं। ब्राह्मणोंका धर्म यजन, याजन, दान, प्रतिग्रह, पठन और पाठनका था। क्षत्रियोंका धर्म यजन, दान, पठन, तथा प्रजा-पालनका था। वैश्यका धर्म यजन, दान, पठन तथा कृषि, व्यापार और पशुपालनका था। शूद्रका धर्म उच्चवर्णके लोगोंकी सेवा करना और हाथके काम करनेका था। इसके अनन्तर यजुर्वेदके पढ़नेसे ऐसा मालूम होता है कि भिन्न भिन्न व्यवसायके अनुसार ऊपर लिखित चारों वर्ण अलग अलग हो गये। तथा व्याह-शादीमें कोई रुकावट न होनेके कारण कई एक मिश्र जातियोंकी भी उत्पत्ति हुई। कालान्तरमें मनु भगवानने अपने धर्मशास्त्रमें अनेक मिश्र जातियोंकी उत्पत्तिका वर्णन किया है और प्रत्येकका व्यवसाय आदि भी निश्चय कर दिया है। इस प्रकार कर्मके अनुसार तथा उत्पत्तिकी विभिन्नताके कारण और

धीरे भिन्न भिन्न जातियाँ बनने लगीं, तथा अबतक बनती जा
हैं। एक जाति दूसरी जातिके साथ खान-पान तथा व्याह शादी
व्यवहार नहीं रखती; प्रत्येकका व्यवसाय भी एक दूसरेसे भि
होता है। आजकल प्रायः चार हज़ार जातियाँ भारतवर्ष भरमें
इनमेंसे कुछ जातियां तो समुदाय विशेषसे हैं, यथा—जाट आ
कुछ पेशेके कारण बनी हैं, जैसे चमार आदि; कुछ सम्प्रदाय भे
बनी हैं, यथा रामानुजी, आर्यसमाजी आदि; कुछ मिश्र-विवा
कारण बनी हैं, जैसे पारशव आदि; कुछ जातियां विधवा-वि
सदृश रीति-नीतिमें भेद पड़नेके कारण बनी हैं, और कुछ तो
देशमें रहनेके कारण बनी हैं, जैसे नम्बूद्री ब्राह्मण आदि।

उपनिषद् और पुराणोंके पढ़नेसे ज्ञात होता है कि कि
समयमें ब्राह्मण और क्षत्रियोंके बीच इस विषय पर लड़ाई छि
थी कि कौन वर्ण श्रेष्ठ है। इसपर विद्वत्ता तथा त्यागके म
आदर्शको सामने रखनेके कारण अन्तमें ब्राह्मणोंकी ही जीत हुई

दोष और गुण—इसमें कोई सन्देह नहीं कि प्राचीन
में जब आर्य लोग इस देशमें नये नये आये हुए थे, उन
उनकी स्वतन्त्रताकी रक्षा करनेके लिये जाति भेदकी संस्था
आवश्यकता थी, नहीं तो वे भी अनार्य जातिके साथ बिल्कुल
मिल जाते। प्रत्येक व्यवसाय एक एक छोटी छोटी जातिके हा
रहनेके कारण उनका पैतृक व्यवसाय होता गया। इस प्र
शिल्प-विद्याकी बड़ी उन्नति हुई। और व्यवसायोंका निश्चय
जानेके कारण समाजमें शान्ति स्थापित हो गई;—एक दू
जलते नहीं। पुनः जाति भेदके होने हीके कारण बार बार
शियोंकी चढ़ाइयां होने पर भी हिन्दू समाज, हिन्दू धर्म
हिन्दुओंकी रीति-नीतिमें अधिक परिवर्तन नहीं होने पाया
इसी कारण लोग इसे सनातन धर्म कहते हैं।

परन्तु जैसे जैसे दिन बीतते गये, धीरे धीरे इस प्रथाकी
इयां भी दीख पड़ीं। सारे देशमें सैकड़ों जातियां बननेके का

जातीय एकताका भाव उत्पन्न नहीं होने पाया । इसका फल यह हुआ कि राजनीतिकी दृष्टिमें हमारे देशवासी पिछड़ गये । नीच कुलमें जन्म होनेके कारण बहुतसे गुणी लोगोंके गुणोंका पर्याप्त विकास नहीं होने पाया । इसका फल यह हुआ कि समाजकी शैली निश्चित प्रकारसे बंध जानेके कारण नये आविष्कार प्रभृति अधिक नहीं होने पाये । अतः नीच कुलके लोगोंमें उत्साहकी कमी हुई, तथा उच्च जातिके लोगोंमें घमंड उपजा और एक जाति दूसरेसे जलने लगी । आजकल पढ़े-लिखे लोगोंमें जाति-विचारका प्रभाव कुछ शिथिल हो चला है, परन्तु इनकी संख्या बहुत ही कम होनेके कारण समाज पहिले जैसा ही चल रहा है और खुल्लम-खुल्ला थोड़े ही लोग इसके नियम तोड़नेका साहस करते हैं । अतः बाहरी तूफान अभी तक हिन्दू समाजमें कोई परिवर्तन नहीं ला सका ।

चतुराश्रम—ऋषियोंका यह विश्वास था कि उच्चकुलमें जन्म होने होसे लोगोंको जीवन भरमें तीन ऋणोंका परिशोध करना पड़ता है । इनके नाम यथाक्रमसे ये हैं—ऋषि-ऋण, पितृ-ऋण और देव-ऋण । अतएव उन्होंने मानव-जीवनको चार भागों में विभक्त कर दिया, जिससे कि प्रत्येक भागमें एक एक ऋणसे मुक्त हो सकें । (१) ब्रह्मचर्य—यज्ञोपवीत होनेके बाद बालकको गुरु-कुलमें रह कर विद्या-शिक्षा और संयम-शिक्षा करनी पड़ती थी । इसी उपायसे वे ऋषि-ऋणसे मुक्त होते थे । (२) गार्हस्थ्य—विद्या-शिक्षा समाप्त होने पर उनको ब्याह करना पड़ता था । अतिथि-सेवा, पशु-पक्षियोंको भोजन देना तथा पुत्रोत्पादन करके पितृ-ऋणका परिशोध करना पड़ता था । (३) वानप्रस्थ्य—इसी प्रकारसे पितृ-ऋणसे मुक्त होकर उनको देव-ऋणसे मुक्त होनेके लिये जीवनका तीसरा भाग जंगलोंमें बिताना पड़ता था । वहां वे ज्ञानकी चर्चामें लगे रहते थे । (४) परिव्राजक—जीवनके अन्तिम अंशमें इन्द्रियोंको दमन कर उन्हें देशाटन करना पड़ता था ।

गृहस्थोंको धर्मोपदेश देते थे तथा जिससे संसारको कल्या
पहुंचे ऐसे काम करनेमें लगे रहते थे ।

षड्-दर्शन—आत्माके यथार्थ ज्ञानका नाम मुक्ति है। दर्शनका मुख्य उद्देश्य आत्म-ज्ञानको प्रबोधित करनेका है। प्राचीनकालमें भिन्न भिन्न ऋषियोंने भिन्न भिन्न उपायोंसे मु मिलनेके मार्ग बतलाये थे। उन्हींके सिद्धान्तका नाम दर्शन प है। (१) कणादके वैशेषिक दर्शनमें पदार्थ-तत्व (Scienc की विशद रूपसे आलोचना की गई है। (२) गौतमके न्य दर्शनमें वादानुवाद तथा तर्क शास्त्र (Logic) की आलो की गई है। (३) कपिलके सांख्य दर्शनका नाम आदि द पड़ा है। इसमें सृष्टि शास्त्रका वर्णन किया गया है। (४ पतञ्जलिके योग दर्शनमें चित्तको एकाग्र करनेके विविध उ बतलाये गये हैं। (५) जैमिनीके मीमांसा दर्शनमें कर्म-काण्ड गूढ़ तत्वोंकी आलोचना की गई है। (६) वादरायणके वेदा दर्शनमें सृष्टिकी सम्पूर्ण वस्तुओंके साथ पारस्परिक ऐक्य भ प्रदर्शन पर विचार किया गया है।

इतिहास—हिन्दू शास्त्रकारोंने रामायण और महाभारत नाम इतिहास दिया है। पहिले पहल ये आज जैसी पुस्तकों आकारमें नहीं रची गईं थीं। प्राचीन समयमें गायक लोग (सू सारे देशमें घूम घूम कर इनकी मुख्य मुख्य कहानियां गाते थे धीरे धीरे किस्से कहानी जोड़ते जोड़ते रामायण तथा महाभा इतनी भारी पुस्तकें बन गईं। महर्षि वाल्मीकि लिखित रामायण रचना बौद्ध ग्रन्थोंके पहिले हुई थी, अतः विद्वान् लोगोंकी रा यह है कि कमसे कम ई० पू० आठवीं सदीमें इसकी रचना हुई महाभारतकी भारी लड़ाईके बारेमें एक यूरोपीय पण्डितकी रा यह है कि ई० पू० १००० में यह युद्ध हुआ था*। पर

* Pargiter: Anc. Ind. Hist. Traditions.

हिन्दुओंका यह विश्वास है कि महाभारतसे रामायण अधिक प्राचीन है। महाभारतके लेखक महर्षि कृष्णद्वैपायन व्यासजी थे।

रामायण और महाभारत—इन प्राचीन इतिहासोंकी मूल कहानियां तुम्हें अवश्य मालूम हैं, अतः इनके विस्तृत वर्णनकी यहांपर कोई आवश्यकता नहीं। इन ग्रन्थोंमें आर्य सभ्यताका प्राचीन गौरव इतनी उत्तमतासे दर्शाया गया है कि पढ़ते ही एक जीता जागता तत्कालीन आर्य सभ्यताका चित्र खड़ा हो जाता है। इन्हीं काव्योंमें सर्व प्रथम सच्ची कविताका विकास हुआ है। करोड़ों हिन्दू आजतक पितृ-भक्ति, भ्रातृ-प्रेम, स्वामि-भक्ति एवं राज-भक्ति आदि सद्भावोंके लिये इन्हीं ग्रन्थोंको आदर्श मानते हैं। राजनीतिक क्षेत्रमें अनेक परिवर्तन होनेपर भी इन्हीं पुस्तकोंकी सहायतासे हिन्दुओंका आदर्श इतना ऊंचा है। ये ग्रन्थ हमारी जातीय सम्पत्तिमेंसे हैं। महाभारतकेही अन्तर्गत श्री भगवान कृष्ण चन्द्र द्वारा वर्णित श्री मद्भगवद्गीताका वर्णन आता है। इसमें भगवान कृष्णने अपने सखा अर्जुनको निष्काम धर्म तथा कर्मयोगका बड़ाही मार्मिक उपदेश दिया है, जिससे अर्जुनका मोह दूर होकर महाभारतके युद्धमें प्रवृत्ति हुई।

तत्कालीन समाज—वर्ण-भेद और आश्रमकी प्रथा अच्छी तरहसे जम गई थी। उच्च जातिके लोग बाल्यावस्थामें गुरुकुलमें रह कर विद्याध्ययन करते थे। वहां रह कर वेद, वेदांग आदिका पठन करते थे। सभी ब्राह्मण यजन याजन कर पेट नहीं पालते थे। बहुतसे ब्राह्मण राजाके अधीन बड़ी बड़ी नौकरियां—यथा, राज-पुरोहित, आमात्य, सभासद्, मन्त्री, सेनापति आदिकी, कर लेते थे; तथा कुछ ज्योतिषी, वैद्य, पुजारी आदि बन कर अपना पेट पालते थे। क्षत्रिय लोग ब्राह्मणके समान धार्मिक कृत्य करने पर भी समयकी कमी होनेके कारण वे अधिक समय लड़ने-भिड़नेके काममें बिताते थे। राज्यमें शान्ति स्थापित करनेके बदले प्रजा उन्हें अपनी आयका छठा भाग राजकरके रूपमें

देती थी। धनी होनेके कारण वैश्योंको भी आश्रम प्रथामें स्थान
मिला था। शूद्रों तथा स्त्रियोंको स्थिति एकसी थी। वे
कुछ धार्मिक क्रिया नहीं कर सकते थे। परन्तु धीरे धीरे
अवस्थाका परिवर्तन होता गया। पहिले शूद्रको तपस्या करना।
अधिकार नहीं था। परन्तु महाभारत तथा पुराणोंमें शूद्र-
सका उल्लेख है। कुरुक्षेत्रकी लड़ाईमें वैश्य और शूद्र सैनिक
उल्लेख है। पेशेके अनुसार बहुतसी छोटी छोटी जातियां बनी
साधारण रीतिसे सभी वर्णके लोग अक्रोधी होना तथा अहिंसा
धर्मका पालन करना, क्षमाशील, अनृणी, सत्यवादी, अति
सेवक, पितृ-मातृ-सेवक तथा धार्मिक होना अपना कर्त्तव्य
समझते थे। स्त्रियां वेद पाठ नहीं कर सकतीं थीं, न तो
विवाहके सिवाय वैदिक संस्कारादि ही होता था। परन्तु
उनसे दयाका बर्ताव करते थे। उनका अधिकार मर्द जैसा
न था। वाल्य-विवाहकी रीति प्रचलित नहीं थी। धनी
बहु-विवाह करते थे तथा पर्देकी रीतिको मानकर चलते
अच्छे घरानेके पुरुष तथा स्त्री तरह तरहके गहने पहिनते
कुण्डल, कड़ा, अनन्त, हार आदि साधारण गहने थे। पुरुष
स्त्रियां आम तौर पर एक कपड़ा और एक चद्दरका व्यवहार
थे। कपड़ा पहिनने की रीति आज जैसी थी। क्षत्रिय वर्ण
नीच जातिके लोग मांस खाते थे, नहीं तो आम तौर पर निरा
आहार की प्रथा थी। गौ और ब्राह्मणका बड़ा आदर था। ब्राह्मण
को लोग भूदेव कहकर मानते थे। राजे कभी कभी
धूमके साथ अश्वमेध और राजसूय नामके यज्ञ करते थे। धीरे
वैदिक देवताओंका आदर घटता गया, और उनके स्थान पर
विष्णु, कुवेर, गणेश आदि आधुनिक देवताओंकी पूजा करने
रीति चल निकली। मन्दिर बनाकर लोग इनको पूजने लगे थे।

राजाका आदर्श बड़ा ऊंचा था। उनको अपनी प्रवृत्तियों
दमन करके फिर शत्रु दमन करनेका प्रयत्न करना पड़ता था

प्रजाकी भलाई करना, ठीक ठीक विचार करना, लोभ शून्य होना भीतरी और बाहरी शत्रुके हाथसे प्रजाको बचाना, विद्वानोंका उत्साह बढ़ाना तथा वर्णाश्रम धर्मकी रक्षा करना उनका कर्तव्य था। अन्यथा कर्तव्यहीन राजाका प्रजा बहिष्कार करती थी। ऋषि लोग केवल जप-तप हीमें नहीं लगे रहते थे। वे अनार्य लोगोंके बीचमें आर्य सभ्यताके भी विस्तार करनेमें लगे रहते थे। उनकी ऐसी ही कृपासे आजतक सारे देशकी सभ्यता का ढंग एकसा है।

पुराण—हिन्दू शास्त्रकारोंने पुराणको एक उपवेद कह कर माना है। इसका अर्थ यह है कि वेदोंमें बड़े बड़े जिन सिद्धान्तोंका बीज मात्र मिलता है, उन्हीं सिद्धान्तोंका विस्तारित विवरण पुराणोंमें है। पहले पुराण की एकही रचना थी, पश्चात् इसके भाग किये गये। प्रत्येक पुराणमें इन पांच बातोंका समावेश है—सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर और वंशानुचरित। अतः हर एक पुराणको दो भागमें विभक्त किया जा सकता हैं—सृष्टि वर्णन तथा इतिहास। सृष्टि वर्णनमें प्राकृतिक भूगोलकी मोटी मोटी बातें, यथा पृथिवीकी सृष्टि, समुद्र वर्णन, नदी-पर्वत आदिका विवरण, देश विभाग, तीर्थ-यात्रा आदिका समावेश है। तथा दूसरे विभागमें, अर्थात् इतिहास-शाखामें प्राचीन कथा, वंश-विवरण आदिका ब्योरा मिलता है। इसके अतिरिक्त आधुनिक हिन्दू समाजकी रीति-नीति, तथा धर्म विश्वासका बहुत ही अच्छा विवरण पुराणोंमें ही मिलता है। पुराणोंका रचना-काल अभी तक निश्चित नहीं हुआ है। यूरोपीय पण्डित लोगोंकी राय है कि पुराणोंका रचना-काल पांचवीं शताब्दी है। परन्तु पुराणोंका उल्लेख रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थोंमें मिलता है, तथा पाली साहित्यमें भी कृष्ण-चरित्र आदिका वर्णन है। अतः सम्भव है कि बौद्ध साहित्यकी रचनाके पहिले ही पुराण की रचना हुई हो। परन्तु सर्व प्रथम पुराण पुस्तकके आकारमें नहीं था। सूत लोग इसे याद रखते थे तथा यज्ञादिके

अवसर पर दोहराते थे। पीछेसे ये कुल लिखे गये तथा नई
बातें अलगसे जोड़ते गये। कुल जमा अठारह महापुराण
उतनी ही संख्या उप-पुराणों की है। महापुराणोंमें वायु, मत्स्य,
विष्णु सबसे प्राचीन हैं तथा भविष्य, नारद आदि सबसे न
हैं। उप-पुराणोंमें देवी-पुराणका विभव अधिक है।

सामाजिक स्थिति—ज्यों ज्यों दिन बीतता गया,
त्यों प्राचीन समाजका धीरे धीरे परिवर्तन भी होता गया। बुढ़
लोग पहिलेकी भांति जंगलमें नहीं सिधारते थे। घरहीमें
या तीर्थ स्थानोंमें जाकर मरना अपना धर्म समझते थे।
विवाह करनेकी रीति भी बन्द कर दी गई। अतः कोई
जातिके बाहर ब्याह करने नहीं पाता था। बौद्ध तथा जैन
का प्रभाव पड़नेके कारण अहिंसा धर्मका अधिक प्रचार हु
लोगोंका मन यज्ञादिसे हटा कर तपस्या, योग, पूजा-पाठ
तीर्थ-यात्रा पर अधिक ज़ोर दिया गया। अनेक प्रकारके देव
की पूजा करने की रीति चल निकली। इनमेंसे कुछ देव
अनार्यों के थे। शूद्र तथा स्त्रियोंको अधिकतर अधिकार
गये। अब वे पाक यज्ञ, पुराण-श्रवण, नारायण पूजा आदि
सकते थे। पुरुष की मृत्यु होने पर स्त्रियाँ सती हो जाती
तरह तरहके सम्प्रदाय-यथा, सौर, गाणपत्य, कापालिक,
वैष्णव आदिकी उत्पत्ति इन्हीं दिनोंमें हुई। इस रीतिसे धीरे
आधुनिक हिन्दू-समाजके संगठनका इतिहास केवल पुराणों
पाया जाता है।
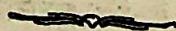
) आणु-वैदिक कालकी शिष्टता (उत्तरार्द्ध) ।

हमारे देशके इतिहासमें आणु-वैदिक कालका महत्त्व एक
मात्र साहित्य तथा धर्म ही के विस्तीर्ण क्षेत्रमें नहीं है।
न्हीं दिनोंमें नाना प्रकारकी विद्या, कला आदिका उदय हुआ
गैर यद्यपि आजकल इन विद्याओंका अस्तित्व तक लोप
गया है, तथापि संक्षेपमें इनका परिचय देना परमावश्यक है।

कला तथा विद्या—प्राचीन ग्रन्थोंमें ६४ विद्या तथा ६४
कलाओंका टूटा फूटा विवरण कहीं कहीं मिलता है। इससे
सा मालूम होता है कि हाथकी सफाईके काम जिससे
चत्त प्रसन्न हो उसका नाम कला पड़ा। यथा कठपुतलीका
चाच (सूत्र क्रीड़ा); सोना आदिका बनाना (धातु-वाद; कीमियां)
ढ़ईका काम (तक्षण); बारीकसे बारीक सूत कातना (तर्कु कर्म)
रस्थ द्रव्योंको अपनी ओर खींचना (आकर्षक क्रीड़ा); दूसरोंकी
ांखोंमें धूर डालना (छलितक); मुष्टिकाके भीतर रक्खे हुए
व्योंका नामादि कथन तथा अस्पष्ट अक्षरोंका पठन (अक्षर-
ष्टिका कथन); औरोंके चिन्तित विषयों पर कविता रचना
ानसी-काव्य-क्रिया); इच्छानुसार अपना भेष परिवर्तन (कौचु-
र योग); आदि। उसी तरह जिसमें मन्त्रादि और अधिक
न्ताकी आवश्यकता हो उसका नाम विद्या पड़ा। यथा
मसी विद्याके प्रभावसे एकाएक अंधेरेकी सृष्टि करना;
रुड़ी विद्याके बलसे सांपके काटे हुए मनुष्यको जिलाना;
ह विद्याके प्रभावसे पत्थरके रंगको बदल देना; विशोषिणी
द्याके द्वारा पानीको सुखा देना; सर्व-जन्तु-रुत विद्याके बलसे
व जीवोंकी भाषाको समझ लेना इत्यादि।

विज्ञान—साथ ही साथ विज्ञानकी भी बड़ी उन्नति
ई। खेदका विषय है कि आज कल ये सब पुस्तकें
दाचित् ही मिलती होंगी। इन पुस्तकोंका नाम शायद पढ़ा

है। यथा उद्भिद्‌विद्या (Botany) के द्वारा पेड़-पौं
पहिचान होती है; इसका सम्बन्ध अधिकतर आयुर्वेदसे
ज्योतिष शास्त्र, जिसके साथ उच्च कोटिका गणित
हुआ है; पशुपालन विद्या, जिसके अङ्ग हस्ति-विद्या, अश्व-
गो-विद्या, आदि हैं; गन्ध-शास्त्र, जिसके द्वारा नाना प्रक
सुगन्धित द्रव्योंकी परीक्षा की जाती थी; सूद विद्या वा
शास्त्र; पराशरका कृषि शास्त्र; कश्यपकी चित्रविद्या; तथा
वास्तु-शास्त्र इस शाखाके इने गिने नमूने मात्र हैं।

नाट्यशास्त्र—यूरोपीय विद्वानोंकी राय यह है, कि
देशसे सम्बन्ध स्थापित होनेके अनन्तर भारतवर्षमें नाटका
अभिनय करनेकी रीति चल निकली। परन्तु यह उक्ति
भ्रमात्मक है। इसका एक मात्र यही प्रमाण देना यथेष्ट
कि ग्रीक लोग खुले मैदानमें, बगैर सीन सीनरीके
करते थे, और हमारे पूर्वज आज कलकी तरह सीन
साथ अभिनय करते थे। अतः भारतीय विद्वानोंका अनुमान
कि इस देशमें नाटकका अभिनय प्राचीन समयसे होता आया
वास्तविक जगत्‌का ठीक ठीक अनुकरण करना ही नाट
उद्देश्य समझा जाता था। अतः संस्कृत नाटकोंमें
अश्लील वा भयंकर दृश्योंका समावेश, तथा एकही रसको
रगड़ कर उसको नीरस कर देनेकी रीति नहीं दीख
भरत ऋषिके नाट्य-शास्त्र (ई० पू० २००) के पढ़नेसे
होता है कि नृत्य, गीत तथा अभिनय नाटकके अंग हैं।
भीत पर तरह तरहके दृश्य खींचे जाते थे। अभिनेताको
भिन्न समयों पर भिन्न भिन्न भाषाओंमें बातचीत करनी
थी। प्रेक्षागृह गोल, त्रिभुज और चौकोना आदि भिन्न
आकारके होते थे।

लेखन-प्रणालीका विकास—यूरोपीय पण्डितोंका

यह है कि भारतवर्षकी सबसे प्राचीन लिपि, जिसका नाम

ड़ा है, उसका उद्भव उत्तरीय सेमिटिक लिपिमालासे हुई थी, था इसे प्राचीन द्रविड़ व्यापारी लोग वैबीलनसे आते समय हांके मालके साथ वहां की लिपि भी लेते आये। अतः ८०० ० पू०के पहिले हिन्दोस्तानियोंको लिखनेकी रीति नहीं आती थी। परन्तु कुछ देशी विद्वानोंकी यह राय है कि हमलोगोंने किसी बाहरी जातिसे अपनी लिपि माला उधार नहीं ली, वरन् स देशमें तान्त्रिक प्रतीपोंसे ही ब्राह्मी लिपिका विकास हुआ था। चाहे कुछ हो, इतनी बात सही है कि अथर्व वेदमें सर्व प्रथम लिखी हुई पुस्तकका उल्लेख मिलता है*। पुनः रामायणमें रामाङ्कित अंगूठी तथा तीरका उल्लेख है। तथा बौद्ध ग्रन्थों † का यह कथन है कि बुद्धदेव ६४ प्रकारकी लिपिमालासे परिचित थे। प्राचीन समयमें भोजपत्र तथा ताड़की पत्तियों पर पुस्तकादि लिखनेकी चाल थी और सरहरीका कलम बनता था। कोयला पानीमें घोल, चीनी और गोंद मिला कर स्याही बनानेकी रीति थी। मुगलोंके समयसे पुस्तकादि लिखनेके लिये अधिकतर कागज़का प्रयोग होने लगा। प्राचीन समयमें तांबा, पत्थर, सोना आदिके पट्ट पर भी खोदकर लिखनेकी रीति थी। आधुनिक हिन्दी, बंगला, आदि लिपिमालाएं प्राचीन ब्राह्मी लिपिकी सन्तति हैं।

युद्ध-विद्या—सूक्ष्म-कलाके साथ साथ युद्ध-विद्या की भी भारी उन्नति हुई थी। सेना साधारणतः चतुरंगिनी होती थी जिसमें पैदल, घुड़सवार, हाथी और रथी होते थे। सेना-दल अनेक प्रकारसे विभाजित किया जाता था। जैसे एक रथ, एक हाथी, तीन घुड़सवार और पांच पैदलकी एक पत्ति बनती थी, तथा २१, ८, ७० रथ, उतने ही हाथी, १,०६, ३, ५० पैदल, और ६५, ६, १० घोड़ेकी एक अक्षौहिणी बनती थी। अफसरोंमें पत्ति-

* (A. V. XIX 68 & 72)

† Lalita Vistara.

पालका पद सबसे नीचा, तथा सेनापतिका पद सबसे बड़ा
था। इसके अतिरिक्त रथियोंके रथप, घुड़सवारोंके अश्वा
तथा हाथियोंके गजाधिप अलग अलग अफसर होते थे। बड़े
तरह के अस्त्र और शस्त्र काममें लाये जाते थे। अस्त्रोंके
मंत्रका व्यवहार होता था तथा शस्त्रोंमें कुछ तो छोड़े जा
जैसे तीर आदि, और कुछ को हाथसे पकड़ कर लड़ना पड़ता
जैसे गदा, खड्ग आदि। इसके अतिरिक्त बड़े बड़े यन्त्र जैसे क्षे
शतघ्नी आदि भी काममें लाये जाते थे। नाना प्रकारके व्यूह
कर लड़नेकी रीति थी; कुछ व्यूह तो जानवरोंके आकारके हो
जैसे बराह, मकर गरुड़ आदि। और कुछ व्यूह द्रव्योंके आका
होते थे, जैसे शकट, अर्ध-चन्द्र, दण्ड आदि। युद्धके नियम
नहीं थे। भागते हुए, छिपे हुए तथा निरस्त्र शत्रुको कोई मार
था; न स्त्रियों वा बच्चों हीको कोई छेड़ता था। रात्रिके समय
बन्द रहता था। किसानों तथा देवमन्दिरों पर कोई आक्र
नहीं करता था। लोगोंका यह दृढ़ विश्वास था कि युद्ध
प्राण तजनेसे लोग स्वर्गको सिधारते हैं तथा वहांसे भागने
को नरकमें जाना पड़ता है।

शिक्षा—तुमसे पहिले ही कहा गया है कि यज्ञोप
होनेके उपरान्त उच्च तीन वर्णके बालक गुरुकुलमें रह
विद्या सीखते थे। वहां वे गुरुकी सेवामें लगे रहते
विद्याध्ययन करते, तथा भिक्षान्नसे पेट पालते थे। शि
समाप्त होने पर वे गुरुजीको दक्षिणा देकर समावर्तन नाम
स्नान करते थे। तदनन्तर वे गृहस्थ बनते थे। बड़े
राजकुमारोंकी शिक्षा घर ही पर दी जाती थी। उपनिषदों
विदित होता है कि बड़े बड़े ऋषि गण क्षत्रियोंसे ब्रह्मवि
सीखते थे। वे नीच जातिसे विद्या सीखनेमें लज्जा
करते थे। बड़े बड़े कविगण सम्मान मिलनेकी आशा
राज दरबारोंमें आते थे और स्वरचित रचनाओंको सुना

यथेष्ट पुरस्कार पाते थे। दरबारोंमें बड़े बड़े विद्वानोंके रहनेके कारण नयी नयी रचनाओंका प्रचार होता था। बड़े बड़े विद्वान् लोग अपने मतोंका प्रचार करनेके लिये देश देशान्तरोंमें दिग्विजय की आशासे भ्रमण करते थे। जो शास्त्रार्थमें हार जाता था, वह विजेताका शिष्य बन जाता था। जातकमें इस प्रकारकी अनेक कहानियां मिलती हैं।

जातकोंसे और भी पता चलता है कि ई० पू० ६०० में तक्षशिला (पेशावरके निकट) में एक भारी विश्वविद्यालय था। वहां पर कुल विद्या तथा शिल्पका पठन पाठन होता था। देशके चारों ओरसे बड़े बडे ब्राह्मण, क्षत्रिय राजकुमार आदि शिक्षा प्राप्त करनेके लिये वहां जाते थे। धनी लोगोंके लड़के फीस देकर पढ़ते थे। दरिद्र लड़के बिना फीसके पढ़ते थे। उन्हें गुरूजीकी सेवा करके विद्या सीखनी पड़ती थी।

पाणिनी—आर्योंको इस देशमें आये लगभग ढाई हज़ार वर्ष व्यतीत हो गये थे। अतः स्वाभाविक नियमानुसार उनकी भाषामें कुछ विकृति आ गई थी। इसको रोकनेके लिये तक्ष-शिलाके निवासी पाणिनी नामके विद्वान्ने अष्टाध्यायी नामका एक वैदिक व्याकरण रचा। विद्वानोंकी यह राय है कि ई० पू० ६००के लगभग पाणिनीका जन्म हुआ। इनका जन्म-स्थान तक्षशिलाके निकटके एक गांवमें था तथा इनकी माताका नाम दाक्षी था। इनके गुरुका नाम वर्ष था। बचपन हीसे इनकी प्रतिभाका विकास होने लगा था। शिक्षा समाप्त होने पर पाटलिपुत्रकी एक विद्वत्सभामें इन्होंने अपने लिये अनन्त यश प्राप्त कर लिया। इनकी मृत्युके उपरन्त तक्षशिला नगरमें इनकी एक मूर्त्ति स्थापित की गई थी। चीनी यात्री हुयेनसंगके समय तक वह मूर्ति मौजूद थी। इनके व्याकरणका पठन-पाठन आज तक होता है।

व्यापार—इन्हीं दिनों में लिखित जातक नामकी इस बौद्ध पुस्तकसे उस समयके व्यापारका हाल मालूम पड़ता है। इस पुस्तकके पढ़नेसे हमलोगोंको पता चलता है कि उस समय बनारस व्यपारका एक बड़ा भारी केन्द्र था। यहां मिहीनसे मिहीन धोती तथा हाथी दांतके सामान बनते थे। कई एक सौदागर एक साथ शकटोंमें माल लादकर दूर दूर देशोंमें व्यापारके लिये जाते थे। लेन-देनका काम हुण्डीके द्वारा होता था। जहाजों पर माल लाद कर बम्बई प्रान्तके भारुकच्छ तथा सोपार बन्दरसे व्यापारी लोग बमेरु (बैबोलन), सुवर्णग भूमि (ब्रह्मा), ताम्रपर्णी (लंका) आदि देशोंमें व्यापार करनेके लिये जाते थे।

प्राचीन विचार पद्धति—जज (प्राड्विवाक्) प्रायः ब्राह्मण होता था। कचहरीमें उसे तीन असेसरोंकी रायसे सहमत होकर विचार करना पड़ता था। पञ्चायतके अलावा चार प्रकारकी कचहरी होती थी। प्रधान विचारालय, दौरा करने वाली कचहरी, जजों तथा राजसभा। "स्मृति" नामका एक अफसर जजको कानून सुनानेके लिये होता था। सत्यासत्यका निर्णय जल परीक्षा, अग्नि परीक्षा, और सुवर्ण परीक्षाके द्वारा होता था, वादीके शिकायत करने पर जज उससे प्रश्न करता था; पीछेसे प्रतिवादीके लिये सम्मन निकालता था। इसके उपरान्त उसकी सफाई सुनकर राय देता था। अस्वीकार करनेपर वादीको साक्षी देने पड़ते थे। प्रमाण आदि न मिलनेपर अग्नि-परीक्षादि की जाती थी। जजको धर्म-शास्त्र, अर्थ-शास्त्र तथा स्मृतिके अनुसार राय देनी पड़ती थी। पञ्चायतसे जजकी कचहरीमें अपील होती थी, वहांसे राजसभामें अपील होती थी।

धर्म—आम तौर पर लोग अभी तक वैदिक सिद्धान्तोंको मान कर चलते थे। यज्ञादिका प्रभाव वैसा ही रहा। इन दिनों इसके प्रधान पृष्ठ पोषक क्षत्रिय छोटी छोटी रियासतोंमें विभक्त रहनेके कारण सारे

...में लड़ाई-भिड़ाई होती थी। जब एक राजा लड़-भिड़ कर पड़ोसियों पर विजय प्राप्त कर लेता था, तब वह समारोहके साथ अश्वमेध और राजसूय नामक यज्ञ करता था।

अश्वमेध यज्ञ करनेके लिये एक भारी सेनाके साथ विशेष लक्षण युक्त एक अभिमन्त्रित घोड़ा छोड़ दिया जाता था। वह घोड़ा जिन जिन देशोंमें होकर जाता था, उन उन देशोंके राजाओंको कर देकर सुलह करनी पड़ती थी, या साल दो सालके बाद जब वह घोड़ा घर लौटता था तब बड़ी धूम धामके साथ तीन दिन तक एक यज्ञ होता था। इन्द्रादि देवोंकी पूजा होती थी, ब्राह्मणोंको दान दिया जाता था, लाखों लोगोंको खिलाया पिलाया जाता था तथा विद्वान् लोग एक साथ जुट कर शास्त्र चर्चा करते थे। बड़े बड़े कवि, गायक आदि अपनी अपनी कला प्रदर्शित करते थे। तदनन्तर सैकड़ों दूसरे दूसरे जानवरोंके साथ उस अभिमन्त्रित घोड़ेको बलि चढ़ाया जाता था। और उसके एक एक अंगकी आहुति दी जाती थी। यज्ञान्तमें पुरोहितोंको भारी दक्षिणा दी जाती थी और बड़ी सज-धजके साथ यज्ञकर्त्ता 'अवभृत' स्नान करने जाता था।

चक्रवर्ती राजाओंके अभिषेक उत्सवका नाम राजसूय था। सर्व प्रथम सोम, रुद्र आदि देवोंको पूजा चढ़ाकर राजाको सेनापति, पुरोहित, रानी आदिको रत्न प्रभृति भेंट देनी पड़ती थी। इसके अनन्तर अग्नि, सोमादि देवोंके होम होनेके बाद चारों वर्णोंके लोग उसे समुद्र और नदियोंके पानीसे स्नान कराते थे। अंतः सजधज कर राजाके आनेके बाद तीर धनुष हाथमें लेकर इस प्रकार प्रतिज्ञा करनी पड़ती थी "रात्रिके अन्धकारमें मेरा जन्म हुआ और मृत्युके उपरान्त रात्रिके अन्धकारमें हम मिल जावेंगे। यदि मैं कभी अत्याचार करूं तो मैं तभी स्वर्गसे, पुण्यसे तथा अपनी जान और राज्यसे हाथ धोऊं"।* इसके बाद पुरोहित एक

*Ait. Br. VIII. 15.

(७) आणु वैदिक काल—

बौद्धों का प्रभाव ई० पू० ६०० से १०० ई० तक।

इस युगकी विशेषता – आणु-वैदिक काल (१५०० ई० पू० से १०० ई०)के अन्तिम भागमें ई० पू० ६०० से १०० ई० तक हमारे देशमें बौद्ध लोगोंका प्रभाव रह चुका है। परन्तु ऐसा कभी नहीं कहा जा सकता कि उन दिनों वैदिक धर्मका बिल्कुल नाश हो गया था। नहीं, बौद्धोंका प्रताप अधिक होने पर भी वैदिक धर्म पूर्व जैसा ही प्रबल रहा। इसी लिये कुछ विद्वान् ऐसे भी हैं, जो भारतवर्षके इतिहासमें स्वतन्त्र रीतिसे बौद्ध कालका अस्तित्व तक नहीं मानते। पुनः इन दिनों धर्म सुधारकोंमें एक मात्र बुद्ध देवके नामसे ही परिचित होनेसे ऐसा नहीं समझना चाहिये कि केवल उन्हींका उदय हुआ। नहीं, इन दिनों धार्मिक जगत्में जो विराट् आन्दोलनकी सृष्टि हुई थी, उसका परिणाम यह हुआ कि बहुतसे ऐसे सुधारकोंका उदय हुआ था, जिनका नाम तक हमको मालूम नहीं।

धार्मिक आन्दोलनका कारण—वैदिक धर्मके मानने वाले कर्म काण्डके अनुयायी होकर यज्ञादिमें पशुओंको बलि चढ़ा कर अग्नि, इन्द्र आदि देवताओंको सन्तुष्ट करते थे और उसके बदले देवता भी अपने भक्तोंको विजय, खान-पान, सुख-विलास आदि देते थे। थोड़ा ध्यान देनेसे तुम्हें ठीक ठीक विश्वास हो जावेगा कि यह सब ढकोसला मात्र था। इससे आन्तरिक पिपासाकी तृप्ति नहीं होती थी और आध्यात्मिक उन्नति भी नहीं होती थी। अतः इन दिनों जिन जिन धर्म सुधारकोंका उदय हुआ, उनकी दृष्टि बाहरी ढकोसलों पर उतनी न थी जितनी कि आत्मिक विषयों पर थी। इसमें आश्चर्यकी कोई बात नहीं—यह तो प्रकृतिका नियम है, जिससे किसी एक

ज्ञातिके धार्मिक विषयोंमें क्रमोन्नतिकी सूचना मिलती है।

पुनः थोड़ा सा ध्यान देनेसे तुम्हें यह बात प्रतीत होगी
इस धार्मिक आन्दोलन की सृष्टि आर्यावर्त के पूर्वीय अंशमें।
इसका प्रधान कारण यह है कि पूर्व की ओर वैदिक आर्यों
प्रभाव तब तक अच्छी रीति से जमने नहीं पाया था। उस
तबतक व्रात्योंका प्रताप पूर्णतया फैला हुआ था। व्रात्योंमें
श्रम की प्रथा और साथ साथ ब्राह्मणोंका प्रभाव कभी जमने
पाया। वे ब्राह्मणोंसे क्षत्रियको श्रेष्ठ मानते थे। मध्यदेश
तथा दक्षिणमें अब तक चातुर्वर्ण्य की प्रथा ठीक नहीं थी।
पश्चिमीय प्रान्तमें ईरानियोंका अधिकार हो जानेके कारण वे
विद्वान् लोग तक्षशिला तज कर पूर्वकी ओर आ बसे।
स्वतन्त्र चिन्तन का प्रभाव व्रात्योंके मनपर कम नहीं पड़ा।
हो, आणु-वैदिक कालमें जो विराट् धार्मिक आन्दोलन
उनका केन्द्र आर्यावर्त का पूर्वीय प्रान्त ही हुआ।

जैन मतका विकास—जैनों का यह विश्वास है कि
धर्मको स्थापित करनेवाले २४ तीर्थंकर होगये हैं। इनमें से
देव सर्व प्रथम थे। इन २४ तीर्थंकरोंमें से अन्तिम दोनोंके
पारसनाथ और महावीर प्रख्यात हैं। पहिले पारसनाथने
स्वतन्त्र सम्प्रदाय स्थापित किया था। अन्तमें यह सम्प्रदाय
वीरके सम्प्रदायसे मिल गया।

महावीर वर्धमान बनाम निगन्थ ज्ञातिपुत्र का जन्म ई
५४७ में वैशाली (जिला मुजफ्फरपुर) में हुआ। इनके पिताका
सिद्धार्थ तथा माताका नाम त्रिशला था। वह वैशालीके रा
पुत्री थी। महावीरका ब्याह यशोदा नामकी एक कन्यासे हु
जब महावीरकी अवस्था तीस वर्षकी थी तभी वह सांसा
भोग विलास त्याग कर पारसनाथके शिष्य बन गये। बारह
तक उस सम्प्रदायमें रहनेके उपरान्त महावीरने अपना एक
दाय स्थापित किया। कुछ दिनोंके बाद इन दोनों सम्प्रदा

कत्र सम्मेलन हो गया और महावीर इस संयुक्त संप्रदायके प्रधान ाने गये। महावीर की मृत्यु (ई० पू० ४६७) में हुई और इस टना की यादगारीमें दीपावलीके उत्सव मनानेकी रीति चल कली। उन्होंने लोभ, मोह, क्रोधादि रिपुओंपर विजय प्राप्त की ै। अतः लोग उन्हें "जिन" कहने लगे और इसीसे उनके शिष्य ोग जैन कहलाये। महावीरने धर्म प्रचार करनेमें और जैन सम्प्रदाय ी नींव पक्की करनेमें अपने जीवनका अन्तिम भाग व्यतीत किया। ाधके राजपुत्र इस सम्प्रदायके एक संरक्षक हुए तथा बहुतसे नी व्यापारी तथा सेठ साहूकार आदि उनके शिष्य बने। कुछ नोंके बाद इनके शिष्य दो भागोंमें विभक्त हो गये। एकका नाम ताम्बर तथा दूसरेका नाम दिगम्बर पड़ा। उनकी मृत्युके उप- न्त जैनों की धर्म पुस्तकोंकी बारह अंगों और बारह उपांगोंमें ाना हुई।

जैन धर्मके सिद्धान्त—प्राचीन काल में जैनों को लोग नगन्थ" (अर्थात् सांसारिक सुख-दुखोंसे मुक्त) कहते थे। महा- का सिद्धान्त यह था कि मुक्ति वा कैवल्य प्राप्त करनेके लिये गोंको हिंसा चोरी तथा मिथ्या भाषण नहीं करना चाहिये और थ ही साथ शरीर, वचन तथा मनके द्वारा तपस् प्रायश्चित्तादि करनेकी आवश्यकता है। संसारमें जो प्राणी कष्ट उठाते हैं के वेही जिम्मेदार हैं। ज्ञानी तथा अच्छे स्वभावके मनुष्यों ही मुक्ति मिल सकती है। संक्षेपमें, महावीरकी यही उक्ति था कि लोग जो दुख-सुखका अनुभव करते हैं, उसके कारण हम ही काल वा भाग्यका इसमें कुछ भी हाथ नहीं। इस प्रकार वीरने कर्मफल पर बहुत ज़ोर दिया।

गौतम बुद्ध—लगभग ढाई हज़ार वर्ष व्यतीत हुए कि हिमा- की तराईमें शाक्य लोगोंकी एक सामुदायिक रियासत थी। का राज-काज कुछ सर्दार एकत्र होकर चलाते थे। लोग इन्हें राज कहते थे। इस राज्यकी राजधानी कपिलवस्तु (गोरखपुर

के निकट) थी। महात्मा गोतमके पिता शुद्धोदन इसी राज्य प्रधान सर्दारोंमेंसे थे। ई० पू० ५५७ में महाराज शुद्धोदनके लड़का पैदा हुआ जिसका नाम सिद्धार्थ रक्खा गया।

सिद्धार्थके पैदा होनेपर महाराजने बड़ा आनन्दोत्सव मनाया। ज्यों ज्यों सिद्धार्थ बड़े होने लगे त्यों त्यों इनमें साहस और शौर्य्य की भी वृद्धि होने लगी। फिर भी इनका हृदय बौद्ध कारण अत्यन्त कोमल था। जिस समय इनके साथी लड़के कूद और शिकारमें मग्न रहा करते थे, ये उस समय एकान्त बैठे बैठे किसी विलक्षण चिन्तामें निमग्न रहते थे। जब महाराजको यह बात मालूम हुई तो उन्होंने इनका मन फेरनेके लिये विवाह यशोधराके साथ कर दिया। इतने पर भी सिद्धार्थके स्वभाव और विचारोंमें परिवर्तन नहीं हुआ। कुछ काल सिद्धार्थको एक पुत्र उत्पन्न हुआ।

जब सिद्धार्थने देखा कि संसारकी माया उन्हें ओर खींच रही है, तब उनके हृदयमें बड़ी घबड़ाहट पैदा उन्होंने बहुत सोच विचार कर अन्तमें संसारका परित्याग करना ही निश्चय किया और उसी रातको महल छोड़ कर पड़े। * इस समय इनकी अवस्था कुल तीस वर्षकी थी।

घर छोड़ने पर इन्होंने राजगृहमें रह कर ब्राह्मणोंके धर्मशास्त्र इत्यादि पढ़ा, लेकिन इससे भी जब उनका मन तब इसके बाद छः वर्ष तक अकेले बड़ी कठिन तपस्या की। भी गौतमको वह शान्ति न मिली जिसके लिये उन्होंने घर था। निदान, निराश होकर एक दिन निरंजराके तीर पीपलके पेड़के नीचे बैठे विचार कर रहे थे। उसी एकाएक उनको सत्यका पता लगा और उसी समयसे

---

* जिस रातको बुद्धदेव घरसे निकले थे उस रातको बौद्ध 'महाभिनिष्क्रमण' कहते हैं।

पास बुद्ध पड़ा। और उस पीपलके पेड़का नाम "बोधिद्रुम" पड़ा। उसी जगह पर पीछेसे बौद्धगयाका प्रसिद्ध मन्दिर बनवाया गया। इसके बाद बुद्ध फिर बस्तीको लौट आये और लोगोंको सत्यका पता बतलाने लगे। काशीके पास सारनाथमें उन्होंने पहिले पहल अपना धर्म प्रचार किया था, इसीलिये सारनाथको बौद्ध लोग अपना एक पवित्र तीर्थ मानते हैं। इस स्थानमें बौद्ध संन्यासियोंके लिये एक मठ बनवाया गया था। राजा अशोकने वहां पर पत्थरका एक खम्भा गड़वा दिया था। उस खम्भेके सिरे पर चार सिंहकी मूर्तियां बनी हैं। उसके देखनेसे हिन्दुओंके प्राचीन कला कौशलका ठीक ठीक पता चलता है।

बहुतसे लोग बुद्धके सिद्धान्तके अनुयायी बन गये। इन्हीं को लोग बौद्ध कहने लगे। धीरे धीरे गौतमकी स्त्री, उनका पुत्र, राजा, प्रजा सभी बौद्ध बन गये। अन्तमें ई० पू० ४८३में महात्मा बुद्ध स्वर्गधामको सिधारे।

बौद्ध धर्मके सिद्धान्त—बुद्धने संसारको यही सिखाया कि निर्वाण वा मुक्ति प्राप्त करनेके लिये मनुष्यको न तो अतीव दुःख सहनेकी हो आवश्यकता है, और न सुख-विलासमें समय ही व्यतीत करनेकी। शान्ति, ज्ञान वा निर्वाण प्राप्त करनेके लिये मध्यम पथसे चलना चाहिये। इसके लिये अभिलाषा तज देनेकी आवश्यकता है। क्योंकि अभिलाषा होनेसे कर्मकी उत्पत्ति होती है। और कर्मके कारण ही जीवोंको सदैव दुःख-सुख भोगना पड़ता है।

इस प्रकार जब जगत् की क्षणिकताके बारेमें ज्ञान उपजेगा तभी जगत शून्यवत् प्रतीत होगा। इसी ज्ञानका नाम निर्वाण है। ज्ञान प्राप्त करनेके लिये लोगोंको चाहिये कि वे आष्टांगिक मार्ग पर चलें—अर्थात् श्रद्धा, संकल्प, वाक्, कर्म, रहन—सहन, प्रचेष्टा, चिन्ता और ध्यान आदि सदाचारके द्वारा क्रमोन्नति करें। इस उपाय के द्वारा ही ज्ञान का उदय होगा, और जब तक प्राणीमें

ज्ञानका विकास नहीं होगा तब तक उसके कर्मका बन्धन नहीं
छूटेगा, अर्थात् बार बार जन्म लेना पड़ेगा और जन्म, दुःख
जरा और मृत्यु आदि दुःखों को भोगना पड़ेगा। निर्वाण का
मृत्यु नहीं, वरन् जगत् की शून्यता बोध करनेका वा ज्ञान
करने का है।

पहिले लोग बड़े बड़े यज्ञ तथा अगणित जीवों की हिंसा
करनाही अपना धर्म कर्म समझते थे। परन्तु बुद्धदेवका यह सिद्धान्त
था कि ज्ञान प्राप्तिके द्वाराही मुक्ति मिल सकती है, बाहरी ढकोसलों
से कदापि नहीं। इस रीतिसे पृथ्वीके इतिहासमें सर्व प्रथम बुद्ध
होने इस बातका प्रचार किया कि मनुष्य बिना देवके सहारे,
प्रचेष्टाके द्वारा, इसी जन्ममें, जीतेजी, मुक्ति प्राप्त कर सकता
बौद्धों की प्राचीन धर्म पुस्तकोंमें ईश्वर तथा जीवात्माके
कुछभी नहीं कहा गया है। अतः उनके विरोधी लोग उन्हें नि
रवादी कहते थे। बौद्ध लोग प्रधानतः "त्रिरत्न"के मानने वा
अर्थात् वे "बुद्ध, धर्म, और संघ" को मानते हैं। बौद्ध
यह विश्वास है कि कुल २४ बुद्धोंका अवतार हुआ है
सिद्धार्थ चौथे थे।

धार्मिक संगठन—बुद्ध भगवान्की मृत्युके उपरान्त
लोगोंकी धर्म पुस्तकें "त्रिपिटक" (तीन पेटारी) रची ग
त्रिपिटकके तीन भागोंके नाम क्रम से ये हैं—विनय, सूत्र
अभिधर्म। विनयमें संघके नियम-कानून आदि दियेहुए हैं।
बुद्धदेवकी मृत्युके उपरान्त बौद्धों के धार्मिक इतिहासका भी
है। सुत्त पिटकमें नीति, शिक्षा आदि विषयों की पूर्णतया आ
चना की गई है। यह पुस्तक पांच भागोंमें विभक्त है, और प्र
भागका नाम निकाय है। अभिधर्म पिटकको रचना पीछेसे
थी। इसमें निकायों में वर्णित विषयों का पुनरुल्लेख मात्र है।

बुद्धदेवके जीते जी बहुतसे लोग इनके शिष्य बने।
से कुछ बड़े बड़े प्रसिद्ध ब्राह्मण जैसे कश्यप आदि,

बड़े बड़े राजे महाराजे जैसे पसेनदी कोशल, अजातशत्रु आदि; कुछ बड़े धनी सेठ साहूकार जैसे अनाथपिण्डिक आदि और कुछ नीच जातिके जैसे उपालि नामक एक नाऊ आदि थे। स्त्रियों पर बुद्धदेवकी कभी प्रीति न थी। अतः पहिले पहल बुद्धदेवने उनको संघमें भरती नहीं किया। परन्तु शुद्धोदनकी मृत्युके उपरान्त स्त्रियां भी संघमें ले ली गईं। जो लोग संसारके सुख विलास त्यागकर विहारमें रहते थे उन संन्यासी और संन्यासिनियोंका नाम भिक्षु और भिक्षुणी था, और जो गृहस्थ थे, उनका नाम उपासक और उपासिका था।

बुद्धदेवने प्राचीन आर्य्य ऋषियोंके बनाये हुए "नैष्ठिक ब्रह्मचारी"के आधारपर संघकी सृष्टिकी। भिक्षु और भिक्षुणी विहार वा मठोंमें रहा करते थे। विहारमें जाति-पांतिका कोई विचार नहीं था। संघमें भरती होनेका नाम प्रव्रज्या था। बीस वर्षसे कम अवस्थाके लोगोंको उपसम्पदा नहीं दी जाती थी। और सात वर्षसे कम अवस्थाके लड़कोंको संघमें नहीं भरती किया जाता था। नवीन भिक्षुकोंको उपाध्यायके अधीन होकर रहना पड़ता था। भिक्षु और भिक्षुणियोंको भिक्षा माँगकर खाना पड़ता था। इन्हें चीवर पहिनना पड़ता था। दोष करने पर विहारकी सभामें उसे स्वीकार करना पड़ता था और प्रायश्चित करनेकी रीति थी। प्रति सप्ताहमें एक दिन उपवास करनेकी रीति थी। भिक्षु लोग केवल वर्षाके चार महीने विहारोंमें रहा करते थे और बाकी आठ महीने देशाटन, ध्यान वा धर्म प्रचारके काममें लगे रहते थे। श्रावणमें उनका "प्रवारण" नामका एक उत्सव होता था जब कि भिक्षु लोग पुराने कपड़े बदल देते थे। आजकल हमारे देशमें बौद्ध मतके अधिक लोग नहीं दीख पड़ते। परन्तु लंका, ब्रह्मा, तिब्बत, चीन, जापान आदि देशोंमें लोग आज तक उस मतको मानते हैं।

बौद्ध धर्मके साथ वैदिक धर्मका सम्बन्ध—यदि सत्य पूछो

तो बुद्धदेवके सिद्धान्त सांख्य, योग और उपनिषद्के आ
पर ही प्रतिष्ठित थे। अतः उन्होंने ऐसी नई बातें बहुत ही
बताईं जो कि वैदिक धर्ममें नहीं मिलतीं। परन्तु जभी
वेद तथा ब्राह्मणोंकी श्रेष्ठता, यज्ञादि, और जाति-पांतिको मा
इन्कार किया तभीसे ब्राह्मण धर्मसे उनका वहिष्कार हो
कुछ दिनोंके बाद पुराणोंमें बुद्धदेवको भगवानका नवम अ
कह कर वर्णन किया गया। फिर भी जीते जी खुल्लम
कभी बुद्धजीने वैदिक धर्मका विरोध नहीं किया।

बौद्ध धर्म और जैन धर्मकी तुलना—बौद्ध और
मतोंका उदय करीब करीब एकही समयमें और एकही
हुआ था। दोनों वर्णाश्रम धर्मके विरोधी तथा दोनोंके
करने वाले जातिके क्षत्रिय थे। दोनोंने जनताकी भाषा (पाली
प्राकृत) में अपने अपने धर्मका प्रचार किया। दोनोंही कर्म
वादी, जन्मान्तरवादी, मोक्षवादी तथा निरीश्वरवादी थे।
दोनों सम्प्रदायोंमें मूर्ति पूजा की रीति नहीं थी। परन्तु
बातोंमें दोनोंका सादृश्य रहते हुए भी, दोनोंमें अनेक
मतभेद था। बुद्धदेवने अपने धर्मके प्रचार करनेके लिये ठीक
से संघका संगठन किया, जोकि महावीरने नहीं किया।
स्वतन्त्र रूपसे आत्माकी स्थिति तक को नहीं माना, महा
आत्माकी स्वतन्त्र स्थिति स्वीकार की थी। बौद्ध धर्मके अ
अभिलाषाके नाश कर देनेका नाम निर्वाण है, और जैनोंका
यह है कि आत्मबोध होनेहीसे जीवको कैवल्य मिलता है। बु
ने कहा है कि कर्मसे मनका पूर्ण सम्बन्ध है; महावीरने
कि कर्महीके द्वारा मन शुद्धताको प्राप्त होता है। बुद्धदेव की
यह थी कि भावना वा ध्यान हीसे ज्ञानकी उत्पत्ति होती है,
ज्ञानके उदय होनेहीसे जीवकी मुक्ति होती है। महावीरका म
था कि आचार वा कर्म हीके द्वारा जीवको मुक्ति मिलती
जैन मतका वैशेषिक दर्शनसे बहुत कुछ सादृश्य है।

अन्तमें यह बात कह देनेकी आवश्यकता है कि दोनों सुधारक स्त्रियोंको घृणाकी दृष्टि से देखते थे। सम्भव है, इसीके कारण स्त्रियोंकी प्रतिष्ठा हमारे समाजमें इतनी हीन है। महावीर इस विषयमें इतने कट्टर थे कि उनकी रायमें तो स्त्री जातिको मुक्ति तक नहीं मिलेगी।

और और सुधारक—तुमसे पहलेही कहा गया है कि इन दिनों और भी बहुतसे सम्प्रदायके लोग अपने अपने ढंगसे मुक्ति की खोजमें तत्पर थे। ऐसेही एक सम्प्रदायका नाम आजीविक था। इस दलके तीसरे तीर्थंकरका नाम गोसाल था। वह पहिले तसवीर बेचता था। अतः लोग उसे मास्करी गोसाल कहते थे। महावीर स्वयं कुछ दिन तक इस सम्प्रदायमें रह चुके थे। अशोक के नाती दशरथ इस सम्प्रदायके संरक्षकोंमें से थे। आजीविक सम्प्रदायके लोग अहिंसा तथा सदाचार पर बहुत ज़ोर देते थे।

दूसरा एक सम्प्रदाय लोकायत नामका हुआ। इस सम्प्रदाय को अजित केशकम्बली नामके एक सुधारकने स्थापित किया था। ये लोग संसार की काररवाई पर अधिक ध्यान देते थे। इनका सिद्धान्त यह था कि जबतक संसारमें रहना हो, तब तक चैनसे रहो। हाथमें नक़द पैसा न रहे तोभी उधार लेकर घी पीओ। ये लोग भी स्वतन्त्ररीतिसे आत्मा का अस्तित्व नहीं मानते थे। तथा ब्राह्मणोंको दान देना, यज्ञादि करना, श्राद्ध करना व्यर्थ समझते थे। पीछेसे इनके सिद्धान्तोंका नाम चार्वाक-दर्शन पड़ा। इनके अतिरिक्त और भी कई एक सुधारक इन्हीं दिनोंमें उदय हुए थे। ये लोग अधिकतर निष्क्रियवादी रहे।

सारांश।

ई० पू०	
५८७—४६७	महावीर
५५७—४८३	बुद्धदेव

(८) प्राचीन रियासतें तथा सिकन्दरकी चढ़ा

(ई० पू० ६५० से ३२५ तक)

प्राचीन रियासतें—तुमसे पूर्व हीमें यह बात कही जा कि वैदिक कालमें आर्योंने सप्त-सिन्धु प्रदेशमें बहुतसी छोटी समुदाय वाली रियासतें स्थापित की थीं। परन्तु ज्यों समय व्यतीत होता गया, त्यों त्यों राजनीतिका केन्द्र धीरे पश्चिमसे हट कर पूर्वकी ओर आने लगा। ऐसे ही महाभारत रामायणके युगमें कुरु, पाञ्चाल, कोशल आदि राज्य राजनी क्षेत्रमें अग्रगण्य थे। पुनः बौद्ध साहित्यसे पता चलता है उन दिनों कोशल राज्यकी अवनति होती थी और साथ ही मगध राज्यकी प्रतिष्ठा बढ़ने लगी थी।

बौद्ध साहित्य आदिसे और भी पता चलता है कि बुद्ध के जन्मके ठीक पहिले आर्यावर्तमें कुल सोलह राज्य बसे हुए इनमेंसे कुछ राज्य तो ऐसे थे जिन पर एक एक राजा राज थे; यथा—अंग, मगध, काशी, कोशल, चेदी, वंश वा वत्स, पांचाल, मत्स्य, सूरसेन, अवन्ती, गान्धार, कम्बोज आदि।

कुछ प्रजातंत्र राज्य थे, यथा—शाक्य, मल्ल, क्षुद्रक, मा आदि। और कुछ राज्य ऐसे भी थे जिन्हें कि दो वा तीन छोटे समुदायोंने एक साथ मिल कर जमाये थे (Fede States); जैसे वृष्णी-अन्धक-भोज, लिच्छवी-विदेह आदि। प्र तन्त्र राज्योंमें अपराधियोंका विचार आम दरबारमें, जहां कुल राज्य-निवासी एक साथ मिले हों, हुआ करता था। अपील भी तरह तरहसे की जा सकती थी। लिच्छवी राज ऐसी ही रीति थी। तथा जनताके सामने बड़े बड़े लोग साथ मिल कर राज्य-शासन सम्बन्धीय प्रश्नोंका समाधान क थे। सुभद्रा हरणके पश्चात् अन्धक-वृष्णी-भोज लोगोंके मुखि

सभापालके अधीन होकर सलाह करते थे। कोशल राजा पसेनदीके विवाहके प्रस्ताव पर विचार करनेके लिये शाक्य जातिके कुल मुखिये सम्मिलित हुए। लिच्छवी राज्यमें ७७०७ राजा, ७७०७ उपराजा और ७७०७ सेनापति थे। इन राज्योंमें सब लोग निरपेक्ष भावसे अपनी योग्यता प्रदर्शित कर सकते थे। "ललित विस्तर" में लिच्छवी लोगोंके बारेमें यह लिखा हुआ है: "यहां छोटे बड़ोंका आदर तक नहीं करते। सभी कोई अपनेको राजा बताते हैं। सभी कोई चिल्लाते रहते हैं 'मैं राजा हूं, मैं राजा हूं' प्रजा तन्त्र राज्योंमें गणपति प्रधान अफसर होता था। इसका चुनाव वोटके द्वारा होता था।

परन्तु बुद्धदेवके जीवन कालमें हमलोगों को पता चलता है कि आर्यावर्तमें कुल चार बड़े बड़े राज्य थे। इनके नाम क्रम से ये हैं—अवन्ती, वत्स, कोशल और मगध।

अवन्ती—का दूसरा नाम मालवा है। इसकी राजधानी उज्जैनी थी। बुद्धदेवके समय प्रद्योत वंशीय राजा चण्ड बड़ी शानके साथ इस देशपर राज्य करते थे। इन्होंने वत्स देशके राजा उदयनको कैद कर लिया। पश्चात् अपनी लड़की वासवदत्तासे इनका ब्याह कर दिया।

वत्स—यह देश अवन्तीके ठीक उत्तर में यमुना किनारे पर बसा हुआ था। इसकी राजधानी कौशाम्बी थी। राजा उदयन भरत-वंशके थे। इनको हस्ती-विद्या अच्छी तरह से आती थी।

कोशल—राज्य उन दिनों बहुत दूर तक फैला हुआ था। शाक्योंका प्रजातन्त्र राज्य, तथा काशी राज्य इस राज्यके अन्तर्गत थे। इसकी राजधानी श्रावस्ती थी। यह स्थान राप्ती नदी पर बसा हुआ था। राजा बिंबिसार पसेनदी कोशलके बहनोई लगते थे। काशी राज्य दहेजके स्वरूपमें उसी समय बिंबिसारको दे दिया गया था। परन्तु बिंबिसारकी मृत्युके उपरान्त अजातशत्रु और पसेनदीकी एक भारी लड़ाई छिड़ी। अन्तमें पसेनदीने अपनी

एक बेटी का व्याह अजातशत्रुसे कर दिया और काशी
फिर मगधराजके हाथ सौंपा। पसेनदीका बेटा विदूदभने
पर चढ़ाईकी और बहुत लोगोंको मार डाला। कुछ दिनों
कोशल राज्य भी मगधराज्यमें मिला लिया गया।

मगध—यह राज्य आर्यावर्तके प्राचीन राज्योंमें से है।
भारतके दिनोंमें जरासन्ध इस देशका शासन करते थे। पाण्डव
इनको मार डाला। आजकलके दक्षिणी बिहारमें पुराना मगध भी
बसा हुआ था। इसकी राजधानी उनदिनों राजगृह (गयाके
थी। बुद्धके समय नागवंशीय बिंबिसार मगधके राजाथे।
मगध राज्यमें ८०,००० गांव थे। इन्होंने अंग राज्य (आ
ज़िला भागलपुर)को जीता। इनका विवाह एक लिच्छवी और
कोशल राजकुमारी से हुआथा। बिंबिसार बुद्धके शिष्योंमें
इनको मार कर इनका पुत्र अजातशत्रु राजा बना। इसके
पसेनदी कोशलसे इसकी लड़ाई छिड़ी। लड़ाईमें अन्ततक
राजकी हार हुई और काशी मगध राज्यमें मिला लिया।
लिच्छवी लोगोंको आगे बढ़ने से रोकनेके लिये इसने
गांवमें एक भारी किला बनाया। इसके पुत्र उदयीने पाटलि
भारी राजधानी बनाई। आज कल इसे पटना कहते हैं।

इन नाग वंशीय राजाओं के उपरान्त शिशुनाग वंशी
मगधके सिंहासन पर बैठे। इस वंशका प्रथम राजा शिशुनाग
इसने कोसल, वत्स और अवन्ती राज्योंको जीते। इसके
सिवाय पंजाबके कुल आर्यावर्तमें मगधका प्रभुत्व फैल गया
वर्ष तक राज्य करनेके बाद इसकी मृत्यु हुई पश्चात् उसका
कालाशोक राजा हुआ। इसके समय ई० पू० ३८३–२ में
दूसरी धार्मिक सभा (संगीति) हुई थी। पहिली सभा बुद्ध
मृत्युके उपरान्त हुई थी। कालाशोकके बाद उसके
एकके बाद दूसरे, सिंहासन पर बैठे। २२ वर्षके बाद
उग्रसेन वा महापद्मने सिंहासन पर अपना अधिकार

इमसेन बड़ा पराक्रमी राजा था। उसके सम्बन्धमें पुराणों में यह लिखित है:—

"शिशुनाग वंशीय अन्तिम राजा महानन्दिन् की शूद्र पत्नीसे महापद्म नंदका जन्म होगा। यह कुल क्षत्रियोंका अन्त कर देगा। तभी से शूद्रजातिके राजे होंगे। महापद्म समस्त राजाओंको हटा कर स्वयं एक-राट् (चक्रवर्ती सम्राट्) बनेगा।" यह बड़ा शूरवीर भी था। उसकी फौजमें "२०,००० सवार, २००,००० पैदल, २००० रथ और ४००० हाथी थे"। महापद्म और उनकी सन्तान लगभग सौ वर्ष तक राज्य करती रही।

इसी तरहसे जब शूद्र जातिके राजाओंने सम्पूर्ण आर्यावर्त पर अपनी धाक जमाली और व्रात्योंने धार्मिक जगत्में एक भारी विप्लव मचादी तब कुछ दिनोंके लिये वैदिक धर्म तथा आर्य शिष्टताके स्थानमें अनार्यों की शान फिरसे जमी। मौर्य साम्राज्य और अशोककी धर्मनीति इसी विरोध का महान् जीता जागता परिणाम है।

ईरानियों की चढ़ाई—उन दिनों हिन्दुस्तानके पश्चिममें ईरानी साम्राज्य था। एशियाके दक्षिणके सारे देश ईरानी सम्राटोंके अधीन थे। करीब ५०० ई० पू० में जब मगधमें बिंबिसार और अजातशत्रु राज्य करते थे, उसी समय ईरानी सम्राट् दारा (Darius) ने सिन्धु नदी तकका हिस्सा जीत लिया। कहते हैं कि इस देशकी आमदनी ईरानी सम्राट्की कुल माल गुजारीकी एक तिहाई थी। सिन्ध देश और पंजाबका कुछ हिस्सा ईरानी सम्राट्का एक सूबा गिना जाता था। हिन्दुस्तानी सिपाही ईरानी सेनामें भर्ती किये जाते थे। कई बार यूनानी लोगोंसे इनका सामना भी हुआ था।

इस रीतिसे जब आर्यावर्तके पश्चिमीय अंश पर ईरानी सम्राटोंका अधिकार जम गया तभीसे स्थलपथके द्वाराभी ईरानी साम्राज्यके साथ व्यापारकी राह खुल गई। व्यापारके साथ साथ उस देशकी कुछ कुछ रीति नीति आदि भी हमारे देशवासी नकल करने लगे।

मौर्य सम्राटोंके दरबारमें, उस समयकी कारीगरी और रीति...
इसका थोड़ा बहुत प्रभाव दीख पड़ता है और ईरानी साम्राज्य...
स्थिति हिन्दुस्तान और ग्रीस देशोंके बीचमें होनेके कारण...
दोनों देशोंका भी एक दूसरेसे परिचय होना प्रारम्भ हो गया...
बहुतसे ग्रीक यात्री इस देशमें आकर जो कुछ देखते सुनते...
उसका वर्णन लिखते थे। पुनः ईरानी सम्राटके बहुतसे ग्रीक...
नौकर दरबारमें रह कर हमारे देशसे परिचित थे। ऐसे...
पाइथागोरास नामके एक यूनानी दार्शनिकने सर्व प्रथम...
न्तर-वाद, संख्या-वाद आदिके सिद्धान्त पश्चिमी देशोंमें...
स्थापित किये। इसमें सन्देह नहीं कि वह इन बातोंको...
हीसे अपने देशमें ले गया था।

सिकन्दरकी चढ़ाई (३२७-२५ ई०पू०)—इस ...
दो सौ वर्षके बाद नामी वीर सिकन्दरने (Alexander...
Great) हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की। सिकंदरने ईरानके...
सम्राट्को हरा दिया और स्वयं ईरानका बादशाह बना।...
पश्चिमीय एशियाको हँसते खेलते जीत कर अंतमें ई० पू०...
में वह हिन्दुस्तानके पश्चिमोत्तर कोनेपर पहुंच गया। फिर...
धीरे लड़ते भिड़ते हारते हराते वह पंजाबमें घुसा। उन...
तक्षशिलाके राजा और येचना (झेलम और चनावके बीच...
दोआब) के राजा पुरु आपसमें लड़ रहे थे। एकताके न...
सिकन्दरको बड़ा सुभीता हुआ।

सिकन्दरके तक्षशिला तक पहुंचते ही वहांके राजाने...
लड़े भिड़े उसकी अधीनता स्वीकार कर ली। उसके आगे...
सिकन्दरको हर एक रियासत और हर एक समुदायके...
अलग अलग लड़ना पड़ा। जब सिकन्दरने पुरुराजासे...
भेजा कि मेरी अधीनता मान लो और कर दो, तब उस वीरने...
कि "चढ़ाई करने वालेसे मैं मिलूंगा तो अवश्य, पर नंगी तल...
हाथमें लिये हुए"। वीरतामें सिकन्दर भी किसीसे कम न...

ई० पू० ३२६ में झेलम नदीके किनारे दोनोंका सामना हुआ। लड़ाईमें पुरुराजकी हार हुई तो अवश्य किन्तु हिन्दुस्तानियोंकी वीरता और उनकी ढिठाई देख कर सिकन्दरका छक्का छूट गया। राजा पुरु अन्त तक लड़ते रहे। अन्तमें नौ चोट खा कर गिर पड़े और पकड़ लिये गये। जब वे सिकन्दरके सामने लाए गये तब सिकन्दरने उनसे पूछा "अब मैं आपसे कैसा बर्ताव करूं?" उन्होंने निधड़क जवाब दिया "एक राजाके साथ जैसा बर्ताव करना चाहिये उसी तरह हमसे बर्ताव कीजिये।" सिकन्दर स्वयं वीर था। वह यह जवाब सुन कर यहां तक सन्तुष्ट हुआ कि तुरन्त उसका राज्य उसे लौटा दिया और उसकी रियासत और भी बढ़ा दी।

इसके पश्चात् सिकन्दर और और लोगोंके साथ लड़ता लड़ता व्यास नदी तक पहुंच गया। यहां उसकी सेना बिगड़ी और आगे जानेसे इनकार करने लगी। उन्हें दूरस्थ यूनान देशमें अपने मां, बाप, भाई, बहिनको छोड़ कर आये बहुत दिन हो गये थे। अब वे फिर घर लौटना चाहते थे। सिकन्दरको उनकी इच्छा-पूर्ति करनेके लिये बाध्य होना पड़ा। फिर व्यास नदीके किनारेसे सिकन्दरके घर लौटनेके और भी अनेक कारण थे। हमको मालूम है कि उन दिनों पश्चिमोत्तरी कोना छोटी छोटी रियासतोंमें बँटा हुआ था। इन रियासतोंमेंके एक छोटेसे राजा पुरुसे लड़ते ही उनकी आंखें खुल गईं। पुरुका पराक्रम, उसकी फौजकी बहादुरी देखकर यूनानी लोग बहुत घबड़ा गये थे। सिकन्दर तो आगे बढ़ना ही चाहता था। परन्तु उसी समय उसको पता लगा कि व्यास नदीके दूसरे पार यौद्धेय लोगोंकी एक प्रजातंत्र रियासत बसी हुई है, और फिर गंगा नदीके किनारे नन्दवंशके राजा महापद्मके बेटोंका साम्राज्य बसा हुआ है। उनकी फौजमें २०,००० रिसाले, २,००,००० पैदल, २००० रथ और ४००० हाथी थे।" सम्भव है कि यह समाचार पाते ही

सिकन्दरने घर लौटना ही ठीक समझा हो।

अब उसने कुछ सेना नियार्कस (Nearchus) एक कमानियरकी अधीनतामें समुन्दरी रास्तेसे रवाना दिया और कुछ अपने संग लिया। सिकन्दर बड़ी बड़ी आफतें कर बिलोचिस्तान और ईरानके रेगिस्तानोंको पार करके पहुंचा। वहीं उसकी ई० पू० ३२३ में मृत्यु हुई।

सिकन्दरके लौटनेके बाद पंजाबके जीते हुए राज्य ही फिर स्वतंत्र बन गये। और ग्रीक लोग पञ्जाबसे भगा दिये गये। लोग सपनेकी तरह इस बातको बहुत भूल गये। उन दिनोंकी लिखी हुई संस्कृत या पाली कि पढ़नेसे हम लोगोंको इस बातका कुछ भी पता नहीं चलता।

फिर भी दूसरी दूसरी बातों पर इस आक्रमण का प्रभाव नहीं पड़ा। सिकन्दरका आक्रमण होने पर प्राचीन सभ्य जातियोंका आपसमें मेल मिलाप हो गया। हिन्दुस्तान ईरान तक आने जानेके लिये जल-मार्गके अतिरिक्त तीन भी नियत हुये। इस देशकी युद्ध विद्या और कारीगरी लोग थोड़ा बहुत अपना प्रभाव छोड़ गये। फिर सिकन्दरके साथ जो यूनानी पण्डित इस देशमें आये थे, उनकी किताबोंके पढ़नेसे हम लोगोंको देशकी अवस्था ज्ञान हो जाता है। ग्रीक लोगोंने तर्कशास्त्र, गणित हमारे पूर्वजोंसे सीखी, तथा हमारी ज्योतिष विद्या प्रभाव छोड़ गये।

सिकन्दरके मरनेके बाद उसके सेनापतियोंने आपसमें कुल साम्राज्य बांट लिया। इनमेंसे सेल्यूकस (Seleucus) बैक्ट्रिया (तुर्किस्तान), पार्थिया (उत्तरी फारस), देश मिले। वह "नायकाटोर" (Nikator-विजयी) प्राप्तकर बड़ी शानके साथ सारे पश्चिमी और उत्तरी राज्य करने लगा।

सारांश

३२७-२५ ई० पू०	सिकन्दरकी चढ़ाई
३२६ ,, ,,	झेलमकी लड़ाई
३२३ ,, ,,	सिकन्दरकी मृत्यु

---

(९) मौर्यवंशीय सम्राटोंकी कथा।

चन्द्रगुप्त मौर्य (ई० पू० ३२२-२९८)—नन्दवंशके अन्तिम राजाके दो बेटे थे। इनमेंसे चन्द्रगुप्त मुरा नामक शूद्राणीके गर्भसे उत्पन्न हुआ था। राजाके मरने पर दूसरे बेटेको गद्दी मिली। सुननेमें आता है कि नन्द राजा चन्द्रगुप्तसे बिगड़ गये और उसको मगध राज्यसे निकाल दिया। इसलिये चन्द्रगुप्त मारा मारा फिरने लगा। अन्तमें पञ्जाबमें जाकर सिकन्दरसे मिला और कुछ दिन उसके साथ रह कर युद्ध विद्या सीखी। सिकन्दरकी मृत्युके पश्चात् चन्द्रगुप्तने पञ्जाबका कुछ हिस्सा जीत लिया और वहां से बड़ी भारी सेना लेकर वह मगध आया। यहां पर अपने गुरु विष्णुगुप्त कौटिल्यकी सहायतासे उसने ई० पू० ३२२ में मगध राज्य जीता। नन्दराजा नीच वंशके थे। इसलिय ब्राह्मणोंसे उनकी पटती न थी। इसीसे चन्द्रगुप्तको राज्य जीतनेमें सुभीता हुआ।

सम्राट् चन्द्रगुप्त—मगधको जीतने पर नन्द वंशीय राजाओंकी एक बड़ी भारी चतुरंगिनी सेना चन्द्रगुप्तके हाथ लगी। इसकी सहायतासे चन्द्रगुप्तने आर्यावर्तके सब देशोंको जीत लिया और पञ्जाबसे लेकर बंगाल तक और नर्मदासे लेकर हिमालयतक फैला हुआ एक बड़ा भारी साम्राज्य स्थापित किया। जब वह पाटलिपुत्रमें नहीं रहता था, तब सब राज काज

उसका प्रधान मंत्री विष्णुगुप्त करता था। मुराकी सन
होनेके कारण इस राज-वंशका नाम मौर्य पड़ा।

सेल्यूकसकी चढ़ाई—उन दिनों सेल्यूकस एशि
दक्षिणी और पश्चिमी हिस्सोंमें राज्य करता था। सिकन्
समान उसने भी चाहा कि भारतवर्षको जीतकर उसे अपने सा
ज्यमें मिला लें। अतः उसने ई० पू० ३०५ में एक बड़ी
सेना लेकर पंजाब पर चढ़ाई की। परन्तु चन्द्रगुप्तने उसे
दिया। इसलिए सेल्यूकसने चन्द्रगुप्तके साथ सन्धि कर
इस सन्धिके अनुसार यूनानी राजाको सारे अफगानिस्तान
बिलोचिस्तानसे हाथ धोना पड़ा, और अपनी लड़कीके
चन्द्रगुप्तकी शादी कर देनी पड़ी।

अब ध्यान लगाकर देखो कि सेल्यूकस एशियाई बादशा
और सिकन्दरसे उसका डीपू (Base) भी निकट था।
भी चन्द्रगुप्तके हाथसे उसकी हार हुई। इसका कारण य
कि चन्द्रगुप्त राजा पुरुके ऐसे एक छोटी सी रियासतका मा
न था। वह एक महान् और सुदृढ़ साम्राज्यका मालिक
उसकी सेना भारी थी, और शासन-पद्धति भी अच्छी थी।
एक रोबीले सम्राटको एक परदेशी यूनानी कैसे पा सकता थ

फिर इस लड़ाईमें जीत होनेके कारण मौर्यसाम्राज्यकी प
मीय सीमा हिन्दूकुश और बिलोचिस्तानके रेगिस्तान तक
गई। और प्राकृतिक सीमाके होनेके कारण पश्चिमसे नई च
नहीं होने पाई। थोड़ेमें चन्द्रगुप्तकी बढ़ती होनेके कारण
ग्रीक लोगोंने इस देशको जीत नहीं पाया और साथही साथ
स्वतन्त्रता एवं शिष्टताकी रक्षा हुई। इसी लिये इतिहासमें
नाम 'भारतवर्षके रक्षक' (The Saviour of India) प

वृद्धावस्थामें ई० पू० २६८ में वह अपने बेटे बिन्दुसार
एक भारी साम्राज्य सौंप कर स्वयं वनको सिधारा। वहीं
मृत्यु हुई।
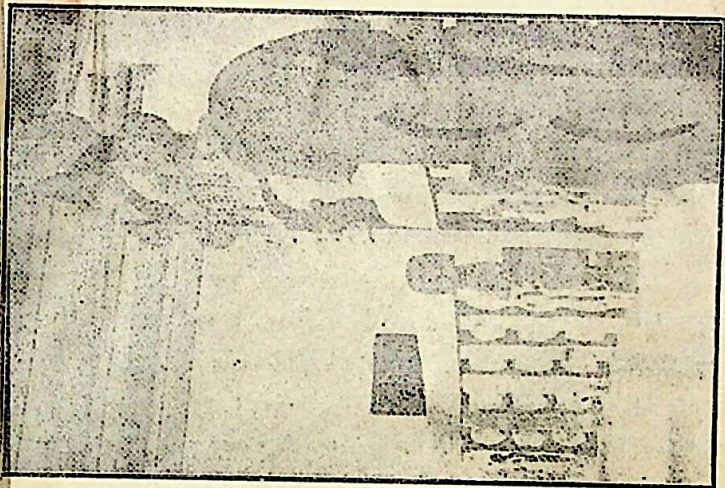
(Chap. 9.)

Dhamek Stupa.

(Chap. 9.)

Bharhut Nath Gate

चन्द्रगुप्तके साम्राज्य स्थापनसे यह बात स्पष्टतया प्रतीत होती है कि उस समय जनतामें उच्चकोटिकी राष्ट्रीय-जागृतिका भाव उत्पन्न हो गया था और उसीके आधार पर पीछेसे अशोकके धर्मप्रचारमें सफलता मिली।

देशकी अवस्था।—सेल्यूकसने घर लौट कर अपने एक दूत को चन्द्रगुप्तके दरबारमें भेज दिया। इसका नाम मैगस्थनीज़ (Megasthenes) था। इसने उस समयमें जो कुछ देखा सुना था उसे एक किताबमें लिखा था। उसके वर्णनसे और विष्णुगुप्त कौटिल्यके "अर्थ शास्त्र" के पढ़नेसे हम लोगोंको उस समयकी देशकी स्थिति ठीक ठीक मालूम होती है। संक्षेपमें वही अब मैं तुमको सुनाऊंगा।

राजधानी पाटलिपुत्र गंगा और सोन नदीके सङ्गमपर बसी थी। यह नगर लम्बाईमें ५ कोस और चौड़ाईमें एक कोस था। इस नगरके चारों ओर खाइयां खुदी हुई थीं, तथा लकड़ीकी दीवार लगी थी। इस दीवारमें जगह जगह पर छोटे छोटे टीले और ऊंचे ऊंचे मीनार बने थे। नगरके बीचमें सम्राटका महल बना हुआ था। महल अधिकतर लकड़ीका था। राजसभाके खंभे सोनेसे मढ़े हुए थे, और सोनेके अंगूर और चांदीकी चिड़ियोंसे सजे हुए थे। महलके चारों ओर सुन्दर सुन्दर बगीचे लगे हुए थे। बड़े ठाट-बाटसे दरबारका काम काज होता था। सम्राट था तो सोनेकी पालकीपर या सजे हुए हाथीपर सवार होकर दरबारमें आते थे। दरबारमें सोनेके और हीरा जड़े हुए तांबेके बड़े बड़े गमले शोभाके लिये रक्खे जाते थे। महलकी रखवाली यूनानी स्त्रियां करती थीं। सम्राट कभी कभी शिकार खेलनेके लिये भी जाते थे। कुश्ती और जानवरोंकी लड़ाई भी दरबारमें होती थी। आजकलकी घुड़दौड़के ऐसी रथोंकी दौड़ होती थी, जिसमें लोग बाजी लगाते थे। उन दिनोंमें भी आजकलकी तरह शहरोंमें म्युनिसिपल्टियां थीं। इसका काम काज पांच पांच मेम्बरोंकी छः

उपसमितियां करती थीं। कोई सभा कारीगरोंके कामपर दृष्टि रखती थी, कोई विदेशियों पर, कोई जनसंख्या पर, कोई व्या पर और कोई आमदनी पर।

मैगस्थनीज़ने उन दिनोंके शासन प्रबन्धकी भी बहुत प्रशंसा की है। खबर लेनेके लिये भेदिये नियत किये जाते किसानोंको पैदावारका चौथाई राज-कर देना पड़ता था। खे पानी देनेके लिये राज्यकी ओरसे बड़ी बड़ी नहरें बनायी थीं। किसानोंको इसके लिये एक विशेष कर देना पड़ता आजकलकी तरह उन दिनोंमें भी अच्छी अच्छी सड़कें बं और आध आध कोसके फासले पर एक एक पत्थर गड़े थे। तक्षशिलासे पाटलिपुत्र तक एक पक्की सड़क थी।

चन्द्रगुप्तकी सेना चतुरंगिणी थी। इनको सरकारसे तन मिलती थी। वे बरछा, भाला, तीर, तलवार, ढाल अस्त्रोंसे लड़ते थे। किसानोंको लड़ाईके समयमें भी फौ किसी तरहका कष्ट नहीं उठाना पड़ता था। ये लोग मामूली काम करते रहते थे, सिपाही लोग इन्हें नहीं छेड़ते जहाजी बेड़ेकी देखरेख एक अलग सभाकी ओरसे की जाती

ग्रीक लेखकोंने उन दिनोंके हिन्दुओंकी सचाई और सीधेसादे चाल चलनकी बड़ी प्रशंसाकी है। आम तौरपर मितव्ययी थे और मादक वस्तुओंसे प्रायः दूर रहते थे। वे सचाई और धर्मका आदर करते थे। मुकद्दमे, चोरी, डाका बहुत कम होते थे।

अशोक मौर्य (ई० पू० २७३-२३२)—सम्राट बि सारके कई एक बेटे थे। लेकिन उनमेंसे वे अशो सबसे अधिक प्यार करते थे। इसी लिये उन्होंने अशोकको यु बनाया। छोटी अवस्था होने पर भी अशोक दो बड़े बड़े सूबों शिला और उज्जैनके देशाधिपति (गवर्नर) रह चुके थे। लिये राज-काजसे वह अच्छी तरहसे विदित थे। बिन्दुस

मृत्यु होनेपर अशोकको ई० पू० २७३ में राजगद्दी मिली। दूसरे और सब राजकुमारोंको पेन्शन दे दी गई। ई० पू० २६९ में बड़े ठाटबाटके साथ अशोकका राज्याभिषेक हुआ।
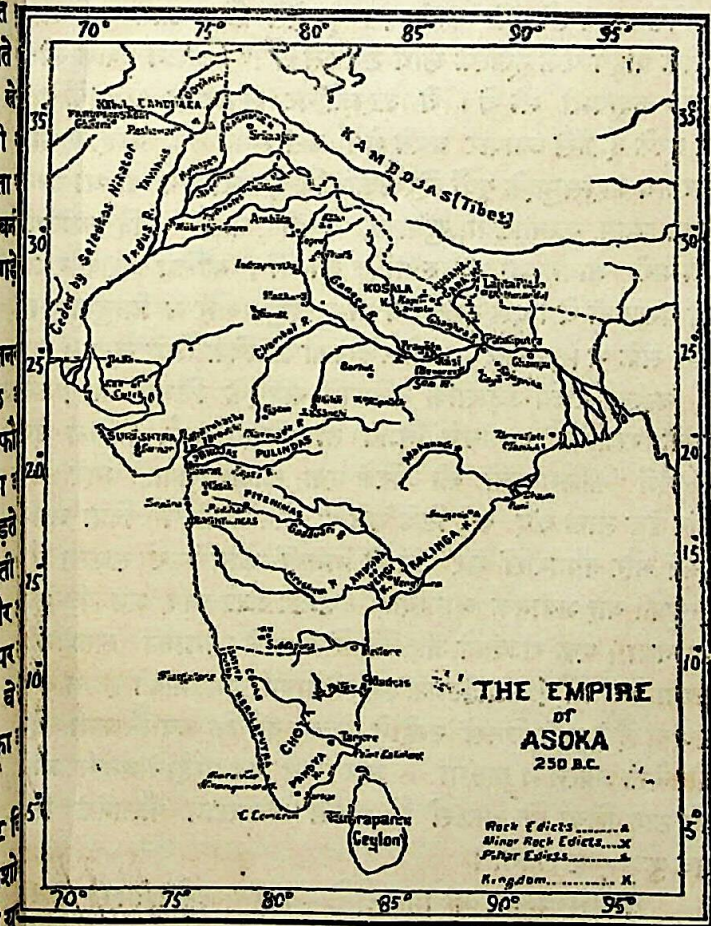
कलिंग पर विजय—तुमको मालूम है कि चन्द्रगुप्तने सारे री भारतको जीता था। बिन्दुसारने दक्षिणी भारतको जीता

और मैसूर तकका प्रदेश अपने साम्राज्यमें मिला लिया।
उन दिनों कलिंग भी एक भारी द्रविड़ राज्य था। इस राज्यकी
आबादी भी बहुत घनी थी। नगरोंका हाल यह था कि "जलूस
चलनेके समय लोगोंके कन्धे एक दूसरेसे मिल जाते थे।
रथोंके पहिये एक दूसरेके साथ टकराते थे।" कलिंग देशके
अच्छे व्यापारी भी थे। वे जहाज़ों पर सवार हो समुद्रमें
दूर दूरके देशोंसे व्यापार करते थे। उस समय तक उन्होंने
भारतीय महासमुद्रके पूर्वी हिस्सेको बिल्कुल रौंद डाला था
ब्रह्मा, श्याम, कम्बोडिया, सुमात्रा, यवद्वीप, बाली आदि स्थानों
हरी भरी आवादियां भी स्थापित की थीं। कलिंग देशके
बड़े पराक्रमी थे। इस देशको न तो चन्द्रगुप्त और न विन्दुसार
जीत सके थे। इसलिये अशोक इसको जीतनेके लिये चला।

कलिङ्ग राज्य उड़ीसाके दक्षिणमें समुद्रके किनारे था।
देशके राजापर अशोकने विजय तो अवश्य पाई, लेकिन
लड़ाईमें "कलिंगवालों की ओरके एक लाख सिपाही मारे
और डेढ़ लाख कैद कर लिये गये।" और जो लोग बिना
भूखों और बीमारीसे मरे उनकी गिनती कौन कर सकता
मृत्युकी यह भयानक कारवाई देखकर अशोकका मन
डर गया। एक राज्यको जीतनेके लिये इतने लोगोंका सत्यानाश
करना पड़ता है! लोभके वश होकर आदमी आदमीको इतना
सकता है! उसी दिनसे उन्होंने प्रतिज्ञा की कि अब मैं कभी
जीतनेका प्रयत्न न करूंगा। और उसी दिन उन्होंने मनही
यह ठान लिया कि आजसे मैं "धर्म्म" का राज्य फैलानेके
सब कुछ कष्ट सहूंगा।

धर्म्मसम्बन्धी अशोक नीति—महान् अशोकने इस
पर जो शोक अनुभव किया था उसका परिणाम यह हुआ
वह बौद्ध हो गया। उपगुप्त नामके एक बौद्ध भिक्षु इनके
बने। परन्तु ऐसा जान पड़ता है कि उन दिनों सर्व साधारण

बौद्ध धर्म्मका बहुत बड़ा प्रभाव पड़ चुका था और वैदिक धर्मकी दिनोंदिन घटती हो रही थी। अशोकको ये सब बातें मालूम हो गई थीं—सम्भवतः इसीलिये उन्होंने बौद्ध धर्म अवलम्बन किया हो।

यह भी सम्भव है कि अशोकने केवल धार्मिक प्रेरणा हीसे नहीं वरन् राजनैतिक विचारसे भी अपने साम्राज्यके अन्तर्गत एक धर्म फैलाने की चेष्टा की हो। उन्होंने देखा कि उनके दादा चन्द्रगुप्त छोटी छोटी रियासतोंको जीतकर एक बड़ा भारी साम्राज्य स्थापित कर गये हैं। अब इन्हीं सब छोटी छोटी जातियोंका हृदय एकताके सूत्रमें बांधनेके लिये, सभीको एक धर्ममें लानेके लिये—थोड़ेमें कुल छोटी छोटी जातियोंको मिलाकर एक महा-जाति बनानके लिये उन्होंने बौद्धधर्मको राजकीय धर्म बना दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि मौर्य साम्राज्यकी नींव केवल ज़मीनपर ही नहीं पड़ी, परन्तु जनताके हृदयोंपर भी पड़ी।

उन दिनों वैदिक धर्म के सिद्धान्तोंके अनुसार मुक्ति पाने के लिये लोगोंको खूब लिख पढ़कर या तो विद्वान बनना पड़ता था (ज्ञानकाण्ड), या उनको धूम धामके साथ यज्ञ आदि करना पड़ता था (कर्म्मकांड)। अब देखो; एक धर्मके माननेसे मनको जो शान्ति मिलती है, उन दिनों वैदिक धर्मको माननेसे सर्वसाधारण को वह चैन, वह आनन्द नहीं मिलता था। क्योंकि वे न बड़े विद्वान बन सकते थे, न खर्चा करके यज्ञ आदि ही कर सकते थे। सर्वसाधारणके लिये ही अशोकने अपने "सत्-धर्म्म" नामक एक अलग धर्मका प्रचार किया। इसकी शिक्षायें ऐसी चुनी हुई थीं कि सबलोग उनको मान कर चल सकते थे। उन शिक्षा-ओंको माननेके लिये न अधिक विद्याकी आवश्यकता थी और न रुपये पैसे की। और ये बातें ऐसी थीं कि क्या हिन्दू; क्या जैन और क्या बौद्ध; सभी कोई मान सकते थे। इन शिक्षाओंमें सबसे बड़ी बातें यह थीं कि—

"अपने मां बाप और गुरु जनों की भक्ति करो, दीन दुखियों
मिटाओ, किसी जीव को कष्ट न दो, दूसरोंके धर्मकी निन्दा न करो
सदा सच्ची बातें बोलो।"

पूजाका हितचिंतन—अशोककी नाईं प्रजापालक
बहुतही कम दीख पड़ते हैं। रात दिन वह यही सोचा करते
हमारी प्रजाकी भलाई कैसे हो। कौन उपाय करनेसे वह सु
और धार्मिक बनें। प्रजाको सन्मार्गमें उत्साहित करने
उन्होंने जगह जगह पर अस्पताल बनवाये थे जहां रोगियों
बांटी जाती थी। पशुओंके भी अस्पताल बनवाये गये थे।
अच्छी नई सड़कें बनवाई गईं, जिनके दोनों तरफ छाया
पेड़ लगवाये गये। रास्तेमें राहियोंकी प्यास बुझानेके लिये
के किनारे किनारे कुएँ खुदवाये गये। प्रजाकी धर्मोन्नति
अशोकने बड़े बड़े पत्थरके खम्भों और चट्टानों की भीतोंपर
अच्छे उपदेश खुदवाये थे जो आजतक मौजूद हैं। ये उपदेश,
चाल की पाली तथा अन्यान्य प्रादेशिक भाषाओंमें खोदे
जिससे सबलोग लाभ उठा सकें।

लोगोंके चालचलनपर दृष्टि रखनेके लिये और धर्मके
में उनको उत्साह दिलानेके लिये 'धर्म-महामात्र' और "धर्म
नामके अफसर भी नियुक्त किये गये थे और स्त्रियों को सदै
बनानेके लिये "इतीधक" नामके स्त्री-अफसरों की नियुक्ति
थी। प्रति पांचवें वर्ष सम्राट् प्रजाकी अवस्थासे परिचित
लिये देशाटन करते थे। लोगोंकी भलाई करनेके लिये
अफसर होते थे।

पुनः ज्यों ज्यों समय व्यतीत होता गया, त्यों त्यों
अधिकतर कट्टर बौद्ध बनते गये। फिर भी उन्होंने कभी कि
बौद्ध धर्म स्वीकार करनेके लिये वाध्य नहीं किया और
किसीको उन्होंने कोई खास धर्म माननेके लिये सताया।
के ऐसा उनके साम्राज्यमें भी 'सुलह-इ-कुल' फैला हुआ

बौद्ध धर्मका प्रचार—बौद्ध धर्मका प्रचार करनेके लिये
होंने मिसर, ग्रीस, एशिया कोचक आदि दूर दूर देशोंमें बौद्ध
क्षुओंको भेजा। अशोकहीकी डाली हुई नींवपर पीछेसे सीरिया
के महान् धर्मसुधारक यीशू मसीहने ईसाई धर्म खड़ा किया।
के अतिरिक्त लंका द्वीपमें, दक्षिणके तामिल राज्योंमें, भारतीय
पपुञ्जों (The Indian Archipelago) में और हिमालयकी
नेवाली जातियोंमें बौद्ध लोग जाकर अपने धर्मको फैलाने
। उन दिनों हजारों विहार बने। इन विहारोंके रहनेवाले बौद्ध
ग सर्वसाधारण को लिखना पढ़ना भी सिखाते थे। अशोक
यं कभी कभी बौद्ध भिक्षु बनकर भीख मांग कर खाते थे।
होंने शिकार खेलना और मांस खाना बिल्कुल छोड़ दिया।
होंने यज्ञादिके समयमें बलिदान करने विवाहादिके अवसरपर
सव मनाने तथा समाज नामके मेले आदिकी रीति बन्द करवा
, तथा उनके स्थानमें धर्म-यात्रा, धर्म-मङ्गल, रथ-यात्रा, हस्ती-
न आदि जलूस और मेले स्थापित किये। अशोक होने प्रथम
थम बुद्ध आदि देवदेवियों की मूर्ति और चित्र आदि पूजनेकी
था चलाई। धर्म-सम्बन्धीय बुरी रीति-नीतिको दबाने और बौद्ध
र्मको सुधारनेके लिये उन्होंने ई० पू० २४० में पाटलिपुत्रमें
ड़े बड़े बौद्ध पण्डितोंकी एक भारी सभा की। इसी सभाकी
रसे धर्मकी कुल किताबें दोहराई गयीं। इस सभाका काम
ज़ पाली भाषामें हुआ था।

अशोककी मृत्यु (ई० पू० २३२)—इसी तरहसे सारी
नुष्य जातिके लिये तरह तरहकी भलाई करके, अशोक चालीस
र्ष तक राज्य करनेके बाद ई० पू० २३२ में स्वर्ग धामको
धारे। दिव्यावदान नामक एक बौद्ध पुस्तकका कथन है कि
शोककी वृद्धावस्थामें मन्त्रि-परिषद्ने उनके हाथसे राज-काजके
ल काम छीन लिये और युवराजको सपुर्द कर दिये। फिर भी
ह अवश्य कहा जायगा कि ऐसा राजा दुनियामें कम हुआ है।

शायद ही किसी सम्राट्ने अपनी प्रजाकी इतनी भलाइयां
एक शिला लेखमें वे कहते हैं कि—

"सारी प्रजा मेरी सन्तानके समान है। मेरी इच्छा यही
बेटाकी तरह मेरी प्रजा भी इस लोक और परलोकमें चनसे रहे।"

बौद्ध धर्मको फैलानेके लिये अशोकने बहुत परिश्रम
था। बुद्ध देवकी जब मृत्यु हुई थी तब बौद्ध धर्मके
लोग बहुत कम जानते थे। पर बुद्धकी मृत्यु के दो सौ
बाद अशोकके उत्साहसे यह धर्म दुनियाकी बहुतसी
फैल गया। उन्हींकी चेष्टासे आज तक करोड़ों आदमी
देवकी पूजा करके अपनेको धन्य मानते हैं।

मौर्य वंशका पतन—अशोकके उत्तराधिकारी बड़े
निकले। इस लिये उनकी मृत्युके पचास बरसके बाद ही
वंशका अन्त हो गया (ई० पू० १८४)। इसके बाद शुंग
ब्राह्मण वंशके सम्राट् राज्य करते रहे।

पतनका कारण—अशोकने राष्ट्र-नीतिको धर्मके
साथ इतना अधिक मिला दिया था कि स्वतन्त्र रूपसे दोनों
स्थिति तक नहीं रहने पाई। मौका पाते ही दूर दूरके सूबे
गान्धार, आन्ध्र, कलिंग आदि स्वतन्त्र बन गये। यदि
पूछो तो मौर्य साम्राज्य मरती हुई अनार्य सभ्यताकी आर्य
तथा शिष्टताके विरुद्ध एक महान् प्रतिक्रिया मात्र थी। अ
बौद्ध धर्मके सिद्धान्तों पर जोर देते हुए, इच्छा न रहने प
वैदिक धर्मके सिद्धान्तों पर हमला कर दिया था। जब
यज्ञादिके अवसर पर पशुओंको बलि चढ़ानेकी प्रथा बन्द
दी, जब उन्होंने वर्ण-श्रेष्ठ ब्राह्मणोंकी श्रेष्ठता माननेसे
किया और एक ही दृष्टिसे ब्राह्मणसे चाण्डाल तक
ज़ातिके लोगोंको देखने लगे, तब ब्राह्मण धर्म तथा शिष्ट
रक्षा करनेके लिए एक सामवेदीय ब्राह्मण हाथमें तलवार
उठ खड़ा हुआ। इसका नाम पुष्यमित्र शुंग था।

शुंग वंश और कण्व वंश (ई० पू० १८४-२७)—

पुष्यमित्र बड़ा कट्टर हिन्दू था। बौद्ध इतिहास लेखक तारानाथका यह कथन है कि वह बौद्धोंको बड़ा सताता था। ई० पू० १५५ के लगभग मिनान्दर (Menander) नामका अफ़गानिस्तानके एक यूनानी राज़ाने हिन्दुस्तान पर चढ़ाई कर दी। मिनान्दर बौद्ध धर्मका था। नागसेन नामके एक बौद्ध भिक्षुके साथ उसकी जो धार्मिक कथाएं हुई थीं, "मिलिन्द-पञ्ह" नामकी धर्म पुस्तकमें मिलती हैं। वह बड़ा शूर-वीर भी था। शाकल (आज कल सियालकोट) से चलकर उसने दक्षिणमें राजपुताने तक और पूर्वमें मथुरासे होते हुए सीधे अवधतक जीत लिया और वहींपर पुष्यमित्रने उसको हराया। विजयके उपलक्षमें उसने एक अश्वमेध यज्ञ भी किया। वैदिक धर्मकी उन्नतिके साथ साथ संस्कृत भाषाकी भी उन्नति होने लगी। पतञ्जलि और भास नामके दो बड़े पण्डित उन दिनोंमें हुए थे। भास एक भारी नाट्यकार थे। मानव-धर्मशास्त्र नामक स्मृतिकी पुस्तक इन्हीं दिनोंमें फिरसे लिखी गई तथा रामायण और महाभारत भी दोहराये गये और ब्राह्मणोंकी श्रेष्ठता फिरसे स्थापित हो गई।

पुष्यमित्रके मरनेके बाद और कई राजा इस वंशके हुए थे। अन्तिम राजा देवभूतिको मार कर उनका ब्राह्मण मन्त्री वासुदेव स्वयं राजा बन बैठा। काण्व वंशके चार राजा ई० पू० २७ तक राज्य करते रहे। इसी समय दक्षिणके आन्ध्र वंशके राज़ाने मगधको जीता।

कलिंग—खरवेल—अशोककी मृत्युके उपरान्त दक्षिणका कलिंग राज्य फिरसे स्वाधीन हो गया। चेती वंशके राजे बड़े ठाटबाटसे उस देशपर राज्य करने लगे। इस वंशका तृतीय राजा खरवेल बड़ा प्रतापी था। उदय गिरिके शिला लेखसे मालूम पड़ता है कि उसने बरार और मगध देशोंपर हमला किया (ई० पू० १६५)। धर्मका तो वह जैनी था, परन्तु ब्राह्मणोंको भी मानता था।

आन्ध्र वंश (ई० पू० २००—२२५ ई०)—जब भारतमें मौर्यवंशी राजा राज करते थे, तब सातवाहन आन्ध्र राजा दक्षिणमें बड़ी शानके साथ राज्य करते थे। तैलंगी थे। गोदावरी और कृष्णा नदीके मुहानेसे इनकी सीधे बम्बई हाते तक फैली हुई थी। उनकी राजधानी निकट थी। मगध जीतनेके बाद उनका राज्य और भी इस वंशके तीस राजा ४०० बरस तक राज्य करते वैदिक धर्मके अनुयायी थे परन्तु जनता पर बौद्ध अधिक प्रभाव था। बड़े बड़े चट्टान खोद कर लोग बौद्ध रहनेके उपयोगी विहार बनवा देते थे। और साथही धर्मके लोग गौदान, ब्राह्मणोंको दान देना आदि समझते थे। हाल नामके एक राजाने महाराष्ट्रीय प्राकृत गाथा-सप्तशती नामकी एक पुस्तक लिखी। राजा पुलुमाई और यज्ञश्रीने बम्बई हातेके निवासी "क्षत्रपों" दिया। क्षत्रप लोग शक जातिके थे। आन्ध्र राज्यके साथ देशोंका व्यापार भी चलता था।

देशके भीतरी हिस्सोंसे गाड़ीपर व्यापारके सामान— मलमलके कपड़े, कीमती पत्थर आदि लाद कर व्यापारी भारुकच्छ, सोपार, कल्याण आदि बन्दरगाहोंको ले जाते थे। मिसर, रोम आदि देशोंसे आये हुए व्यापारी इन चीज़ों को कर अपने देशको ले जाते थे। शहरोंमें म्युनिसिपल (निगम सभा) के द्वारा सफाईका प्रबन्ध आदि होता था।

दक्षिण की रियासतें—अशोकसे कलिंग वालोंका कर युद्ध हुआ था, उसका विशेष फल यह हुआ कि दक्षिणके जो छोटे छोटे परन्तु समृद्ध, तीन तामिल राज्य थे स्वतन्त्रताकी रक्षा हो गई। ठीक ठीक आजतक पता नहीं है कि ये राज्य कब स्थापित हुए थे। परन्तु इसमें कुछ भी नहीं है कि ये बड़ी प्राचीन रियासतें थीं।

आजकलके मदुरा और त्रिचनापली जिलोंमें पाण्ड्य राज्य था। यहाँके राजे अपनेको पाण्डवों की सन्तति कहते थे। मालाबारके किनारे आजकलके कोचीन और त्रिवांकुर रियासतों के स्थानमें प्राचीन केरल वा चेरा राज्य स्थापित था। तथा कारोमण्डलके किनारे चोला राज्य था। पुनः पाण्ड्य राज्यसे ही कुछ लोगोंने लंकाद्वीपमें जाकर एक पराक्रमी राज्य स्थापित किया। ये सब रजवाड़े आपसमें तथा लंकाके राजाके साथ खूब लड़ते-भिड़ते थे। इन राज्योंके साथ आन्ध्र राज्यका निकट सम्बन्ध था। तामिल साहित्यसे पता चलता है कि आन्ध्र-राजने जब मगधको जीता तब ये राजे भी उसके साथ मगध गये थे। तामिल व्यापारी जहाजोंपर सवार होकर प्राचीन कालमें बेबीलन, सीरिया, मिसर आदि देशोंसे व्यापार करते थे। यूरोपीय विद्वानोंकी राय यह है कि तामिल व्यापारी ही मेसोपोटेमियासे वहांकी लिपि-माला अपने देशमें लाये। ईसाके बाद की प्रथम और द्वितीय शताब्दीमें रोमके साथ चेरा और पाण्ड्य राज्योंका खूब व्यापार चलता था। इन्हीं दिनोंमें तामिल साहित्य की भी बड़ी उन्नति हुई थी।

सारांश

३२२—२९८	ई० पू०		मौर्य वंश—चन्द्रगुप्त
३०५	,,	,,	सेल्यूकसकी चढ़ाइ
२७३	,,	,,	अशोक
२४०	,,	,,	बौद्ध महासभा
१८४	,,	,,	मौर्यवंशका अन्त
,,	,,	,,	शुंग वंश—पुष्य मित्र
१६५	,,	,,	खरवेल
१५५	,,	,,	मिनान्दरकी चढ़ाई
७३—२७	,,	,,	कण्व वंश
२०० ई० पू०—२२५ ई०			आन्ध्रवंश

(१०) मौर्य कालमें देशकी अवस्था।

ऐतिहासिक दृष्टिसे मौर्य सम्राटोंका युग एक अतीव [illegible]नीय युग है। इन्हीं दिनोंमें भारतवासियोंने अपने उद्योग[illegible] भारी साम्राज्य स्थापित किया था, जिसकी देख-रेख एक [illegible]शाही सरकार करती थी। समाज, शिक्षा, धर्म सब कुछ [illegible] काजके अन्तर्गत थे। सच पूछो तो यह कहना अनुचित [illegible] होगा कि प्रजाका जान-माल साम्राज्यके लिये ही था- प्रजाके लिये नहीं था। उन दिनों राज्य शासनकी ऐसी [illegible] चलानेकी आवश्यकता भी थी। क्योंकि पश्चिमोत्तरीय [illegible] पर ग्रीक लोग इस देश पर विजय प्राप्तिके शुभ अवसरकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

उन दिनोंके शासन प्रवन्धका हाल हमको कौटिल्यके [illegible] शास्त्र, मेगस्थनीज़ के वर्णन और अशोकके शिला [illegible] पढ़नेसे मालूम होता है।

शासनका प्रबन्ध—राज्यका पालन सम्राट स्वयं [illegible] इस काममें सम्राट् को सहायता देनेके लिये सैकड़ों छोटे [illegible] अफसर होते थे। प्रत्येक अफसरकी कारवाई पर ध्यान रखनेके लिये भेदिये नियत किये जाते थे। सारा साम्राज्य कई [illegible] में विभक्त था। प्रति सूबेका मालिक एक स्थानिक वा [illegible] पति होता था। इसके अतिरिक्त खानों की देख रेख [illegible] दुर्भिक्ष से लोगों को बचाने, व्यापार पर दृष्टि रखने, [illegible] पदार्थों को एकत्रित करने तथा जहाज़ आदिकी देखभाल [illegible] के लिये अलग अलग अफ़सर होते थे। आचार्य, [illegible] तथा पुरोहित भी बड़े अफसरोंमेंसे थे। ऊसर स्थानों [illegible] आबाद करनेका प्रबन्ध सरकारकी ओरसे होता था। गांवके [illegible] ब्राह्मण आदि को मुफ्तमें जमीन मिलती थी। गांवकी [illegible]

खने के लिये किला होता था। जो पिता-माता वा बालबच्चोंकी
ख-रेख नहीं करते थे उन्हें दण्ड मिलता था। अनाथ स्त्रियोंका
ालन सरकार करती थी। नगर द्वारके समीप लाल रंगके
ण्डे से सजा हुआ एक चुङ्गी-घर होता था। श्रोत्रिय ब्राह्मणोंको
ुफ्तमें ज़मीन दी जाती थी। आवश्यक होनेपर सरकारकी ओरसे
वताका जलूस निकाल कर भी रुपया वसूल किया जाता था।
रकारकी ओरसे वर्णाश्रम धर्मकी रक्षा की जाती थी।

अशोकने बौद्ध होनेके पश्चात् लोगोंको धार्मिक बनानेके लिये
ो जो उपाय ठहराये तथा नये नये अफसर नियुक्त किये, इसका
र्णन ऊपर हो चुका है। उनके समयमें ब्राह्मणों की प्रतिष्ठा पहले
ैसी नहीं रही।

धर्म—इन्द्र, वरुण, अग्नि, सोम आदि वैदिक देवोंके अति-
िक्त लोग मन्दिर बनाकर अपराजिता, शिव, वैश्रवण, श्री आदि
वदेवीको पूजते थे। विशेष पर्वोंपर बाढ़ रोकनेके लिये धूमधामके
ाथ नदियोंको पूजा चढ़ाई जाती थी। लोग भूत प्रेतको
ानते थे और चैत्य वृक्षोंको भी पूजते थे। उच्च जातिके लोग
वेकी भांति वैदिक यज्ञादि भी करते थे। सालमें कई दिन यात्रा,
त्सव, समाज आदि भी मनाये जाते थे। इन उत्सवोंमें तमाशे,
ाटक, गीत, खान पान आदि होते थे। अशोकके बौद्ध बननेपर
ो जो परिवर्त्तन हुए थे, उनका वर्णन ऊपर हो चुका है। इस
रिवर्त्तनका परिणाम यह हुआ कि तभीसे बौद्ध धर्मने अपना
चीन आदर्श तज दिया तथा जनताका मन उभाड़नेके योग्य
ाना प्रकारके दिखौआ तथा बाहरी प्रथाओंको ग्रहण किया। और
ींपर महायान धर्मकी नींव पड़ी।

शिल्पकला—चन्द्रगुप्तके राजमहलकी बनावट और उसकी
ारीगरी देखकर यूनानी लोगोंको बड़ा अचरज हो गया था।
ेगास्थनीज़ की रायमें यह महल ईरानके सम्राटोंके महलोंसे अच्छा
ा था। उस समय नहर और बड़े बड़े तालाब भी बड़ी आसानी

के साथ खोदे जाते थे। अशोक के समयके खम्भोंको देखकर
कलके बड़े बड़े इञ्जीनियर लोग ताकतेही रह जाते हैं।
लोग इस बातको ठीक तरह जानही नहीं सकते कि
विना रेलके कैसे इतने बड़े बड़े पत्थर देशके एक प्रान्तसे
प्रान्त तक पहुंचाये जाते थे। उन दिनोंके कारीगरोंकी
का सबसे अच्छा नमूना पत्थरोंपर की पालिश है। मामूली
घिसकर संगमर्मर की तरह चमकदार व चिकना करनेकी
आज किसीको नहीं आती। परन्तु उन्हें यह विद्या मालूम
ये खम्भे दूरसे बिल्कुल धातुके बने हुए मालूम पड़ते हैं।

इन्हीं दिनोंमें बड़े बड़े स्तूप बनते थे। काशीके निकट
में एक बहुत ऊंचा स्तूप है। वैसेही भूपाल रियासतमें
स्तूप है; और मध्य भारत (Central India) के बारहुत
स्थानमें भी बड़े बड़े स्तूप बने हुए हैं। स्तूप ईंटोंके बड़े
टीले होते हैं। ये स्मृतिके लिये या क़ब्रके लिये बनाये
सांची और बारहुतके स्तूपोंके चारों ओर पत्थरके घेरे बने
इन पत्थरोंपर तरह तरहके दृश्य खुदे हुए हैं। इन सब
देखने से इसका पता चलता है कि उस समयमें लोग कैसे
से अपने दिन बिताते थे। बड़े बड़े पहाड़ोंको काटकर उनके
में बौद्ध बिहार वा मठ बनानेकी रीति भी इसी समय चल
थी। नासिकके निकट, बम्बईसे पूना जानेके रास्तेपर
और हैदराबाद रियासतमें अजन्ता की खोहोंमें ऐसे मठ अब
मौजूद हैं। बड़े बड़े कमरे, खम्भे सब कुछ चट्टान काटकर
जाते थे। पुनः पहाड़ की भीतपर पलस्तर करके उसीपर
सुहावने चित्र खींचे गये हैं। कारीगरीके विचारसे ये सब
उच्च कोटिके हैं।

शिक्ष—कौटिल्यके अर्थशास्त्रसे पता चलता है कि
में चार वेदोंके अतिरिक्त लोग इतिहास-वेदका पठन पाठन
थे। प्राचीन कथा, इतिवृत्त, धर्मशास्त्र और अर्थशास्त्र सब

इतिहास-वेदके अन्तर्गत थे । राजकुमारोंको वेद और इतिहासके अतिरिक्त न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग आदि विषय पढ़ाये जाते थे । तीन चार वर्षकी अवस्थाके बालकोंको लिपि विद्या सिखाई जाती थी । अच्छी लिपि लिखनेपर बहुत ज़ोर दिया जाता था ।

अशोकने अपने उपदेशोंको चट्टानोंकी भीतपर वा पत्थरके बड़े बड़े खम्भोंपर खोदवा कर उन्हें ऐसे स्थानोंपर स्थापित किया था, जहां कि जनता की भीड़ लगती थी । ये सब शिलालेख पाली भाषामें हैं । इनसे जान पड़ता है कि उन दिनों जनताकी भाषा पाली थी । लिखे पढ़े आदमियोंकी औसत आजकलसे कहीं अधिक थी । ब्राह्मणोंकी भाषा संस्कृत थी । मामूली लोग इस भाषाको कम समझते थे । बौद्ध लोगोंका धर्मशास्त्र सर्व प्रथम इसी भाषामें लिखा गया था । मालूम होता है कि इन दिनोंमें शिक्षाका केन्द्र तक्षशिलामें नहीं रहा । इन दिनों काशी, उज्जैनी, पाटलिपुत्र आदि केन्द्र थे । अशोकके उत्साहसे पाली भाषा की बहुत उन्नति होनेपर भी संस्कृत भाषामें बहुत सी अच्छी अच्छी पुस्तकें लिखी गईं, जिनका स्वल्पमात्र परिचय ऊपर दिया गया है । कौटिल्य और पतञ्जलि इन दिनोंके साहित्य रथियोंमेंसे थे ।

विष्णुगुप्त कौटिल्य—विष्णुगुप्त गोत्रके कौटिल्य थे । उनके पिताका नाम चणक था, इसी कारण लोग उन्हें चाणक्य भी कहते हैं । वह बड़े सुपुरुष थे तथा बदला लेनेमें बड़े तत्परथे । एक दिन वह पितृश्राद्ध करनेको थे कि उनके चरणोंमें कुश गड़ जानेसे रक्त निकल आया, और उस दिन वह श्राद्ध नहीं कर पाये । इसलिये क्रोधके वशमें होकर उन्होंने चारों ओर जितना कुशका गुच्छा था सभीको उखाड़ डाला । नन्दवंशके अन्तिम राजाने उनका अपमान किया था, अतः उन्होंने नन्दवंशका ध्वंसही कर दिया, और चन्द्रगुप्तको राजगद्दी दिलादी । आर्यावर्त्तके प्रथम सम्राट् चन्द्रगुप्तके प्रधान मन्त्री होते हुए भी वह अध्यापकका काम करते, नित्य यज्ञादि करते और छोटीसी एक झोपड़ीमें रहते थे । चन्द्र-

गुप्त जब सिंहासन परित्याग कर बनको सिधारे तभी औं भी नौकरीसे इस्तेफा दे दी। वह एक आदर्श ब्राह्मण मन्त्री

पतञ्जलि—पतञ्जलिकी माताका नाम गोणिका था गोणर्द देश (चेदी के निकट) के रहनेवाले थे। उनके मिनान्दर ने आर्यावर्त्त पर चढ़ाई कीथी। पुष्यमित्रने जो यज्ञ किया था उसमें उन्होंने ऋत्विक्‌का काम किया था काश्मीर उज्जैन, पाटलिपुत्र आदि स्थानोंसे परिचित थे। उत्साहसे जब पाली आदि प्रान्तीय भाषाओंकी बड़ी उन्नति तभी संस्कृत भाषाके शुद्धताकी रक्षा करनेके लिये उन्होंने पा के व्याकरण पर "महाभाष्य" नामकी एक भारी टीका लि

नगर-निर्माण—प्राचीन भारतमें नगर-निर्माणकी क भी बड़ी उन्नति हुईथी। प्रत्येक नगरके चारों ओर एक भरी हुई गम्भीर खाई होती थी और उससे कुछ दूर पर दीवार बनाई जाती थी। प्रति दिशा में एक एक फाटक होतो जो रात्रिके समय बन्द कर दिया जाता था। उन फाटकोंके दूसरे स्थानोंमें जानेके लिये पक्की सड़कें होती थीं। शहर भारी सड़कें होती थीं। इनके अतिरिक्त और वीथियां (होती थीं। नगरके एक एक भागमें एक एक वर्णके लोग र जैसे उत्तरमें लोहार, हीरा आदिके काम करने वाले और रहतेथे। दक्षिणमें वैश्य, सरकारी कारखाने आदि होतेथे। क्षत्रिय जातिके लोग, अच्छे कारीगर और व्यापारी रहते पश्चिममें शूद्र जातिके लोग रहते थे। एक एक वीथीमें एक तरहके द्रव्य बिकते थे, जैसे पुष्प-वीथिमें फूल मिलते थे, वीथिमें हाथी-दांतके बने हुए सामान आदि। इसके अतिरिक्त नगरमें बगीचे, तालाब, मन्दिर आदि भी होते थे। आज शहरोंमेंसे जयपुर प्राचीन आदर्शपर बना हुआ है। यह नगर शाह औरंगजेबके समय में बना था।

प्रति नगरमें सफाईका प्रबन्ध म्युनिसिपल सभाकी

होता था। मैगस्थनीज़का यह कहना है कि उसके समयमें पाटलिपुत्र नगरको म्युनिसिपल सभाके तीस मेम्बर थे। और छः उपसमितियों द्वारा नगरकी देख-रेखका काम होता था। एक कारीगरों पर दृष्टि रखती थी, दूसरी विदेशी व्यापारियों पर, तीसरी जन्म और मृत्यु पर, चौथी व्यापार पर, पांचवी कारखाने पर, छठीं चुंगी आदि वसूल करती थी। सड़क पर कूड़ा, मैला पानी, वा मृत जन्तु आदि फेंकनेसे सजा होती थी। नासिक शिला-लेखोंसे पता चलता है कि आन्ध्र राज्यमें भी निगम-सभाएं थीं।

श्रेणी (Guilds)—प्राचीन समयमें ऐसा नियम था कि किसी एक चीज़के कुल कारीगर एक ही स्थानमें रह कर उस मालको तैयार करके बेचते थे। ऐसे हो जुलाहे, वैद्य, अन्नादिके बेचने वाले, सोनार, सौदागर लोगोंकी अलग अलग श्रेणी होती थी। ये लोग आपसमें कामका विभाग कर लेते थे, मूल्य निर्धारित करते थे, एक दूसरे की मदद करते थे, चन्दा वसूल कर अच्छे कामोंमें भी लगाते थे। हर एक श्रेणीका एक एक मुखिया होता था, उसका नाम श्रेणीमुख्य वा प्रमुख होता था। राजसभामें श्रेणीमुख्योंकी प्रतिष्ठा थी।

शिल्प और व्यापार—मौर्य सरकारकी ओरसे प्रत्येक बड़े बड़े किलेमें कारखाने स्थापित किये जाते थे। वहां तरह तरहके हथियार, सोने चांदी और जड़ाऊके गहने, जङ्गलके पैदावार आदिसे उपयोगी सामान बनाये जाते थे। इन कारखानोंमें चतुर कारीगरोंसे काम लिया जाता था। इसके लिये सरकारसे उन्हें वेतन मिलता था। कभी कभो बेगारसे भी काम लिया जाता था। इनके अतिरिक्त अनाथा विधवा तथा अङ्गहीन स्त्रियोंका पालन सरकार करती थी। इसके बदले रूई रेशम, ऊनसे सूत कातनेका काम उनसे लिया जाता था। कच्चा माल सरकारकी ओरसे उनके घर पर भेजवा दिया जाता था। नमक,

खानकी पैदावार आदि पर सरकार का एक मात्र अधिकार
बहुतसी जगहों पर सरकारकी ओरसे कपड़े बिननेके का
स्थापित किये गये थे।

समाज—मौर्य कालीन समाजमें अधिक कुछ परिवर्तन
हुआ था। सर्कार प्राचीन आदर्शका अनुयायी हो कर प्रजा
वर्णाश्रम धर्मके अनुसार काम करनेके लिये वाध्य करती थी
दूतका काम भी ब्राह्मण करते थे। ब्राह्मण सेना दलमें भी भरती
थे। परन्तु इस विषयमें क्षत्रियों ही की अधिकतर मांग थी।
ब्राह्मणोंको कोई कर देने नहीं पड़ते थे। प्रायः ब्राह्मण अ
धियोंको दण्ड नहीं दिया जाता था, परन्तु चोरी करने पर
गरम करके दाग देनेकी रीति थी। और राजद्रोह करने पर
पानीमें डुबा दिया जाता था। अशोकके समयमें इनकी
बिलकुल जाती रही। शूद्र लोग कारीगरी, कृषि, सेना, नट
के काम कर पेट पालते थे। जो लोग अपने माता पि
खाना और कपड़ा नहीं देते थे, उन्हें दण्ड मिलता था।
जो अपने परिवारके लोगोंके खाने पीनेका प्रबन्ध न कर प्र
ले लेते थे, उन्हें भी दण्ड मिलता था। गांवके भीतर नट,
भांड़ आदिका घुसना मना था। पतञ्जलिसे पता चलता है
शुंग वंशीय सम्राटोंके समयमें फिरसे ब्राह्मणोंकी धाक जम
थी। समाजमें विधवा-विवाहकी चाल नहीं थी। उन
जिस ब्राह्मणको साल भर खानेके लिये अनाज मौजूद रहता
जो लोभी तथा स्वार्थी नहीं होते थे, तथा किसी एक वि
पारदर्शी होते थे उन्हें शिष्ट कहा जाता था। इनको पा
अवश्य ही पढ़ना पड़ता था।

(११) शक जातिकी चढ़ाइयां ।

सम्राट् सेल्यूकसकी मृत्यु के उपरान्त अशोक के समयमें बैक्ट्रिया देश (बल्ख) स्वतन्त्र हो गया। वहां पर ग्रीक रजवाड़े राज करने लगे। मौर्यवंशीय अन्तिम राजाओंके समयमें शकजाति की एक शाखाने बैक्ट्रिया देश जीता। अतः ग्रीकलोग बैक्ट्रियासे आगे बढ़े और अफगानिस्तानमें आकर उन्होंने बहुतसी छोटी छोटी रियासतें स्थापित कीं।

यूनानी और पार्थीय रजवाड़े—इन यूनानी राजाओंमें डिमिट्रियस् (Demetrius) ने ई० पू० २०० के लगभग हिन्दुस्तान पर चढ़ाईकी और पञ्जाब को जीता। लोग उसे "हिन्दुस्तानका सम्राट्" कहते थे। इसके बाद ई० पू० १५५ में मिनान्दर नामके एक दूसरे ग्रीकने हिन्दुस्तान पर चढ़ाईकी और दूर दूरके देशों पर विजय प्राप्तकी। इसका वर्णन पहिले हो चुका है। तभी से ग्रीक लोग पञ्जाब देश में रहने लगे।

बैक्ट्रियाके साथ साथ पार्थिया नामका एक सूबा (खोरासान, समरकन्द और कासपियन सागरकी दक्षिणी तटभूमि) भी स्वतन्त्र होगया। पार्थिया के एक राजा मिथ्रेडेटीज़ने (Mithradates I) ई० पू० १४० में हिन्दुस्तान पर चढ़ाईकी और पञ्जाबका कुछ हिस्सा अपने राज्य में मिला लिया। पश्चिमोत्तर प्रान्तमें यूनानी राजाके साथसाथ पार्थीय राजाभी राज करने लगे। प्राचीन संस्कृत ग्रन्थोंमें इन्हींका नाम पह्लव पड़ा है। इन पह्लव रजवाड़ोंमें से गाण्डोफेरीज़ (Gondophares) (२०—५० ई०) का नाम प्रख्यात है। कहा जाता है कि इन्हीं दिनोंमें टामस नाम के एक ईसाई ने सर्व प्रथम इस देशमें ईसाई धर्मका प्रचार किया था।

सेन्ट टामस (St. Thomas)—टामस यीशु मसीहके बारह

शिष्योंमें से एक थे। मसीह के देहान्तके उपरान्त उनके शि
धर्म प्रचार करनेके लिये पृथ्वीके भिन्न भिन्न अंशोंको आ
विभक्त कर लिया। कहते हैं कि पार्थिया और हिन्दोस्तान टा
अधीन कर दिये गये। टामस धर्म प्रचारके कार्यमें सफल भं
थे, अन्तमें धर्मके कारण उन्होंने अपना प्राण तक विसर्ज
दिया। मद्रास प्रान्तमें अभी तक उनकी समाधि मौजूद है।
कुछ यूरोपीय विद्वानोंने यह बात ठहराली कि भारतीय वै
धर्म तथा भक्ति मार्गकी नींव सेन्ट टामसहीने डाली थी। प
यह सिद्धान्त बिल्कुल निर्मूल है। शिलालेख से पता चलता है
इस बातके १५० वर्ष पूर्वमें हेलिडोरस (Helidorus) नामके
ग्रीकने भागवत-धर्म ग्रहण किया था, तथा ग्वालियर रियास
वेसनगरमें उसकी स्थापित गरुड़ध्वज आज तक इस
सचाईको प्रमाणित करता है।

शक जातिकी चढ़ाई—शक लोग पहिले पहल सर दरि
और आमू दरियाके बीचके भू-भागमें रहते थे। ये लोग कई
शाखाओंमें विभक्त थे। इनमें से एकका नाम यूची था। ए
जातिके लोगों पर पश्चिमी चीनमें रहनेवाली ह्रूंग्-नू नामकी ए
जङ्गली जातिने विजय प्राप्त की। अतः यूची लोगोंने शक जाति
दूसरी शाखासे जो आमू दरियाके आस पास रहती थी, उन
वासस्थान जीता और उस शाखाके लोग हार जानेके कारण दक्षि
णकी ओर चलकर ग्रीक लोगोंसे बैक्ट्रिया और अफ़गानिस्ता
छीन लिया। अफ़गानिस्तानसे शक लोग धीरे धीरे भारतव
चले आये। इन्होंने कई एक रियासतें स्थापित कीं, जिनमें ए
तक्षशिलामें, दूसरी मथुरामें और तीसरी गुजरातके प्रायद्वीपमें थी

कुशान जाति—क़ादफाईसीज़ पहिला व दूसरा—यू
जातिने शक लोगोंसे बैक्ट्रिया तो जीत ही लिया था। अब
और भी आगे बढ़े और अफ़गानिस्तान भी जीत लिया
यूची जाति पांच शाखाओंमें बंटी हुई थी। १५ ई०के करी
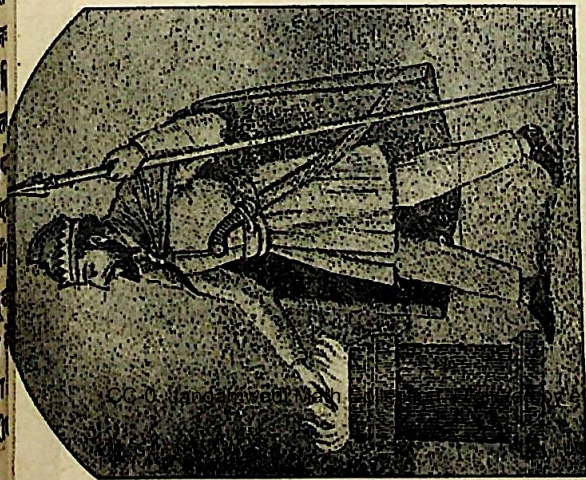
(Chap. 11)
Emperor Kanishka.
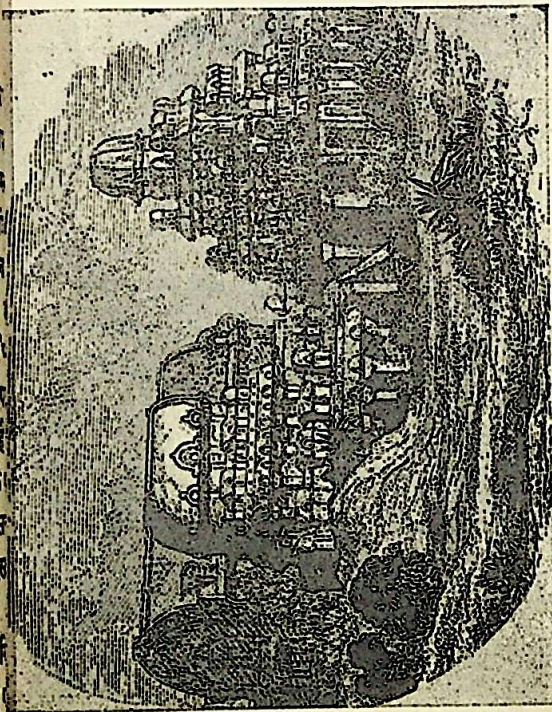
(Chap. 10.)
Rathas (Mamallapuram.)

कुशान लोगोंका मुखिया कादफ़ाइसीज़ (पहिला) (Kadphises 1) वाकी और चार शाखाओंके लोगोंको दवाकर खुद राजा बन गया। वैक्ट्रियामें अपना रोब अच्छी तरहसे जमा कर उसने शक लोगोंको भगा दिया और यूनानी तथा पार्थीय राजाओंको भी हरा दिया, फिर उसने काबुल व कन्दहार जीता और तक्षशिला राज्यको भी अपने अधीन कर लिया। करीब ४५ ई० में उसकी मृत्यु हुई। उसके बेटे कादफाइसीज़ (दूसरा) (Kadphises II) ने अपने बापका काम उठा लिया और हिन्दुस्तान पर भी चढ़ाई की। पण्डितोंकी राय यह है कि उसने पूरबकी ओर बनारस तक तथा दक्षिणकी ओर नर्मदा तक जीता। इसके सिक्कोंसे यह मालूम होता है कि वह शिवजीका भक्त था। उन दिनों चीनवाले पश्चिमी एशियाके कुल देशोंको जीतनेका प्रयत्न कर रहे थे। उस समय तक वे लोग खोतन तक पहुंच गये थे। इसलिये कादफाइसीज़को उनसे लड़ना पड़ा। लेकिन वह हार गया और चीनके बादशाहको कर देना पड़ा। सुननेमें आता है कि कादफाइसीज़ (दूसरा) ने रोमके बादशाहके पास ६५ ई० में अपना एक दूत भी भेजा था। ७८ ई० के लगभग उसकी मृत्यु हुई।

कनिष्क (७८-१२३ ई०)– कुशान राजाओंमें कनिष्कका नाम बड़ा प्रसिद्ध है। इसके पिताका नाम वझेष्क था। इसकी राजधानी पुरुषपुर (आजकल पेशावर) थी। उसने मगध राज्य पर विजय प्राप्त की और मालवाको भी जीता। फिर इस देशमें शासनका ठीक ठीक प्रबन्ध करके उसने उत्तर दिशाकी ओर अपनी दृष्टि फेरी और पामीर पार चीनके बादशाहको कर देने वाले काशगर, यारकन्द और खोतनके राजाओंको जीता। और जमानतकी तौर पर उनके तीन राजकुमारोंको अपने साथ लाया। कहा जाता है कि येही लोग भारतवर्षमें पहिले पहल सेब और आड़ू लाये थे।

शकाब्द—इन्हीं दिनोंमें एक नया सम्वत् चल निकला जिसे शकाब्द कहते हैं। पश्चात् इसी सम्वत्को लोगोंने शालिवाहन

नामके साथ जोड़ दिया। इसका प्रारम्भ कनिष्कके राज्या
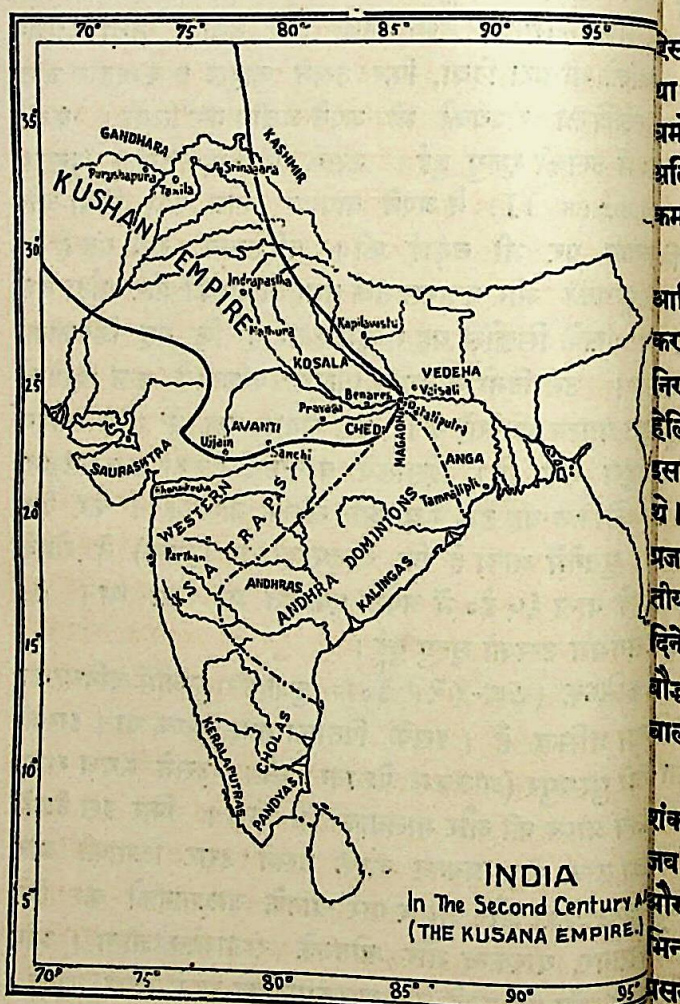
के दिनसे हुआ था। हमारे देशमें आज तक इस सम्वत्का व्यवहार होता है।

कनिष्कका धर्म—कनिष्कके समयके सिक्कोंको देखनेसे ऐसा मालूम होता है कि धर्मके बारेमें वह निश्चय नहीं कर सका था कि कौनसा धर्म सर्वोत्तम है। अतः वह उन दिनोंके सभी धर्मोंको मानताथा। वह ईरानियोंके ऐसा अग्निपूजक था। इसके अतिरिक्त वह ग्रीस तथा हिन्दू देवदेवियोंको भी मानता था। परन्तु कम से कम भारतवर्षमें वह अपने को बौद्ध कहता था।

इसके कारण भी थे। तुम जानते हो कि सिकन्दर, सेल्यूकस आदि विदेशी विजयी वीरगण जब केवल बाहुबल पर निर्भर हो कर भारतवर्ष पर विजय प्राप्त करनेके लिये आये थे तब उनको निराश होकर अपने घरको लौटना पड़ा था। परन्तु जब मिनान्दर, हेलिडोरस आदि विदेशी वीर लोग एक भारतीय धर्मको मानकर इस देशके निवासियोंपर राज्य करने लगे, तभी वे सफल भी हुए थे। अतः सम्भव है कि कनिष्कने समझ लिया थाकि भारतीय प्रजा के हृदयों पर विजय प्राप्त करनेके लिये किसी एक भारतीय धर्म काही अवलम्बन करना उचित होगा। और चूंकि उन दिनों बौद्धधर्मकी धाक अधिक जमी हुई थी इसलिये कनिष्कने बौद्ध मतको ग्रहण किया। अतः इसमें इसकी राजनैतिक चाल भी थी।

महायान धर्म—फिर इन्हीं दिनों बौद्धधर्मके लिये एक अतीव संकटमय काल आ गया था। मौर्य सम्राटोंका अंत हो जानेपर जब ब्राह्मण राजवंशके साथ वैदिकधर्म और संस्कृत भाषाकी शान और एकबार जमी तब बौद्धधर्म को जीवित रखनेके लिये उसको भिन्न स्वरूप देनेकी आवश्यकता दीख पड़ी। इसी समय जनताको प्रसन्न रखनेके लिये तत्त्वज्ञानकी गम्भीर बातोंके स्थानमें बाहरी ढकोसलोंसे तथा भाषाके परिवर्तन के द्वारा प्राचीन बौद्धधर्मकी जगहपर एक नवीन बौद्धधर्मकी नींव डाली गई। इस नवीन बौद्ध

धर्मका नाम महायान पड़ा, तथा प्राचीन धर्मको लोग हीनयान
कहने लगे। कनिष्कके ही उत्साहसे अश्वघोष नामके एक सुवि
पण्डितने काश्मीरकी तरेटीमें जहां बौद्ध महासभा (महासंगीति
हुई थी (१०० ई० के लगभग) महायान धर्मका प्रचार कि
इसकी भाषा संस्कृत हुई तथा वैदिक और तान्त्रिक सि
यथा ध्यान, तन्त्र-मन्त्र, भक्तिवाद, जप, तीर्थ-यात्रा, मूर्ति-
आदि, सभी बातें महायान धर्ममें मिलाली गईं। इसी प्रकार
जनताको सन्तुष्ट रखनेके लिये बौद्ध धर्मकी काया पलट हो गई।

महायान धर्मकी उन्नतिके लिये कनिष्कने अशोककी
अत्यन्त परिश्रम किया। उसने काश्मीर, पेशावर, गान्धार,
काशगर आदि स्थानोंमें बहुतसे मठ और मन्दिर बनवा
कनिष्कने पेशावरमें ४०० फीट ऊंची एक मीनार भी बनवाई
इसके निकट ही एक भारी बौद्ध-मठ और मन्दिर था। यहां
दूरसे विद्यार्थी पढ़ने आते थे।

अन्तिम दशा—कनिष्क केवल धर्मके विषयहीमें अग्र
था बल्कि वह एक बड़ा विजयी वीर भी था। उसका साम्रा
भी अतीव विस्तृत था। उत्तरमें अलताई पहाड़से दक्षिणमें
नदीतक और अफगानिस्तानसे पूर्वमें बिहार तकके भूभा
कनिष्क एकमात्र सम्राट् था। रोम और चीन साम्राज्यके
व्यापार बढ़ानेके उद्देश्यसे रोमकी देखादेखी उसने भी
सिक्के बनवाये थे। कनिष्क की पूरी पदवी थी 'महाराज-
तिराज-देवपुत्र-कैसर कनिष्क।

सुननेमें आता है कि जिस समय कनिष्क तुर्किस्तानमें
बादशाहसे लड़ रहे थे, उसी समय उसके कई एक नमक
नौकरोंने उसका दम घोंटकर मार डाला (१२३ ई०)। कनि
मरनेके अनन्तर उसकी सन्तान बड़े ठाट-बाटसे राज्य करने ल
कुशान लोग इस देशमें बहुत दिन रहनेके कारण हिन्दू बन
इस राजवंशका अन्तिम सम्राट वसुदेव हुआ। वह शिव

भक्त था। इसीके समयमें कुशान साम्राज्य टूट गया। दूर दूरके सूबे स्वतन्त्र हो गये। फिर भी वसुदेवकी सन्तति अफगानिस्तान और पञ्जाबमें ३१९ ई० तक राज्य करती रही। अन्तमें गुप्त वंशके सम्राटोंने उनको नीचा दिखाया।

पश्चिमीय भारतके क्षत्रप-वंश—ऐसा मालूम होता है कि शक जातिने ईसाके बाद की प्रथम शताब्दीमें ग्रीक लोगोंसे गुजरात और काठियावार प्रदेशोंको जीता। यहांके शक ज़ातिके राजा अपनेको क्षत्रप कहते थे। सम्भव है, कि प्रथम प्रथम वे किसी पार्थीय राज़ाके अधीन रहे हों। परन्तु स्वाधीन होनेके बाद भी उन्होंने अपनी पद्वी नहीं छोड़ी। १२५ ई० में आन्ध्र-राज़ गौतमी पुत्रने नहपान नामके क्षत्रपको बेतरह हरा दिया और उसके स्थानमें चष्टान नामक एक दूसरे शकको क्षत्रप नियुक्त किया। चष्टानकी सन्तति तुरन्त स्वतन्त्र हो गई और बड़े ठाट बाटके साथ चौथी शताब्दी तक राज करने लगी। अब इनका नाम महाक्षत्रप पड़ा। क्षत्रप लोग धर्मके हिन्दू थे, तथा संस्कृत भाषाके प्रेमी थे। इस वंशके अन्तिम राज़ाको मारकर गुप्त वंशीय सम्राट् चन्द्रगुप्तने इनके राज्यको अपने साम्राज्यमें मिला लिया (३९५ ई०)।

क्षत्रप राजाओंमेंसे महाक्षत्रप रुद्र-दमन (१४३-१५८ ई०) का नाम प्रख्यात है। इसने आन्ध्र-राजको हराया और कोंकण, सिन्ध, मालवा आदि देशोंको ज़ीता। रुद्र-दमन ब्राह्मण धर्मका संरक्षक था तथा प्रजारञ्जक भी था। इसने गिरनार पर्वतके सन्निकट सुदर्शन सरकी मरम्मत करवा दी थी (१५० ई०)। इसी सिलसिलेमें एक शिला-लेखमें उसने लिख दिया कि "प्रजा की भलाई करनेके कारण हमने अपने कोषसे बहुतसा धन लगाया है, परन्तु इसके लिये प्रजासे कभी एक कौड़ी नहीं माँगी"।

सारांश

१५० ई० पू० . . . . मिनान्डर

७८ ,,	शक-संवतका आरम्भ होत
७८–१२३ ई०	कनिष्क
१४३–१५८ ई०	रुद्र-दमन

(१२) कुशान वंशीय सम्राटोंके समय देशकी अवस्था।

यद्यपि कुशान–राजवंश विदेशी था, तथापि उनके राज में देशकी भरीपूरी अवस्था बनी रही। और धर्म, व्यापार, सा आदिके क्षेत्रमें क्रमोन्नतिकी शैली नहीं बिगड़ने पाई। प्रधान कारण यह था कि पूर्वकालके विजयी लोग विजित की आत्माके साथ अपनी आत्माको बिलकुल मिला देते थे उसकी उन्नति से अपनी उन्नति मानते थे।

धर्म—महायान धर्म के बड़े बड़े सिद्धान्त ऊपरही बं हैं। फिर भी उसे हीनयान धर्मके साथ तुलना कर दिखा यह बात और अधिक तुम्हारे मन में बैठेगी। इसी लिये मैं दोनों की पारस्परिक तुलना करूंगा।

हीनयानीका सर्वोच्च आदर्श अर्हत् बननेका था। अतः मार्गमें कुछ स्वार्थ की गंध थी। इनलोगोंका ऐसा विचार थ अपनी उन्नति होने पर जगत् की उन्नति होगी। महाया आदर्श बोधिसत्त्व बननेका था। बोधिसत्त्वोंका हृदय सारी के कल्याण करनेके लिये सदैव उन्मुक्त रहताथा। ये सर्व जगत् का कल्याण चाहते थे और अन्तमें अपने लिये मु प्रार्थना करते थे। हीनयानीका सिद्धान्त यह था कि अच्छे चलनके होनेसे और सदाचारी बननेही से लोगोंमें ज्ञानका होगा। महायानीका मत यह था कि केवल सदाचारी बनने मुक्ति नहीं होगी; वरन् उसके साथ भक्तिभी होनी चाहिये।
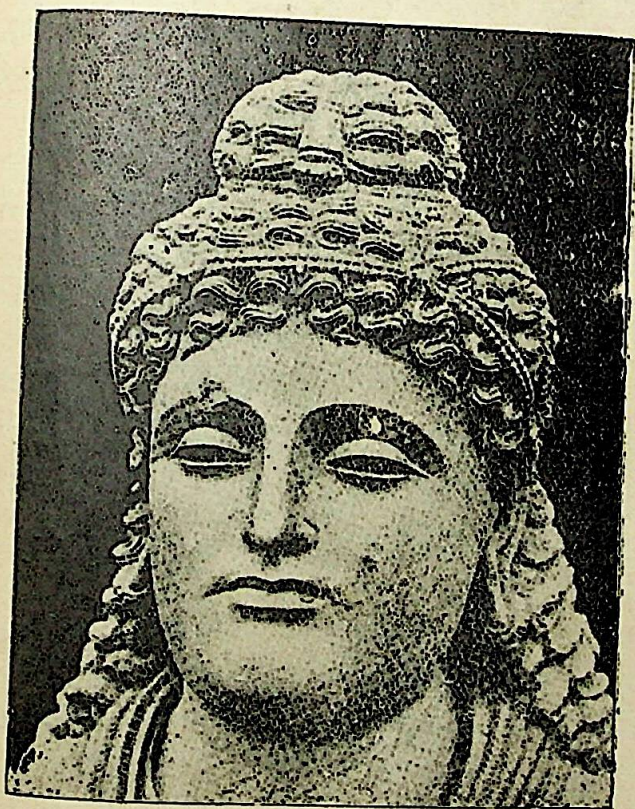
(*Chap. 12.*)

Bodhisattva Maitreya.

यानी मूर्त्तिपूजाको निरर्थक समझतेथे और महायानी मूर्त्तिपूजा करते थे। हीनयानीकी धर्मपुस्तकें पाली भाषामें रची गई थीं, महायानीने वही काम संस्कृत भाषा से लिया।

कुशन सम्राटोंके साथ चीनका केवल राजनीतिक क्षेत्रहीमें सम्बन्ध नहीं स्थापित हुआ वरन् धर्मके क्षेत्रमें भी यह सम्बन्ध बना रहा। ६७ ई० में काश्यप मातंग और भरण आदि श्रमण लोगोंने चीनके सम्राटके निमन्त्रण पर उस देशमें जाकर बौद्ध धर्मका प्रचार किया। ई० पू० ५३ में कौण्डिण्य गोत्रके एक ब्राह्मणने इन्द्रो-चीनमें जो नई आबादीकी बुनियाद डाली थी, उसीको केन्द्र मान कर अनाम, कम्बोडिया, सुमात्रा, जावा आदि द्वीपोंमें हिन्दू धर्मका भी प्रचार होने लगा। पुनः वात्स्यायन से पता चलता है कि नागरिकों के गृहमें तरह तरहके पूजा-पाठ, व्रत-नियम, हवन आदि हुआ करते थे तथा हिन्दूलोग ठाट-बाटके साथ शिव, विष्णु, सरस्वती आदिकी पूजा करते थे।

शिल्प कला—महायान धर्मके सिद्धान्तके अनुसार मूर्त्ति-पूजाकी रीति चल निकलने पर यूनानी शिल्पी लोगोंने गान्धार देशमें मूर्त्ति बनानेके एक नये ढंगका आविष्कार किया। इसका नाम आजकल गान्धार शैली पड़ा है। इसमें भारतीय तथा यूनानी शिल्प दोनोंका मिलान है। इस शिल्पका प्रधान केन्द्र मथुरा हुआ। बुद्ध देव तथा बोधिसत्त्वोंका नाना प्रकारकी मूर्तियां बड़ी सुगमताके साथ बनती थीं तथा दूर दूरके देशोंमें भेजी जाती थीं। पश्चात् सारनाथमें भी ऐसी मूर्तियां बनने लगीं। पुनः वात्स्यायनके पढ़नेसे मालूम होता है कि नागरिकोंके घरमें देवदेवियोंकी मूर्तिके अतिरिक्त और और प्रतिमा भी सजावटके लिये रखनेकी प्रथा थी तथा तक्षण विद्याकी आलोचना भी अधिक होती थी। चित्रकारीकीभी इन दिनोंमें बड़ी उन्नति हुई थी। काष्ठ फलक, भीत और मोटे कपड़े पर चित्र बनानेकी रीति थी। भिन्न भिन्न मानसिक भावोंके

प्रकाश करनेके लिये तरह तरहके रंगोंके व्यवहार करनेकी
थी कुमारी कन्याओंको भी वह विद्या सिखाई जाती थी।

साहित्य—महायान मतके लोगोंने जब संस्कृतको
धार्मिक भाषा बनाई तभीसे बहुतसे बौद्ध धर्मशास्त्र उसी भा
रचे गये। इन दिनों अश्वघोष, नागार्जुन, वसुमित्र
प्रख्यात बौद्ध ग्रन्थकार हो गये। इनके अतिरिक्त इन्हीं दि
वात्स्यायनने कामसूत्र नाम की प्रसिद्ध पुस्तक लिखी।

अश्वघोष—जातिके ब्राह्मण थे। इनकी माताका
सुवर्णाक्षी था। बौद्ध बननेके पूर्व संस्कृत भाषामें इनको
कोटिकी शिक्षा मिली थी। वह बड़े प्रख्यात कवि तथा सुग
भी थे। तिब्बतीय भाषामें अश्वघोषकी जो जीवनी मिल
उसमें यह लिखा है "कोई प्रश्न उनको कठिन नहीं प्रतीत
था, प्रत्येक संशयको दूर कर सकते थे, तथा वे अपनी
विद्वत्ताके द्वारा अपने विरोधियोंको धूरमें मिला देते थे।"

इनकी रचित बुद्ध-चरित नामकी पुस्तक सबसे अच्छी
जाती है। विद्वानोंका यह मत है कि कालिदासने इन
अपना आदर्श माना। कनिष्कके समयमें जो महासंगिति हुई
उस सभामें इन्होंने सर्व प्रथम महायानधर्मका प्रचार किया।

नागार्जुन—दूसरी सदीके अन्तिम भागमें दाक्षिणात्यके
नामी ब्राह्मण कुलमें इनका जन्म हुआ। इन्होंने भी चारों वे
अध्ययन करनेके पश्चात् बौद्ध धर्म ग्रहण किया। उन्होंने द
बौद्ध धर्मके प्रचार करनेमें अपना जीवन व्यतीत किया।
रचित बहुतसी धर्मपुस्तकें वर्तमान हैं। इन्होंने महायानधर्म
की एक शाखा दाक्षिणात्यमें स्थापित की। ये अच्छे कवि,
निक, वैद्य तथा बड़े भारी तार्किक भी थे। इनके अतिरिक्त
दिनोंमें चरक और सुश्रुत नामके प्रसिद्ध वैद्योंका भी जन्म
था। इन्होंने चिकित्सा शास्त्र की बड़ी उन्नति की।

व्यापार—तुमसे पूर्वहीमें यह बात कही गई है कि

साम्राज्य की पश्चिमीय और उत्तरीय सीमा रोम और चीन साम्राज्योंसे बिलकुल मिली हुई थी। इसका परिणाम यह हुआ कि इन दिनोंमें इन तीन साम्राज्योंके बीच खूब व्यापार चलने लगा। चीनके बने हुए रेशमी वस्त्र हमारे पुरखे बड़ी चावसे पहिनते थे। इसके अतिरिक्त स्थल-पथ और जल-पथके द्वारा रोम साम्राज्यके विभिन्न प्रान्तोंके साथ हमारे देशका भारी व्यापार होता था।

टायना–निवासी आपोलोनियस की जीवनी (४५ ई०) से पता चलता है, कि उन दिनोंमें भारतवर्षके साथ बैबीलन और मिसर का अतीव निकट सम्बन्ध था। तक्षशिलामें लोग यूनानी भाषा तथा उनके दर्शनके सिद्धान्तोंके साथ भली भांति परिचित थे तथा बैबीलनसे व्यापारी तथा यात्री लोग सदैव हिन्दोस्तानको आया जाया करते थे।

पुनः एक ग्रीक कप्तान की लिखी हुई एक पुस्तकसे (The Periplus of the Erythrean Sea) उन दिनों मिसर, फारस और एशिया कोचकके साथ जो व्यापार होता था उसका वर्णन मिलता है। उन दिनोंमें व्यापारी लोग सारे आर्यावर्त्तसे माल जुटा कर उज्जैनीमें जमा करते थे, पुनः वहांसे कुल माल भारुकच्छको भेजते थे। वहां रोमके सौदागर लोग ताँबा, टिन, सीसा आदि धातु और सोने तथा चांदीके बने हुए सिक्कोंके बदलेमें हमारे देशसे चोला राज्यका मिहीन मलमल, मोती और रत्न, चन्दन, सुगन्धित चीजें, मसाला आदि देशको लेजाते थे। प्लीनी नामक एक रोमन लेखक (पहिली सदी) का यह कहना है कि "प्रति वष हिन्दोस्तानी व्यापारी हमारे देशसे करोड़ों रुपये हरले जाते हैं; क्योंकि हम लोग उनके लाए पदार्थोंको सौगुना दाम देकर खरीदते हैं।" और एक स्थानमें वह लिखता है कि "हम लोग अपनी स्त्रियोंको सन्तुष्ट करनेके लिये प्रति वर्ष हिन्दोस्तानियोंको ७५ लाख रुपये देते हैं।" इसके अतिरिक्त खम्बातकी खाड़ीसे हिन्दुस्तानी व्यापारी जहाजोंमें भर

कर अनाज, घी आदि अफ्रिका, लालसमुद्रकी तरेटी आदि देशों भेजते थे। मिसरके साथ दक्षिणी भारतका सम्बन्ध इतना अधिक था कि उस देशके लोग कनारी भाषा अच्छी तरह सम लेते थे। पुनश्च चीन सागरके साथ सुयेज़ प्रान्तका व्यापार होता था उसका बीच मोकाम चेरा राज्य था।

समाज—इन्हीं दिनोंमें लिखित वात्स्यायनका कामसू उस समयके नगरमें रहनेवाले विलासी अच्छे घरकी स्त्रियोंके विलास युक्त जीवन का एक जीता जागता चित्र है। वात्स्याय इनके नाम नागरिक और नागरिका दिया है। नागरिक की दि चर्याके बारेमें वह लिखते हैं कि प्रातः कृत्य कर वे अपना अंग करते थे। अच्छी तरहसे माला-चन्दन पहिन करके सुवासित और उत्तरीय पहिनते थे तथा अपने ओठों को लाल रंगसे रं और आंखोंमें काजल लगाते थे। पान और तरह तरह के मस भी वे खाते थे। प्रति तीसरे दिन साबुन (फेनक) आदि ल का नियम था, तथा प्रति चौथे दिन हजामत बनानेकी रीति थ उन दिनों लोग बड़े बड़े नख रखते थे तथा उनको विचित्र री काटते थे। तीसरे प्रहरमें वह या तो अपने विदूषक और मित्रों बात चीत करते थे या मेढ़ा या मुर्गोंकी लड़ाई देखते थे या को को गीत सुनते अथवा मोरके नाच देखते थे। फिर कपड़ा अ पहिन कर गोष्ठी वा सामाजिक सम्मेलनमें जाते थे। रात्रिके स वे नृत्य-गीत सुनने में व्यतीत करते थे।

इसके अतिरिक्त समय समयपर मन्दिरोंमें उत्सव आदि मन जाते थे। माघके महीनेमें बड़ी धूमके साथ श्री पञ्चमी का उत्स आश्विनमें कौमुदी जागर, फाल्गुनमें होली, श्रावणमें झूल उत्सव मनाये जाते थे। पुनः वर्षागम होने पर कदम्ब पु आपस में लड़ाई या नवीन घासपर दौड़ धूप, जल-क्रीड़ा, उद्या यात्रा आदि उन दिनोंके विलासियोंके व्यसन थे।

घर गृहस्थीके कुल काम स्त्रियाँ करती थीं। वह पति

सम्मान करतीं तथा उनकी इच्छा के विरुद्ध कोई भी काम नहीं करती थीं। कभी कभी पति से आज्ञा लेकर गोष्ठी में जाती थीं परन्तु सदैव जानेसे उनकी निन्दा होती थी। घरके देवताओं की पूजा, व्रत-उपवास आदि मनाती थीं। पति की आज्ञा की अनुयायी होकर समझ-बूझ कर खर्चा भी चलाती थीं। बड़े घर की स्त्रियों तथा गणिकाओं को शास्त्र तथा कला आदि पढ़ाने की रीति थी। दरिद्र घर की कन्याओं को केवल कला ही की शिक्षा दी जाती थी। समाजमें विधवा विवाहका नियम नहीं था, फिर भी जो विधवा विवाह कर लेते थे, उनकी सामाजिक स्थिति बिगड़ती नहीं थी।

---

(१३) नवीन हिन्दू युग-गुप्तसम्राटोंकी कथा।

नवीन हिन्दू युग— तुमसे पहिले ही यह बात कही गई है कि आणु-वैदिक कालके अन्तिम भाग (ई०पू० ६०० से १०० ई०)में बौद्ध लोगोंकी धाक जमी हुई थी। परन्तु साथ ही साथ यह बात भी वतलाई गई है कि उन दिनोंमें भी वैदिक धर्मका बिल्कुल नाश नहीं हो गया था। तथा काण्व और शुंग वंशियोंके समयमें वैदिक धर्म का प्रभाव और एक बार जम गया था। यह भी दिखाया गया है कि वैदिक धर्म के साथ बराबरी करने हीके कारण बौद्ध धर्मकी काया पलट हो गई जब कि वैदिक धर्म और तन्त्रके बड़े बड़े सिद्धान्त बौद्ध धर्ममें मिला लिये गये।

भारतवर्षके प्राचीन इतिहास कालमें बौद्ध युगके बाद ही नवीन हिन्दू युगका उदय हुआ। इन दिनोंमें हिन्दू धर्मकी भी काया पलट हुई तथा प्राचीन वैदिक धर्म और यज्ञादिके स्थानमें आज कलका हिन्दू धर्म, जिसके सिद्धान्त स्मृति, पुराण और तंत्र के अनुयायी हैं, चल निकला। इन्हीं दिनोंमें मन्दिरादि बनाकर हिंदू देवदेवियोंकी तान्त्रिक पूजाकी विधि चल निकली। पुराणादि

शास्त्र ग्रन्थोंमें तन्त्रके बड़े बड़े सिद्धान्त—यन्त्र-मन्त्र, पूजा-पाठ, ध्यान-धारणा, तीर्थ यात्रा आदि सभी कुछ मिला लिये गये। पुनः इन्हीं दिनोंमें बौद्ध धर्मके प्रभावसे बिगड़े हुए हिन्दू समाज को फिरसे स्मृति और धर्मशास्त्रोंके आधार पर सुधारनेकी महती चेष्टा हुई थी। कुछ विद्वान् इस युगको पौराणिक युग कहते हैं, परन्तु इसे तांत्रिक युग कहनाही बहुत ठीक होगा।

इस रीति से जब नवीन हिन्दू धर्म तथा बौद्ध धर्मने तन्त्रके बड़े बड़े सिद्धान्तोंको अपने धर्ममें मिला लिये तब वाह्य दृष्टि से दोनोंका एकीकरण हो गया। इसका फल यह हुआ कि अन्त तक बौद्ध धर्म भी हिन्दू धर्मका अंग हो गया तथा बौद्ध धर्मके कुछ सिद्धान्त भी हिन्दू-धर्मके साथ मिला लिये गये। इसी प्रकार से अपनी जन्मभूमिमें बौद्ध धर्मका अन्त हो गया।

पहिला चन्द्रगुप्त (३२०—३३५ई०)— कुशान साम्राज्य के टूटने के बाद चौथी शताब्दीके पहिले हिस्सेमें पाटलिपुत्रमें एक छोटासा राजा राज्य करता था। उसका नाम चन्द्रगुप्त था। इतिहासमें इसका नाम पहिला चन्द्रगुप्त पड़ा है। मौर्यवंशी सम्राट् चन्द्रगुप्तसे इसका किसी तरहका सम्बंध नहीं था। उसने मगध के उत्तर लिच्छवी राजवंशकी एक राजकुमारीके साथ जिसका नाम कुमारदेवी था, व्याह कर लिया। इस व्याहका फल यह हुआ कि तबसे लिच्छवी लोग चन्द्रगुप्तके मित्र बन गये। उनकी सहायता से धीरे धीरे चन्द्रगुप्तने सारे बिहार, युक्त प्रदेशके पूर्वी हिस्से, तथा अवध आदि जीत लिये। और तभीसे वह अपनेको महाराजाधिराज कहने लगा तथा एक सुदृढ़ साम्राज्यकी नींव डाली। इसलिये वह जीते जी लिच्छवियोंका बड़ा प्रेमी बना रहा। उसने अपनी रानी और लिच्छवियोंके नामोंको अपने सिक्कोंमें खुदवा दिये। ३३५ ई० में उसकी मृत्यु हुई। उसकी अभिषेक तिथि से (२०, फरवरी ३२०) गुप्ताब्दका आरम्भ माना जाता है।

समुद्र गुप्त ३३५—३८० ई०)— उसका पुत्र समुद्रगुप्त
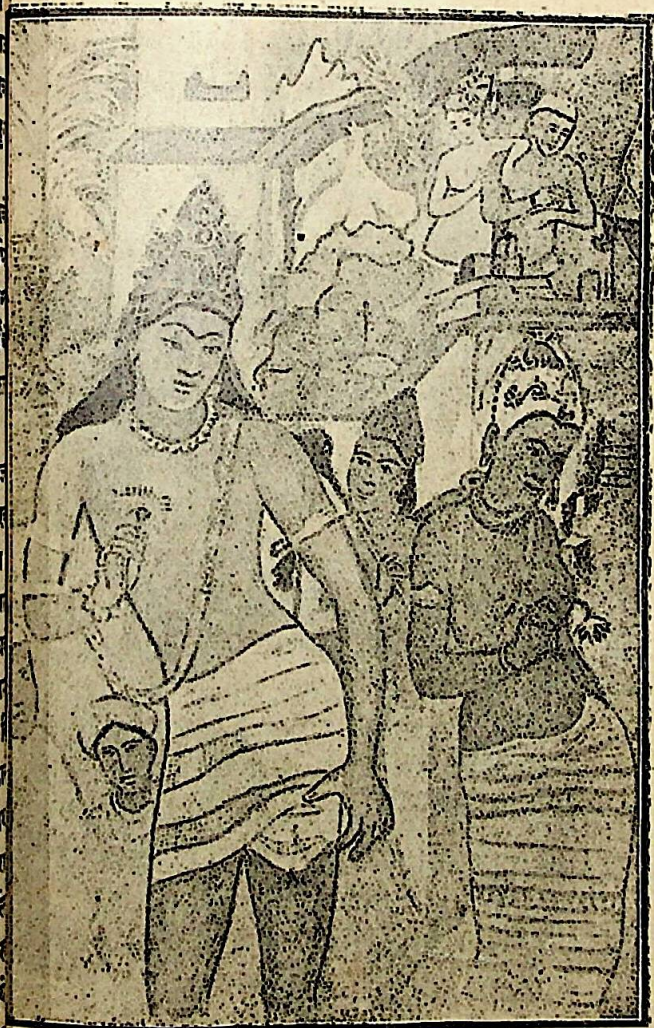
और भी प्रतापी निकली। वह बड़ा वीर था। इसके अतिरिक्त उच्चकोटिका कवि था और वीणा बजाने और गानेमें भी चतुर था। वीणा बजाती हुई उसकी एक मूर्ति है। वह स्वयं बड़ा कट्टर हिन्दू था, पर दूसरे धर्मके मानने वालोंपर कभी अत्याचार नहीं करता था। इसके दरबारमें अच्छे अच्छे गुणी लोग रहा करते थे।

दिग्विजय—समुद्रगुप्तने अपने राज्यको बहुत बढ़ा लिया था। पूर्वमें ब्रह्मपुत्र, पश्चिममें यमुना और चंबल और दक्षिणमें नर्मदा तक इसके राज्यकी सीमा थी। इसके अतिरिक्त पूर्वी बंगाल, आसाम, नैपाल, गढ़वाल आदि देशोंके रजवाड़े इसको कर देते थे। अन्तमें इस विजयी वीरने अश्वमेध यज्ञ करनेकी इच्छा की। पर इस यज्ञके करनेके पहिले यज्ञ करने वाले राजाको दिग्विजय करना पड़ता है। इस लिए वह एक भारी सेना लेकर पाटलिपुत्र से निकल छोटानागपुर होता हुआ समुद्रके किनारे किनारे उड़ीसा, कलिंग, नेलोर और कांची तक जीतता गया। वहांसे चोला राज्यसे होता हुआ उसने कोंकणमें देवराष्ट्रको भी जीता। फिर खानदेशसे होता हुआ वह पाटलिपुत्रको लौटा।

वह अपने साथ बहुत सी धन सम्पत्ति लाया और अश्वमेध यज्ञ करनेके बाद उसने ब्राह्मणोंको बहुत कुछ दान दिया और इस यज्ञकी यादगारीमें एक नया सिक्का भी चलाया, जिस पर बलि-दानके घोड़ेकी एक तसवीर बनी थी। उसने अशोकके उस स्तंभ (कौशाम्बीका खंभा) पर अपनी दिग्विजयकी कहानी भी खुदवा दी जो इस समय प्रयागके किलेमें है।

गुप्तवंशी सम्राटोंके समयमेंही स्मार्त हिन्दू धर्मका आरम्भ हुआ जो आज तक प्रचलित है। यह धर्म वैदिक धर्मसे बिलकुल पृथक है। उसी समयसे बौद्ध धर्म का स्थान नवीन स्मार्त धर्मने ग्रहण किया और यही राजकीय धर्म भी बना।

इसी तरह ४५ वर्ष तक राज्य करनेके बाद महाराजाधिराज समुद्रगुप्त सन् ३८० ई० में अपने पुत्र चन्द्रगुप्त (दूसरा) को

जप्त करलीं। फिर भी हारे हुए राजाओंका वह बड़ा आदर करता था और उनसे सदा दयाका बर्ताव करता था। हिमालय और विन्ध्याचलको जंगली जातियोंपर सदा कड़ी दृष्टि रखता था, जिससे कि वे उपद्रव न मचावें। मालवा, राजपुताना और पंजाबकी सीमा पर रहने वाली जातियोंको उसने लड़ाईमें हरा दिया। तिसपर भी उनसे मित्रके ऐसा वर्त्ताव करता रहा, दक्षिणकी जीती हुई रियासतोंको उसने फिरसे स्वतन्त्रता देदी। लंकाके राजा, और काबुल व मध्य एशियाके यूची राजाओंसे उसने मित्रता करली। समुद्रगुप्तकी जीतका परिणाम यह हुआ कि प्रजाके मनमें एक भारी राष्ट्रीय जागृति उत्पन्न हुई, उसकी नींव पर उसके बेटे चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने अपनी धाक जमायी।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य (३८०—४१४ ई०)—समुद्रगुप्तके कई बेटे थे। चन्द्रगुप्त योग्य और वीर योद्धा होनेके कारण युवावस्था मेंही युवराज बनाया गया था। इसको भी अपने पिताके साथ लड़ाई और राज-काज में सहायता करनी पड़ती थी। इसका फल यह हुआ कि वह राजकाजमें बड़ा चतुर हो गया था। वह स्वयं गुणवान् था और गुणी लोगोंका आदर करता था। वह वैष्णव धर्म का अनुयायी था।

चन्द्रगुप्तने पहिले पहल पंजाब देशको अपने साम्राज्यमें मिला लिया, फिर उसने अपने राज्यके पश्चिमकी ओर दृष्टि फेरी। तुमको मालूम है कि समुद्रगुप्तके समयमें गुप्तसाम्राज्य की पश्चिमी सीमा चंबल थी। उन दिनोंमें मालवा, गुजरात और सौराष्ट्र के प्रायद्वीपमें शक लोगोंके राजा, क्षत्रप रुद्रसिंह राज्य करते थे। बहुत दिनों तक इस देशमें रहनेके कारण शक लोग भी धीरे धीरे हिन्दू बन गये थे। देश उपजाऊ होने और समुद्री व्यापार खूब चलनेसे क्षत्रप लोग बड़े धनी और पराक्रमी राजा गिने जाते थे। जब चन्द्रगुप्तने क्षत्रप रुद्र सिंहको जीत कर उसके राज्यको अपने साम्राज्यमें ३९५ ई० में मिला लिया तबसे शक लोग उनकी प्रजा

बन गये। इस जीतका फल यह हुआ कि बंगालसे लेकर नर्मदा नदी तक और हिमालयसे नर्मदा नदी तकका सारा देश गुप्त साम्राज्यमें आ गया। साम्राज्यकी हद्द पूर्वी और पश्चिमी समुद्र तक फैल जानेके कारण व्यापारमें बड़ा सुभीता हुआ और राज्यकी आमदनी भी बहुत बढ़ गयी। मेदिनीपुरके जिलेमें ताम्रलिप्ति और भारुकच्छसे चीन, भारतीय द्वीपपुञ्ज (The Indian Archipelago) को, और रोम और मिसर आदि स्थानोंको तरह तरहकी चीजें भेजी जाती थीं।

सम्भव है कि इन देशोंको जीत कर ही चन्द्रगुप्तने विक्रमादित्यकी पदवी प्राप्त की हो। पर यहां पर तुमसे यह कहना आवश्यक है कि यह वह विक्रमादित्य नहीं थे जिनका वर्णन बैताल पचीसीमें आया है। साम्राज्यकी हद्द पश्चिमकी ओर ज्यादा बढ़ जानेसे, चन्द्रगुप्तको पुरानी राजधानी पाटलिपुत्र छोड़कर बीचोबीच अयोध्याको राजधानी बनानी पड़ी। सन् ४१४ ई०में इस विजयी वीरकी मृत्यु हुई।

हूण लोगोंकी चढ़ाई (४५०-५२८ ई०)—चन्द्रगुप्तके पुत्र कुमारगुप्त (४१४–५५ ई०) ने भी अश्वमेध यज्ञ किया था। कुमारगुप्तके पुत्र स्कन्दगुप्त (४५५–८० ई०) के समयमें हूण लोग टिड्डोंके समान सारे यूरोप और एशियामें छा गये थे। लोग भी मध्य एशियासे आये और मंगोल जातिके थे। बिल्कुल जंगली और धर्महीन थे। ईरानमें ईरानी साम्राज्यको, यूरोपमें रोम साम्राज्यको और हिन्दोस्तानमें गुप्त साम्राज्यको इन्हीं लोगोंने नष्ट भ्रष्ट कर दिया। ४५५ ई० में हूण लोगोंने पहिली बार चढ़ाई की। पर स्कन्दगुप्तने उनको हरा दिया। लेकिन वे हटने वाले नहीं थे। अन्तमें ५०० ई० के लगभग तोरमाण नामके एक हूण सरदारने मालवा जीता। उसके मरनेके बाद उसका बेटा मिहिरगुल राजा बना। वह शिव और सूर्यका बड़ा भक्त था तथा बौद्धोंको बहुत सताता था। इस लिये कुछ

न्दू रजवाड़े, मालवाका राजा यशोधर्मदेव और गुप्त-राजवंशी
सिंहगुप्तके अधीन हो उसके साथ लड़ गये और उसे बुरी
हसे ५२८ ई० में हराया। हार खाकर मिहिरगुल काश्मीरको
गा और वहां उसने अपना राज्य स्थापित किया। अनेक हूण
ासे लेकर मालवा तक बस गये और धीरे धीरे वे भी पक्के
न्दू बन गये। गुप्त साम्राज्यके अन्त होनेके बाद बहुतसी
टी छोटी रियासतें बन गईं। ये सब रियासतें स्वतंत्र थीं,
ई किसीके अधीन न थी, और आपसमें खूब लड़ा भिड़ा
रती थीं।

विक्रम-सम्वत्—महाराज यशोधर्मदेवने हूणलोगोंको हरा
र विक्रमादित्य की उपाधि प्राप्तकी और मालव-संवत्का नाम
रिवर्त्तन कर उसका नाम विक्रम-संवत् वा विक्रमाब्द रक्खा।
पू० ५७ से विक्रम संवत्का प्रारम्भ माना जाता है। आज
क अनेक प्रदेशोंमें इसी संवत्का व्यवहार होता है।

गुप्त सम्राटोंकी शासन-प्रणाली*—सारा साम्राज्य कई
क सूबोंमें विभक्त था। उन दिनों सूबेका नाम भुक्ति था। प्रत्येक
क्ति एक एक उपरिक वा सूबेदारके अधीन थी। सम्राट् स्वयं
परिकों को नियुक्त करते थे। उपरिक प्रत्येक ज़िलेमें विषय-पति
युक्त करता था तथा नगर-श्रेष्ठी, कुलिक (जज),प्रथम कायस्थ
दि अफ़सरोंके साथ सहमत होकर राजकर और लगान आदि
श्चय करता था। जिलेके प्रबन्धमें निगम-सभाके सभासद्गण
कारी अफसरोंको सहायता देते थे। इस प्रकारसे मौर्योंकी
र्तित शासन प्रणालीसे गुप्तोंकी शासन-रीतिमें बड़ा अन्तर था।
र्यों के समयमें सभी कुछ सरकार करती थी-परन्तु गुप्तोंके
मयमें प्रजासे भी सहायता ली जातीथी।

देशकी अवस्था--विक्रमादित्यके समयमें चीन देशसे एक

---

* Damodarpur copper plate.

बौद्ध पण्डित तीर्थ यात्राके उद्देश्यसे हमारे देशमें आये थे, उन
नाम फा-हियान था। वे प्राय: पन्द्रह वर्षतक (३९९–४१४ ई०) ह
देशमें रहे। उन्होंने जो कुछ देखा सुना उसे वे एक पुस्तकमें लि
गये हैं। उनकी पुस्तक पढ़नेसे देशकी उस समयकी अवस्था
ठीक ठीक पता चल जाता है। मगधमें बड़े बड़े शहर थे; राजध
पाटलिपुत्रमें बहुतसी धर्मशालाएं, अस्पताल और बौद्ध-मठ
शहरके लोग अधिकतर लिखे पढ़े थे। सम्राट्का महल और वहां
पच्चीकारी देखकर उन्हें विस्मय होगया था। उनकी राय य
कि वह "महल दैत्योंका बनाया है, मनुष्यका नहीं"। देशभरमें
बड़े मठ थे, जहां बौद्ध-भिक्षु रहा करते थे, राज्यमें सब
सुख शान्ति विराजती थी। आने जानेकी कोई
टोक न थी। अपराधके लिये प्राणदण्ड बहुत कम दिया जा
था। अधिकतर जुर्माना करके अपराधी छोड़ दिये जाते
किसान और व्यापारियोंसे कर लिया जाता था। लोग आमतौ
बौद्ध रीति-नीति मानकर चलते थे। और निरामिष भ
करते थे।

गुप्तवंशी सम्राटों के समयसे ही नवीन हिन्दूधर्मकी उ
होने लगी थी। बड़े ठाटबाटके साथ सूर्य, शिव, विष्णु, कार्त्ति
श्री आदि देवताओं की तान्त्रिक रीतिके अनुसार पूजा होने ल
और साथ साथ बौद्ध-धर्मका रोबदाब घटने लगा। इन दिनों
धर्म कितना बाह्याड़म्बर से पूर्ण हो गया था, इसका प
फा-हियान के वर्णित रथ-यात्रा उत्सवसे मिलता है। वह कह
कि प्रति वर्ष पाटलिपुत्र नगर में देवताओं की रथ-यात्रा होती
अतः लोग चार पहिये वाले ऊंचे ऊंचे रथ बांस और लक
द्वारा बनाते और उसीपर तरह तरह की देवमूर्त्तियां रख देते
बीचमें बुद्धदेव की मूर्त्ति रक्खी जाती थी। तीसरे प्रहरमें
गाजेके साथ लोग उस रथको खींच कर नगरके भीतर ला
और रात भर महोत्सव मनाते थे। फिर भी साधारणतः

मणादिको श्रद्धाकी दृष्टिसे देखती थी। गुप्तवंशी सम्राट सबके
व हिन्दू थे, और इनमेंसे अधिकतर सम्राट भागवत-वैष्णव थे।
ये दूसरे धर्मके मानने वालोंको कभी सताते नहीं थे। सम्राट
द्रगुप्त विक्रमादित्यके स्वयं "परम-भागवत" होनेपर भी इनके
न्त्रियोंमेंसे एक बौद्ध था तथा दूसरा कट्टर शैव। पुनः समुद्रगुप्त
सिंहल (Ceylon) के राजा मेघवर्णको बुद्ध गयामें बुद्धदेवकी
ृतिमें एक मठ बनानेकी आज्ञा दी थी। इनके उत्साहसे
न्दुओंके अनेक धर्म-ग्रन्थ—यथा पुराण, धर्मशास्त्र आदि फिरसे
खे गये थे। वे स्वयं विद्वान् थे और इसके लिये विद्वानोंको
साहित करते थे। उन दिनों हिन्दूधर्मकी उन्नतिके साथ साथ
रीगरी और संस्कृत साहित्यकी भी बड़ी उन्नति हुई थी।

कला-कौशल—हैदराबाद रियासतमें अजन्ताकी खोहें हैं,
नमें कई एक सुन्दर सुन्दर महल बने हैं। इनमेंसे दो खोहें
बसे अच्छी गिनी जाती हैं। ये दोनों खोहें गुप्त सम्राटोंके समयमें
ी थीं। इनकी भीतपर की तस्वीरोंकी सुन्दरताको देखकर
ज भी लोग आश्चर्य करते हैं। सुन्दर सुन्दर देवताओंकी मूर्तियां
था बड़े बड़े मन्दिर आदि बनाये गये थे। गुप्तकालकी बनी हुई
थर की मूर्त्तियां सारनाथ (बनारस), मथुरा तथा अमरावती
तूर जिलेमें) बहुतायतसे मिली हैं। और पटने जिलेमें एक ऐसा
पत्थर मिला है जिसपर "किरातार्जुनीय" काव्यके चित्र
दे हुए हैं। ये सब चीजें हिन्दू कारीगरीकी श्रेष्ठताके नमूने हैं।
दिनों धातुकी चीजें भी बडी सुन्दर बनती थीं। दिल्लीका
मी लोहेका खंभा इन्हीं दिनोंमें बनवाया गया था। बुद्धदेव और
रे हिन्दू देवी देवताओंकी मूर्तियां तांबे और पीतलकी बनाई
ती थीं तथा दूर दूरके देशोंको भेजी जाती थीं।

साहित्य और विज्ञान—दूसरे चन्द्रगुप्त और कुमारगुप्तके
मयमें ही संस्कृतके सबसे बड़े कवि कालिदास हुये थे, जोकि

ज्जैन नगरके रहने वाले थे। इन्होंने कई एक काव्य और नाटक

बना ई हैं। इनमेंसे "अभिज्ञान शाकुन्तल" नाटक और "रघुवंश का..."
सबसे अच्छे हैं। इनकी कविताकी बराबरी संसारके कोई ...
नहीं कर सकते। "मुद्रा राक्षस" नाटक भी इसी समयमें लि...
गया था। गद्य-साहित्यमें सुबन्धुकी "वासवदत्ता" और दण्ड...
"दशकुमार चरित्र" इन्हीं दिनोंमें रचे गये थे। पुनः इन्हीं दि...
अमरसिंहने अपने शब्द कोषकी भी रचना की थी जिसका ...
पाठन आजतक होता है। सबके सब हिन्दू-धर्म-ग्रन्थ इन्हीं दि...
फिरसे लिखे गये थे। ज्योतिष और गणितमें आर्यभट्ट (...
४७६ ई०) और वराहमिहिरने बहुत ही अच्छी अच्छी पु...
लिखीं। पुनश्च इन्हीं दिनोंमें भारत-विख्यात नव-रत्न* हो ...
थे। परन्तु ये कुल विद्वान् एकही समयमें नहीं हुए थे। ...
गिरते हुए बौद्ध धर्मको जब नवीन हिन्दू धर्मसे सामना क...
पड़ा, तब बौद्ध दर्शन शास्त्र की चरम उन्नति इन्हीं दिनोंमें हुई।

समाज और धर्म—जनता साधारणतः बौद्ध तथा हि...
धर्मके बाहरी ढकोसलों को मान कर चलती थी। अर्थात् ...
यात्रा, मूर्त्तिपूजा, जपतप आदि अभ्यास कर मानसिक शान्ति...
प्राप्त करती थी। धर्मके गूढ़ तत्वोंसे उनका परिचय नहीं ...
इसके अतिरिक्त लोग श्रमण-ब्राह्मणोंको दान देते थे, सत्र स्था...
करते तथा कुंए खोदवा देते थे। गुप्त-सम्राटोंके उत्साहसे वै...
धर्म का प्रचार होने लगा। मन्दसोरके कुछ कपड़ा बुनने वा...
इन्हीं दिनोंमें सूर्य नारायण का एक मन्दिर स्थापित किया था...

परन्तु खेद का विषय है कि इन दिनों हिन्दुओं का सामा...
बन्धन पूर्व जैसा नहीं रहा। इसका प्रधान कारण बौद्ध लोगों...
प्रभाव था। इनके प्रभावसे वर्णाश्रम की प्रथामें कुछ शिथि...
सी आगई थी। नीच कुलके लोग उच्च जाति को पूर्ववत् मान...

---

* धन्वन्तरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, वैताल भट्ट, घट...
कालिदास, वराहमिहिर, वररुचि।

इसका कुफल पारिवारिक जीवन पर भी पहुंचा। बौद्ध लोग सभीको प्रवज्या लेनेके लिये कहते थे तथा ७।८ वर्षके बालकों कोभा संघमें ले लेते थे। इसका फल यह हुआ कि लोगोंके मनका झुकाव गृहस्थी की अपेक्षा वैराग्य की ओर अधिक हो गया था। पुनः संघाराममें स्त्रियोंके होनेके कारण बौद्ध भिक्षुओंमें नैतिक अवनति समाई थी। परन्तु हर्षकी बात है कि नवीन हिन्दू धर्मके उदय होनेके साथही साथ स्मृति शास्त्रकी फिरसे आलोचना होने लगी जिसका प्रमाण गुप्तकालके लेखोंमें पाया जाता है। अतः इस बात का अनुमान करना भूल नहीं होगा कि इन्हीं दिनों हिन्दू समाजमें बहुतसे सुधार भी हुए थे।

यूरोपके पण्डित लोग गुप्त सम्राटोंके समयसे लेकर हर्ष-वर्द्धनके राज्यकाल तक को भारतवर्षका स्वर्ण-युग (Golden Age) कहते हैं। अर्थात् इन्हीं दिनों हिन्दूधर्म की बढ़तीके साथ साथ संस्कृत साहित्य, विज्ञान, कारीगरी, राजनीति आदिकी बहुत कुछ उन्नति हुई थी। इसमें सन्देह नहीं कि इस समय रोम-राज्य और हिन्दुस्तानके बीच बड़ा व्यापार होता था और इसी लिये यूरोपीय विद्वान कहते हैं कि रोमके मालके साथ साथ वहां की सभ्यताभी हिन्दुस्तानमें आई और उसपर उसका प्रभाव पड़ा। यह बात विचार करनेके योग्य है। यदि ऐसा मानभी लिया जाय तो भी हिन्दू लोग उनकी नकल करके ही चुप नहीं रहे। उन्होंने उनकी सभ्यताको देशी सांचेमें ढाल कर बिल्कुल जातीय वस्तु बना ली। चीनसे हमारे देशी भाइयोंके सीखनेके योग्य विषय बहुत ही कम थे। क्योंकि बहुतसे चीनी यात्री बराबर हमारे देशमें आया करते थे और यहां से लिख पढ़ कर अपने देशमें जा कर हमारी सभ्यता और रीतिनीति को फैलातेथे। इसीलिये देशी विद्वानोंकी रायमें ऐसी बातें कहना भ्रमात्मक हैं।

सारांश

३२० ई०	गुप्तवंश—चन्द्रगुप्त (१)
३३५ ,,	समुद्रगुप्त
३८० ,,	चन्द्रगुप्त (२)
३९९ ,,—४१४ ई०	फा-हियानका भ्रमण
४१४ ई०	कुमारगुप्त
४५५ ,,	स्कन्दगुप्त—हूण लोगोंकी चढ़ाई
५०० ,,	तोरामनने मालवा जीता
५२८ ,,	मिहिरगुलकी हार-विक्रमाब्द चला

(१४) हर्षवर्द्धनकी कथा ।

पूर्व जीवन—सम्राट चन्द्रगुप्त विक्रमादित्यके मरनेके बाद सौ वर्ष बीत गये । सारे भारतवर्षमें छोटे छोटे स्वतंत्र राजा राज्य करने लगे । इनमेंसे कोई किसी को मुख्य नहीं मानता था। इन दिनों पहिलेकी तरह मगधका दबदबा नहीं रहा, दूसरी छोटी छोटी रियासतोंकी तरह यह भी एक छोटीसी रियासत हो गई।

इन सब छोटी छोटी रियासतोंमें दिल्लीके उत्तर थानेश्वर का भी एक राज्यथा । छोटी रियासत होने के कारण यहांके राजा प्रभाकरवर्द्धन छोटेही गिने जाते थे । पर प्रभाकरने लड़ाई कर और व्याह शादी करके राजपुतानेसे कनौज तक अपना राज्य फैलाया । उसका काम उसके बेटे हर्षवर्द्धनने उठा लिया । हर्षवर्द्धनके अतिरिक्त इसके राज्यवर्द्धन नामका एक पुत्र तथा राज्यश्री नामकी एक पुत्री थी ।प्रभाकरके मरनेके बाद राजा राज्यवर्द्धनको पता लगा कि एक दुष्ट राजाने उसके बहनोईको मार डाला और राज्यश्रीको कैद करके उसके पैरोंमें बेड़ियां डालदी हैं। समाचार पातेही राज्यवर्द्धन शत्रु को दण्डदेनेके लिये चला।

काम तो आसानीके साथ हो गया। परन्तु राज्यवर्द्धन फिर भी घर न लौटा। बंगालके गुप्तवंशीय राजा शशांकने उनको धोखे से मार डाला।

भाईके मरनेपर हर्षवर्द्धन ६०६ ई०में गद्दीपर बैठा परन्तु उसको पता लगा कि इसकी बहिन राज्यश्री भाग कर विन्ध्याचलके निकट एक जंगलमें चली गई है। हर्षको पहिले पहल अपनी बहिनकी खोजमें जाना पड़ा। इसका पहुंचना बड़े समयसे हुआ, क्योंकि थोड़ीसी भी देरी होनेमें राज्यश्री इसलोक से सदाके लिये विदा हो जाती। वह एक घने जंगलमें जलती हुई चितामें कूदनेको तैयारही थी कि हर्ष वहांपर जा पहुंचा। इस तरह भाई बहिनका मिलाप हुआ।

राज्यश्री बड़ी बुद्धिमती थी। सभी कामोंमें हर्ष उसकी सलाह लिया करता था। इसके बाद बंगालके राजा शंशाक को जीतनेके लिए हर्षवर्द्धन पूर्वकी ओर चला। शशांक बड़ा कट्टर हिन्दू था। इसी कारण बौद्धोंको सताया करता था। उसने गयामें उस पेड़को, जिसके नीचे बैठकर बुद्धदेवको निर्वाण प्राप्ति हुई थी, जला दिया। बहुत दिनों तक लड़ाई लड़नेके बाद हर्षने शशांकके राज्यको जीता। पूर्वमें कामरूप (आसाम) के राजा और पश्चिममें वल्लभी (गुजरात) के राजा भी उसको कर देने लगे। पर दक्षिणका चालुक्य वंशीय राजा पुलकेशिन (दूसरा) हर्षसे कहीं बढ़ कर निकला। हर्ष उससे हार गया और नर्मदा नदी उसके राज्यकी दक्षिणी सीमा हुई (६२० ई०)। सिन्ध, राजपुताना और पञ्जाबके पश्चिमी हिस्सोंके सिवाय हर्षने सारे हिन्दुस्तान पर अपना रोब जमाया। हर्षने कन्नौजको अपनी राजधानी बनाई और सुन्दर सुन्दर बाग, तालाब, किले हिन्दू और बौद्ध मन्दिरोंसे इस शहरको खूब सजाया। आजकल यह एक छोटासा उजाड़ शहर है।

हर्षका चरित्र—श्री हर्ष जैसा योद्धा था वैसाही पण्डित था और पण्डितोंका सम्मान करता था। नामी पण्डित बाण
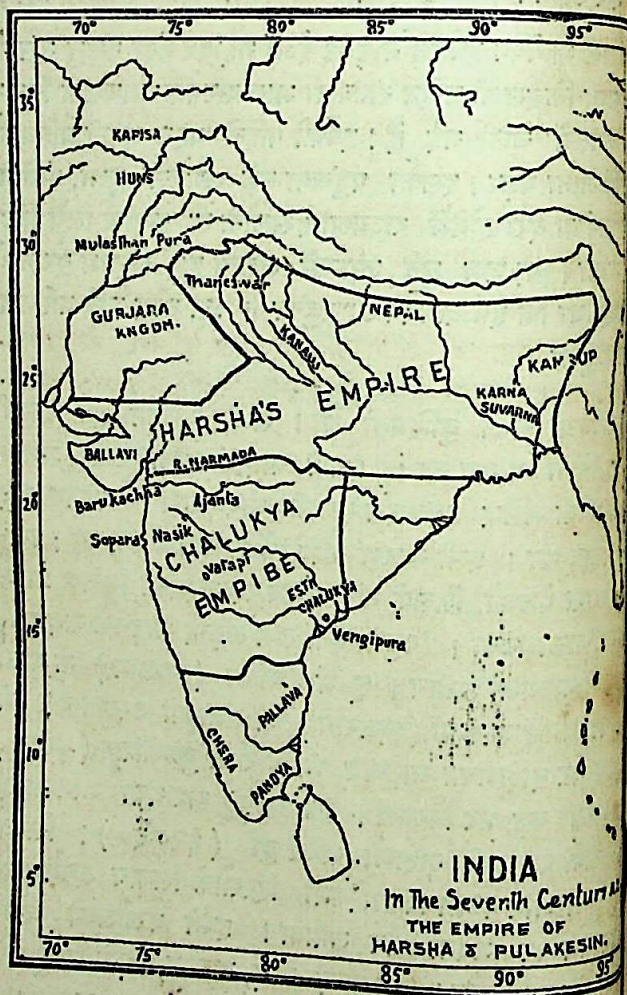
उसकी सभामें रहता था। उसने "श्री हर्ष चरित" तथा "कादम्बरी" नामक दो ग्रन्थ लिखे। हर्षने स्वयं "नागानन्द

"रत्नावली नाटक" आदि कई एक पुस्तकें लिखीं। आजकल भी लोग इन पुस्तकोंको बड़े चावसे पढ़ते हैं। हर्षकी तरह सर्व-गुण-सम्पन्न लोग बहुत कम पाये जाते हैं। उसकी वीरता, पाण्डित्य और बुद्धिमत्तासे कहीं बढ़कर उसकी धार्मिकता थी। वह भी बुढ़ापेमें अशोकके ऐसा कट्टर बौद्ध बन गया था, और अपने साम्राज्यमें उसने जानवरोंको मारनेकी मनाही कर दी थी। उसने भी अच्छी अच्छी सड़कें और धर्मशालाएं बनवा दीं जहां कि बटोहियों को दवा और खानेकी चीजें मिलती थीं।

राज्य-प्रबन्ध—हर्ष सब राजकाज आपही देखा करता था। इसलिये एक जगहसे दूसरी जगह को दौरा करनेमें उसका बहुत समय लग जाता था। ऐसे समयमें बांस और लकड़ीके बने हुए महलोंमें रहा करता था और उसके चलते समय सोनेके नगाड़े बजते थे। उन्हीं दिनों नामी चीनी यात्री हुएन सांग (Huen Tsang) हिन्दुस्तानके बड़े बड़े बौद्ध तीर्थोंके दर्शन करनेके लिये आया था।

उसकी धार्मिकता—हर्ष सब धर्मके लोगोंसे मेलजोल रखता था। वह स्वयं शिवजी और सूर्य देवताकी पूजा करता था। और और धर्मवाले उसकी सभामें आकर बहस करते थे। हर्ष हरएक की राय ध्यान लगाकर सुना करता था, ऐसी सभामें राज्यश्री भी आकर बैठती थी। हुयेन सांग एक बार उसकी धर्मसभामें उपस्थित था। इसमें बहुतसे ब्राह्मण, बौद्ध और जैनधर्म वाले पण्डित इकट्ठे हुए थे। बहसमें जिसको जीत होती थी खूब सजधजके साथ उसकी सवारी निकाली जाती थी, और हारजानेवालेकी बड़ी दुर्दशा होती थी। उसके मुंहमें कालिख पोतकर एक निर्जन स्थानमें छोड़ दिया जाता था। बहसके नियमको तोड़नेसे दण्ड मिलता था और उसका देश निकाला होता था।

हर्षके दानका मेला एक विचित्र वस्तु थी। हर पांच सालके बाद प्रयागमें गंगा और यमुनाके संगमके तीरपर यह मेला लगता

था। यहांपर सब देशोंके बड़े बड़े राजा और पण्डित लोग इकट्ठे होते थे। दीन-दुखियों और लाचार लोगोंको राजा अपने हाथसे बहुत धन दौलत दान देता था। ब्राह्मण, बौद्ध, जैन पण्डित और संन्यासियोंको भी कीमती पत्थर, मोती, मोहर, अच्छे कपड़े आदि मिलते थे। दान देते देते हर्ष सब कुछ दे देता था। जब सब कुछ चुक जाता था तब वह अपने पहननेकी पोशाक भी दे देता था। इसके बाद अपनी बहिन राज्यश्रीसे एक साधारण वस्त्र मांग उसीको पहिन कर "महाराजाधिराज श्रीहर्ष" हंसता हुआ अपने घर लौटता था। चालीस वर्षतक राज्य करके श्रीहर्ष सन् ६४८ ई० में स्वर्गधामको सिधारा ॥

देशकी अवस्था--महात्मा हुयेन सांग करीब १५ वर्ष (६२६—४५ ई०) तक देशमें रहकर बहुतसी जगहें देखभाल आया था। वह बड़ा विद्वान् था इसलिये श्रीहर्ष उसको बहुत मानता था। हुयेन सांग एक बार प्रयागके मेलेमें भी उपस्थित था। उसकी लिखी हुई पुस्तकके पढ़नेसे हम लोगोंको देशकी अवस्था मालूम हो जाती है। उन दिनों पंजाब और युक्त प्रदेशमें बौद्ध धर्मका ह्रास होरहा था। बौद्ध धर्मकी प्रायः २० शाखाएं होगई थीं, जो रीति नीतिमें एक दूसरीसे मिलती जुलती न थीं। तथापि अपनी अपनी शाखाको लोग एक दूसरीसे बड़ीही बतलाते थे। हुयेन सांग मगधमें अधिक समय तक ठहरा था। उन दिनों पाटलिपुत्र एक छोटा सा शहर हो गया था ॥

राज्यके बड़े बड़े अफसरों और बड़े बड़े विद्वानोंको जागीरें मिलती थीं। राज कर पैदावारका छठां भाग था; किसी किसी स्थानमें व्यापारियोंको चुंगी देनी पड़ती थी। शान्तिके समय अधिक सिपाही नहीं रक्खे जाते थे। लड़ाई छिड़ने पर रंगरूट भरती किये जाते थे। सेना चतुरंगिणी होती थी। मैगस्थनीजके समान चीनी यात्रीने भी हिन्दुओंकी बड़ी प्रशंसा की है; उन दिनों इस देशके लोग छली या जालसाज़ नहीं होते थे। अपनी बातके

सच्चे होते थे।

दोनो यात्रियोंने हिन्दुओंके कानूनकीभी बड़ी प्रशंसाकी है। कठिन दण्ड कदाचित् दिये जाते थे। विद्रोहयोंको भी फांसी नहीं दी जाती थी बल्कि उनको जीवन भर कैद रक्खा जाता था। माता पिताकी आज्ञा न माननेसे, या दगाबाज़ी करनेसे नाक कान काट लिये जाते थे। समाजमें विधवा विवाह तथा बाल्य-विवाह की प्रथा नहीं थी। पतिके मरनेके पश्चात् स्त्रियां सती होती थीं। समाजमें स्त्रियोंका आदर सम्मान बना रहा। झूठ सांचकी परखके चार उपाय काममें लाये जाते थे (१) पानीका (२) द्वंद युद्धका (३) तौलका और (४) विष खिलाकर। हर सूबेमें "नीलपीत" नामके वाकया-नवीस होते थे, वे देशकी रिपोर्ट लिखते थे।

शिक्षा—नालन्द महाविहार—हुयेन सांगकी पुस्तकसे यह पता चलता है कि उन दिनोंमें शिक्षाका केन्द्र नालन्दमें (राजगीर के निकट, मगधमें) रहा। पांचवीं सदीसे इसकी वृद्धि होने लगी थी। यहांपर महायान मतके अतिरिक्त वेदवेदांग तथा बौद्ध और हिन्दू दर्शन शास्त्रका अध्यापन होता था। इस महा-विहारके विशाल भवनोंको देखकर चीनी यात्रीकी आंखें खुल गई थीं। यहां पर कई सहस्र बौद्ध भिक्षुओंके अतिरिक्त बहुतसे छात्र भी रहा करते थे। उन दिनों समतट (पश्चिमी बंगाल) देशके राजकुमार शीलभद्र इसके अध्यक्ष वा महास्थविर थे। इनके अधीन कई एक बड़े बड़े नामी अध्यापक थे, जिनमें धर्मपाल, गुणमति, स्थिरमति, आदिके नाम अधिक प्रख्यात हैं। हुयेन सांगने शीलभद्रसे संस्कृत अध्ययन किया था। ख्याति मिलने की आशासे दूर दूर से विद्वान् लोग नालन्दको आते थे। कई एक राजाओंने इसका व्यय निवाहनेके लिये १०० गांव दान दिये थे। करीब नवीं सदी तक यह संस्था चलती रही।

हर्षकी मृत्युके बाद देशकी अवस्था—हर्षकी कोई सन्तान

न थी, इसलिये उसकी मृत्युके बादही उसका स्थापित साम्रा टूट गया। हर्ष किसी रियासतको ज़ब्त नहीं करलेता था। वह हा हुए राजाओंसे कर ले कर ही प्रसन्न रहता था। अतः उस मरनेके बाद दूर दूरके सूबे, यथा, वल्लभी (गुजरात), कन्नौ बंगाल और बिहार, नैपाल, कामरूप आदि में स्वतन्त्र राजे रा करने लगे। काश्मीर, काबुल, सिन्ध देशोंपर धीरे धीरे मुस मानोंने विजय प्राप्त कर ली।

इसी प्रकार सारे देशमें बहुत दिनोंतक कोई एक प्रधान श के न रहनेसे प्राचीन हिन्दुओंके मनमें एक तुच्छ प्रान्तीय भाव विकास होने लगा। राजनैतिक दृष्टिसे प्राचीन हिन्दुओं का प हो गया।

सारांश

६०६ ई०	हर्षको राजगद्दी मिली
६२० ,,	,, पुलकेशिन चालुक्यने हरा
६२९–४५	हुयेन सांग का भ्रमण
६४८ ई०	हर्षकी मृत्यु

(१५) मध्ययुग की रियासतें ।

हर्षवर्द्धनकी मृत्युके बाद उसका साम्राज्य छोटी छोटी रियासतोंमें बट गया। उन दिनों सारे आर्यावर्त्तमें बहुतसे छोटे छोटे स्वतन्त्र राजा राज्यकरते थे। ये सब आपसमें खूब लड़ते भिड़ते थे। पर साथही साथ विद्याप्रेमी और प्रजापालक भी थे। इन्हीं दिनोंमें देशी भाषाओंकी नींव पड़ी। हरएक राज्यमें संस्कृत साहित्य और कारीगरी की भी बड़ी चर्चा होती थी।

राजपूतोंका उदय—इसी समय पश्चिम और मध्य भारतवर्षमें राजपूतोंका उदय हुआ। यूरोपीय विद्वानोंकी राय यह है कि शक, कुशान, हूण आदि परदेशी चढ़ाई करनेवाली जातियां इस देशमें आकर हिन्दुओंके बीच रहते रहते धीरे धीरे हिन्दू बन गयीं, पीछेसे ब्राह्मणोंने उनको क्षत्रिय बना दिया। इसी तरह अरावली और विन्ध्याचलकी बसनेवाली गोंड़, भील आदि अनार्य जातियोंको भी क्षत्रियोंमें मिला लिया। यह ठीक है कि परदेशी चढ़ाई करने वाले बौद्ध थे, पश्चात् हिन्दुओंमें मिल गये। यह भी ठीक है कि इनका गोत्र आर्य्योंके ऐसा नहीं है और न इनके नाम रखने का तरीका ही आर्य्यों जैसा है। लेकिन हमलोगोंके विचारसे उन लेखकोंका कहना बिल्कुल ठीक नहीं है। सम्भव है किसी अंशमें ऐसा हो, नहीं तो कुल बड़े बड़े रजवाड़े आर्य्यों की सन्तान थे। जब हम उनकी भाषा, उनके रूप रंग और उनकी वंशावली पर विचार करते हैं तो यही विश्वास होता है कि वे आर्य ही हैं।

राजपूतोंने आठवीं सदीमें ही पञ्जाब, काश्मीर, राजपुताना, मध्य भारत (Central India), युक्तप्रदेश, बिहार तथा बंगालमें बहुत सी नयी नयी रियासतोंकी नींव डाली थी। राजपूत वीरता, ढिठाई और साहस में पृथिवीकी किसी जातिसे कम नहीं थे। ये लोग जैसे वीर थे वैसे ही उच्च हृदय के भी थे। लड़ाईके समय यद्यपि ये लोग वज्रकी तरह कठोर हैं पर इनका हृदय फूल

जैसा कोमल रहता है। सारा देश बहुत सी छोटी छोटी रि-
सतोंमें बंट जानेके कारण वे एकताके साथ काम न कर
और इसी कारण वे बारबार मुसलमानोंसे हार जाया करते थे।

इन दिनों पानीके बुलबुलोंकी तरह कितने राज्य बने और
कितने बिगड़े जिनकी गिनती करना कठिन है। फिर भी इनमें
जो मुख्य गिने जाते थे उनका हाल अब तुम्हें सुनावेंगे।

गुर्जर-परिहार वंश—विद्वानोंकी यह राय है कि गुर्जर
लोग एक विदेशी जातिके थे तथा वे पांचवीं शताब्दीमें हूण
लोगोंके साथ हिंदोस्तानमें आये। वे पहिले पहिल पञ्जाबमें ब-
पश्चात् दक्षिणकी ओर चल कर उन्होंने राजपुतानेमें कई ए
रियासतें स्थापित कीं। छठीं शताब्दीमें गुर्जर जातिके परि-
नामकी शाखाकी धाक अधिक जमी हुई थी। ५५० ई०
परिहार वंशीय राजा हरिचन्द्रका प्रताप फैला हुआ था। इसक
राजधानी मन्दोरमें थी। हर्षके दबाव पड़ने पर ६४३ ई० में
लोगोंने पुलकेशिन (२) की अधीनता स्वीकार कर ली। अर
लोगोंके आक्रमणके कारण ७२५ ई० में प्रथम राजवंशका अ
हो गया।

कुछ दिनोंके बाद नागभट्टने अरबी लोगोंको हरा कर अवन्तीमें
दूसरे राजवंशकी नींव डाली। वत्सराज (७८४ ई०) ने सा
राजपुतानेको अपने अधीन कर कन्नौज पर धावा किया। पर
राष्ट्रकूट वंशीय ध्रुवने इसे हराया। उसके बेटे नाग भट्ट (२)
ने कन्नौजको अपनी राजधानी बनाई। राजा भोज परिहा
(८४०-८९० ई०)के अधिकारमें काश्मीर, सिन्ध और मगध
छोड़ सारा आर्यावर्त रह चुका था। अरबी सौदागर सुलेमा
इसके बारेमें लिखता है कि "इसकी सेना बड़ी भारी है।
इस्लामका परम शत्रु है तथा बड़ा धनी भी है। इसके राज्यमें
खानें हैं और लेन देनके काम सोने और चांदीके चूरके
होते हैं।" इसके बेटे महेन्द्र पालदेवने मगधको जीता। महीपा
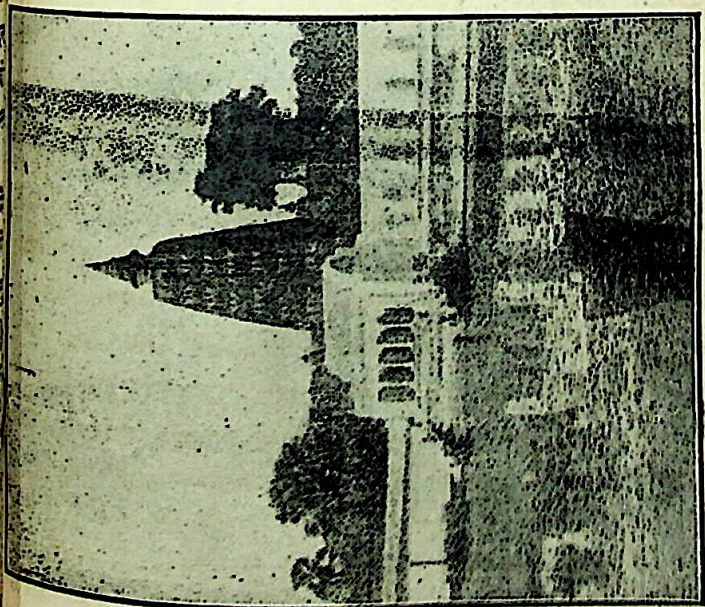
(*Chap. 15.*)
Mahabodhi Temple, Gaya.
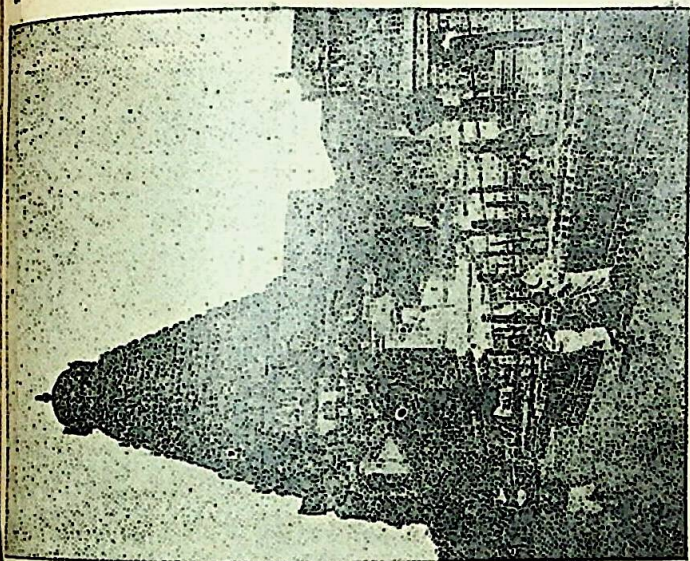
(*Chap. 15.*)
Tanjoru Temple.

(६१५ ई०) ने दक्षिणमें केरल राज्य तक जीता। राजशेखर इसके राजकवि थे। परन्तु राष्ट्रकूट वंशीय राजा इन्द्र (३) ने इसको बेतरह हराया (६१७ ई०)। इस हारके बादही दूर दूरके सामन्त राजे स्वतन्त्र हो गये। बुन्देलखण्ड, गुजरात, मालवा देशोंमें नये नये राज्य स्थापित हुए। राज्यपालको महमूद गज़्नवीने हरा दिया (१०१८ ई०)। इस वंशका अन्तिम राजा त्रिलोचन-पाल हुआ (१०१६ ई०)।

राठौर वंश—राठौर वंशीय राजे राष्ट्रकूट वंशकी सन्तानमें से थे। इस वंशका प्रतिष्ठाता चन्द्रदेव राठौर था। इसने काशी, कनौज, अवध और दिल्ली तकके भूभागको रौंद डाला। १०६० ई० के लगभग इसने कनौजको अपनी राजधानी बनाई। धर्मका वह वैष्णव था। इसका पौत्र गोविन्दचन्द्र (१११४ ई० था। इसने गौड़ देश पर चढ़ाईकी और गज़नवीके साथ कई बार लड़ा। यह बड़ा विद्याप्रेमी था। इसका पौत्र जयचन्द्र था (११७० ई०)। इसने कालिञ्जर तथा भारतका पूर्वीय अंश जीता और बड़ी धूमधामके साथ राजसूय यज्ञ किया था।* इसी अवसर पर पृथ्वी राजसे इसकी अनबन हो गयी। यह ११६४ ई०में महम्मद गोरी के साथ लड़ाईमें हारकर गंगामें डूब कर मर गया। हार होनेके कारण तभीसे राठौर लोग मारवाड़में जाकर बसे (१२६५ ई०)। वहां पर उनका नाम कनौजिया राठौर पड़ा। कुछ लोग इन्हें गहरवार राजपूत भी कहते हैं।

शाहीवंश—हर्षवर्द्धनकी मृत्युके अनन्तर पञ्जाबका कुछ अंश कुछ दिनों तकके लिये काश्मीरके राज्यमें मिला लिया गया था। अन्तमें दशवीं शताब्दीके अन्तिम भागमें इस देशमें एक पराक्रमी राज्य स्थापित हुआ। इसकी राजधानी अटकके निकट ओहिन्द (वा उदकभाण्डपुर) में थी। यहांके राजे शाही कहलाते

* भविष्य-पुराण।

थे। ये जातिके ब्राह्मण थे। इनके पूर्वज काबुलके यूची राजाओं मंत्री थे। परन्तु तुर्की सुलतानोंका दबाव पड़नेके कारण पञ्जावमें चले आये। राजा जयपाल और उसका बेटा आनन्दपाल कईवार महमूद गजनवीसे हारे थे। सन् १०२१ ई० में इस राजवंशका अंत हो गया।

पाल वंश—हर्षवर्द्धनकी मृत्युके बाद मगध और बंगाल पर गुप्त-वंशकी एक शाखा आठवीं सदी तक राज करती रही। इसके अनन्तर सौ वर्ष तक इन देशोंमें बड़ी अराजकता फैली हुई थी। इसी बीचमें कनौजके यशोवर्मन, काश्मीरके ललितादित्य तथा कामरूपके राजा हर्षदेवने बंगाल और मगधपर चढ़ाई की। फिरसे शान्ति स्थापित करनेके लिये लोगोंने गोपालको राजा बनाया (८३० ई०)। इसके समयमें गुर्जर-राज वत्सराज मगधपर चढ़ाई की। जीतेजी गोपालने अपने राज्यकी नींव पक्की कर दी। इसके बेटे धर्मपाल (८७५—९५ ई०) बड़े प्रतापी थे। अफगानिस्तान, पंजाब, राजपुताना आदि देशोंने इनकी अधीनता मानली। महीपाल (९७५ ई०) इस वंशका बड़ा नामी राजा हो गया। इसका राज्य पश्चिममें बनारस तक फैला हुआ था। उसने राजेन्द्र चोलाको भी हरा दिया। वह धर्मका बड़ा बौद्ध था। उसने बहुतसे मन्दिर आदि बनवाये। लोग इसे शिवजी का अवतार कहकर मानते थे। १०३८ ई० में अतीश (वा दीपंकर श्रीज्ञान) नामका एक बौद्ध श्रमण ७० वर्ष की अवस्थामें हिमालय पारकर तिब्बतको गया, और बौद्ध धर्मका प्रचार किया। मगधके पालवंशके कुल राजे बौद्ध मतके अनुयायी थे तथा बड़े विद्याप्रेमी थे। इनके समयमें नालन्द, गया, विक्रमशिला, गौड़, बनारस और ओदन्तपुरी आदि स्थानोंमें सैंकड़ों मन्दिर, विहार और बड़े बड़े तालाब आदि बने। पालवंशीय राजे राजपूत नहीं थे। ये अपनेको सगर राजाकी सन्तान मानते थे।

विक्रम शिला—महा विहार - आज कल के भागल

ज़िलेमें राजा धर्मपालने इसकी स्थापनाकी थी। इसमें १०७ मन्दिर और छः पाठशालायें थीं। बौद्ध धर्मशास्त्रके अतिरिक्त व्याकरण, वेदान्त तथा कर्मकाण्डका विशेष रूपसे पठन-पाठन होता था। आचार्य बुद्ध ज्ञानपाद, अतीस, शाक्य श्री आदि यहांके नामी अध्यापकोंमेंसे थे। पाठशालाओं की भीत पर नामी अध्यापकोंके चित्र अङ्कित थे। अन्तिम परीक्षा उत्तीर्ण कर लेनेके उपरान्त यहांके विद्यार्थी 'पण्डित' की उपाधि को प्राप्त करते थे। इस विद्यालयके छः फाटक थे तथा केवल बड़े बड़े पण्डितही द्वार-पण्डितके पदपर नियुक्त किये जाते थे। १२०३ ई० में बख्तियार खिलजीने इसे नष्ट कर दिया।

सेन वंश—ग्यारहवीं सदीके अन्तिम भागमें विजयसेनने बंगालमें स्वतन्त्र सेन राज्यकी नींव डाली। नदियामें इस राज्य की राजधानी थी। सेनवंशके राजे पक्के हिन्दू थे। विजयसेनके बेटे बल्लाल सेन (११५८ ई०) ने बंगाली समाजका पुनर्गठन किया। इसने मिथिलाको जीता। इसका बेटा लक्ष्मण सेन (११७० ई०) स्वाधीन बंगालका अन्तिम राजा था। यह भी बड़ा विजयी वीर तथा विद्याप्रेमी था। इलाहाबाद, बनारस और पुरीमें इसके स्थापित विजय स्तम्भ मिले हैं। प्रसिद्ध कवि जयदेव इसके राज-कवि थे। इनका लिखित "गीतगोविन्द" बड़े चावसे पढ़ा जाता है। सन् १२०० ई० में मुहम्मद-बिन-बख्तियारके बंगाल जीतने पर सेन राजा पूर्वी बंगालमें जा बसे।

चन्देल वंश—चन्देलवंशीय राजपूत जेजकभुक्ति या बुन्देलखण्ड में बसे थे। पहिले पहल ये लोग कनौजके राजाके अधीन थे। इस वंशका पहिला स्वतन्त्र राजा हर्ष था। इसके बेटे यशोवर्मनने चेदि-राजाओंसे कालिञ्जर गढ़ छीन लिया और खजुराहोका प्रसिद्ध विष्णु मन्दिर बनवाया (९५५ ई०)। इसका बेटा धंग राजा जयपालका तरफदार बनकर सुबुक्तगीनके साथ लड़ा। इसने भी खजुराहोमें दो शिव मन्दिर बनवाये। इसकी मृत्युके

बाद इसका बेटा गण्ड राजा हुआ (९९९-१०२५ ई०)। यह आनन्दपालके अधीन होकर महमूद गज़नवीसे लड़ा। इसका बेटा विद्याधर कनौजके राज्यपालके विरुद्ध लड़ गया, क्योंकि उसने मुसलमानों की अधीनता मान ली थी। १०२३ ई० में महमूदने उसे हराया। अन्तमें १२०३ ई० में कुतुब-उद्दीनने कालिञ्जरको जीत लिया। चन्देल-राजाओंके बनाये हुए बड़े बड़े तालाब तथा मन्दिर आदि आज तक वर्त्तमान हैं। इनकी बनावट और कारीगरी प्रशंसाके योग्य हैं। ग्यारहवीं और बारहवीं सदीमें यहांपर जैन धर्म बहुत फैला हुआ था।

परमार-वंश—पँवार वा परमार वंशीय राजपूत राजे मालवे में राज्य करते थे। इस वंश का छठवां राजा श्री हर्षने हूणोंको बेतरह हराया था। उसका बेटा मुञ्ज (९७४ ई०) बड़ा पराक्रमी था। परन्तु यह राष्ट्रकूट वंशीय राजा तैलपके हाथ मारा गया। यह राजा बड़ा विद्याप्रेमी था तथा बड़े बड़े कवि इसके दरबारमें रहते थे। राजा भोज इसका भांजा था (१०१८-६० ई०)। इसने गुजरात, चेदि आदि देशों पर चढ़ाई की थी। परन्तु अन्त तक इसकी हार हुई और इसकी मृत्यु होनेपर परमार राजवंशकी अवनति होने लगी। १३१० ई० में अला-उद्दीन खिलजीने इस राज्यको जीता। राजा भोज स्वयं बड़ा पण्डित था। राजधानी धारा नगरीमें इसने एक भारी पाठशाला स्थापित की थी। इस पाठशालाके भीतपर इसने व्याकरण, काव्य, ज्योतिष आदि अच्छे अच्छे विषय खुदवा दिये थे। इसके अतिरिक्त इसने बेतवा और एक छोटी नदीको एक साथ मिला कर २५० मील लम्बी एक बड़ी झील बनवाई थी।

सोलंकी वा चालुक्य वंश—पहिले पहल गुजरात कनौजके अधीन था। अन्तमें दसवीं सदी में मूलराजने यहां एक स्वतन्त्र राज्य स्थापित किया। इसने गुजरातके दक्षिणी भाग और सूरत तक का भूभाग जीत लिया। राजा भीम (१)

राजा भोज को हरा दिया और मालवा का कुछ अंश भी अपने राज्यमें मिला लिया। १०२४ ई० में महमूद गज़नवीने सोमनाथ के मन्दिर को लूटा, परन्तु भीमने उसे फिरसे बनवा दिया। इसका पौत्र सिद्धराज भारी विजयी वीर था। इसने सारे मालवा को जीत लिया (११३४ ई०)। राजा कुमारपालने राजपुताने का कुछ अंश जीता। हेमचन्द्र नामका एक जैन आचार्य इसका प्रधान मन्त्री था। इसने संस्कृत भाषामें बहुतसी ऐतिहासिक तथा धार्मिक पुस्तकें रचीं। राजा कुमारपाल स्वयं बड़ा विद्या-प्रेमी था तथा बहुतसे मठ, मन्दिर आदि बनवाये थे। ११७३ ई० में इसकी मृत्यु हुई। तेरहवीं सदीके मध्यमें बघेलोंने इस राज-वंशके अन्तिम राजा त्रिभुवन पालको हराया।

हैहय-वंश—आजकलके इलाहाबाद और जबलपुरके बीच चेदि राज्य था। यहां कलचूरि वा हैहय वंशके राजे राज करते थे। ककोलने दसवीं सदी में इस राजवंशको स्थापित किया था। वह बड़ा कट्टर शैव था। गाङ्गेयने इस राज्यकी बड़ी उन्नति की। इसने पञ्जाबसे बिहार तकका भूभाग बिल्कुल रौंद डाला था। इसकी मृत्यु होनेपर (१०४१ ई०) इसका पुत्र कर्ण राजा बना। इसने चन्देल-राज कीर्त्तिवर्मनको हराया और भोजराजको भी परास्त किया। कनौज राज्यको इसने बिलकुल नष्ट कर दिया। काशीमें इसका बनवाया एक मन्दिर है। बुढ़ापेमें इसकी कई बार हार हुई। तेरहवीं सदीके प्रथम भागमें चन्देलोंने इस राज्यको जीता।

चौहान वंश—सन् ११६३ ई० में अजमेरके राजा विशालदेव चौहानने तोमर वंशीय राजाको हराकर दिल्ली राज्यको अपने राज्यमें मिला लिया। पृथ्वीराज वा राय पिथोरा इसका भांजा था। लगभग ११८० ई० में पृथ्वीराज दिल्ली और अजमेरके संयुक्त राज्योंका राजा बना। ११८२ ई० में उसने चन्देल राज को हराया। अतः उन दिनोंमें भारतके पश्चिमीय भागमें

उससे बढ़ कर कोई भी राजा न था।

पृथ्वीराजको बढ़ती देखकर कनौजके राजा जयचन्द्रके मनमें डाह उपजी। ऐसा मालूम होता है कि उसी समयमें राजा जयचन्द्रने भारतके पूर्वीय अंशमें अपना रोबदाब अच्छी तरहसे जमा लिया था।* अतः जीतके उपलक्षमें उसने एक राजसूय यज्ञ किया था। उसी अवसर पर उसकी कन्या संयुक्ता का स्वयंम्बर भी होनेको था। अतएव जो जो राजा जयचन्द्रके अधीन थे सभीने उस सभामें एक न एक काम किया था। पर पृथ्वीराज स्वतन्त्र था, इसलिये वह नहीं आया। अतः उसका अपमान करनेके लिये राजा जयचन्द्रने उसकी एक मूर्त्ति बनवाकर फाटकपर रखवा दी थी। जयचन्द्र की बेटी संयुक्ता पृथ्वीराजसे विवाह करना चाहती थी। जब वर चुननेका समय आया तब संयुक्ताने पृथ्वीराजकी मूर्त्तिके गलेमें हार पहना दिया। उस समय पृथ्वीराज भी वेष बदल कर वहां उपस्थित था। उसने झट आकर संयुक्ताको घोड़ेपर बैठा लिया और दिल्लीको चल दिया। जयचन्द्र इसबातसे बहुत असन्तुष्ट हुआ। जब महम्मद गोरी से पृथ्वीराज का सामना हुआ तब वह पृथ्वीराजसे बदला लेनेके लिये उसका पक्ष न लेकर चुपचाप बैठा रहा। पहिली लड़ाईमें पृथ्वीराजने गोरीको हराया था; पर दूसरी लड़ाईमें आप हार कर मारा गया। दूसरे साल ११९४ ई० में गोरी फिर इस देशमें आया और जयचन्द्र लड़ाईमें हारकर गंगामें डूब मरा। जयचन्द्रको अपनी करनीका कड़ुआ फल भोगना पड़ा। उत्तर भारतकी इन दो बड़ी बड़ी रियासतोंके मटियामेट हो जानेसे देशकी स्वतंत्रता जाती रही। मुसलमान आकर इस देशमें अपना राज्य जमाने लगे। इस प्रकारसे हिन्दुओंकी स्वाधीनताका सूर्य सदाके लिये अस्त हो गया।

* भविष्य पुराण।

(१६) दाक्षिणात्यके राज्य।

इसके पहिले तुमसे दक्षिणीय भारतवर्षके बारेमें बहुत कम कथा कही गई है। इसका प्रधान कारण यह है कि प्राचीन समय में जब आवागमन करना बहुत ही कठिन था तब दक्षिणी भारत की मालभूमि पहाड़, जंगल और समुद्रके द्वारा उत्तरीय भारत तथा सारी पृथिवी की दृष्टिसे बिल्कुल छिपी हुई थी। साथ ही साथ इस देशके पहाड़ी और ऊसर होनेके कारण यहांकी आबादी भी घनी नहीं होने पाई। अतः इस प्रदेशके निवासियों की राजनीतिके क्षेत्रमें बहुत दिनों तक उन्नति नहीं होने पाई। फिर भी तुमको इतनी बात तो अवश्य मालूम है कि द्रविड़ लोग पुराने समय से ही बड़े सभ्य थे। तुम यह भी जानते हो कि व्यापार करनेमें, साहित्य और कारीगरीमें इन लोगोंने कितनी उन्नति की थी। तुमको यह भी मालूम है कि दक्षिणमें आंध्र, चेरा, चोला और पाण्ड्य राज्य कैसे पराक्रमी राज्य थे। अब आगे संक्षेपमें और और रियासतोंके बारेमें कहा जायगा।

चालुक्य वंश (५५०–७५० ई०)—तुमको यह बात मालूम है कि कुशान वंशीय सम्राटोंकी घटती होनेके साथही साथ दक्षिणके आन्ध्रराज्यका २२५ ई० में अन्त हो गया। इसके तीन सौ वर्षके बाद ५५० ई० के लगभग पहिला पुलकेशिनने पल्लव वंशीयोंको हराकर बातापी (बीजापुर जिलेमें बादामी) में चालुक्य राजवंशकी नींव डाली। चालुक्य लोग उत्तरसे आये हुए एक राजपूत समुदायके थे। प्रथम पुलकेशिनने अपनी विजयके उपलक्ष में एक अश्वमेध यज्ञ किया था। इस राज्यके उत्तरमें नर्मदा और दक्षिणमें तुंगभद्रा बहती थी। दूसरे पुलकेशिन (६०८-४२ ई०) के समयमें इस राज्यकी बड़ी उन्नति हुई थी। इसने श्रीहर्षको हरा दिया था तथा मालवा और गुजरातको जीता था। इसके अतिरिक्त चोला, पाण्ड्य और केरल देश पर भी

इसने चढ़ाई की थी। अनन्तर उसने "परमेश्वर" की उपाधि प्राप्त की। चीनी यात्री हुयेन सांगने इसके राज्य-शासनकी बड़ी प्रशंसा की है। इसके सम्बन्धमें वह अपनी पुस्तकमें लिखता है कि "जातिके वह क्षत्रिय हैं। वह उदार स्वभावके तथा बड़े ज्ञानवान हैं। वह अपनी प्रजाओंकी भलाईमें सदा लगे रहते हैं। इनकी प्रजा भी राजभक्त है।" फारसके शाह द्वितीय खुसरोने इसके पास दूत भेजा था। पर काञ्ची (आजकल काञ्जीवरम्)के पल्लव वंशी राजा नरसिंह वर्मनने राजा पुलकेशिनको बेतरह हरा दिया और उसको मार डाला (६४२ ई०)। इसके समयमें गोदावरी और कृष्णा नदीके मुहानेके बीच पूर्वी चालुक्य राजवंशकी नींव पड़ी। पहले पहल पल्लवोंको रोकनेके लिये ही पुलकेशिनने इस सूबेको स्थापित किया था, परन्तु कुछ दिनोंके बाद यहांके हाकिम लोग स्वतन्त्र हो गये। इसके बाद चालुक्य और पल्लव लोग आपसमें बहुत दिन तक खूब लड़ते रहे। कभी चालुक्य वंशी जीतते थे तो कभी पल्लव वंशी। अन्तमें पुलकेशिनके बेटे विक्रमादित्यने चोला, चेरा आदि राज्योंको फिरसे जीता और पल्लवोंको बेतरह हराया। विनयादित्य (६८० ई०)ने पल्लवोंसे मित्रता करली और मालाबारकी तट भूमि तक राज्य विस्तार किया। इस वंशका अन्तिम राजा दूसरा कीर्त्तिवर्मन था (७४७ ई०)। इसने भी पल्लवोंकी राजधानी काञ्ची पर चढ़ाई की थी।

चालुक्य वंशके कुल राजाओंके धार्मिक सिद्धान्त बड़े उदार थे। दूसरे पुलकेशिनके दरबारमें रविकीर्त्ति नामके जैनकवि हो गये हैं। और और राजाओंने जैन मन्दिरोंकी सेवामें गांव आदि दिये। हुयेन सांगके कथनानुसार जनता पर बौद्ध धर्मका प्रभाव अधिक था। परन्तु बौद्ध धर्मकी घटतीके साथ ही साथ हिन्दू धर्मकी बढ़ती होने लगी। इन दिनोंमें बहुतसे ऐसे लेखकोंका उदय हुआ था, जिन्होंने वैदिक कर्मकाण्डको सुधारनेकी चेष्टा

की। इसके अतिरिक्त बहुतसे देवताओंकी सेवामें बड़े बड़े मन्दिर बनवाये गये। इनमेंसे राजा मंगलेशका बनवाया हुआ शिव मन्दिर प्रसिद्ध है।

राष्ट्रकूट वंश (७५०-९७३ ई०)—अन्तमें चालुक्य और पल्लव वंशीय वालोंको हरा कर राष्ट्रकूट वंशके दन्तिवर्मन और उसके वारिस दक्षिणमें बड़े ठाटबाटसे राज्य करने लगे। पहिले कृष्णके समयमें इलोरामें दक्षिणका प्रसिद्ध कैलाश नामका मन्दिर बना था। इलोरा अब निज़ामकी रियासतमें है। यह मन्दिर एक चट्टानको काट कर बनवाया गया है, और इसकी खुदाईका काम भी अनोखा है। एक दान-पत्रमें ऐसा लिखा हुआ है कि "कैलाशकी बनावट तथा सजावट देख कर सब देवताओंकी यह राय ठहरी कि यह मन्दिर स्वाभाविक है; क्योंकि हाथका काम कभी इतना सुन्दर नहीं होता।" अमोघवर्ष (८१५-८७७ ई०) ने मान्य-खेत (निज़ामकी रियासतमें मालखेड़) को अपनी राजधानी बनाई। अरबी सौदागर सुलेमानने इसको रूमके सुलतानके समान पराक्रमी माना है। यह बड़ा कट्टर जैन था। इसके समयमें दक्षिणमें जैनधर्म बहुत फैला था।

इसका बेटा अकालवर्ष भी बड़ा भारी विजयी वीर था। इसने गुजरात, आन्ध्र, कलिंग, मगध, गौड़ आदि देशोंपर विजय प्राप्त की। तृतीय कृष्णने भी चेरा, चोला, पाण्ड्य, सिंहल आदि देशोंको जीता (९४० ई०)। इस वंशके अन्तिम राजाको चालुक्य वंशके तैलपने हराया (९७३ ई०)।

उत्तर कालका चालुक्य वंश—(९७३-११८० ई०) इस वंशके प्रथम राजा तैलपने केवल राष्ट्रकूटों ही पर विजय प्राप्त नहीं की थी; वरन् इसने सारे दक्षिणको जीत कर गुजरात और मालवापर भी चढ़ाई की। जयसिंहने मालवाके राजा भोज को हराया। १०५० ई० में उसकी मृत्यु हुई। सोमेश्वरने मालवा तथा चेदि राज्योंको जीता और कल्याण नगरको अपनी राजधानी

बनाई। १०६६ ई० में वह डूब मरा। इसने बहुतसे यज्ञ किये तथा विद्वानोंको सदा उत्साह देता था। इसका बेटा विक्रमादित्य (२) था (१०७६–११२६ ई०)। उसने सारे दक्षिणको बिल्कुल रौंद डाला। धर्मका वह वैष्णव था तथा बड़ा प्रजापालक भी था। इसके राज्यमें इतनी शान्ति थी कि "रात्रिके समय भी लोग अपना घर नहीं बन्द करते थे।" कवि बिल्हणने इसकी एक जीवनी लिखी। इसका बेटा सोमेश्वर भारी विद्वान् था। उसने "मानसोल्लास" नामक राजनीतिकी एक पुस्तक लिखी। इसकी मृत्युके उपरान्त (११३८ ई०) इस राजवंशको घटती होने लगी। अन्तमें ११६२ ई० में विज्जलने अन्तिम राजाको मार कर कल्चुरी वंशकी स्थापना की।

इस राजवंशके राज्यकालमें बौद्धधर्मकी अवनति होने लगी थी। तथा लिंगायत सम्प्रदायके उदय होनेके कारण जैन धर्मकी भी घटती होने लगी। विज्जलके मन्त्री वासवने लिंगायत धर्मका प्रचार किया था। इस धर्मके अनुसार शिवजी और नन्दिनकी पूजा एक नये ढंग पर की जाती है। साथही साथ बड़े ठाटबाटके साथ दूसरी देवदेवियोंकी भी पूजा होती रही। इन्हीं दिनों विज्ञानेश्वर आदि विद्वानोंने धर्मशास्त्र पर बहुत ही अच्छी पुस्तकें लिखीं, जिनके अनुसार आज तक हिन्दू समाजका काम काज चलता है।

बसव

यादव-वंश (११८७–१३१८ ई०)—देवगिरि (निज़ाम की रियासतमें दौलताबाद) के यादव वंशके राजा पहिले पहल चालुक्य राजाओंके अधीन थे। भिल्लमने इस राजवंश की नींव डाली। ११८७ ई० तक इसने कृष्णानदी तकके भूभागपर विजय प्राप्त कर ली थी। इसने देवगिरिको अपनी राजधानी बनाई। अन्तमें ११९१ ई० में वीर बल्लाल होयसलाने इसे एक लड़ाईमें मार डाला। इस वंशमें सिंघनके ऐसा पराक्रमी राजा और कोई भी नहीं हुआ। १२१० ई० में इसे गद्दी मिली। इसने सारे दक्षिणको

जीत कर मालवाको अपने राज्यमें मिला लिया तथा गुजरातपर भी कई वार चढ़ाई की। यह भी बड़ा विद्योत्साही राजा था। इसके समयमें शार्ङ्गधरने गायन शास्त्रपर एक अमूल्य पुस्तक लिखी और भास्कराचार्यके पौत्र छंगदेव इसके ज्योतिषी थे। सिंहन के पौत्र कृष्ण (१२४७ ई०) ने मालवा, गुजरात, कोंकण, चोला आदि प्रदेशोंको रौंद डाला। इसने कई एक यज्ञ किये। रामचन्द्र (१२७१ ई०)ने भी मालवा और तैलंग देशोंसे कई वार लड़ाई की। प्रख्यात धर्मशास्त्रवित् हेमाद्रि इसका मन्त्री था। परन्तु १२९४ ई०में अला-उद्दीनने इसको हराया। अतः इसे इलिचपुर परगनेसे हाथ धोना पड़ा तथा वार्षिक करके अतिरिक्त अला-उद्दीनको "६०० मन मोती, २ मन कीमती पत्थर, १००० मन चांदी, ४००० रेशमी कपड़े" आदि देने पड़े।

होयसला-वंश (१११९—१३१० ई०) होयसलाराज्य आजकलकी मैसूरकी रियासतमें था। इसकी राजधानी द्वारसमुद्र (आजकल हालेविद्) में थी। इस राजवंशकी नींव डालने वाले विट्टिदेव होयसला (११११-४१ ई०) थे। पहिले पहल इनकी रियासत चालुक्योंके अधीन थी। विट्टिदेव पहिले जैन थे, पर रामानुज स्वामीने इनको कट्टर वैष्णव बना दिया। तबसे उनका नाम विष्णुवर्द्धन पड़ा। इन्होंने हालेविदमें कई एक सुन्दर मन्दिर बनवाये थे। विष्णुवर्द्धनके नाती वीरबल्लाल (११७३-१२२० ई०) ने सारे दक्षिण पर अपना दबदबा जमाया। अन्तमें सन् १३१२ ई० में अलाउद्दीनके सेनापति मलिक काफूरने इसराज्यको नष्ट कर दिया।

पल्लव-वंशके राजा—पल्लव वंशके राजाओंकी राजधानी काञ्चीमें थी। आन्ध्रवंशी राजाओंके बाद पल्लववंशी राजाओंने ही पहिले पहल सारे दक्षिणपर राज्य किया। किसी समय नर्मदा नदीसे लेकर दक्षिणमें पन्नार नदी तकका भूभाग पल्लवोंके अधीन था। महेंद्र वर्मन (६००-६२५ ई०) ने चिंगलपटके निकट ममल्ल-

पुरम्में एक बड़ा भारी चट्टान कटवा कर एक सुन्दर मन्दिर बनवाया था जिसका नाम 'रथ' है। इनके बेटे नरसिंह वर्मन (६२५-४५ ई०)ने चालुक्यवंशी सम्राट दूसरे पुलकेशिनको हराया। इन्होंने भी कई एक रथ बनवाये। इसके बाद बहुत दिनों तक पल्लव लोग चालुक्योंसे लड़ते रहे। अन्तमें ६०० ई० के लगभग चोलाराजने पल्लव राज्यको जीता।

पल्लवोंकी राजधानी काञ्ची बहुत दिनों तक वैदिक धर्म तथा संस्कृत साहित्यका केन्द्र रह चुकी थी। महेन्द्र वर्मनने नाट्यशास्त्र तथा संगीत शास्त्रके बारेमें संस्कृतमें पुस्तकें लिखीं। महाकवि भारवि और दण्डी काञ्चीके रहनेवाले थे। इन्हीं दिनोंमें शैव और वैष्णव धर्मकी नींव पड़ी तथा कई एक बड़े बड़े भक्तोंका उदय हुआ और बहुतसी धर्म पुस्तकें रची गईं।

चोला साम्राज्य—पहिले पहल मद्रासके आसपासके ज़िले और मैसूरका अधिकतर हिस्सा चोला राज्यमें मिला लिया गया। इस राज्यकी पुरानी राजधानी उरायूर (त्रिचनापली) थी। अन्तमें त्रिचनापलीके जिलेमें चोलापुरम्में इसकी राजधानी हटा दी गई। परान्तक (१) (६००—४० ई०) के समयसे इस राज्यकी बड़ी उन्नति हुई। परान्तकने पांड्यराजको हराकर उनसे मदुरा छीना और लङ्कापर चढ़ाईकी। इसकी मृत्युके उपरान्त करीब ५० वर्षतक चोलावंशियोंकी राष्ट्रकूटोंके साथ लड़ाई चलती रही। अन्तमें ६५८ ई० में राजराज चोलाको गद्दी मिली। इसने लंका, मालाबार की तट-भूमि, पूर्वी चालुक्य राज्य और कलिंग आदि देशों पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया. तथा सारे दक्षिणको रौंद डाला। अन्तमें इसने अपनी दिग्विजयकी यादगारीमें तञ्जोर का विख्यात मन्दिर बनवाया। यह मन्दिर द्रविड़ शिल्पका सर्वोत्कृष्ट नमूना माना जाता है। १०१२ से इसका बेटा राजेन्द्र चोला राज्य शासन करने लगा। इसने चोला साम्राज्यकी नींव पक्की करनेमें अपना सारा समय व्यतीत किया। १०४२ ई० में राजेन्द्रकी मृत्यु होनेपर कई

साल तक चोला राज्यके साथ चालुक्योंकी लड़ाई चलती रही। अन्तमें कुलोत्तुंग दोनों राज्योंका सम्राट बना (१०७०–१११८ ई०)। यह बड़ा भारी वीर था तथा सारे दक्षिणको अपने अधीन कर लिया। इसने भी कई एक अच्छे अच्छे मन्दिर बनवाये तथा इसके समय तामिल और तेलेगू साहित्यकी बड़ी उन्नति हुई। इस तरहसे चोलावंशी राजा बड़े ठाट बाटसे १३१० ई० तक राज करते रहे, जब कि मलिक काफूरने इस राज्यको तोड़ दिया।

इस वंशके सब राजा बड़े प्रजापालक थे, उन्होंने प्रजाको स्वराज्य भी दिया था। कई एक गांवोंके शासन करनेके लिये प्रजाकी ओरसे एक महासभा होती थी। हर एक गांवसे इस सभाके लिये प्रतिनिधि चुने जाते थे। इस महासभासे तालाब, वर्गाचे सड़क आदिके देखनेके लिये एक एक उपसमिति नियत होती थी। (म्युनिसिपल्टी व ज़िलाबोर्डके कामसे मिलान करो)। राजकर आमदनीका छठां भाग था। इस वंशके एक राजाने कावेरी नदीमें एक बांध बनवा दिया था। राजेन्द्र चोलाने दक्षिणी आर्काट ज़िलेमें एक भारी विद्यालय स्थापित किया और वीर राजेन्द्र देवने चिंगलपट ज़िलेमें एक अस्पताल बनवाया।

दक्षिणमें मुसलमान—तेरहवीं सदीके अन्तिम भागमें मुसलमानोंने दक्षिण पर पहिले पहल चढ़ाई की। १२९४ ई० में अला-उद्दीन खिलजीने एकाएक देवगिरिपर चढ़ाई करके वहांके राजाको कर देनेके लिये बाध्य किया। अन्तमें अला-उद्दीनने सन् १३०२–१२ ई० में अपने सेनापति मलिक काफूरको भेजा। इसने सारे दक्षिण भारतको बिलकुल रौंद डाला। इसी समयसे दक्षिणमें मुसलमानोंका रोब बढ़ने लगा।

(१७) मध्य युगमें देशकी अवस्था।

हर्षकी मृत्युके उपरान्त यद्यपि राजनीतिके क्षेत्रमें ऐसा को[illegible] भी वीर उत्पन्न नहीं हुआ था जो कि प्राचीन भारतके मह[illegible] सम्राटोंके ऐसा एक दूसरेके साथ सदा लड़ती हुई छोटी छो[illegible] रियासतोंपर विजय प्राप्त करके भिन्न भिन्न जातियों का ह[illegible] एकताकी सुनहरी सिकड़ोंसे एक साथ बांध देवे, फिर भी हमा[illegible] आधुनिक समाज, साहित्य, शिक्षा, रीति-नीति तथा धर्म प[illegible] इस युगका प्रभाव बहुतही अधिक पड़ा हुआ है। यद्यपि स[illegible] देशपर छोटे छोटे राजे राज्य करते रहे, तब भी इन सभों का ध[illegible] रहन-सहन तथा आदर्श प्रायः एकही थे। अतः इस युगमें [illegible] भारतवर्षकी मौलिक एकता का नाश नहीं होने पाया। हां, कु[illegible] ऐसे भी विद्वान् हैं जो नवीं और दसवीं शताब्दीको भारतवर्ष[illegible] लिये अतीव आनन्दका काल बतलाते हैं।*

हिन्दू धर्म—पहिलेही यह बात कही गई है कि गुप्त-सम्राट[illegible] के समयसे ही नवीन हिन्दू धर्म की लगातार उन्नति तथा दि[illegible] प्रतिदिन बौद्ध धर्म की अवनति होने लगी थी। इन्हीं दिनों हिन्दु[illegible] के कुल शास्त्र-ग्रन्थ, स्मृति, इतिहास और पुराणोंको आज कल[illegible] स्वरूप दिया गया। उच्चकुलके थोड़ेही लोग पूर्वके ऐसा अग्निहो[illegible] आदि करते थे। कदाचित् एक आध विजयी राजा अश्वमेध [illegible] राजसूयभी करते थे। परन्तु अधिकतर लोग मन्दिरोंमें जाक[illegible] वा घरहीमें बैठ कर देव देवीकी पूजा करते थे। इन देवताओं[illegible] शिव, विष्णु, आदित्य, गणेश आदि प्रख्यात हैं। और इनमें[illegible] शिव और विष्णुके भक्तकी संख्या कहीं अधिक थी। आठवीं श[illegible] हीमें सर्व प्रथम देवी वा कालीकी पूजा चल निकली। पृथ्वीरा[illegible] रासोमे पता चलता है कि लोग बड़ी धूमके साथ देवीके मन्दि[illegible] के सामने भैंसे और भेड़ बकरोंकी बलि चढाते थे। इसी[illegible]

* Vaidya : Hist. of Mediaeval Hindu India ; Vol. I[illegible]

स्पष्टतया मालूम होता है कि उनदिनोंमें तान्त्रिक सिद्धान्तों का प्रभाव लोगोंके मनपर कहां तक पड़ा हुआ था। बड़े बड़े तीर्थ-क्षेत्र आदि भी इसी समयमें प्रख्यात हो गये। इनमें काश्मीरकी शारदा; मुलतान का सूर्य मन्दिर, नागरकोटकी ज्वालामुखी, उज्जैनके महाकाल, गुजरातके सोमनाथ, काशीके विष्णु, काञ्चीके शिव आदि अधिक प्रसिद्ध हैं। पुनः इन्हीं दिनों बहुतसे व्रत आदि चल निकले जिनका पालन आजतक हिन्दू करते हैं।

इस प्रकारसे केवल दिखौआ रूपसे ही हिन्दू धर्म की उन्नति नहीं हुई थी। इन्हीं दिनोंमें आधुनिक भारतके कई एक बड़े बड़े सुधारक भी हो गये, जिन्होंने अपने ज्ञान का अनन्त भण्डार हिन्दू-धर्मकी सेवामें लगाया। इन्होंने बहुतसे कट्टर बौद्धोंको वाद-विवादमें परास्त कर उन्हें फिर हिन्दू धर्म ग्रहण करनेके लिये बाध्य किया। इस बारका धार्मिक आन्दोलन दक्षिणसे आरम्भ हुआ।

कुमारिल भट्ट—यह बड़े कट्टर हिन्दू थे तथा बौद्ध धर्मको नीचा दिखानेके लिये इन्होंने प्राणपणसे प्रयत्न किया था। इन्होंने फिरसे वैदिक धर्म तथा यज्ञादिका माहात्म्य स्थापित करनेका यत्न किया। ये बड़े भारी दार्शनिक भी थे। बौद्धधर्मके सिद्धान्तोंके विरुद्ध इन्होंने बहुत कुछ लिखा था तथा "तन्त्र-वार्तिक" नामकी मीमांसाकी एक पुस्तक लिखी। ७०० ई० के लगभग इन्होंने अपना शरीर त्याग दिया।

शंकराचार्य (७८८-८२० ई०)—जातिके ये मलावारके नम्बूदी ब्राह्मण थे। छोटी अवस्थाहीमें इनके पिताकी मृत्यु होगई थी। स्वल्पावस्थामें वेद वेदांगादिका अध्ययन कर इन्होंने संन्यास ले लिया। इसके उपरान्त इन्होंने देशाटन का आरम्भ किया और विन्ध्याचलमें जा कर गोविन्द गुरुके निकट बहुतसे शास्त्र पढ़े। अन्तमें ये काशीमें आकर बस गये और वादविवादसे तथा

पुस्तकादि लिखकर अपने अद्वैतवाद या मायावाद मतका प्रचार करने लगे। पुनः एकबार इन्होंने सारे भारतवर्ष का परिक्रमण किया और शृंगेरी (मैसूरमें), बदरिकाश्रम, पुरी और द्वारकामें मठ आदि बनवाये। उन दिनों इनके समान विद्वान और कोई भी न था। अतएव उन्होंने जगद्गुरुकी उपाधि प्राप्त की। इन्होंने मीमांसाके बड़े पण्डित मण्डन मिश्रको हराया। अन्त में कुल ३२ वर्षकी अवस्थामें ये स्वर्गधामको सिधारे। लोग इन्हें आजतक शिवजी का अवतार कह कर मानते हैं।

शंकराचार्यका मत यह था कि जड़ पदार्थ, जीवात्मा तथा परमात्मामें कोई विभिन्नता नहीं है। ये तीनों एकही हैं। हम लोग अज्ञान हैं। इसीलिये हम लोगोंकी दृष्टिमें इन तीनोंका पृथक् रूप बोध होता है (मायावाद); अद्वैत भावका ज्ञान योगके द्वारा ही हो सकता है। ब्रह्म एकही है तथा जीवोंमें जो अहम् का ज्ञान है वह अविद्याके कारण है। अतएव जब जीवको अपने स्वरूपका ठीक ठीक ज्ञान होगा तभी उसे अविद्याके हाथसे छुटकारा मिलेगा, अथवा मुक्ति मिलेगी। शंकर ज्ञानको भक्तिसे बढ़कर मानते थे, क्योंकि भक्ति शब्दसे ही द्वैत भावका बोध होता है।

रामानुज—(जन्म १०१७ ई०) शंकरने मुक्तिकी प्राप्तिके लिये ज्ञान प्राप्त करनेको कहा तथा वे अद्वैतवादी थे। परन्तु रामानुजने भक्ति मार्ग पर ज़ोर देतेहुए द्वैतभावका प्रचार किया। छोटी अवस्थामें रामानुजने काञ्चीमें रह कर विद्याध्ययन किया था। इसके अनन्तर वे श्रीरंग मठके आचार्य बनाये गये। उन्होंने कुल उपनिषद्, भगवद्गीता, ब्रह्मसूत्र आदि पुस्तकों पर भारी भारी टीकाएं लिखीं। परन्तु जब धर्मके कारण चोला-राज इनको सताने लगे तब ये वहांसे भागकर होयसला राज्यको गये। वहां उन्होंने राजा विष्णुवर्धनको वैष्णव धर्ममें दीक्षित किया (१०९६ ई०)।

यदि सच पूछो तो रामानुज भक्ति मार्गके प्रतिष्ठाता नहीं थे, क्योंकि वैष्णव धर्म प्राचीन धर्मोंमेंसे था। दक्षिणमें बहुत दिनोंसे इस धर्मका प्रचार था। वहां वैष्णव गुरुओंको लोग आलवार कहते थे। अस्तु, भक्ति शब्दसे द्वैतभाव अर्थात् भक्त और भगवानका बोध होता है; भक्त अपने को भगवानका दास या बिलकुल अनुगत मानता है। ऐसी अवस्थामें उसका स्वतन्त्र रूपसे विचार आदि कैसे हो सकता है? अतः वह सब प्रकार से भगवान् पर निर्भर करता है। ये भी मुक्ति चाहते हैं, परन्तु ज्ञान-मार्गसे नहीं किन्तु भक्ति-मार्गसे। फिर भी रामानुज पक्के ब्राह्मण थे। अतः वे शूद्रोंसे घृणा करते थे। उनका मत यह था कि शूद्रों की जातिमें जन्म लेनेसे मुक्ति नहीं मिल सकती है। चौदहवीं शताब्दीमें रामानन्दने इन्हींके मतका थोड़ा बहुत परिवर्तन कर उत्तर भारतमें प्रचार किया था।

जैन धर्म—यद्यपि जैन मतका प्रचार सर्व प्रथम उत्तर भारतमें ही हुआ था, फिर भी जब बौद्ध धर्मसे इसका पाला पड़ा तब यह दक्षिणकी ओर खिसक गया। कहा जाता है कि उत्तरीय भारतमें अकाल पड़नेके कारण भद्रबाहु नामके एक जैन आचार्य पहिले दक्षिणमें जाकर बसे थे। उन्होंने पहिले पहल वहां जैन धर्मका प्रचार किया था। तभीसे दाक्षिणात्यमें जैनोंका प्रभाव दिन प्रतिदिन बढ़ता गया। ये लोग देशी भाषामें धर्मप्रचार करते थे, अतः द्रविड़ भाषाओंकी इन्होंने बहुत उन्नतिकी थी। दक्षिणके कुल राजे पहिले पहल इसी धर्मके मानने वाले थे, अतः प्राचीन पाण्ड्य राज्य, चोला राज्य, राष्ट्रकूट आदि राज्योंमें इस धर्मकी बड़ी उन्नति हुई। अन्तमें दशवीं शताब्दीसे जब कि वहां पर शैव और वैष्णव धर्मका प्रचार होने लगा तबसे इस धर्म की भी अवनति होने लगी और तभीसे गुजरात, मालवा और राजपुताना आदि उस धर्मवालोंके केन्द्र स्थान बन गये।

बौद्धधर्मकी अवनति—हर्षवर्द्धनके समयहीमें बौद्ध धर्मके

छोटेबातका प्रायः अन्त हो गया था। फा-हियान, हुयेन सांग और इ-त्सिंगके लिखित वर्णनको पढ़नेसे हमलोगोंको पता चलता है कि उस समय बौद्ध धर्म कहां तक दिखौआ वन गया था तथा इसका रोबदाब कहां तक घट गया था। स्वयं हर्षवर्द्धन भी बुद्ध देवके साथ ही साथ सूर्य और शिवकी पूजा करते थे। बौद्ध धर्मकी बहुतसी शाखाएँ हो गई थीं और इनमेंसे कुछतो ऐसी थीं जो कुनोतिसे भरी हुई थीं। इन सबोंमें तान्त्रिक सिद्धान्तोंका प्रभाव बहुतही अधिक पड़ा हुआ था। जैसे वज्रयानी लोग स्त्रियोंको संगमें लेकर भजन-पूजन करते थे। कालचक्रयानी लोग भूत प्रेतको पूजते थे, और सहजिया सम्प्रदायवाले खुल्लम-खुल्ला भोग विलासमें ही अपना समय बिताते थे। बौद्ध पुरोहित लोग पूर्व जैसा ब्रह्मचर्यका पालन नहीं करते थे, वे लोग ब्याह शादी करके गृहस्थी करते थे। धर्मके नामसे संघवाले जनताकी आंखोंमें धूर झोंकते थे। पुनः कुल विहार वा मठ दुराचारियोंके अड्डे वन गये थे। इसी कुनीतिके विरुद्ध कुमारिल भट्ट और शंकराचार्यने अपनी अपनी आवाज़ें उठाईं और इस धर्मका बिलकुल अन्त कर दिया।

पुनः इन्हीं दिनोंमें बौद्ध धर्मके बड़े बड़े सिद्धान्तोंको—जैसे अहिंसा मत, संघ वा मठोंकी स्थापना, धर्मपूजा आदि हिन्दू धर्मने ग्रहण किया। पृथ्वीराज रासो, जयदेव और कुछ पुराणोंसे पता चलता है कि इन्हीं दिनोंमें भगवान्‌के दस अवतारकी कथा अच्छी तरहसे प्रसिद्ध हो गई थी। इसके अनुसार बुद्धदेवको भगवानका नवम अवतार माना गया। फिर भी बारहवीं सदीके अन्त तक विहार और बंगालमें यह धर्म बड़ी शानके साथ फैला हुआ था, जब कि मुसलमानोंने उसका अन्त कर दिया। इस प्रकार अपनी जन्मभूमिसे बौद्धधर्मका वहिष्कार हो गया।

साहित्य—पुराने समयके बड़े बड़े हिंदू राजाओंकी तरह राजपूत राजे भी हिन्दू धर्म और संस्कृत साहित्यके पोषक थे।

इनके दरबारमें बड़े बड़े कवि हो गये थे। इनमें 'उत्तर रामचरित' के प्रसिद्ध नाट्यकार कनौजके भवभूति, काश्मीरकी 'राजतरंगिणी' के रचयिता कल्हण और 'गीतगोविन्द'के कवि जयदेव बड़े प्रसिद्ध हैं। बड़े बड़े राजे भी संस्कृतमें कविता आदि लिखते थे। इनमें दिल्लीके विशालदेव चौहान, मालवाके मुञ्ज तथा भोजराज, और बंगालके लक्ष्मण सेन प्रख्यात हैं। देशी भाषाओंमें हिन्दीकी नींव इसी समयमें पड़ी थी। पृथ्वीराजके राज कवि चंदबरदाईने "पृथ्वीराज रासो" नामकी एक अच्छी पुस्तक लिखी। इसके अतिरिक्त इन्हीं दिनों बंगला और मराठी भाषाओंकी भी नींव पड़ी।

शिल्प और कला—मूर्ति पूजाकी रीति चल निकलनेके कारण और नवीन हिन्दू धर्मकी उन्नतिके साथही साथ उत्तरीय तथा दक्षिणी भारतमें बड़े सुन्दर सुन्दर पत्थरके मन्दिर बनने लगे। इन सब मन्दिरोंमें से उड़ीसामें भुवनेश्वर और जगन्नाथके मन्दिर, छत्तरपुर रियासतमें खजुराहोके मन्दिर आर्य ढंगके बने हुए हैं। द्रविड़ ढंगके बने हुए मन्दिरोंमेंसे तञ्जोरके राजराज चोलाके और सुब्रह्मण्यके मन्दिर विख्यात हैं, तथा चालुक्य ढंगके बने हुए मन्दिरोंमेंसे मैसूरके होयसलेश्वर और विष्णुवर्द्धनके मन्दिर बहुतही अच्छे बने हुये हैं। इन्हीं दिनोंमें आबू पहाड़ परके जैन मन्दिर भी बने थे।

हाथके कामोंमें कपड़ा बिननेकी विद्याकी दिन प्रतिदिन उन्नति होती गई। अरबी सौदागर सुलेमान ने बंगाल के बने हुए मलमल की बड़ी प्रशंसाकी है। दक्षिणमें भी बारीकसे बारीक सूतकी धोनी इतनी मिहीन बनती थी वे सांपके केंचुल वा दूधकी भाप जैसी मालूम पड़ती थी। इसके अतिरिक्त ऊन और रेशमके कपड़े भी बहुत ही अच्छे बनते थे।

कुशान साम्राज्यकी अवनतिके साथ ही इस देशका रोमके व्यापार क्षेत्रका सीधा सम्बन्ध बिलकुल जाता रहा। तभी से

ईरानी लोगोंने कुल भारतीय व्यापार अपने हाथमें कर लिये। सातवीं सदी से वही व्यापार अरबवालोंके हाथ लगा। अतः उस समय से लगातार पन्द्रहवीं सदी तक यूरोपके लोग इन सौदागरों से भारतीय वस्तु खरीदते रहे।

समाज—इन्हीं दिनोंके रचित "पृथ्वीराज--रासो", "भविष्य पुराण" और अलवेरूनी तथा अरबी सौदागरों के भ्रमणवृत्तान्त से भारतीय समाजकी स्थितिके बारेमें थोड़ा बहुत पता चलता है। समाजमें चार वर्णके लोगोंके अतिरिक्त बहुतसी छोटी छोटी जातियोंकी उत्पत्ति हो चुकी थी। ब्राह्मणोंमें कान्यकुब्ज ब्राह्मणका स्थान उच्चथा। देश भर में बहुत से छोटे छोटे रजवाड़े राज करते थे। जब एक राजा दूसरे को हरा देता था तब विजित राजा विजयीका सामन्त बन जाता था और उसे अपनी आमदनी का छठांभाग राज करके रूपमें देता था तथा लड़ाई छिड़ने पर उसकी सहायता करता था। किसी राजाके शराब पीनेसे उसका देश-निकाला होता था। चारों वर्णके लोग खेती-बारीका काम और सेना दलमें काम करते थे। समाज पर योगिनी, ज्योतिषी और तन्त्र-मन्त्रका बड़ा प्रभाव पड़ चुका था। तान्त्रिक लोग अभिचार, होम आदिके द्वारा शत्रु को नष्ट कर देते थे तथा अष्ट-सिद्धि और नव-सिद्धि प्राप्त करने के लिये बहुत कष्ट उठाते थे। समाजमें तब तक मिश्र विवाहकी प्रथा बन्द नहीं हुई थी। कवि बाणभट्टके पिताने एक शूद्राणी से ब्याह कर लिया था। विशालदेव चौहानने एक वैश्य कन्याको व्याहा, कवि राजशेखरको धर्म पत्नी क्षत्रियाणी थी। परन्तु इन दिनोंके लिखित स्मृति ग्रन्थोंसे पता चलता है कि शूद्रजाति की स्त्रियोंको व्याहनेकी रीति बन्द कर दी गई। इन्हीं दिनों बाल्य विवाहकी प्रथा चल निकली। पृथ्वीराजका प्रथम विवाह ११ वर्षकी अवस्थामें हुआ था। दससे बारह वर्षकी लड़कियोंकी शादी करदेना धर्म समझा जाता था।

शिक्षाका भी प्रचार अच्छा था। काशी, उज्जैन, काश्मीर,

विक्रमशिला, ओदन्तपुरी प्रधान विद्यास्थान थे। पृथ्वीराजको धनुर्विद्याके अतिरिक्त छः भाषाएँ, चौदह विद्या और चौंसठ कलायें सिखाई गई थीं। स्त्री-शिक्षाको भी चाल थी। हंसावती, संयुक्ता और उसकी वहिन तारा लिखी-पढ़ी थीं।

पृथ्वीराजकी दिनचर्या इस प्रकार की थी। सवेरे वह शिकार खेलते थे और तीसरे पहर में सेना-दलकी और सरकारी कारखानोंकी देख रेख करते थे। सन्ध्याके समय दरबार होता था और रात्रिके समय नृत्य-गीत आदि होता था। जयचन्द्रके दरबार में जो नाटकका खेल हुआ था उसका वर्णन रासोमें मिलता है।

लोग तरह तरहके उत्सव मनाते थे। इनमेंसे दीवालीमें जुआ खेलनेकी रीति* और होलीके समय रंग छोड़ने तथा अश्लील बातोंके प्रयोग करनेकी रीति† आज तक प्रचलित है। विधवा होने पर स्त्रियां सती हो जाती थीं और बुढ़ापेमें मर्द लोग तीर्थ स्थानमें जल मरना, डूब मरना, पहाड़ परसे गिरकर मरना धर्म समझते थे।। कुमारिलभट्ट तथा जयपालशाही जल मरे थे। धंग चण्डेल प्रयागमें डूब मरा।

भारतीय सभ्यताका विस्तार ("Greater India")— प्राचीन कालके हिन्दू लोग आजकलके हिन्दुओंके ऐसा "अपने घरके देवता" बनकर नहीं बैठे रहते थे। वरन् वे लोग जहाज़ों पर सवार होकर समुद्रके पार दूर दूरके देशोंमें जाकर व्यापार आदि करते थे, नई नई आबादियां बसाते तथा अपनी शिष्टता और रीति नीति दूसरे देशके लोगोंके बीचमें फैलाते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि आर्कटिक महासमुद्रसे लेकर भारतीय महासमुद्र तक, और मध्य एशियासे लेकर पैसिफिक महासमुद्र तकके सारे भूभागकी शिष्टता तथा रीति नीति पर भारतीय

---

* स्कन्द पुराण और पद्मपुराण।

† पृथ्वीराज-रासो।

सभ्यताकी छाप इस रीतिसे हो गई है कि अब वह मिटानेपर भी नहीं मिट सकती।

इसके पूर्वहीमें तुमसे बतलाया गया है कि द्रविड़ लोग तथा कलिंग वाले कैसे बड़े व्यापारी रह चुके हैं। अशोकने और कनिष्कने धर्म प्रचारके लिये कैसे दूर दूर देशोंमें धर्म-प्रचारकोंको भेजा था। ऊपर बयान हो चुका है कि पहिली शताब्दीहीमें कनिष्कने तुर्किस्तान तथा चीन देशमें बौद्ध धर्मका प्रचार किया। अतः उन देशोंको केन्द्र मानकर महायान मतका बौद्ध धर्म धीरे धीरे मंगोलिया, मञ्चूरिया और जापानमें फैल गया। प्राचीन तुर्की भाषा तथा चीनी भाषामें कुल धर्मग्रन्थोंका भाषान्तर हुआ तथा उन देशोंमें भी सुन्दर सुन्दर विहार और मन्दिर आदि बनाये गये। इसलाम धर्म के उदय होने पर तुर्किस्तान से बौद्धधर्मका बहिष्कार हो गया। जापानियोंको बौद्ध धर्मका पता चीनी लोगों से चला था। फिर भी ८०० ई० के लगभग बोधिसेन नामके एक पण्डितने जापानमें जाकर वहांके पुरोहितोंको संस्कृत सिखाई थी। उसी समय इस देशसे जापानको सर्व प्रथम कपासका बीज भेजा गया था। तिब्बतको बौद्ध धर्मका पता राजा नयपालने दिया था (१०४१ ई०)।

उत्तरी एशियाके साथ प्राचीन भारतका सम्बन्ध धर्मके क्षेत्रमें ही था, परन्तु दक्षिण-पूर्वके प्रायद्वीप (इण्डो-चायना और मलय) तथा भारतीय द्वीप--पुञ्ज (सुमात्रा, जावा, बोर्णियो आदि) से यह सम्बन्ध राजनीतिके क्षेत्रमें भी था। वहां बड़े बड़े राज्य स्थापित हुए थे तथा ब्राह्मण--धर्मका प्रभाव फैला हुआ था। पाली साहित्यमें इण्डो चायनाका नाम सुवर्ण--भूमि पड़ा है। अनाममें चम्पा राज्य बसा हुआ था। यहां पर "चाम" नाम का एक समुदाय रहता था। यहां पर शैव धर्मके साथही साथ महायान धर्म फैला हुआ था तथा संस्कृत शिष्टोंकी भाषा थी। इसके बाद आज कलके कम्बोडियामें कम्बोज राज्य था। यह राज्य पांचवीं

सदीमें स्थापित हुआ—। इसदेश पर कौण्डिण्य गोत्रके चन्द्रवंशीय राजे राज करते थे इन राजाओंकी उपाधि वर्मनकी थी। इनके लिखित करीब ६७० शिला-लेख मिले हैं और ये कुल विशुद्ध संस्कृत भाषा में लिखे गये हैं। छठीं सदीमें भववर्मन नामके राजाने एक शिव-मन्दिर बनवाया और वहां पर रामायण, महाभारत और पुराणोंकी प्रतियां रखवा दी थीं। इस राजवंशकी कुमारियोंका व्याह केवल ब्राह्मणोंही से होता था तथा आर्य और द्रविड़, दोनों लिपियोंका प्रचार था, शिला-लेखोंके अतिरिक्त रामायण तथा महाभारतके बहुतसे आख्यान भी पत्थरों पर खोदे गये थे। सातवीं सदी से बौद्धधर्मका प्रभाव बिलकुल जाता रहा। १२०० ई० के लगभग इस राज्यका अन्त हो गया।

उसी प्रकार पहली सदीसे जावामें हिंदू सभ्यता का एक दूसरा केन्द्र स्थापित हो गया था। यहांपर भी वर्मन राजे राज करते थे। यहांके अधिकतर लोग अगस्त्य ऋषिकी पूजा करते थे। आठवीं और नवींसदीमें यह राज्य श्रीविजय (सुमात्रा) के शैलेन्द्र राजाओंके अधीन था। ये राजे कट्टर बौद्ध थे और ८५० ई० के लगभग बोरो-बोदर का प्रख्यात मन्दिर बना था। दसवीं सदीसे पुनः हिन्दुओं का रोबदाब जमा। इन्हीं दिनोंमें कवि (संस्कृत और जावा की मिश्र) भाषामें बहुतसे इतिहास, पुराण आदि लिखे गये तथा सुन्दर सुन्दर दृश्य और मूर्त्ति पत्थरोंपर खोदे गये थे। तेरहवीं सदीके अन्तिम भागमें जावा राज्यके अधीन आसपासके कुलद्वीप तथा मलय प्रायद्वीप भी थे। पन्द्रहवीं सदी में मुसलमानोंने इसराज्यको जीता।

अन्तिम बात—यहांपर हम लोग प्राचीन हिन्दुओंकी कहानी समाप्त करते हैं, लेकिन उसके पहले तुमको एक बात पर ध्यान दिलाना चाहते हैं। सम्भव है कि तुम इतनी चढ़ाइयां और इतने बड़े बड़े साम्राज्यों और राज्यों की घटती और बढ़तीकी कहानी पढ़ कर यह बात सोचते होगे कि हमारे देशके

इतिहासकी एकता नहीं है—टूटी फूटी बातोंको जोड़जाड़ कर लोगोंने इतिहासकी रचना की है। परन्तु सावधान, ऐसी बातें कभी न सोचना। जैसे सहस्र शाखाओंके होनेपर भी वृक्ष एक ही है, सहस्र नदियोंके मिलने पर भी समुद्र एक ही है, सैकड़ों धर्मके होने पर भी ईश्वर एकही है, वैसे ही प्राचीन कालमें सैकड़ों रियासतोंके होनपर भी सभीकी आत्मा एक ही थी—अर्थात् एक रियासत दूसरोंके साथ बहुतसी बातोंमें मिलती जुलती थी। सभीका धर्म करीव करीव एक ही था, सबकी भाषा करीव करीव एक ही थी, सबका समाज भी एक ही ढांचे पर बना हुआ था, सबके साहित्यकी गति एक ही थी, सबकी कारीगरी और उसकी प्रेरणा भी एक ही थी। इसी तरह एकताको सोनेकी सिकड़ोंसे सभीका हृदय एक दूसरेके साथ बंधा हुआ था। यह बात सही है कि प्राचीन हिंदुओंका गौरव राजनीतिके क्षेत्रमें उतना नहीं रह गया है, जितना कि उनकी ब्रह्मविद्यामें—यानी उनके लिखे हुए वेदोंमें, उपनिषदोंमें, गीतामें, नाटकोंमें और काव्योंमें है। हमारे देशका गौरव समुद्रगुप्त या चन्द्रगुप्त मौर्य में उतना नहीं है— जितना कि बुद्ध, अशोक और शंकराचार्यमें है। और तुम देखते हो कि ऐसी वस्तु ही पृथ्वीमें सदाके लिये रहती हैं, किन्तु साम्राज्य सदाके लिये नहीं रहते।

द्वितीय खण्ड।

मुसलमानोंका प्रभाव।

(१) ईश्वरके दूत—हज़रत मुहम्मद।

राजनीति, धर्मनीति तथा सामाजिक बातोंमें जिस समय प्राचीन हिन्दुओं की एकता जाती रही—राजनीतिके क्षेत्रमें जब साम्राज्यके स्थानमें छोटे छोटे रजवाड़े अपनी अपनी प्रधानता स्थापित करनेके लिये एक दूसरेके साथ लड़ते भिड़ते थे, जिसके कारण देश भरमें अशान्तिकी आग भड़क उठी थी, धार्मिक जगतमें जिस समय तरह तरहके सम्प्रदाय वाले एक दूसरे को खाने का प्रयत्न कर रहे थे, और समाज जब जातिभेदकी चक्कीमें गरीबोंकी हड्डी चूर कर रहा था,—संक्षेपमें, जिस समय प्राचीन हिन्दुओंके जातीय जीवन की वृद्धावस्था आ गई थी, उसी समय सुदूर अरबमें एक ऐसी नवीन जातिकी उत्पत्ति हुई, जिसकी राजनीति, धर्मनीति, तथा समाजनीति का मूल मन्त्र एकता तथा साम्यका था। यह नवीन जाति जब अपने यौवनकी सारी शक्ति तथा कुलगर्वके द्वारा प्रेरित होकर इस देशके सामने आकर उपस्थित हुई, तब उसका सामना करना प्राचीन हिन्दुओंके लिये बड़ाही कठिन हो गया। इस नवीन धर्मके प्रवर्तक हजरत मुहम्मद साहब थे।

अरबकी अवस्था—मुहम्मद साहबके पूर्व सारे अरबमें छोटे छोटे समुदायके लोग रहते थे। ये लोग आपसमें खूब लड़ते भिड़ते थे। अतः देशभरमें अशान्ति फैली हुई थी। अरब वाले धर्मके मूर्त्ति पूजक थे और सितारे तथा भूत प्रेत को भी मानते

थे। पाँचवीं सदीमें मक्का का नामी मन्दिर "काबा" बना था, जहां ३६० देव देवियों की मूर्त्तियां रक्खी हुई थीं। मुहम्मद साहब का जिस समुदायमें जन्म हुआ था उसी समुदाय वाले उन दिनोंमें इस मन्दिर के अधिकारी थे। इसके अतिरिक्त उन दिनोंमें यहूदी तथा ईसाई धर्मके भी कुछ लोग अरब में रहते थे।

हज़रत मुहम्मद (५७०-६३२ ई०)—मुहम्मद साहब का जन्म एक दरिद्र कुलमें हुआ था। जब इनकी अवस्था कुल छः वर्षकी थी तभी उनकी माता का देहान्त हो गया। इनके पिता इसके पूर्वही दुनियासे कूच कर गये थे। अतः संसारमें बाल्यावस्थामें उनको बड़े बड़े कष्ट झेलने पड़े। फिर भी उन्होंने हिम्मत न हारी, क्योंकि उनके मनका झुकाव सदा धर्मकी ओर था। शीघ्रही लोग उनके भाव-विचारोंसे परिचित हो गये और उन्होंने "सत्यवादी" तथा "परम विश्वासी"की उपाधि प्राप्तकी। २५ वर्षकी अवस्थामें वे खदीजा नामी एक धनी विधवाके निरीक्षक बने। ऐसी ईमानदारीके साथ इन्होंने अपना कर्त्तव्य पालन किया कि अन्तमें विधवा स्त्रीने इनसे विवाह भी कर लिया। इन दिनों व्यापारके लिये मुहम्मदको प्रायः सीरिया जाना पड़ता था। इस प्रकार वे ईसाई और यहूदी धर्मों के सिद्धान्तोंसे परिचित हो गये। धनी विधवासे शादी कर लेनेके कारण अब उनकी सामाजिक स्थितिका भी परिवर्त्तन हो गया था। अब वे अपने समुदायके मुखियोंमेंसे थे। पुनः दिन प्रतिदिन इनके स्वभावका भी परिवर्त्तन होता गया। वे अत्यन्त धार्मिक बनते गये तथा न जाने किस बातकी चिन्तामें अपना सारा समय व्यतीत करने लगे।

अन्तमें जब इनकी अवस्था ४० वर्षकी थी तभी मुहम्मदने मूर्त्ति पूजाके विरुद्ध बड़ा भारी आन्दोलनका आरम्भ कर दिया तथा वे अपने धार्मिक अनुभवोंका प्रचार करने लगे। धीरे धीरे कुछ लोग इनके शिष्य बने। इनमेंसे खदीजा और अली सर्व

प्रधान थे। पहिले पहल मक्कावालोंने मुहम्मदके धार्मिक सिद्धान्तों की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया, परन्तु जब उनके शिष्योंकी संख्या अधिक होती गई और इसके कारण कावाकी आमदनी घटती गई, तब उन्होंने उनका विरोध किया। इन्हीं दिनोंमें मुहम्मदको बड़ी बड़ी मुसीबतें झेलनी पड़ीं। अन्तमें दो सालके बाद मदीनावालोंने उनके सिद्धान्तोंको मान लिया तथा उनको अपने देशमें आनेका निमन्त्रण दिया। इसी बुलाहटके अनुसार सन् ६२२ ई० के जुलाई के महीनेमें मुहम्मद साहब अपने शिष्योंको साथ लेकर मक्केसे मदीनेको चल दिये। इसी दिनसे "हिजरा" वा इस्लामी सम्वत्का प्रारम्भ माना जाता है। मुहम्मद साहबने अपने जीवनके अन्तिम भागको मदीनेमें रह कर केवल धार्मिक संगठनमें ही नहीं बिताया बल्कि उन्होंने वहांकी राजनैतिक तथा सामाजिक अवस्थामें भी परिवर्तन किया। अन्तमें मक्कावालोंको एक भारी लड़ाईमें हराकर उन्होंने जबरदस्ती उनको अपने धर्ममें ले लिया। तभीसे वह राजनैतिक बन गये और सारे अरबको अपने वशमें कर लिया। सन् ६३२ ई० के जूनमें मुहम्मद साहब परलोकको सिधारे।

इस्लाम धर्मके सिद्धान्त—इस्लाम धर्म केवल एक ईश्वरके अस्तित्व के बारेमें स्वीकार करता है, अतः वह मूर्त्तिपूजकोंको पापी समझता है। प्रत्येक मनुष्य अपने किये हुए कर्मके लिये उसी सच्चे ईश्वरके पास दायी है। उसके कर्मके अनुसार मृत्युके अनन्तर ईश्वर उसे दण्ड वा पुरस्कार देंगे। इस प्रकारसे हर एक मनुष्यमें जिम्मेवारीका ज्ञान उभड़ आता है। धर्मके गुह्य सिद्धान्तों के स्थानमें इस्लामने सामान्य बुद्धि तथा ज्ञानपर अधिक ज़ोर दिया। इसी प्रकारसे पुरोहिती आदिका नाश हो गया। सामाजिक विषयोंमें जुआ, खान-पान, विलासिता, दासत्व, लड़कियों की हत्या आदि कुनीतियोंका अन्त कर दिया। सबके ऊपर इस्लाम धर्महीने सर्व प्रथम इस बात का [illegible] किया कि कुल

मनुष्य एकही ईश्वरकी सन्तान होनेके कारण एक दूसरेसे भाई ऐसा बर्त्ताव करें। ऐसे ही जाति-पांतके भेदका अन्त हो गया जिस प्रकारसे हो सके अपने धर्म का प्रचार करना प्रत्येक मुसलमान अपना धर्म समझता है। ऊपरके वर्णनसे तुमको विश्वास हो जायगा कि इस्लाम धर्म का प्रत्येक सिद्धान्त हिन्दू धर्म सिद्धान्तोंका विरोधी था। अतः जब इन दोनों का सामना हुआ तब देश भरमें अशान्तिकी आग भड़क उठी जिसकी शान्ति आज तक नहीं हो सकी।

अरब जातिका अभ्युदय—इसी प्रकारसे एक जंगली समूहको संघ-बद्ध करके मुहम्मद साहब जब स्वर्गधाम सिधारे तब उनके पुराने शिष्योंमेंसे चार महापुरुष बारी बारी से इस्लामी दुनियाके प्रधान पुरोहित वा "खलीफा" बनाये गये इनमेंसे अन्तिम खलीफा अली था। अलीकी मृत्यु होने (६६१) के पूर्व तक जब धर्मके उमंगके द्वारा प्रेरित होकर अरबके लोग दूसरे देशके लोगोंको मुक्तिका संदेशा सुनानेके लिये बाहर दुनियां में निकल पड़े तब पृथ्वीकी सारी शक्तियां उनके जोर सामने तिनके की नांई तितर बितर होगईं। पूर्वीय रोमन साम्राज्य के ईसाई लोगोंने हार खाकर एशिया और अफ्रिकाके बहुत प्रदेश खोदिये; मिसरदेश तभीसे इस्लामी विद्वत्ताका केन्द्र बन गया यूरोपके गाथ लोगोंने स्पेन खो दिया, पुरोहितोंके द्वारा पीड़ित ईरानने शीघ्रही अपना उच्च शिर झुका लिया और उस देश ऊंचे ऊंचे अग्नि-मन्दिर तुरन्त मसजिदमें परिणत किये गये। ईरानके साथ ही साथ मध्य एशियाके तुर्की लोगोंने भी इस्लाम ग्रहण किया। इस रीतिसे कुल ६० वर्षों में इस्लाम की विजय पताका स्पेन और मोरक्कोसे भारतके प्रान्त तकके भूभाग पर फहरा दीगई, और साथही साथ इस विस्तृत भूमिकी धर्मनीति समाजनीति तथा राजनीति एकसी हो गई।

उनका पतन—इस्लाम धर्मने अरब वालों पर यहां

प्रभाव डाल दिया था कि मुहम्मद साहबके उपरान्त वे ३०० वर्ष तक सभ्य पृथिवीके अग्रगण्य बने रहे। परन्तु यह उमंग स्थायी नहीं हुआ और शीघ्रही गृह-विरोधने कुल काम तमाम कर दिया। अन्तिम दोनों खलीफाओंको हत्यारोंने मार डाला और इस्लामी दुनियां की राजधानी मदीनेसे दमास्कसको हटा ली गई। वहां पर ओम्मैयाद वंशके खलीफा लोग बड़ी शानसे राज्य करने लगे (६६१-७५० ई०)। इनके अनन्तर अब्बास-वंशके लोग खलीफा बने (७५०-१०२५ ई०)। उन्होंने बग़दादको अपनी राजधानी बनाई। राजधानी ज्योंही राज्यके एक प्रान्तमें हटा ली गई त्योंही दूर दूरके सूबे, जैसे अफ्रिका और स्पेन, स्वतंत्र बन गये। उन देशोंमें स्वतन्त्र खलीफे राज्य करने लगे। इधर विजयके मदने अरबी लोगोंका नस ढीला कर दिया था। वे अत्यन्त सुखी और विलासी बन गये थे। अतः राज्यका धूर उनके हाथ से छीन कर तुर्की लोग इस्लामी दुनियेके भाग्य-विधाता बन गये (१०५८ ई०)।

सारांश

५७० ई०	मुहम्मद साहबका जन्म।
६३२ ,,	,, ,, की मृत्यु।

(२) अरब लोगोंकी चढ़ाई ।

सिन्ध राज्य- सिन्ध देश आर्यावर्त्तके ठीक दक्षिण-पश्चि के कोने पर है। शकल-सूरतमें यह प्रान्त एक घड़ियाल नाककी तरह है। उत्तर और पश्चिमकी ओर ऊंचे ऊंचे पहा तथा पूर्वकी ओर विस्तृत मरुभूमि और समुद्रके होनेके कार यह प्रान्त विदेशीय चढ़ाई करने वालोंसे अधिकतर सुरक्षित है परन्तु पश्चिममें मकरानकी तटभूमिके रहनेके कारण यह सुरक्षित नहीं रह सका। यद्यपि यह प्रदेश ऊसर है, पर अरबके निवासी जो मरुभूमिके रहनेवाले हैं, उनके आवागमन लिये यह तटभूमि कोई बाधा नहीं डालती।

सातवीं सदीके बीचोंबीच सिन्ध देशपर एक शूद्र राजा रा करता था। इसके मरनेके उपरान्त उसका ब्राह्मण मन्त्री, जिस नाम चच था, राजा बना। चच बड़ा प्रतापी राज़ा था। उस चितौरसे लेकर शिविस्तान, तथा मुलतानसे ब्राह्मणाबाद तक भूमि अपने अधीन कर ली थी। चचके मरनेके बाद उसका दहर राज़ा हुआ। उन दिनों इस प्रान्तके निवासी अधि बौद्ध थे, तथा नई जीती हुई जातियां तब तक ठीक नहीं आई थीं। अतः राज़ा और प्रज़ाके बीचमें प्रीति न थी।

अरब वालोंकी चढ़ाई—ईरान पर विजय प्राप्त कर पश्चात्‌ही अरब वालों की दृष्टि हिन्दोस्तानकी उपज़ाऊ भूमि गड़ी थी तथा इस देशको जीतनेके लिये उन्होंने थोड़ी बहुत भी की थी। परन्तु डीपू बहुत दूर होने, तथा अच्छे आदिके न रहनेके कारण उनकी कुल चेष्टाएं व्यर्थ हो गईं। एव विवश होकर वे चुप रहे। अन्तमें ७१० ई०के लगभग खलीफाके लिये लंकाद्वीपसे भेज़े हुए कई मालके ज़हाज़ सिन्ध तट भूमिके पास ही लूट लिये गये, और ज़ब सिन्ध देश

डाकू ईरानकी तट-भूमिमें बड़ा उपद्रव मचा रहे थे, तब इनको दवानेकी आवश्यकता हुई। अतः ७१२ ई० में ईरानके राज प्रतिनिधिने अपने भांजा मुहम्मद बिन कासिमको बदला लेनेके लिये भेजा। इसके साथ करीब १०,००० सिपाही थे और कुछ अच्छे यन्त्र आदि भी थे, जिनके व्यवहारसे सिन्धके लोग परिचित नहीं थे। सिन्धके निकट पहुंचते ही मुहम्मदने कुछ जाठ आदिको भी अपने सेनादलमें ले लिया। इन देश-द्रोहियोंसे दहर की पटती न थी।

इसी प्रकारसे अच्छे अच्छे यन्त्र आदि और देशद्रोहियोंको साथ ले मुहम्मद देवल बन्दर पर टूट पड़ा तथा उसे शीघ्र ही ले लिया। तीन दिनों तक लूटमार होती रही। लूटका माल पांच हिस्सोंमें बांटा गया जिसमेंसे एक अंश खलीफाको नज़र किया गया और बाकी सेना दलमें बांट दिया गया इसके बाद उसने सिन्धु नदी पार कर दहरको हराया। राजाने युद्धक्षेत्रमें प्राण तज दिया। तब महारानीने रौर दुर्गसे उसका सामना किया। कई दिनके बाद जब उस किलेको बचाना असम्भव हो गया, तब उस स्थानकी कुल स्त्रियां जलती हुई आगमें कूद पड़ीं। इस प्रकार उन्होंने अपने सतीत्वकी रक्षा की। भारतके इतिहासमें यहीं पर सर्व प्रथम जौहर व्रतका प्रारम्भ हुआ था। इसके बाद उसने ब्राह्मणावाद तथा मुलतान भी ले लिये। इस प्रकारसे थोड़ेही दिनोंमें इस्लामकी विजय पताका समुद्रतटसे काश्मीरके दक्षिण तकके भूभाग पर फहराने लगी (७१५ ई०)।

अरब वालोंकी राष्ट्र नीति— यह बात सत्य है कि पहिले पहल विजयी अरबके लोगोंने विजित जातिके लोगोंसे बड़ा कठोर बर्ताव किया था। परन्तु धीरे धीरे वे उनसे अच्छा बर्ताव करने लगे। जो लोग मुसलमान बन जाते थे, उनको हर प्रकारके सुभीते दिये जाते थे। जो मुसलमान बननेसे इन्कार करते थे, उन्हें जज़िया नामका एक कर देना पड़ता था। इसके अतिरिक्त प्रजाके लिये सब

बातोंका आराम था। छोटे छोटे कुल सरकारी अफसर पूर्व
हिन्दू रह गये। किसी भाईको कोई ज़बरदस्ती सता नहीं सक
था। इनके धर्म विश्वासपर किसी प्रकारका रोक टोक नहीं डा
गया। ब्राह्मण और श्रमणोंकी सामाजिक स्थिति पूर्ववत् ब
रही। उनकी आमदनीमें किसी प्रकारकी घटती नहीं हुई। मु
तानका सूर्य मन्दिर बहुत दिनों तक हिन्दुओंका पवित्र तीर्थ स्
बना रहा।

मुहम्मदकी इस जीतके बाद ही वह मरवा डाला ग
फिर भी सिन्ध और पञ्जाबमें अरब वाले सीधे ११वीं स
तक राज्य करते रहे, जब महमूद गज़नवीने इनपर विजय प्राप्त
(१०२५ ई०)। इसी लिये आजतक सिन्ध और पञ्जाबमें मुस
मानोंकी संख्या अधिक है। इस राज्यकी राजधानी मुल्तान
थी। शीघ्र ही सिन्धका प्रधान बन्दरगाह थट्टा बना। इस्ला
दुनियासे कुल व्यापार इसी बन्दरगाहसे होते रहे और लो
देवलका नाम तक भूल गये। हिन्दुओंसे जान-पहिचान हो
कारण अरब वालोंने उनसे धीरे धीरे बहुत सी विद्याएं सीख
इनमें ज्योतिष, वैद्यक, रसायन विद्या, दर्शन, गणित आदि प्रध
हैं। अरब वालोंने पुनः इन्हीं विद्याओंको नये तरीके पर सजा
यूरोपीयोंके साथ धर्मयुद्ध (The Crusades)के अवसर
यूरोपके निवासियोंको सिखाया।

सारांश

७१२ ई०	मुहम्मद बिन कासिमकी चढ़ाई
७१५ ,,	मुलतान तक जीतता गया
१०२५ ,,	महमूद गज़नीने जीता

(३) तुर्की लोगोंकी चढ़ाइयां ।

तुर्की लोग—तुर्की लोग मध्य एशियाके भीतरी भागके रहने वाले थे। ये जंगली, धर्महीन और बड़े उपद्रवी होते थे। सातवीं सदीके अन्तमें अरबोंने इनको हरा दिया और मुसलमान धर्म माननेके लिये वाध्य किया। तो भी वे धर्मके पक्के कभी नहीं हुये। अरबोंसे इनकी पटती न थी, उनसे और अरबोंसे सदा लड़ाइयां हुआ करती थीं। तुर्क लड़ने भिड़नेमें बहुत बढ़े चढ़े थे, इसलिये अरबी लोग इनको अपनी सेनामें भर्ती कर लेते थे। धीरे धीरे इनका बल बढ़ने लगा और वे अरबोंसे उनके कुल देशों को दबा बैठे। इन जंगलियोंके हाथमें पड़ कर इस्लाम धर्म, जो कि पहिले पहल कुछ शान्त भावका था, डरावना हो गया और बिल्कुल बिगड़ गया। इन लोगोंने अरबवालोंकी ऊंची सभ्यता का बिल्कुल नाश कर दिया।

इन्हीं लोगोंकी एक शाखा दसवीं सदीके अन्तिम भागमें गज़नीको अपनी राजधानी बना कर चारों ओर अपना दबदबा फैला रही थी। सुवुक्तगीन ग़ज़नीका पहिला सुलतान था।

सुवुक्तगीनकी चढ़ाइयां—उसीके समयमें मुसलमानोंने हिन्दुस्तानके पश्चिमोत्तरीय हिस्सेपर कई बार चढ़ाइयां की थीं। इसीसे ओहिन्दके शाही वंशके राजा जयपालने भी काबुलपर चढ़ाई की, पर सुवुक्तगीनने उसे हरा दिया। राजा कई हाथी और बहुतसा धन देनेका वादा करके घर लौट आया। पर यह समझ कर कि विधर्मियोंको कर देना ठीक न होगा, राजाने कर देनेसे इन्कार किया। और दिल्ली, अजमेर, कालिञ्जर तथा कन्नौजके राजाओंसे सहायता मांगी। फिर भी इसकी हार हुई और राजाको कर देना पड़ा। इसी समय सिन्धु नदीके पश्चिम भागके देश भी गजनीके सुलतानके अधिकारमें आ गये, और पेशावर इसकी राजधानी बनी (९९१ ई०)।

महमूदकी चढ़ाइयां—सुबुक्तगीनका बेटा महमूद ९९७
में सुलतान बना। वह एक नामी सेनापति था और लड़ाई
काममें बड़ा चतुर था। उसने अपने बापकी इच्छा पूरी की।
उसमें कट्टरपन तथा धर्मान्धता अत्यन्त अधिक थी।
मूर्त्तिपूजक जातियोंको सताना वह अपना धर्म समझता था।
ऐसी लड़ाईको मुसलमान लोग धार्मिक युद्ध या "ज़ेहाद" कहते
हैं। इसी ज़ेहादके बहाने, किन्तु वास्तवमें लूटमारके अभिप्राय
से उसने हिन्दुस्तानपर सत्रह बार चढ़ाइयां कीं, और सिन्धु और
गङ्गा नदीके बीचके भूभागको बिल्कुल रौंद डाला। प्रति बार
उसने हिन्दू राजाओंको सताया, लूटमार की और उनके मन्दिरों
को तोड़ा। सन् १००१ ई० में महमूदने, हिन्दुस्तान पर पहिली
बार चढ़ाई की। पञ्जाबके राजा जयपालको पेशावरके पास
उसने हराया और उसे उसके परिवार समेत कैद कर लिया।
राजा जयपालकी राजधानी ओहिन्द में लूटमार करके महमूद
लौट गया। फिर बहुतसा धन ले कर उसने राजाको छोड़
दिया। इस प्रकार के बार बार की हारका परिणाम यह हुआ
कि वह अपने बेटे आनन्दपालको राज्य सौंप कर आप जलती हुई
चितामें जल मरा।

महमूदने सन् १००८ ई० में छठवीं बार राजा आनन्दपालकी
शक्ति मिटानेके लिये उसपर चढ़ाई की। राजा भी चुपचाप
बैठा न था। उसके उद्यमसे पश्चिमी हिन्दुस्तानके कुल
राजे इकट्ठे हो उन सबके साधारण शत्रु महमूदकी राह रोकने
के लिये तैयार हो गये। बड़ी भारी सेना जमा हुई। कहा
जाता है कि स्त्रियोंने अपने गहने बेंच कर लड़ाईमें खर्चा भेजा
था।* ऐसी एकता और ऐसी तैयारी देख कर हिम्मती मह-
मूदका छक्का छूट गया। अपने बचावके लिये पेशावरके पास

* Firishta.

उसने छावनी डाली। पर विधाता उसके दाहिने थे और विजयश्री भी उसीपर प्रसन्न थीं।

घमासान युद्ध हो ही रहा था कि आनन्दपालका हाथी चोट खाकर भागा। राजा सहित हाथीको भागते देख कर हिन्दुओंकी सेना भी तितर बितर हो गयी। महमूदने उसका पीछा किया और बहुतोंको मार डाला। इस लड़ाईके जीतनेके बाद उसने नगरकोट (कांगड़ा)पर चढ़ाई कर दी। यहां ज्वालामुखी देवीका प्रसिद्ध मन्दिर है। वहां लूटमार कर बहुतसा सोना चांदी लेकर घर लौटा। १०१४ ई० में उसने थानेश्वरको लूटा। इसी तरह कुल चौदह सालमें उसने सारे पञ्जाब पर अपना दौरदौरा जमा लिया।

नवीं बार महमूद एक भारी सेना लेकर एका एक मथुरा पहुंचा (१०१८ ई०)। वहां बीस दिन तक खूब लूटमार की। बड़े बड़े मन्दिरोंको तोड़ डाला और बहुत धन व माल लूटा। महमूदको मथुराकी इमारतें बहुत पसन्द आयीं। इसीसे लोग कहते हैं कि उसी ढांचे पर उसने गज़नी नगर बनवाया। इसके बाद कनौज पर चढ़ाई की। राजा राज्यपाल लड़नेके लिये बिलकुल तैयार न था। अतः शीघ्रही उसकी हार हुई और शहरमें बड़े ज़ोरोंसे लूटमार होने लगी (१०१९ ई०)। लाचार होकर राज्यपालने महमूदकी अधीनता स्वीकार कर ली। परन्तु उसके व्यवहारसे आसपासके राजपूत राजे बहुत बिगड़े और महमूदके घर लौटनेपर कालिञ्जर, ग्वालियर आदि देशोंके राजाओंने कनौज पर चढ़ाई कर दी और राज्यपालको मार डाला (१०२१ ई०)।

इस रीतिसे जब राजपूतोंने महमूदके एक अधीन राजाको मार डाला तब वह उनसे बदला लेनेके लिये प्रस्तुत हुआ। १०२२ ई० में उसने चन्देल-राज गण्डको हरा कर उससे सन्धि करली, फिर उसने ग्वालियर-नरेशको भी अपने वशमें कर लिया।

महमूद गज़नवी की चढ़ाइयां।
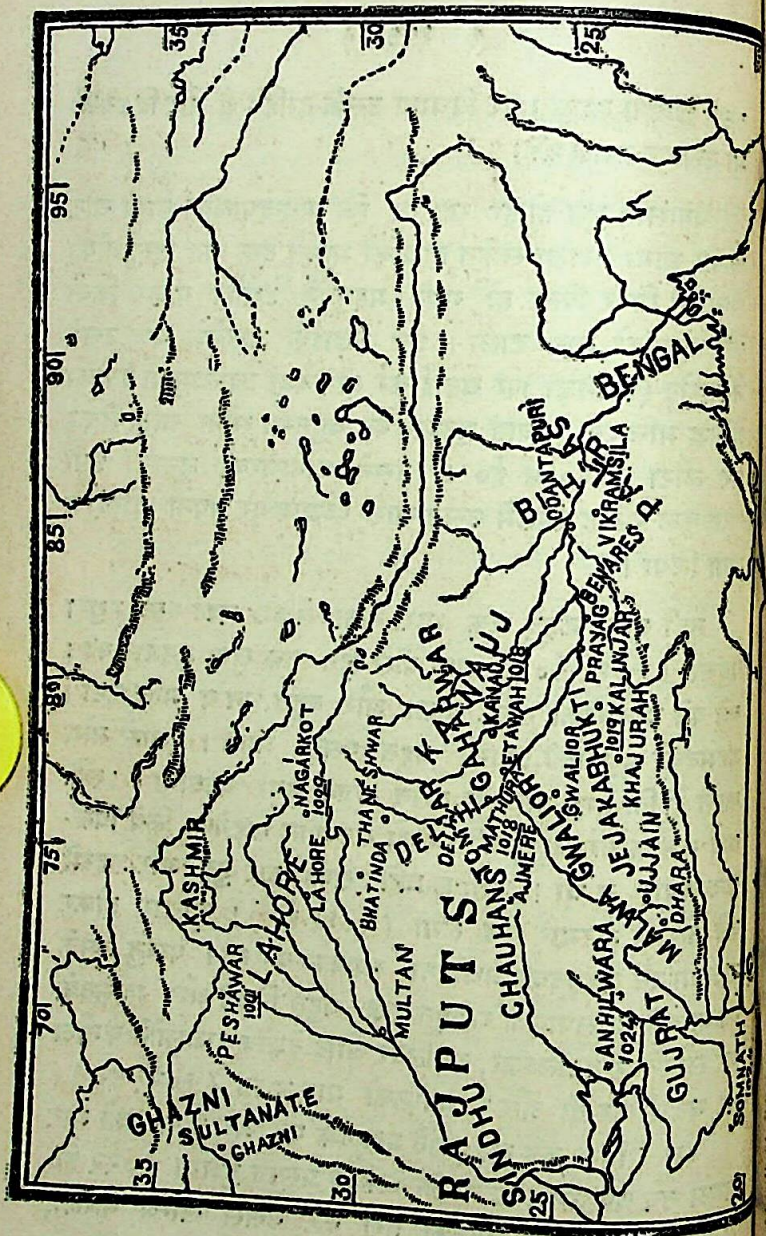
सन् १०२४ ई० में वह सोमनाथजीका प्रसिद्ध मन्दिर लूटने के लिये पुनः हिन्दुस्तानमें आया। यह मन्दिर काठियावाड़ प्रायद्वीपके दक्षिणमें समुद्रके किनारे था और हिन्दुओंका एक पवित्र तीर्थ माना जाता था। लाखों हिन्दू हर साल दूर दूर देशोंसे आकर यहां इकट्ठे होते थे और एक से एक अनमोल वस्तु से पूजा करते थे। इस मन्दिरमें सोनेकी बड़ी बड़ी ईंटें, जवाहिरात आदि मूल्यवान् वस्तुएं इतनी थी कि गिनी नहीं जा सकती थीं।

चलते चलते महमूद अजमेर लूटकर गुजरातकी राजधानी अनहिल-पत्तन (आजकल अहमदाबाद) के सामने आ पहुंचा। राजा लड़ाई करनेके लिये तैयार न था। इस लिये उसे भागना पड़ा। राजधानी लूट कर वह सोमनाथके मन्दिरके सामने पहुंच गया।

यह मन्दिर समुद्रके तटपर गढ़के आकारका बना हुआ था। विधर्मियों की चढ़ाई की बात सुनते ही बहुतसे हिन्दू योद्धा इस पवित्र मन्दिर की रक्षा करनेके लिये आ गये। उस देशका राजा भी अपनी सेनाके साथ वहां उपस्थित था। तीन दिन तक लगातार लड़ाई होती रही। अन्तमें हिन्दू सेनाकी हार हुई और लोग समुद्र की राहसे जहाज पर चढ़कर भागे। इसके बाद मुसलमानों ने लूट पाट करना आरम्भ किया। इस मन्दिरमें धन भी हद्दसे अधिक था। एक लेखक* का यह कहना है कि—

"सोमनाथका मन्दिर ५६ खम्भोंपर खड़ा था। ये खम्भे सागौनके बने हुए थे और इनके ऊपर शीशा मढ़ा हुआ था। मूर्त्ति एक अन्धेरी कोठरीके भीतर बनी हुई थी। इस मूर्तिकी ऊंचाई पांच हाथ और व्यास तीन हाथ था और मिट्टीके भीतर भी दो हाथ गडी थी। यह मूर्त्ति हाथकी बनी हुई न थी। × × × मन्दिरका खास कमरा था तो अन्धेरा परन्तु कीमती मणियोंके होनेसे इसमें दिनके ऐसा उजाला रहता था। मूर्तिके पास

* इब्न-अल-अथीर, कामिल।

२०० मन की एक सोनेकी सांकल थी जिसमें बड़े बड़े सोनेके घंटे लटकते थे। खजाना नजदीक ही था। इसमें अनगिनती सोने और चांदीकी मूर्तियां और बरतन रक्खे थे। इसके चारों तरफ मणियोंसे जड़ा हुआ एक जाल लटकता था। जो कुछ उस मन्दिरमें था उसका मूल्य कमसे कम दो करोड़ अशरफियोंके लगभग था। यह सब महमूद घर ले गया।"

इसके उपरान्त वह और एक बार हिन्दुस्तानमें आया था। १०३० ई० में उसकी मृत्यु हुई। यद्यपि उसने सारे हिन्दुस्तानको बिलकुल रौंद डाला था, फिर भी पंजाब के अतिरिक्त और कोई देश वह अपने क़ब्ज़ेमें न रख सका। उसकी सन्तान गज़नीमें आनन्द पूर्वक राज करने लगी और पञ्जाबपर शासन करनेके लिये उन्होंने एक हाकिम नियुक्त किया।

महमूदका चरित्र—प्राय: सभी इतिहासके लेखकोंने महमूद के चरित्रको बड़ी प्रशंसा की है। गिबन नामक प्रसिद्ध अंग्रेज़ ऐतिहासिकने उसे 'पृथ्वीके बड़े बड़े नामी सम्राटोंमेंसे एक' कह कर वर्णन किया है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि उसके ऐसा वीर योद्धा पृथ्वी में बहुत ही कम हुए हैं। साथ ही साथ वह बड़ा विनयी, ईमानदार, और धार्मिक था। उसके ऐसा विद्याप्रेमी सम्राट संसारमें इने-गिने ही गये हैं। उसके दरबारमें उस समयके बड़े बड़े नामी कवि, ऐतिहासिक तथा लेखक रहते थे। महमूद सभीका सम्मान करता था। इन विद्वानोंमें अल-बेरुनी, दार्शनिक अल-फरीबी, ऐतिहासिक अल-उतबीके, तथा कवियोंमें शाहनामाके लेखक फिर्दौसी, उन्सूरी तथा फरुखीके नाम बहुत प्रसिद्ध हैं। उसकी चाल चलन भी बहुत ही अच्छी थी तथा वह अपनी प्रजासे अत्यन्त प्रेम रखता था। वह बड़ा न्याय-परायण सम्राट था। उसने अपने हाथ से एक प्यारे दोस्तको उसकी बदचलनीके कारण कत्ल कर दिया। उसके विस्तृत साम्राज्यमें बड़ी शान्ति थी। "व्यापारी लोग हंसते खेलते खुरासानसे लाहौर पहुंचते थे।" अपने हाकिमोंके काम काज पर वह कड़ी

दृष्टि रखता था। हिन्दोस्तानसे लूटपाट कर जो धन वह लेगया उसके द्वारा उसने गज़नी नगरको खूब सजाया।

अल-बेरुनी—संस्कृत भाषाके प्रवीण जानकार, प्रसिद्ध ज्योतिषी तथा नामी गणितज्ञ पण्डित अल-बेरुनी महमूदके सभासदोंमें से थे। वह खीवा नगरके बाशिन्दे थे। महमूदने जब उस देशपर विजय प्राप्त की थी तभी वह कैद कर लिये गये। वह सुलतानके साथ कई बार इस देशमें आये और संस्कृत शास्त्रका पूरा पूरा ज्ञान प्राप्त किया। अध्ययन समाप्त कर उन्होंने इस देशको अवस्था वर्णन कर एक भारी पुस्तक लिखी। इस पुस्तकके पढ़नेसे इस देशके निवासियोंकी रीतिनीति, धर्म और समाजके बारे में पूरापूरा ज्ञान होता है। इस पुस्तकके द्वारा इस बातका प्रमाण मिलता है कि उन दिनोंके विजयी लोग भी विजित हिन्दू जातिको ठीक ठीक जाननेके लिये कहां तक तत्पर थे।

चढ़ाइयोंके परिणाम—युद्धका परिणाम कदाचित् ही शुभ होता है। अतः महमूदने बार बार इस देशपर जो चढ़ाईयांकी उसके परिणाम भी देशके लिये कभी शुभ नहीं हुए। लगातार तीस वर्ष तक लड़ाई चलती रही। अतः देश भरमें एक विराट अशान्ति की सृष्टि हुई। बहुत सी धन सम्पत्ति लूट गई और देशके बाहर चली गई। बहुतसे लोग इसलाम धर्मके अनुयायी हो गये। बहुतसे कारीगरों का देश-निकाला हो गया तथा अनेक अच्छी अच्छी इमारतें ध्वंस कर दी गईं। इसके कारण देश निर्धन हो गया। पुनः अपनी जान बचानेके लिये बहुतसे राजपूत राजपुताने आदि देशोंमें चले गये। अतः आर्यावर्त्तमें लड़ने वाली जातियोंकी कमी हो गई। अन्तमें इस बातके कहनेकी आवश्यकता है कि बार बार चढ़ाइयां होनेके कारण उत्तरीय भारतके कुल राज्योंकी बुनियाद ढीली पड़ गई। जिसके कारण गोरीके देश जीतने में बहुत सुगमता हो गया।

सारांश

९९७ ई०	महमूद को गद्दी मिली
१००१ ,,	,, ने जयपाल को हराया
१००८ ,,	,, ,, आनन्दपाल को हराया
१०१९ ,,	,, ,, कनौज ले लिया
१०२४ ,,	,, सोमनाथका मन्दिर लूटा
१०३० ,,	,, की मृत्यु

(४) दिल्ली सलतनतकी कथा—मुसलमानों की विजय।

महमूद गज़नवी धर्मके बहानेसे हिन्दुस्तानमें लूटमार करने हीकी नीयतसे आया था—राज्य जमानेके लिये नहीं। इसके बाद एक और वीर हिन्दुस्तानमें आया जिसका उद्देश्य कुछ और ही था। वह इस देशको जीतकर एक सुदृढ़ मुसलमानी राज्य जमाना चाहता था।

गज़नी और ग़ोरी कुलके लोगोंका आपसमें मेल-मिलाप न था। एक दूसरेसे बड़ा द्वेष रखते थे। अतः गज़नीके सुल-तान बहराम शाहने जब द्वेषके वशमें होकर ग़ोरके एक सर्दारको मार डाला तब बदला लेनेकी इच्छासे ग़ोरी कुलके लोगोंने अला-उद्दीन नामक एक सर्दारके अधीन होकर गज़नी नगर पर चढ़ाई की (११५० ई०) और उस सुन्दर नगरको बिल्कुल जला दिया, सुलतानोंके कब्र अपवित्र कर दिये गये और लोगोंके धन-जीवन सत्यानाश कर दिये गये। ११६० ई० में गज़नी घरानेका सुलतान लाहौरमें आकर बसा। मुईज़-उद्दीन मुहम्मद बिन्-साम बनाम

महम्मद ग़ोरी इसी अलाउद्दीनका भाई था। अपने भाईके मरनेके बाद वह गज़नी और ग़ोरका सुलतान हुआ।

ग़ोरीकी चढ़ाइयां—मुहम्मद ग़ोरी महमूद गज़नवीके ऐसा धर्मान्ध नहीं था, वरन् वह बड़ा पक्का राजनैतिक था। उसने राजनीतिके क्षेत्रमें हिन्दुओंकी असफलताको अच्छीं रीतिसे जान लिया था। अतः इससे वह लाभ उठाना चाहता था। अर्थात् वह इस देश पर विजय प्राप्त कर यहां पर एक मुसलमानी साम्राज्य स्थापित करना चाहता था। दैव भी उसके अनुकूल था। सन् ११८६ ई० तक उसने सारा सिन्धदेश अपने अधिकारमें कर लिया था और मुल्तान, पेशावर आदि जीतते हुए उसने लाहौरके गज़नी सुलतानको भी क़ैदकर लिया था। इसके उपरान्त उसने अजमेर और दिल्लीके राजा पृथ्वीराजसे सरहिन्दका परगना छीन लिया।

तराईंकी लड़ाइयां—राजपूत मानको जानसे बढ़ कर समझते हैं। अतः इस अपमानका बदला लेनेके लिये पृथ्वीराजने उससे अकेले ही लड़ना निश्चय किया। कनौजके जयचन्द्र, चेदिराज तथा चन्देल-राज उससे जलते थे। अतः उन सबोंने उसे कुछ भी सहायता न दी। तथापि पृथ्वीराजने कर्नालके निकट, तराईके मैदानमें ग़ोरीका सामना किया। लड़ाई छिड़ते ही हिन्दुओंने ऐसी वीरता और ढिठाई दिखाई कि मुसलमानोंकी सेना तितर बितर हो गई। जब महम्मद ग़ोरी घायल हो कर गिर पड़ा तब मुसलमान लोग घबड़ा कर भागने लगे। हिन्दुओंने ३० कोस तक उनका पीछा किया और बहुतोंको मार डाला। यह लड़ाई सन् ११९१ ई० में हुई थी।

तीसरे साल ११९३ ई० में ग़ोरीने १२०,००० घुड़सवारोंके साथ फिर उसी जगह पर पृथ्वीराजका सामना किया। लड़ाई छिड़ते ही मुसलमान लोग भागनेके बहानेसे पीछे हटने लगे। हिन्दुओंने बढ़ावेमें आकर उनका पीछा किया। पर एका-

एक मुसलमानोंने हिन्दुओंका सामना करके ज़ोरोंसे धावा किया। उनकी गति रोकी न गई और हिन्दू लोग हार गये। पृथ्वीराज

गोरी की चढ़ाइयां।
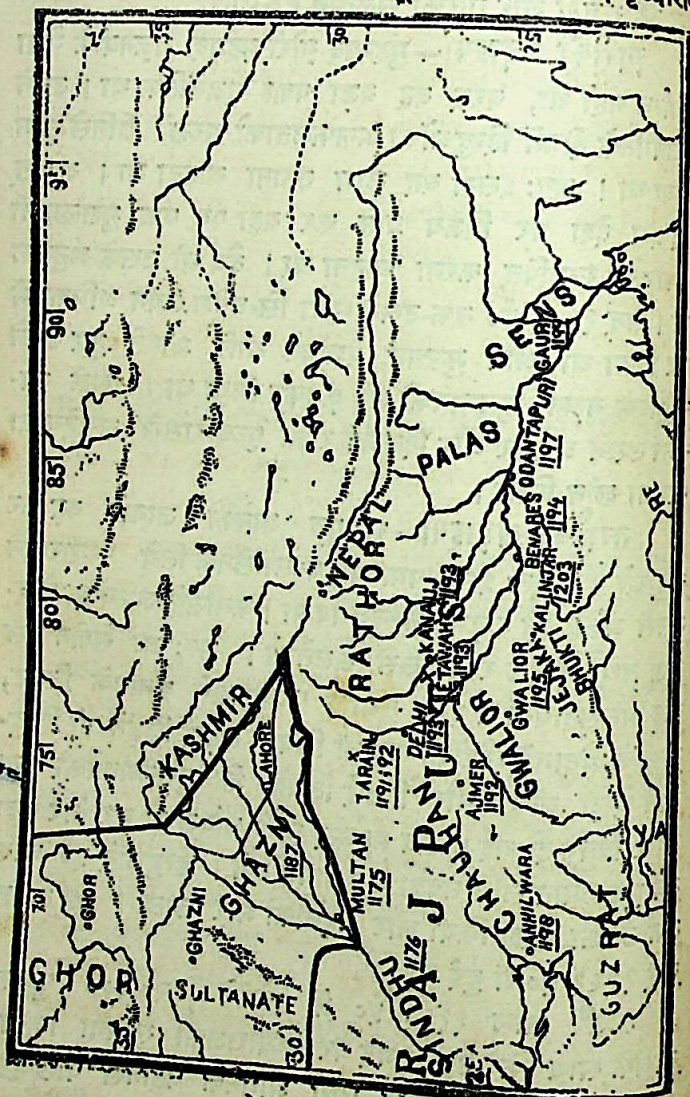
पकड़ लिये गये और अन्तमें मार डाले गये। अजमेर, हांसी (हिसारके निकट), दिल्ली प्रभृति बड़े बड़े शहर नष्ट भ्रष्ट कर दिये गये और देवमन्दिरोंके स्थानपर मसजिदें बनवा दी गईं।

इस रीतिसे चौहान साम्राज्यको बरबाद कर गोरीने जयचन्द्रकी ओर अपनी दृष्टि फेरी। इटावाके निकट, कोयल नामक स्थानमें राजाकी हार हुई (११९४ ई०); अतः वह गंगा नदीमें डूब मरा। इसके बाद सुलतानने कनौज और बनारसमें खूब लूट पाट किये। ११९५ ई०में ग्वालियर लेलिया गया। १२०३ ई० में चन्देल-राज परमर्दिन्‌की हार हुई और उससे कालिञ्जरका गढ़ छीन लिया गया। इस प्रकारसे जब पूर्वमें बनारस तक और दक्षिणमें गुजरात और मध्यभारत तकका भूभाग सुलतानके वशमें हो गया, तब उसने इस विस्तृत देशको कई एक सूबोंमें बांटा और अपने विश्वासी सेनापतियोंको एक एक सूबेका हाकिम बना दिया। ये लोग अपने अधीन कुछ मुसलमानी सेना रख लेते थे और ग़रीब रियायोंको खूब लूटते थे तथा आगे जीतने का प्रयत्न करते थे।

बिहार व बंगालपर विजय—इसी समय महम्मद बिन बख्तियार नामके एक सेनापतिको कनौजके निकट पतेली नामक स्थानकी जागीर मिली थी। उसने वहींसे बिहारपर आक्रमण किया और पाल वंशके अन्तिम राजाको हरा कर उससे बिहारका राज्य छीन लिया (११९९ ई०)। उस समय बिहार राज्य बौद्ध धर्मका केन्द्र था। बहुतसे बौद्ध भिक्षु मारे गये। और उनकी धर्म पुस्तकें नष्ट कर दी गईं। इसीने १२०० ई० में एकाएक बंगाल राज्यपर चढ़ाई की। पाल वंशीय राजाओंके समयसे बहुत दिनोंतक लड़ाई भिड़ाई न होनेसे देश लड़नेके लिये तैयार न था। राजधानी गौड़ और पश्चिमीय बंगाल मुसलमानोंके अधिकारमें रहने पर भी सेन वंशीय राजे पूर्व बङ्गालमें १२० वर्ष तक स्वतन्त्र रहे। महम्मद गोरी पश्चिमोत्तरके कितने [illegible]

लिये गया था। वह वहीं १२०६ ई० में मारा गया। इस प्रकारसे महम्मदगोरी हिन्दुस्तानमें मुसलमान साम्राज्यकी नींव डालकर मर गया।

महम्मद तो मर गया लेकिन उसकी इच्छा पूरी हुए बिना न रही क्योंकि वह अपने पीछे एक ऐसा आदमी छोड़ गया जिसने उसके कामको उठा लिया और उसे पूरा कर दिखाया। यद्यपि महम्मद जीवनभर गज़नीका सुलतान बना रहा पर उसके प्रतिनिधि दासवंशके सुलतान लोग पक्के हिन्दुस्तानी राजा बन बैठे।

सारांश

११७५—८६ ई०	महम्मदगोरीने सिंधसे लाहौर तक जीता
११९१ ई०	तराईकी पहिली लड़ाई
११९२ ,,	,, दूसरी ,,
११९४—१२०३ ई०	गोरीने दिल्ली, कनौज, बनारस, ग्वालियर आदि ले लिये
११९९ ई०	महम्मद-ई- बख्तियारने बिहार जीता
१२०० ,,	,, बंगाल जीता
१२०६ ,,	गोरीकी मृत्यु

(५) दिल्ली सलतनत—दास वंशके सुलतान।
(१२०६-६० ई०)

कुतुब-उद्दीन ऐबक (१२०६-१० ई०)—महम्मद ग़ोरी की मृत्युके उपरान्त उसका तुर्की दास कुतुब-उद्दीन स्वतन्त्र बन गया और दिल्लीमें राज करने लगा (१२०६ ई०)। कुतुब ही हिन्दुस्तानका पहिला हिन्दुस्तानी मुसलमान सुलतान था। वह पहिले ग़ोरीका दास था। उसका दामाद अलतमश और नासिर-उद्दीनका दामाद बलबन भी पहले दास ही थे, इसीलिये इस वंशका नाम दास-वंश पड़ा। इस वंशके सबके सब सुलतान तुर्की थे। पहिले पहल कुतुब एक साधारण दास तो अवश्य था, परन्तु धीरे धीरे उन्नति करते करते उसने सेनापतिके पदको प्राप्त कर लिया। वह अपने मालिकको दहिने हाथके समान सहायता देता था। ११९३ ई० में उसने दिल्ली जीता, पीछे उसने बनारस तक जीता। १२०३ ई० तक उसने कालिंजर, ग्वालियर और गुजरातराज्यमें पत्तन आदि स्थानोंको भी जीता। सुलतान जब हिन्दुस्तानसे घर चले जाते थे तब कुतुब ही यहांका राजकाज संभालता था। सुलतान महम्मद्के सन्तानादि न थी। अतः उसकी मृत्युके बाद उसके तुर्की दास साम्राज्यके एक एक सूबे दबा बैठे। इसी समय कुतुब दिल्ली का स्वतन्त्र सुलतान बन गया। कुतुबने अकेले सारे हिन्दुस्तानको नहीं जीता था। ग़ोरीके और और सेनापतियोंने दूसरे दूसरे देशोंको जीता था। इनमेंसे सिन्धके नासिर-उद्दीन कुबाचा, लाहोरके ताज़-उद्दीन एल्दोज़, बंगाल और बिहारके ख़िलजी और अलतमश प्रख्यात थे। ग़ोरीकी मृत्यु होनेपर वे लोग भी उन देशोंके स्वतन्त्र सुलतान बन गये थे। कुतुबने इन सेनापतियोंके साथ शादी ब्याह करके उनको अपने वशमें कर लिया। इस रीतिसे इस देशके जीतने वाले

मुसलमानोंके बीच एकता स्थापित हो गई और फूट का भी अन्त हो गया तथा दिल्लीकी सलतनत अखण्ड हो गयी।

कुतुब-उद्दीन जैसा वीर था वैसा ही दानी भी था। इसलिये उसका नाम "लकवख्श" पड़ा। वह विद्वान् और धार्मिक भी था। १२१० ई० में घोड़े परसे गिरकर उसकी मृत्यु हुई।

३ लतमश—(१२१०-३६ ई०) कुतुबके मरनके पश्चात् उसका दामाद अलतमश कुतुबके अयोग्य बेटेको हटा कर आप सिंहासनपर बैठा। वह भी पहले कुतुबका दास था और धीरे धीरे उसका प्रधान सहायक और दामाद बन गया। गद्दी मिलने के उपरान्त उसने नासिर-उद्दीन कुबाचाको बिलकुल हरा दिया और एल्दोज़को कैद कर लिया। इस रीतिसे सुलताननने सिन्ध और पञ्जाब पर अपनी प्रभुता स्थापित की।

इन्हीं दिनोंमें जंगीश (चंगेज़) खांने अपने साथ मध्यएशिया में मंगोलिया देशके रहने वाले जंगली मुगलोंको लेकर टिड्डी की तरह सारे एशिया और यूरोपमें हलचल मचा रक्खी थी। अमीर खुसरो नामके एक कविने इन जंगली मुगलोंकी शकल सूरत का बयान इसप्रकार किया है—

"इनकी आंखें इतनी तंग और तेज़ होती हैं कि आसानीके साथ वे एक पीतल के बरतनके उसपार देख सकते हैं। उनके रंगसे उनके बदनकी बदबू और भी भयानक है। मालूम होता है कि उनका कंधा नहीं है और उनकी नाक एक गालसे दूसरे गाल तक फैली हुई है। उनकी मूंछें भारी होती हैं लेकिन दाढ़ी बिलकुल नहीं होती। उनकी छाती पर मन भर मैल जमा हुआ है, जिस पर कि सैकड़ों ढीलें रेंगती है। उनका चमड़ा ऐसा चिमड़ा होता है कि उससे आसानी के साथ जूता बन सकता है। वह बड़ी खुशी के साथ कुत्ते और सुअर का गोश्त खाते हैं।"

यहांपर यह बात कहना आवश्यक है कि इन लोगोंसे मुगल बादशाहोंसे कुछ भी सम्बन्ध न था। वे लोग तुर्की थे।

ख्वारिज़्म (तुर्किस्तान और ईरान) के बादशाह जलाल-उद्दीन
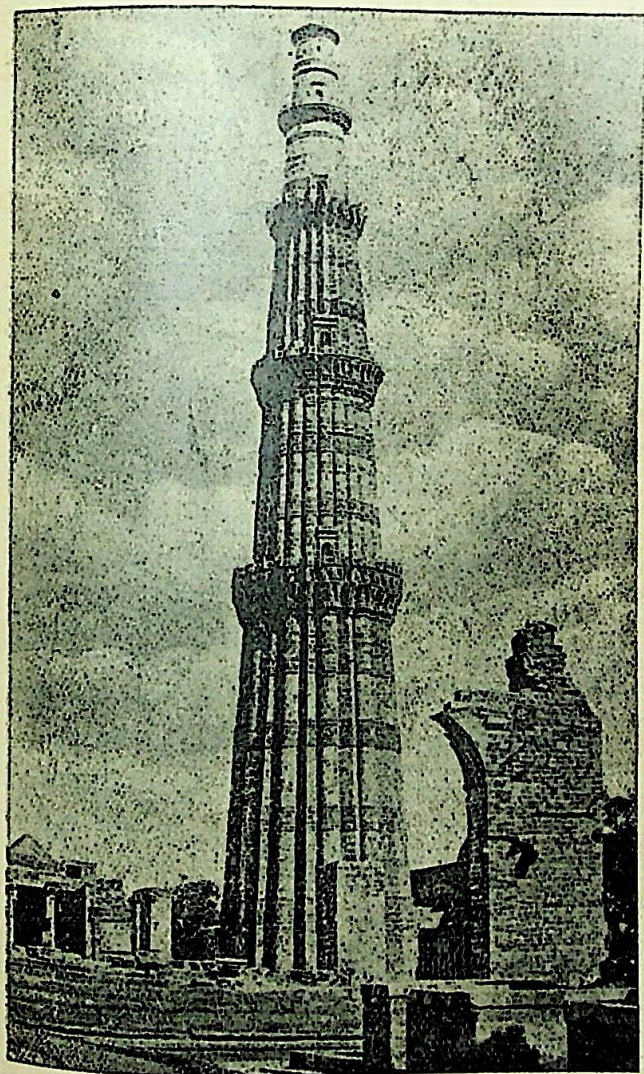
(Chap. 5.)

Qutb Minar, Delhi.

का पीछा करता हुआ चंगेज़ अफ़ग़ानिस्तानसे होकर हिन्दुस्तान की पश्चिमीय सीमा तक पहुंच गया। विवश हो कर बादशाह ने अलतमशसे सहायता मांगी। परन्तु चंगेज़ को असन्तुष्ट करने के भयसे सुलताननें इसको सहायता न की। अतः जलाल-उद्दीन को हराकर सिन्ध नदीके किनारे हीसे चंगेज़ पश्चिमकी ओर चल दिया।

बख्तियारके बेटे गयास-उद्दीनने बंगालका स्वतन्त्र सुलतान बननेका प्रयत्न किया। पर अलतमशने उसको हरा दिया (१२२५ ई०)। इसके उपरान्त उसने राजपुताने पर चढ़ाईकी और रणथम्भोर, माण्डू, और ग्वालियरके किले लेलिये। परन्तु चित्तौर से हार खाकर उसे लौटना पड़ा (१२२६ ई०)। उसने अपने मालिकके नामसे दिल्लीकी नामी कुतुबमीनार बनवायी। इसके कामसे सन्तुष्ट होकर बग़दादके खलीफाने इसे सरापा और उच्च उपाधि भी दी थी। सन् १२३६ ई० में उसकी मृत्यु हुई।

रज़ियाबेगम (१२३६-४० ई०)—इसके पश्चात् उसकी बेटी रज़िया सिंहासन पर बैठी। वह बड़ी होशियार थी और राजकाज भली भांति करती थी। पर उसके महिला होनेसे सरदार लोग उससे प्रसन्न न थे। उसने अपने राज्यकी रक्षाके लिये एक सरदारसे शादी कर ली पर उसके कुल प्रयत्न विफल हुए, विदेशी सरदारोंने १२४० ई० में उसे मारही डाला।

नासिरउद्दीन (१२४६-६६ ई०)—रज़ियाके पीछे उसके दो भाइयोंने सात वर्ष तक राज्य किया। इसी समय मुग़ल हिन्दुस्तानपर बार बार चढ़ाई करने लगे। सन् १२४६ ई० में अलतमशका तीसरा बेटा नासिर-उद्दीन सिंहासनपर बैठा। वह बड़ा विद्वान्, शान्त स्वभावका और सीधा सादा आदमी था। राजका सब काम उसका वज़ीर बलबन करता था। मुग़लोंको बलबनने कई बार भगा दिया। दासवंशीय सुलतानोंमें नासिर-उद्दीन भलमनसाहतके और बलबन चतुराई और होशियारीके लिये

विख्यात हैं। "तबक़ात-इ-नासिरी" नामका इतिहास इसी समय लिखा गया। इसके लेखक मिनहाज़-इ-सिराज़ थे।

बलबन (१२६६-८७ ई०)—सुलतान नासिरुद्दीनकी मृत्युके बाद (१२६६ ई०) उसका दामाद बलबन गद्दीपर बैठा और बड़ी योग्यतासे राज्य करने लगा। मुग़ल जातिने इसको बहुत छेड़ा पर इसने हिम्मत न हारी और उनको बार बार भगाता रहा। मुग़लोंकी चढ़ाईसे पश्चिमी प्रान्तको बचानेके लिये उसने बड़े बड़े उपाय किये। सारे पश्चिमीय प्रान्तका अलग एक सूबा बना दिया और किले आदि बनाकर उसे सुदृढ़ किया। तथा दौरा करनेवाली एक भारी सेना उसकी रखवाली करनेके लिये नियत की। तबसे उत्तर-पश्चिमके कोनेका महत्त्व बहुत बढ़ गया। पहिले मुग़लोंके विरुद्ध और पीछे वहां रहने वाले समुदायों (Frontier Tribes) के विरुद्ध सुलतानोंको और मुग़ल बादशाहोंको सदा लड़ाई भिड़ाईमें लगे रहना पड़ता था। राजकुमारोंको यहींपर पहिले पहल युद्ध-विद्या सिखाई जाती थी। (अंग्रेज़ी सरकारी सीमान्त नीतिसे मिलान करो)। उन दिनों जब मध्य तथा पश्चिमीय एशियामें मुग़लोंने बड़ी अशान्ति फैला दी थी तब शान्तिके लिये बहुतसे अच्छे अच्छे मुसलमान अमीर, कवि और फकीर इस देशमें आ बसे। बलबनने ऐसे लोगोंसे दयाका वर्त्ताव किया और अपने दरबारमें रख लिया। इससे उसके दरबारकी शान बहुत बढ़ गई और साथ ही साथ इस्लामी दुनियेंमें हिन्दुस्तानका महत्त्व भी बढ़ गया। बलबन विद्वानोंको बहुत चाहता था। उसके मरनेपर (१२८७ ई०) उसका अयोग्य पौत्र क़ैकुबाद सिंहासनपर बैठा। थोड़ेही दिनोंके बाद क़ैकुबाद मार डाला गया और जलाल-उद्दीन खिलजी नामक एक सेनापति सुलतान बन गया (१२९० ई०)।

सारांश

१२०६-१२९० ई०	दासवंशके सुलतान
१२०६-१० „	कुतुब-उद्दीन
१२१०-३६ „	अल्तमश
१२३६-४० „	रज़िया
१२४६-६६ „	नासिर-उद्दीन
१२६६-८७ „	बलबन
१२८७-९० „	कैकुबाद

(६) खिलजी वंश (१२९०-१३२० ई०)।

जलाल-उद्दीन (१२९०-९५ ई०)—दासवंशके समान खिलजी वंशके सुलतान भी तुर्की थे, पर वे अफ़गानिस्तानके रहनेवाले थे। दासवंशके अन्तिम सुलतानको अयोग्य जान कर सेनापति जलाल-उद्दीनने उसको गद्दीसे उतार दिया और सत्तर वर्षकी अवस्थामें आप सुलतान बन बैठा। बुढ़ापेके साथ उसका मिजाज़ भी नरम हो गया था। अब वह किसीको जानसे नहीं मारना चाहता था, दण्ड देनेकी जगह दया दिखाया करता था। विद्रोहियोंको प्रायः क्षमा कर देता था और सन्ध्याके समय मौलवी लोगोंके साथ धार्मिक विषयोंकी चर्चामें बिताता था। इसी समय मुग़लोंने पुनः पञ्जाब पर चढ़ाई की। परन्तु हार खाकर उन्होंने सन्धि कर ली। इसके उपरान्त बहुतसे मुग़ल दिल्लीके आसपास बस गये। इस स्थानका नाम पीछेसे मुग़लपुरा पड़ा।

अला-उद्दीन (१२९५-१३१६ ई०)—मुसलमानोंके भारतवर्षमें आये तीन सौ वर्ष हो गये थे। उत्तरीय भारतमें उनका

रोब दाब भली भांतिसे जम गया था। अतः स्वभावतः उनकी दृष्टि अब दक्षिणकी ओर पड़ी। आर्यों ने भी ऐसाही किया था। सन् १२९४ ई० में सुलतान के भतीजा और दामाद अला-उद्दीनने विन्ध्याचल पर्वत पार करके एकाएक देवगिरिके यादव वंशके राजा रामचन्द्र देवको हरा दिया और उसने बहुत धन व सम्पत्ति देकर उसे विदा किया। दक्षिणमें इलिचपुर का परगना तभीसे दिल्ली साम्राज्यमें मिला लिया गया। बूढ़ा जलाल-उद्दीन विजयी भतीजेसे जब मिलने आया तब अला-उद्दीनने उसको मार डाला और स्वयं सुलतान बन बैठा (१२९५ ई०)। अब सुलतान दक्षिण से जो कुछ धन सम्पति लाया था उसके द्वारा उसने जलाली अमीर, सेना तथा दिल्लीके निवासियोंको अपने वशमें कर लिया। पुनः इनकी सहायतासे जलाल उद्दीनके बेटे कैद कर लिये गये और मार डाले गये।

गुजरात और मालवाकी विजय—इसी प्रकारसे राजधानीपर अपनी प्रभुता भलीभांति जमाकर उसने गुजरातपर चढ़ाई की। राजा कर्ण (२) बघेला भाग कर देवगिरिमें जा बसा। उसकी रानी कमला देवी पकड़ ली गई और सुलतानने उससे व्याह कर लिया। मुसलमानोंने अच्छे अच्छे मन्दिरोंको तोड़ दिये और सोमनाथके मन्दिरपर फिरसे चढ़ाई की। साथ ही साथ मालवा भी जीत लिया गया और परमार वंशके अन्तिम राजा भोज (२) को इसलाम धर्म ग्रहण करनेके लिये वाध्य किया गया (१२९७ ई०)। इसके बाद उसने राजपुतानेकी ओर अपनी दृष्टि फेरी। १३०१ ई० में राना हमीरदेवकी हार हुई और इस रीतिसे रन्थम्भोर गढ़ सुलतानके हाथ में आ गया।

चित्तौरपर हमला-महारानी पद्मिनी—सुननेमें आता है कि चित्तौरकी महारानी पद्मिनीके सौन्दर्य की प्रशंसा सुनकर उससे व्याह करनेके उद्देश्यसे अला-उद्दीनने चित्तौर पर चढ़ाई की (१३०३ ई०)। पहिली वार चढ़ाई करनेका फल यह

हुआ कि वह भगा दिया गया और गढ़ न ले सका। इससे उसने संदेशा भेजा कि ऐनकमें रानीकी छाया भर देखकर वह घर लौटेगा। चित्तौर-राज भीमसिंहने उसका कहना माना, पर छाया देखकर सुलतान पागल सा होगया। भीमसिंह जब उससे मिलने के लिये खेमेमें आया तो वह कैद कर लिया गया और सुलतानने कहा कि जबतक रानी न मिलेगी तबतक हम राजाको न छोड़ेंगे। "सहेलियोंके साथ महारानी आरहीं हैं" यह खबर उड़ाकर कई सौ राजपूत सिपाही पालकियोंमें सवार होकर सुलतानके खेमेमें आ पहुंचे। पहुंचते ही "हर हर शंकर" शब्दके साथ पालकीमेंसे सिपाही कूद पड़े और उन्होंने भीमसिंहको छुड़ा लिया। अला-उद्दीनने फिर किलेपर चढ़ाई की और उसे ले लिया। बहुतसे राजपूत वीरोंके मरने पर महारानी पद्मिनी और और राजपूत महिलाओंके साथ आगमें जल मरीं। थोड़ेही दिनोंके पश्चात् राजपूत वीर हमीरने चित्तौरको मुसलमानोंसे फिर छीन लिया।

उसके उपरान्त सुलतानने उत्तरीय भारतके अन्यान्य सूबों को-जैसे बंगाल, सिन्ध, पञ्जाब आदि अपने वशमें कर लिये।

दाक्षिणात्य पर विजय—गुजरात जीतते समय सुलतानके एक सेनापतिने काफूर नामके एक दासको खरीद कर सुलतान को नज़र दिया था। काफूर लड़ाई-भिड़ाईके काममें बड़ा होशियार था। अतः शीघ्रही वह सुलतान का बड़ा प्रिय सहायक बन गया। और अब प्रधान सेनापति बनाया गया। १३०६ ई० में वह एक बड़ी भारी सेना लेकर दक्षिण जीतने चला। समुद्रगुप्तके बाद अला-उद्दीनके अतिरिक्त किसी उत्तरी सेनाने दक्षिण जीतने की चेष्टा नहीं की थी। गुजरातके कर्ण (२) बघेलको आश्रय देने के कारण काफूरने देवगिरिके राजा रामदेवको हरा दिया और उसे कैद करके दिल्ली ले आया। राजाके कर देना स्वीकार करने पर वह छोड़ दिया गया। तीन वर्ष पीछे काफूरने फिर दक्षिणपर चढ़ाई करके यादव, होयसल, चोल आदि देशोंको

जीते। वह इस बार रामेश्वरम् तक पहुंच गया था। सुननेमें आता है कि घर लौटनेके समय वह एक हज़ार ऊंटोंके पीठ पर लाद कर लूट का धन व माल अपने साथ ले आया। इस धनसे सुलतान उत्तरीय भारतमें एक भारी सेना रख कर अपना रोब दाब बनाये रहा। ऐसे ही अला-उद्दीनने भारतवर्षके आर पार मुसलमानों की धाक भली भांति जमा दी।

शासन-प्रबन्ध—इन्हीं दिनोंमें तुर्की, पठान, मुग़ल आदि तरह तरहकी लड़ाकू जातियोंके लोग हिन्दुस्तानमें आकर बसने लगे। सुलतान उनको अपनी सेनामें भर्ती कर लेता था। फिरभी इन सब दुष्ट लोगोंको दबाना सहल काम न था। अतः सुलतान इन पर अत्यन्त कड़ी दृष्टि रखता था। चढ़ाई करनेवाले मुग़ल लोग बार बार हार जानेपर मुसलमान बनकर इसी देश में रहने लगे थे। दिल्लीके रहने वाले २५००० मुगलोंको षड़यन्त्र रचने के कारण सुलतानने जानसे मरवा डाला। पुनः बलबनकी नीतिके अनुयायी हो कर सुलतानने राज्यकी पश्चिमी सरहद्द का एक अलग सूबा बना दिया और इसे ग़यास-उद्दीन तुगलकके अधीन कर दिया। पुराने किलोंकी मरम्मत करवायी तथा नये भी बनवाये गये। सीमान्त प्रदेशमें एक भारी सेना रख दी गई। इसी प्रकारसे सुलतानने मुगलोंकी चढ़ाइयोंसे देशकी रक्षा की।

अला-उद्दीनका शासन कठिन होनेके कारण चारों तरफके लोग विद्रोही बन गये। सुलतानको विश्वास होगया कि दोआबके हिन्दू और उसके अमीर लोग इस उपद्रवके कारण हैं। अतः उनको दबानेके लिये उसने तरह तरहके उपाय ठहराये—

"जमींदारों और किसानोंसे सब ज़मीनें छीन ली गईं। मसजिद मकबरोंकी भी यही अवस्था हुई। इसका फल यह हुआ कि लोग आराम चैन छोड़ कर पेट पालनेके लिये काम काज करने लगे और बलवा करना भूल गये। औदिये अमीर लोगोंकी चाल चलन पर निगाह रखने लगे जहां कहीं कुछ होता था

सुलतानको खबर लग जाती थी। वह उसीके अनुसार काम करता था। दिल्लीमें शराबकी दुकानें सब बन्द करवा दी गईं। हिन्दू अपने घरमें खाने पीने भरकी चीज़ रख सकते थे, सोना चांदी या गाय भैंस नहीं रख सकते थे। सुलतानके हुक्मसे आटा, चावल, आदि सामानोंको कीमत घटा दी गयी थी। अला-उद्दीन अपने मनसे काम करता था पर दूसरोंको किसी पर अत्याचार नहीं करने देता था। इसका फल यह हुआ कि बहुत सी नई इमारतें बनी और देश भरा पूरा मालूम पड़ने लगा।*

उसीने पहिले पहल अमीरोंकी रक्खी हुई फौजकी ठीक ठीक देख भाल करनेकी और घुड़सवारोंके घोड़ों पर "दाग़" देने की रीति जारी की। अला-उद्दीन राजकाजकी बहुतसी बातोंमें शेरशाह और अकबरका पथ-प्रदर्शक था। उसीने पहिले पहल धर्मको राष्ट्र-नीतिसे बिलकुल अलग कर दिया और उसे दूसरा स्थान दे दिया। अशोककी तरह उसने भी अपनी रियायाके बीच एक आम धर्म स्थापित करने की बात सोची थी। यदि सच पूछो तो दिल्ली के सुलतानोंमें अला-उद्दीन का स्थान अतीव उच्च है।

खिलजी वंशका अन्त—सन् १३१६ ई० में सुलतान अला-उद्दीनके मरनेके बाद दिल्लीमें सब प्रकारका कुप्रबन्ध फैल गया। दुष्ट काफूरकी हत्या करके अला-उद्दीनका एक बेटा जिसका नाम कुतुब-उद्दीन मुबारक शाह था गद्दीपर बैठा (१३१६-२० ई०)। इसने देवगिरिके राजा हरपालको हरा दिया और उस की खाल खिंचवाई। इसी समयमें महाराष्ट्र का एक हिस्सा दिल्ली साम्राज्यमें सदाके लिये मिला लिया गया (१३१८ ई०)। कुतुब-उद्दीन बड़ा निकम्मा था। अतः उसको मारकर खुसरू नामका एक नीच वंश का आदमी सुलतान बन बैठा। पर थोड़ेही दिनोंके बाद पञ्जाबके हाकिम ग़यास-उद्दीन तुगलकने खुसरोको को हरा दिया और तुगलक वंशकी नींव डाली (१३२१ ई०)

* बरनी—तवारीख-ई-फ़ीरोज़शाही।

सारांश

१२९० —१३२० ई०	खिलजी वंशके सुलतान
१२९०—९५ ,,	जलाल-उद्दीन
१२९४ ई०	अला-उद्दीनने देवगिरिके राजाको हराया
१२९५—१३१६ ई०	अला-उद्दीन
१३०६ ई०	मलिक काफूरने देवगिरिके राजाको हराया
१३१० ई०	,, ,, होयसला, चोला आदि राज्यों को जीता।
१३१६-२० ई०	कुतुब-उद्दीन मुबारक शाह

(७) तुगलक वंश (१३२१—१४१४ ई०)।

गयास-उद्दीन (१३२१-२५ ई०)—दास और खिलजी सुलतानोंके ऐसा तुगलक वंशकी नींव डालने वाला ग़यास-उद्दीन भी तुर्क था। उसकी मां जाठ थी। वह पहिले बंगालका हाकिम था। वहां उसका प्रबन्ध अच्छा था इस लिये वह पञ्जाबका हाकिम बनाया गया। वहीं पर उसने कई बार मुगलोंको बेतरह हराया। उसके राज्यकालमें शाहज़ादा जूना खां (महम्मद तुगलक)ने वारंगल राज्यको जीता। सुलतानने स्वयं बिहारके उत्तरीय अंशको अपने राज्यमें मिला लिया। चार बरस राज करनेके बाद वह मारा गया (१३२५ ई०)।

महम्मद तुगलक (१३२५-५० ई०) उसका चारित्र—ग़यासके मरनेके बाद उसका बेटा महम्मद तुगलक सुलतान बना। उसकी चालचलन अद्भुत थी। एक लेखक * इसके बारेमें वर्णन करते हुए लिखता है—

* इब्न-बतूता सफ़रनामा।

"महम्मद दो काम करना पसन्द करता है। एक दान देना, दूसरा हत्या करना। उसके फाटकके सामनेसे जाते समय देखोगे कि या तो कोई गरीब अमीर बन रहा है, या किसी अभागेका धड़ तड़प रहा है। लोगोंको वहुत सी ऐसी बातें मालूम हैं जिससे यह जान पड़ता है कि वह कैसा दानी और बहादुर है तथा कैसा निर्दयी, और रूखे स्वभावका है। साथही साथ वह बड़ा विनयी और धर्मका बड़ा पक्का है। पर उसकी विशेषता दान देनेमें है। दूर दूरसे लोग उसके पास भीख मांगनेके लिये आते हैं और सन्तुष्ट होकर घर लौटते हैं। जो मुसलमान प्रार्थना नहीं करते, वह उनको कठिन दण्ड देता है। सुलतान न्यायका अवतार है। प्रतिदिन वह स्वयं विचार करता है और अत्याचारियोंको दण्ड देता है। सब कोई सुलतानके पास अपना दावा पेश कर सकते हैं। एक बार भारी अकाल पड़नेपर सुलतानने अपने खज़ानेसे दिल्लीके रहने वाले हर एक आदमीको छः छः महीनेके लिये खानेको अनाज बांटा था। सुलतानकी मांको लोग "मालिकिन दुनिया" कहते हैं। उसने राहगीरोंके ठहरनेके लिये वहुत सी सरायें बनवा दी हैं। वह दोनों आखोंसे अन्धी है। सुलतान उसको बहुत मानता है और प्रतिदिन अपनी मांका पैर चूमता है।

"ऐसे गुणोंके निधान होनेपर भी सुलतान महम्मदके ऐसा कठिन हृदयका आदमी कोई नहीं है। उसके महलके फाटकपर प्रतिदिन मुर्दों की ढेर लगी हुई देखी जाती है। एक दिन मैं घोड़ेपर सवार होकर उसी तरफ आ निकला। मेरा घोड़ा कोई पीली वस्तु देख कर भड़क गया। उसको शान्त करनेके लिये मैं उतर पड़ा। जब उस पीली वस्तुपर दृष्टि पड़ी तब क्या देखता हूं कि एक आदमी को तीन टुकड़ोंमें काट कर कोई फेंक गया है। सुलतान छोटे छोटे अपराधोंके लिये भी बड़ा कठिन दण्ड देता है। प्रतिदिन सैकड़ों आदमियोंको देखोगे कि सिपाही लोग रस्सीसे उनके हाथ पैर और गर्दनको बांध कर कचहरीकी तरफ ले जा रहे हैं।"

पुनः दूसरे एक लेखक*का कथन यह है कि—

"सुलतानके ऐसा कातिब शायदही दूसरा कोई निकले। वह सुलेखक था

* बरनी—तारीख-इ-फीरोज़ शाही।

तथा उसकी रचनाका ढंग भी बड़ा स्वाभाविक और गम्भीर भावका था। उसकी कल्पना शक्ति तो उच्चकोटिकी थी ही। बड़े बड़े मौलवी और आलिम फाज़िल ताकते ही रह जाते थे × × × × उसने बहुतसी सुन्दर सुन्दर फारसी कविताएँ रट रक्खी थीं तथा बिना रोक टोक के सदा दोहराया करता था। वह इतिहास से भी भली भांति परिचित था। तथा इतिहासके अच्छे अच्छे ग्रन्थोंको खूब पढ़ता था। तर्कशास्त्र उसे इतनी अच्छी रीतिसे आता था कि वह बडे बडे विरोधियोंको—चाहे वह कातिब हो, चाहे वैज्ञानिक, वा कवि, वा वैद्य, वा रसिक हो सभीको नीचा दिखा सकता था। × × × अधिक पठन पाठन से उसका चित्त बड़ा उदासीन तथा कठिन हो गया था। साथ साथ कुरानकी पवित्र वाणी उसके हृदय पर कुछ भी प्रभाव नहीं डाल सकी। वह बड़े उत्साहके साथ धर्मके पक्के मुसलमानोंको दण्ड देता तथा उनकी हत्या करवाता था। बड़े बड़े मौलवी, सैयद, सूफी, कलन्दर और सिपाहियोंको वह बड़ी खुशी के साथ कठिन दण्ड दिया करता था। × × ×

यदि दोही चार बातोंमें उसकी चाल चलन बयान करनी हो तो यही कहना बहुत होगा कि वह भारी विद्वान, बड़ा न्यायी, निर्दय, झक्की और साथ ही साथ निष्पक्ष विचारक था, तथा धर्मके बारेमें कट्टर नहीं था। कोई कोई इसे अभागा आदर्शवादी कहकर वर्णन करते हैं।

विचित्र प्रयोग—गद्दी मिलनेके उपरान्त सुलतानने एकाएक दोआबके बाशिन्दोंपर फी सदी दस रुपया कर बढ़ा दिया और साथही साथ बहुतसे नये नये आबवाब भी लगा दिये। उस समय उस प्रदेशमें भारी अकाल पड़ा था। तिसपर भी सरकारी अफसर लोग ठीक ठीक कर वसूल करते गये। इससे चारों ओर अशान्तिकी आग भड़क उठी और लोग घर द्वार छोड़कर जंगलों में भाग गये। इसका असर दिल्लीपर भी पड़ा और वहांके लोग अन्न बिना मरने लगे। कई साल तक ऐसी अवस्था जारी रही। अन्तमें सुलतानने तकाबी पेशगी दी और कुंआ आदि भी खुदवा दिये।

सुलतानने अपने राज्यको सारी दुनियामें फैलानेके लिये तीन चार बातें मनमें ठान ली थीं । इसका फल यह हुआ कि प्रजा उससे बहुत बिगड़ गयी और रियासत चौपट होने लगी।

राजधानीका परिवर्त्तन—इन दिनों में दिल्ली सलतनतका फैलाव अत्यन्त बढ़ गया था। पञ्जाबसे माबर* और तैलंग, तथा गुजरात से चटगांवके सारे भूभागमें दिल्लीके सुलतानका रोबदाब अच्छी रीतिसे जम गया था। अतः राजधानी रियासतके बीचों-बीच स्थापित करनेके विचारसे तथा मुगलोंके हमलेसे सदा दूर रहनेकी इच्छासे उसने दौलताबाद (प्राचीन देवगिरि) का स्थान निश्चय किया । यहांपर यह बात कह देना आवश्यक है कि साम्राज्यके फैलावके हिसाबसे और भूगोलके विचारसे राज-धानी को दक्षिणमें ले जानेका सिद्धान्त बहुत ही ठीक था। क्योंकि उन दिनों जब कि रेल व तार नहीं थे तब दक्षिण से उत्तरी हिन्दुस्तानकी देख रेख करना सम्भव होने पर भी दक्षिण पर शासन करना बिलकुल असम्भव सा था । पर महम्मदने यह भूल की कि वह दिल्लीके कुल निवासियोंको दौलताबाद जानेके लिये बाध्य किया। राहियोंके आरामके लिये एक अच्छी, नई सड़क बनवाई गई, तथा उनके टिकनेके लिये बहुतसे सराय बनवा दिये गये। दिल्ली नगर स्मशान सा हो गया और वहां कुत्ते बिल्ली भी नहीं दिखाई पड़ते थे। लोग बहुत खर्च करके और दुःख सहके जब वहां पहुंचे तब सुलतानने अपनी भूलको भलीभांति समझ लिया और उनको दिल्ली लौटनेकी आज्ञा दी। (१३२७ ई०)

नये नये उपाय—सुलतानने राज्यकालके प्रथम अंशमें दान देते और मुगलोंको घूस देते देते कुल खजाना खाली कर दिया था। अतः पश्चात् जब रुपये की कमी हुई, तब खाली

* कुलमसे नेलोर तकका भू-भाग —Marco Polo.

खज़ाना भरनेके लिये उसने बड़े बड़े उपाय ठहराये। परन्तु उसने किसी बातमें सफलता प्राप्त नहीं की। पहले खुरासन और इराक़ देश जीतनेकी आशासे एक बड़ी सेना इकट्ठी की गयी। थोड़े ही दिनोंके बाद जब उनको तनख़ाह न मिली तब उन्होंने चारों ओर लूट मार करना आरम्भ कर दिया। पुनः धन व माल लानेके लिये एक भारी सेना करा-जलकी पहाड़ी देशपर, जो हिन्दुस्तान और चीन राज्यके बीचमें है और जो खुरासानके रास्तेपर है, चढ़ाई करनेके लिये भेजी गयी। वहां जाते जाते सर्दीके कारण और पहाड़ियोंके धावेसे तंग आकर सारी सेना हिमालयपर भूखों मर गयी।

फिर रुपयेकी कमी पूरी करनेके लिये सुलतानने नये उपाय निकाले। उसने तांबेके सिक्केको चांदीके सिक्केके बराबर दामपर चलाना चाहा। यह उपाय भी पुराना ही था। ई० पू० दूसरी सदीके अन्तिम भागमें कुबला खां ने चीनमें काग़ज़के बने हुये नोट चलाये थे। तथा तेरहवीं सदीमें ईरानके बादशाह कैखातूने भी नोट चलाने का प्रयत्न किया था। परन्तु सुलतानने भूल इतनी की कि वह दूसरोंको जालसाज़ी करनेसे रोकनेका कोई भी प्रबन्ध नहीं कर सका। अतः सिक्कोंका खूब ज़ाल होने लगा। दिल्लीमें लोगोंने घर घर टकसाल खोल दिया और परदेशी व्यापारियोंने यह सिक्का लेनेसे अस्वीकार किया। इसका फल यह हुआ कि राज-करके रूपमें प्रजा अपने बनाये हुए तांबेके सिक्के देने लगी और ये सरकारी खजानेमें आकर जमा होने लगे। जब सुलतानने अपने भूलको समझ लिया तब तुरन्त उसने तांबेके सिक्के निकालनेकी रीति बन्द करवा दी और उनके बदले चांदीके रुपये दे दिये। वह लोगोंको धोखा नहीं देना चाहता था।

ऐसी स्वेच्छाचारिताके कारण चारों ओरकी प्रजा बिगड़ गयी जिससे असन्तुष्ट होकर सुलतान उनको दबानेके लिये

कठिनसे कठिन दण्ड देने लगा। दूर दूरके हाकिम स्वतंत्र हो गये और नये नये स्वतंत्र राज्य स्थापित होने लगे। १३३४ ई० में मावर और १३३७ ई० में बंगाल स्वाधीन हो गये। १३३६ ई० में विजयनगरका हिन्दू-राज्यकी और १३४७ ई०में बहमनी राज्यको नींव पड़ी। देवगिरि, सिन्ध, मुलतान, कड़ा, अवध, गुजरात आदि देशोंके हाकिम लोग विद्रोही होगये। सुलतान विद्रोहियों को दबाने के लिये इधर उधर दौड़ने लगा पर कुछ कर नहीं सका। अन्तमें विवश होकर महम्मद सिंध देशमें मर गया (१३५१ ई०)।

शासन पद्धति—सुलतानने सारे साम्राज्यको कई सूबोंमें बांट दिये थे। हाकिमोंकी एक सूबेसे दूसरेमें बदली भी होती थी। प्रत्येक सूबेमें कई एक परगने होते थे। ज़मीदार और सरकारी अफ़सर दोनोंही अलग अलग अपना राज कर वसूल करते थे। हिन्दू राजे अलग कर देते तथा अलग रूपसे भेंट पहुंचाते थे। सरकारी कारखानेमें लड़ाईके सामानके अतिरिक्त अच्छे अच्छे कपड़े आदि भी बनते थे। सुलतान विदेशियोंका बड़ा आदर करता था, तथा उनको बड़े बड़े ओहदे देता था। उसके राज्यकालमें मौलवियोंकी चलती नहीं थी। अतः साधारणतया वे उसके विरोधी थे। फिर भी सुलतान मन मौजी होनेके कारण राजनीतिके क्षेत्रमें सफलता प्राप्त नहीं कर सका।

इब्न बतूता—यह नामी पर्यटक अफ्रिकाके टानज़ीर प्रदेश का रहने वाला था। सारे एशिया की सैर करते हुए वह इन्हीं दिनोंमें हिन्दुस्तानमें पहुंचा था। वह जब दिल्ली पहुंचा तब सुलतान वहां उपस्थित नहीं था। अतः उसकी माताने उसकी बड़ी खातिरदारी की। सुलतानने घर लौटनेपर उसे राजधानीका काज़ी बना दिया। वह आठ साल तक वहीं काम करता रहा। इसके बाद सुलतानने उसे अपना एलची बना कर चीन रवाना कर दिया। घर लौट कर उसने जो कुछ यहां देखा सुना था, उसे एक पुस्तकमें लिखा। उसने उन दिनोंके डाकके प्रबन्धकी

प्रशंसा की है। दिल्ली नगरकी शान शौकत तथा उसकी बनावट की भी उसने प्रशंसा की है। परन्तु उस समय वह नगर उजाड़ सा मालूम होता था। सुलतानको उसने दानी और मौजी कहकर वर्णन किया है। अपराधी हाथियोंके द्वारा कुचल दिये जाते थे। देशाटन करना बहुत कठिन था।

फीरोज़ शाह (१३५१-८८ ई०)—महम्मदके लड़केवाले न थे, इससे इसका चचेरा भाई फीरोज़शाह सिंहासनपर बैठाया गया। नया सुलतान बड़ा उच्च हृदयका था और प्रजापालक था, परन्तु साथही साथ भीरु और धर्मका बड़ा कट्टर था। वह लड़ने भिड़नेके कामसे सदा मुंह मोड़ता था। उसने दोबार बंगाले पर चढ़ाई की, फिर भी उस देशको वशमें नहीं करसका। सिन्धको नाम मात्र जीता। दक्षिणके प्रदेशोंको जीतनेकी उसने चेष्टा तक नहीं की।

उसका शासन-प्रबन्ध—तिसपर भी साम्राज्यका जो कुछ हिस्सा बचा खुचा था उसका उसने अच्छा ही प्रबन्ध किया। उसने बहुतसे आबवाब आदि करोंको उठा दिये और बड़ी नर्मी के साथ प्रजासे बर्ताव करने लगा। प्रजाकी भलाईके लिये उसने सराय, मकबरे, मदर्से, अस्पताल आदि बनवाये। किसानोंके सुभीतेके लिये उसने सतलज और यमुनासे नहरें कटवायीं। अंग्रेज़ी सरकारने इनकी मरम्मत करवाई है। और और मुसलमान बादशाहोंकी तरह फीरोजशाहने बहुत इमारतें बनवाईं। उसने फतहाबाद, जौनपूर, हिसार, फीरोज़ाबाद आदि शहर बसाये। एक लेखक* का कहना है—

"फीरोज़के समयमें सब लोग आराम और चैनसे दिन काटते थे। दरबारकी शान भी खूब थी। खाने पीनेके सामानकी कमी न थी। कोई घटना नहीं हुई। कोई गांव उजाड़ न रहा, न कोई खेत वीरान पड़ा रहा।"

* शम्स-इ-सिराज़ अफ़ीफ़—तवारीख़-इ-फीरोज़ शाही।

उसकी धर्मान्धता—सुलतान अपने धर्मका बड़ा ही कट्टर था। अतः हिन्दू तथा दूसरे सम्प्रदाय वाले मुसलमानों पर अत्याचार करना अपना धर्म समझता था। संक्षेपमें, सुन्नी मुसलमानोंकी दृष्टिमें वह एक आदर्श सम्राट था। वह कुरानमें लिखे हुए नियमोंका पालन करनेमें बड़ा तत्पर था। धर्म बुद्धिके द्वारा प्रेरित हो कर उसने ब्राह्मणों पर पहिले पहिल जज़िया कर लगाया तथा जज़िया कर बन्द कर देनेका लालच दे कर उसने बहुतसे हिन्दुओंको मुसलमान बनाया। पुरीमें जगन्नाथजीका और नागरकोटमें ज्वालामुखी देवीका मन्दिर आदि तोड़ दिये और एक धार्मिक ब्राह्मणको बीच बाजारमें जला दिया, हिन्दुओंके मेले आदि बन्द करवा दिये। पुनः अपने महलोंमें चित्रकारी बन्द करवा दी और सादे कपड़े पहननेकी रीति चलाई। उसने दूसरे सम्प्रदाय वाले मुसलमानों पर भी बड़ा अत्याचार किया।*

सुलतान फीरोज़की ऐसी अच्छी चाल चलनके आदमी उन दिनों बहुत कम थे। फिर भी उसके शासनका परिणाम अन्त तक अच्छा नहीं हुआ। लड़ाई भिड़ाईका काम बन्द करवा देनेके कारण उसकी सेना आलसी तथा बेकाम हो गयी। दयाके वशमें आकर सुलतान बूढ़े सिपाहियों को भी छुट्टी नहीं देता था। अला-उद्दीनकी चलायी हुई "दाग़" देनेकी रीति भी उसने बन्द कर दी। इसलिये अमीर लोग कम सेना तथा निकम्मे घोड़े रख लेते थे। सुलतानके बड़े दानी होनेके कारण दिल्लीके सब लोगोंने काम काज करना छोड़ दिया और आनन्दसे दिन बिताने लगे। अपनी शान बढ़ानेके लिये सुलतानने करीब १८०,००० दास रख लिये थे। इनकी देख रेख करनेके लिये एक पृथक महकमा स्थापित हुआ। आलसी होनेके कारण ये भी उपद्रव मचाने लगे। उसने अपने अफसरोंको तथा सिपाहियोंको वेतनके बदले

* फतुहात-इ-फीरोज़शाही।

जागीर देनेकी रीति चलाई। अला-उद्दीनने इस प्रथाको बन्द कर दी थी। परन्तु फीरोज़ने फिरसे यह नियम चलाया। इससे साम्राज्यका समूचापन भी जाता रहा। क्योंकि अपने अपने इलाकेमें जागीरदार लोग स्वतन्त्र रहते थे और उसके प्रबन्धमें सुलतान हस्तक्षेप नहीं करता था। १३८८ ई० में फीरोज़की मृत्यु हुई।

उसके मरनेके बाद फिर हलचल मच गई। तीन निकम्मे सुलतानोंने पांच बरस तक राज्य किये। इनके बाद महमूद तुगलक गद्दी पर बैठा। इसके समयमें और भी कई एक देशोंके स्वतंत्र हो जानेके कारण सुलतानके अधिकारमें केवल दिल्लीके आस पासके कुछ इलाके रह गये।

तैमूरलंगकी चढ़ाई (१३९८ ई०)—दिल्ली साम्राज्यकी इस टूटी फूटी दशामें एक ऐसा आदमी आया जिसने मनुष्यके रक्तसे इस देशकी धरतीको बिलकुल लाल कर दी। इस आदमीका नाम तैमूर था। एक पैरसे लंगड़ा होनेके कारण लोग उसे तैमूर लंग कहते हैं। वह बड़ी भारी सेना लिये हुए एकके बाद दूसरा देश जीत रहा था। अन्तमें सन् १३९८ ई०में वह काफ़िर लोगोंको दण्ड देनेके लिये तूफानकी तरह पश्चिमोत्तर प्रदेशोंके रास्तेसे होकर हिन्दुस्तानमें आ निकला। उसने रास्तेके आस पासके सब गांवोंको जला दिये और लोगोंके असंख्य शव तथा जलते हुए गांव उसकी कठोरताकी साक्षी देने लगे। जब वह दिल्ली पहुंचा तब उसने देखा कि एक लाखसे अधिक कैदी हो गये हैं। इस विचारसे कि वे शत्रुओंसे मिल जायेंगे, उसने सबको मरवा डाला। जब दिल्लीके रहने वालोंको यह समाचार मिला तब उनके चेहरे पर उदासी छा गयी। लड़ाईमें हार होनेके कारण बेचारा महमूद तुगलक अपनी जान बचानेके लिये गुजरात भागा।

दिल्ली लेनेके बाद तैमूर स्वयं बादशाह बन बैठा। इतने

शहरमें एक हल्ला मचा। असन्तुष्ट हो कर तैमूरकी जंगली सेना लूट मार करने लगी। तीन दिन और तीन रात वे विना रोक-टोकके घर लूटते और लोगोंको मारते रहे। इसके बारेमें तैमूर स्वयं लिख गया है:—

"मैं उनको बचाना चाहता तो था, पर सफल न हो सका, क्योंकि ईश्वरकी यही इच्छा थी कि शहरके बाशिन्दों पर ऐसी आफत आ पड़े।*

इसके बाद जो कुछ धन व माल हाथ लगा था उसे लेकर और लाखों कैदियोंके साथ तैमूर मेरठ और हरिद्वार होते हुए जम्मूके रास्ते घर लौटा। जाते समय वह अपने पीछे अकाल, महामारी और अन्धेर छोड़ गया।

महमूद तुग़लक फिर दिल्ली चला आया और १४१२ ई० तक जीता रहा। अन्तमें अराजकता और उपद्रवके कारण पंजाबका हाकिम सैयद वंशके ख़िज़िर खांने दिल्ली ले ली (१४१४ ई०)। सैयद वंशवाले अपनेको तैमूरके प्रतिनिधि कहते थे। १४०१ ई० में जौनपुर, गुजरात और मालवेमें स्वतन्त्र राज-वंशकी स्थापना हुई। हिन्दू लोग चारों ओर उपद्रव मचाने लगे तथा राजे और ज़मीदार मनमानी करने लगे। इस समय देशकी अवस्था बड़ी शोचनीय मालूम पड़ती थी।

सारांश

१३२१—१४१४	ई०	तुगलक वंश
१३२१—२५	,,	ग़यास-उद्दीन
१३२५—५१	,,	महम्मद
१३५१—८८	,,	फीरोज़शाह
१३८८-१४१४	,,	महमूद आदि
१३९८	,,	तैमूरकी चढ़ाई

* मलफ़ूज़ात-ई-तीमूरी।

(८) दिल्ली सलतनतके अन्तके स्वाधीन राज्य।

दिल्ली राज्य—सैयद वंश (१४१४–५० ई०)—खिज़िर खां अपनेको तैमूरका प्रतिनिधि कहता था। उसने सुलतानकी पदवी नहीं ली। सैयद वंशके लोग अपनेको महम्मद साहबकी सन्तान बताते हैं। इस वंशके चार लोगोंने ३६ वर्षतक राज्य किये। उनका शासन दिल्लीके बाहर कोई नहीं मानता था। बहलोल लोदी १४५० ई० में दूसरे दूसरे अफ़गान सरदारोंकी सहायतासे सारे पञ्जाबको अपने अधीन कर जब आगे बढ़ा तब अन्तिम सैयद वंशीय आलमशाहने उसके हाथ राज्य सौंप दिया और आप विदा हो गया।

लोदी वंश (१४५०-१५२६ ई०)—लोदी वंशके सुलतान जातिके पठान या अफ़गान थे। उनके समयमें दिल्ली राज्यकी कुछ उन्नति हुई। सुलतान बहलोल (१४५०–१४८६ ई०) ने कई वर्ष तक लड़नेके बाद जौनपुर राज्य जीत लिया और अपने बेटे बरबक शाहके अधीन कर दिया। इसके बाद उसने ढोलपुर, कल्पी, ग्वालियर आदि प्रदेशों पर चढ़ाई की। दिल्ली रियासत इस समयमें पञ्जाबसे लेकर बनारस तक फैल गयी। उसके बेटे सिकन्दर लोदीने (१४८६–१५१७ ई०) बरबक शाह से जौनपुरका इलाका छीन लिया तथा बिहार देशको भी जीता। दोआब आदि प्रदेशोंका ठीक ठीक प्रबन्ध करनेके लिये उसने आगरा नगर स्थापित किया। वह धर्मका बड़ा कट्टर था। वह सदा मुल्लों और मौलवियोंका अनुयायी था। धर्मान्धताके कारण उसने मथुरा के मन्दिरोंको तोड़वा दिये तथा हिन्दुओंके मेले आदि बन्द करवा दिये, जिनमेंसे प्रयागका कुम्भ मेला एक था। फिर भी, एक मुसलमान इतिहास-लेखकका कथन यह है कि—"वह बड़ा न्यायी राजा था। उसके समयमें पैदावार खूब होती थी और रियाया सुखी थी" *।

* अबदुल्ला—तवारीख-इ-दाऊदी।

सिकन्दरका बेटा इब्राहीम लोदी (१५१७–२६ ई०) वैसा धूर्त्त न था, पर वह भी प्रजापालक था। तुमको मालूम है कि लोदी वंशके पहिले सुलतान बहलोलने और और अफ़गान सर्दारों की सहायता से गद्दी प्राप्तकी। इसलिये वह और उसका बेटा सिकन्दर उनको बहुत मानते थे। इससे राज्यमें उनकी शक्ति हद्दसे अधिक बढ़ गई थी। इब्राहीम उनकी शक्ति मिटाना चाहता था। इसीलिये वे बहुत बिगड़ गये और सारे राज्यमें हलचल मच गयी। कुछ अफ़गान सर्दारोंने मिल कर सुलतानके जलाल-उद्दीन नामके एक भाईको जौनपुरका सुलतान बनाया। परन्तु हार खाकर वह ग्वालियर भागा। पुनः कुछ सर्दार कड़ा-मानिक-पुरके हाकिमके अधीन होकर सुलतानसे लड़ गये। परन्तु उनकी भी हार हुई। सुलतानने मेवाड़पर भी चढ़ाई करदी। लड़ाई में राना संग्रामसिंहकी हार हुई। मौका पाकर पंजाबके हाकिम दौलतखांने मुग़ल सरदार बाबरके निकट हिन्दुस्तानपर चढ़ाई करनेके लिये सन्देशा भेजा। बाबरने जब लाहौर तक ले लिया तब दौलत को अपनी भूल मालूम हुई और बाबरके विरुद्ध लड़ने लगा, पर बाबर को रोक न सका। पानीपतकी पहिली लड़ाईमें मुग़ल सरदार बाबरने इब्राहीम लोदीको १५२६ ई० में हरा दिया और मुग़ल साम्राज्यकी नींव डाली। अफ़गान सरदार इब्राहीमसे असन्तुष्ट थे, इसलिये उन्होंने इस लड़ाईमें उसको बिलकुल सहायता न दी, और उसकी हारका यही प्रधान कारण था।

जौनपुर—इस शहरको फीरोज़शाह तुगलकने १३५९ ई०में बसाया था। तैमूरलंगकी चढ़ाईके बाद ख्वाजा जहाँ नामका सूबेदार स्वतंत्र बन बैठा। इस राज्यके सुलतानोंका नाम शर्की सुलतान पड़ा है। ख्वाजा जहाँने बिहार, बंगाल तथा उड़ीसा तक अपना रोब-दाब भलीभांति जमा लिया था। इस वंशका तीसरा सुलतान इब्राहीम हुआ (१४०० ई०)। इसने पश्चिममें कन्नौजतक जीता। यह सुलतान बड़ा विद्याप्रेमी था। इसके दरबार

में कई एक अच्छे अच्छे कवि हो गये। इब्राहीमका बेटा महमूद (१४४० ई०) ने बिहार जीता तथा उड़ीसा और दिल्लीपर भी चढ़ाई की। इस वंशके अन्तिम सुलतान हुसैन शाहको बहलोल लोदीने हराया। पानीपतकी लड़ाई जीतने पर जौनपुर तकका भूभाग बाबरके अधीन होगया।

जौनपुरकी अच्छी अच्छी इमारतें जैसे अटाला और जामा मसजिदें, लालदरवाजा आदि इसी समय बनी थीं। सबके सब सुलतान बड़े विद्याप्रेमी थे। उनके प्रयत्नसे जौनपुर उन दिनों फारसी और अरबी विद्याका केन्द्र बना था।

गुजरात—गुजरात अला-उद्दीनके समयमें पहले पहल दिल्ली सलतनतमें मिला लिया गया (१२९७ ई०)। फीरोज़ तुग़लक ने अपने भतीजे मुज़फ्फरशाहको गुजरातका हाकिम नियुक्त किया। १४०१ ई० में मुज़फ्फर शाह स्वतंत्र हो गया। इसने मालवा राज्यपर चढ़ाई की और वहाँके सुलतानको परास्त किया। इसके पौत्र अहमदशाहने (१४११-४१ ई०) अहमदाबाद नगर बसाया और उसे अपनी राजधानी बनाई। गुजरातके सुलतानोंमें महमूद बिगारा (१४५९-१५११ ई०) बड़ा नामी था। वह भारी योद्धा था। उसने काठियावाड़ और कच्छ जीता और अहमदनगरके सुलतानको भी हरा दिया। वह रूमके सुलतानका सहायक बनकर पुर्त्तगीज़ोंसे लड़ा, परन्तु इस लड़ाई में मुसलमानों की हार हुई। उसका एक बड़ा भारी जहाज़ी बेड़ा था। उसका नाती सुलतान बहादुरशाह (१५२६-३७ ई०) बड़ा कार्यकुशल सुलतान था। उसने मालवा जीत लिया था। राना संग्रामसिंहने मालवाके राजाको सहायता दी थी; इसी बहानेसे रानाके मरने पर उसने चित्तौर पर चढ़ाई की। चित्तौरकी रानी कर्णावतीने हुमायूं बादशाह से सहायता मांगी। हुमायूं ने गुजरातपर चढ़ाई करके बहादुर को हरा दिया। इसी समय बहादुरने पुर्त्तगीज़ व्यापारियोंको कुछ भूमि देकर उनसे सहायता ली। शेरशाहने उसे

हुमायूं को हरा दिया तब बहादुरने फिर गुजरात ले लिया। अन्तमें उसे पुर्तगीज़ोंने मार डाला। अकबर बादशाहके समयमें गुजरात मुग़ल साम्राज्य में मिला लिया गया (१५७२ ई०)।

बंगाल—महम्मद-बिन-बख़्तियारने जबसे बंगाल जीता (१२०० ई०) तब से यह देश दिल्लीके सुलतानोंके अधीन गिना
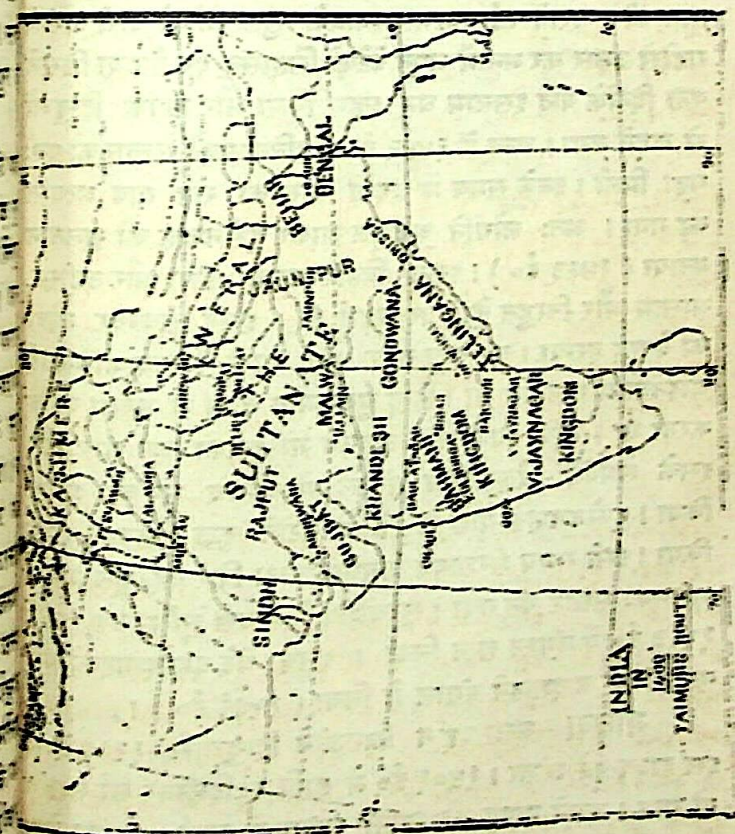
जाता था। लेकिन दिल्लीके दूर होने के कारण बंगालके हाकिम प्रायः विद्रोह का झण्डा खड़ा देते थे। दिल्लीके सुलतान भी

शक्तिमान निकलते थे तभी वह इनको अपने अधीन रख सके थे। १३४०ई० में इलियास शाह पहिला स्वतंत्र सुलतान बना। फीरोज तुग़लक जब इसे दबा न सका तब इसकी स्वतंत्रता मानली। इलियासका बेटा सिकन्दरशाह (१३६०–६३ ई०) ने पाण्डुआमें आदिना मसजिद बनवायी। इसकी मृत्युके अनन्तर बंगालमें बड़ी गड़बड़ी मची। गणेश नामके हिन्दूने "सुलतान-कार" की उपाधि प्राप्त की। इसने कई एक नाम-नामके सुलतानोंको बारी बारीसे गद्दीसे उतार कर अन्तमें अपने बेटेको सिंहासन पर बैठाया जिसने कुछ दिनोंके बाद इसलाम धर्म ग्रहण किया और वहांके हिन्दुओं से लड़ने लगा। अन्त में १४४२ ई० में इलियासकी सन्तानको पुनः गद्दी मिली। इनके समय में हबशी दासोंका रोब दाब अत्यन्त बढ़ गया। अतः लोगोंने आजिज़ आकर हुसेनशाह को सुलतान बनाया (१४९३ ई०)। इसने विहार राज्य जीता और उड़ीसा, आसाम और तिरहुत देशों पर चढ़ाई की। इसने सिकन्दर लोदी को बेतरह हराया। वह बड़ा चतुर और अपनी रियायाकी भलाई चाहनेवाला सुलतान था। हिन्दू मुसलमान दोनों से अच्छा बर्ताव करता था। कवि विद्यापति ठाकुरने भी इसका यश गाया है। इसके समयमें चैतन्यदेवने बंगाल में वैष्णव धर्मका प्रचार किया। हुसेनशाहके पीछे उसके दो बेटोंने कुछ दिनतक राज्य किया। इसी समय शेरशाहने बंगाल जीता फिर वह कुल उत्तर भारतका सम्राट बन गया। सूरवंशियोंके हाथसे सुलेमान करानीने १५६३ ई० में बंगाल छीन लिया। इसके बेटे दाऊदशाहको हरा कर अकबर बादशाहने बंगाल ले लिया (१५७६ ई०)।

मालवा—अला-उद्दीन खिलजीने हिन्दुओंसे १२६७ ई० में इस राज्य को जीता। १४०१ ई० में हाकिम दिलावर ख़ाँ स्वतंत्र हो गया। उसने माण्डु को अपनी राजधानी बनाई। इसका बेटा होशंगशाह (१४०५ ई०) बहुत दिनों तक गुजरातसे लड़ता रहा। माण्डुकी जामी मसजिद इसीने बनवाई। अन्तमें १४३५ ई० में म
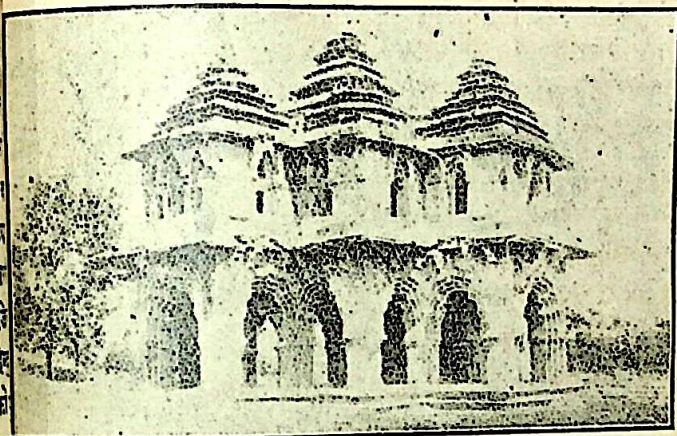
(Chap. 8.)

Vijaynagar Palace.

(Chap 8)

Gol Gumbaz, Bijapur.

हस्पेट नगरके निकट हम्फीमें अभीतक इसके चिह्नादि देखे पड़ते हैं। देवराय (२) (१४१९-४६ ई०) ने विजयनगरका प्रसिद्ध गढ़ बनवाया था। यह किला ६ मील चौड़ा तथा १२ मील लम्बा था। इसके भीतर सिंचाई तथा खेती बारीके कुल प्रबन्ध थे। सौ बरसके बाद कृष्णदेव राय (१५०९-२९ ई०) ने कृष्णा नदीसे कुमारी अन्तरीप तक अपना दौरदौरा स्थापित किया। कृष्णा नदी इस राज्यकी उत्तरीय सीमा थी। अतः मुसलमानों की चढ़ाईसे दक्षिणी भागको बचानेके लिये इस राज्यके राजाओं को सदैव बहमनी राज्यके सुलतानोंसे लड़ना भिड़ना पड़ता था। कभी हिन्दू जीतते थे तो कभी मुसलमान। सोलहवीं सदीके पहिले पहिल कृष्णदेवरायने मैसूर और उड़ीसा जीत लिया और बीजापुरके सुलतान इस्माइलशाहको हरा कर उससे रायचूरका दोआब छीन लिया और बीजापुरका सिंहासन दूसरे आदमीको दिया। इसने १०,००० अशर्फी व्यय करके कुल हिन्दू मन्दिरोंकी मरम्मत करवाई थी। यह राजा संस्कृत तथा तैलगू भाषाका पारदर्शी था तथा ब्राह्मणोंका बड़ा आदर करता था।

सन् १५४२ ई० में मंत्री रामराजा सिंहासनपर बैठा। रामराजाने अहमदनगरपर चढ़ाई करके सारे राज्यको तितरबितर कर दिया। असन्तुष्ट होकर दक्षिणके चारों सुलतानोंने हिन्दूराज्यका नाश करनेके लिये १५६५ ई० में राम राजा पर चढ़ाई कर दी। कृष्णा नदीकी एक शाखा दौन नदीके किनारे तालीकोटमें बड़ी भारी लड़ाई हुई जिसमें रामराजा की हार हुई। विजयी मुसलमानोंने बड़ी निर्दयताके साथ सारे विजयनगरको इस प्रकारसे तोड़ा कि "ईंट पर ईंट न रहे, न पत्थरपर पत्थर"। रामराजा लड़ाई में मारा गया। इसी लिये उनके घरवाले भागकर चन्द्रगिरिमें आ बसे। इसी वंशके एक राजाने सन् १६३९ ई० में अंग्रेजी कम्पनीको मद्रासमें बसने की आज्ञा दी थी।

पुर्तगीज लोगोंके साथ विजयनगर राज्यका खूब व्यापार होता था। घोड़ेका व्यापार मौरूसी करनेके लिये विजयनगरके राय लोग प्रायः वहमनी राज्यके सुलतानोंके साथ लड़ जाते थे। उस समयमें कई एक यूरोपी तथा ईरानी यात्री विजयनगरमें आये थे। उनकी लिखी हुई पुस्तकोंके पढ़नेसे यह मालूम होता है कि विजयनगर उन दिनोंमें हिन्दूसभ्यताका केन्द्र रहा। वेदोंके टीकाकार महामहोपाध्याय सायनाचार्य तथा उनके भाई माधवाचार्य दोनों हरिहर तथा बुक्काके मंत्री थे।

सबके सब राजे स्वयं विद्वान् होते थे और पण्डितोंका आदर करते थे। इनके उत्साहसे संस्कृत और देशी भाषाओंकी बड़ी उन्नति हुई थी। विद्यारण्य, वेदान्त देशिक आदि बड़े बड़े पण्डितोंका उदय इन्हीं दिनोंमें हुआ था। तञ्जोरके हाकिम रघुनाथ नायक बड़े गुणी थे वे बड़े भारी नीतिशास्त्रविद्, सुगायक, वीर योद्धा, विद्याप्रेमी तथा संस्कृत और तैलेगू भाषाओंसे भली-भांति परिचित थे। इन्होंने तैलेगू भाषामें रामायणकी रचना की। स्त्री-शिक्षाका भी बड़ा प्रचार था। दरबारकी एक महिलाने रामायणका तैलेगूमें अनुवाद किया, अतः उसने 'मधुर वाणी' की उपाधि प्राप्त की। दूसरी एक महिला आठ भाषाओंसे सुपरिचित थी। उसने 'साहित्य साम्राज्य'की उपाधि प्राप्तकी। रायोंने नये ढंगकी बड़ी बड़ी इमारतें सुदृढ़ किले और नहरें बनवायीं थीं। दरबारकी शान सबसे बढ़कर थी। दरबारके समयमें राजा सादे रेशमके कपड़े पहिनते थे। पैरोंमें जूता नहीं रहता था, सिरपर बहुमूल्य हीरेसे मढ़ा हुआ एक मुकुट रहता था।

राज्य प्रबन्धके सुभीतेके लिये सारी रियासत छोटे छोटे सूबों और जिलोंमें बटी हुई थी। हाकिमोंकी एक सूबेसे दूसरोंमें जल्दी जल्दी बदली होती थी। गांवोंमें "करनाम" नामका एक सरकारी अफसर रहता था। वह हिसाब किताब रखता था। रियाया पर जुल्म करने से अफसर लोगोंको कठिन

दण्ड मिलता था। मालगुजारीके अतिरिक्त सर्कारकी ओर बहुतसी चीजोंपर चुंगी लगाई जाती थी। राज्यकी आमदनी घनी थी और अनाज आदि भी बहुतायतसे पैदा होता था। किसानोंको पैदावारका छठां भाग राज कर देना पड़ता था। अपराधियोंको तरह तरहके दण्ड दिये जाते थे। चोरोंके हाथ काट दिये जाते थे, ग़रीब रियायापर अत्याचार, वा बलवा करने पर प्राणदण्ड मिलता था। लोग मांसाहारी थे। जीवोंकी बलि मन्दिरके सामने दी जाती थी। द्वन्द्व-युद्धमें तलवार काममें लाते थे, और हारने वालेकी कुल सम्पत्ति जीतने वालेको मिलती थी। परदेशी यात्री लोग राजधानीकी शोभा सम्पत्ति देखकर अचम्भा करते थे। एक लेखक * का यह कहना है कि "इस नगरके समान और कोई मनोहर स्थान देखा नहीं गया, न ऐसे किसी नगरकी स्थितिकी बात ही कानसे सुनी है"।

बहमनी राज्य—दक्षिणके मुसलमान सर्दार लोग महम्मद तुग़लकके समयमें विद्रोही बन गये। दौलताबादके सूबेदार हसन कांगू बनाम ज़ाफ़र खां बागियोंका मुखिया बना और सुलतानकी सेनाको हराकर सन् १३४७ ई० में बहमनीराज्य स्थापित किया। हसन अपनेको ईरानके बादशाह बहमन शाह (Artaxerxes the Long-armed) की सन्तति मानता था। इसलिये उसके राज्यका नाम बहमनी पड़ा।

इसकी राजधानी कुलबर्गा थी जो आजकल निज़ामके राज्य में है। इस राज्यके उत्तरमें पेनगङ्गा तथा दक्षिणमें कृष्णा नदी बहती है। यहांके सुलतानोंसे विजयनगरके साथ बराबर लड़ाइयां हुआ करती थीं। कभी ये लोग जीतते थे तो कभी हिन्दू लोग जीतते थे। फीरोज़शाह बहमनी ने १४०० ई० में विजयनगरको कई बार हराया। परन्तु अन्त

* अब्दुर्रज़्ज़ाक़।

इसकी गहरी हार हुई। फीरोज़ने कईएक इमारतें बनवाईं। पश्चात् उसका बेटा अहमदशाह बहमनीने सन् १४२२ ई० में उसे मार डाला। अहमदशाहने वारङ्गल जीता तथा विजयनगरके राज्यमें बड़ा ऊधम मचाया। उसने बिदरको अपनी राजधानी बनाई। सन् १४३५ ई० में उसके मरनेके बाद कई दुर्बल सुलतान सिंहासन पर बैठे। पर इनका वज़ीर महमूद गावां बड़ी योग्यताके साथ राजकाज करता था। उसने विजयनगरसे कोंकण प्रदेश छीन लिया और तैलिङ्गाना जीता। किन्तु कई एक सर्दारोंने षड्यंत्र रचकर इसको मरवा डाला।

गावांकी मृत्युके बाद सर्दार लोग आपसमें लड़ने और तरफ़दार लोग स्वतंत्र बनने लगे। सारा राज्य पाँच बड़े बड़े "तरफ़ों" यानी सूबों में विभक्त था। प्रत्येक तरफ़ एक एक तरफ़दारके अधीन था। सन् १४८२ ई० में यह सल्तनत टूट गई और इसके स्थानमें नीचे लिखी हुई पांच छोटी छोटी रियासतें स्थापित हुईं।

(१) अहमदनगर के निज़ामशाही राज्य का जमाने वाला अहमदशाह था। अकबर बादशाहने इस राज्यको जीतने की बड़ी चेष्टाएं कीं, परन्तु चाँद बीबीके आगे वह कुछ कर न सका। चाँद बीबीके मरनेके बाद बादशाहने अहमद नगरका कुछ हिस्सा अपनी रियासतमें मिला लिया, और सन् १६३७ ई० में शाहजहाँ बादशाहने बाकी हिस्सेको भी दिल्लीके अधीन कर लिया।

(२) बीजापुरका आदिलशाही राज्य सन् १४८६ ई० में स्थापित हुआ। इस राज्यको मुग़ल तथा मराठोंके साथ कई बार लड़ना पड़ा। अन्तमें बादशाह औरङ्गज़ेबने इसे जीत लिया (१६८६ ई०)। बीजापुरके सुलतान हिन्दुओंको बहुत मानते थे और उनको राज्यके कई ऊँचे पदोंपर नियुक्त करते थे।

(३) गोलकुण्डाका कुतुबशाही राज्य १५११ ई०में स्थापित हुआ। इसकी राजधानी पहले गोलकुण्डा थी और बादको भाग नगर (आजकल हैदराबाद) बनी। इस राज्यमें भी हिन्दुओंको ऊँचे ऊँचे पद मिलते थे। सन् १६८७ ई० में औरङ्गजेब बादशाहने इसको जीत लिया।

(४) बिदरका बारीदशाही राज्य सन् १४९२ ई० में स्थापित हुआ। इसकी नींव डालनेवाला कासिम बरीद था। सन् १६०९ई० में यह राज्य बीजापुरमें मिला लिया गया।

(५) बेरारके इमादशाही राज्य की राजधानी एलिचपुर थी। यह राज्य १४९० ई० में स्थापित हुआ था। अन्त में सन् १५७४ ई० में इसे अहमदनगर राज्य में मिला लिया गया।

मेवाड़—सारे राजस्थानमें छोटे छोटे राजपूत सरदार राज करते थे। इन सब का मुखिया मेवाड़ था। छठीं सदीके प्रारम्भमें हूण लोगोंने जब गुजरात के बल्लभी राज्य पर चढ़ाई करके राज वंशका नाश कर दिया तब रानी पुष्पवतीको जो एक गुफामें छिपी थी, एक लड़का पैदा हुआ। गुफा में पैदा होनेके कारण इस लड़के का नाम गुह पड़ा। गुह वा ग्रहादित्यके नामसे उसके वंशका नाम ग्रहीलोट वा गिहलोट पड़ा। गुह भील लोगोंका राजा था। कुछ दिन बीतने पर भील लोग जब स्वतंत्र हो गये तब राजकुमार बाप्पाराव मेवाड़ के परमार वंशी राजा की शरण में आया। अन्त में पुराने राजवंशको हटाकर बाप्पा राव स्वयं राजा बना। इस वंशके राजाओं को चित्तौरके राना कहते हैं। राना समरसिंह पृथ्वीराजके बहनोई और बाप्पा की सन्ततिमें से थे। तराईं की दूसरी लड़ाईमें मारे गये। मेवाड़के राजपूतोंको सिशोदिया राजपूत कहते हैं। अला-उद्दीनकी चित्तौरपर चढ़ाईकी और हमीरके चित्तौरको वापस ले लेनेकी बातें तुमको मालूम हैं। बादके राजाओंमें कुम्भ और संग्रामसिंह वीरताके लिये बड़े विख्यात हुए। संग्रामसिंह

गुजरात और मालवाके सुलतानोंको बार बार लड़ाईमें हराया था और उसने मुसलमानोंको हिन्दुस्तानसे निकाल देनेका भी विचार किया था। बाबरने जब मुगल साम्राज्यकी नींव डाली तब संग्राम सिंहने उससे लड़ना निश्चय किया। पर फतहपुर सिकरीके पास खनुवाकी लड़ाईमें वह हार गया (१५२७ ई०)। संग्रामसिंहकी मृत्युके बाद मेवाड़ राज्यमें गड़बड़ी मची। राना रतनके नाबालिग होनेके कारण गुजरातके बहादुर शाहने कईवार चढ़ाईकी। शेर शाहने भी योधपुर पर चढ़ाईकी। अकबरने १५६७ ई० में चित्तौर गढ़ लेही लिया। फिर भी राना उदय सिंहके बेटे महाराना प्रताप सिंह बहुत दिनों तक मुगलोंसे लड़ते रहे। अन्तमें राना अमर सिंहने जहांगीर बादशाहकी अधीनता स्वीकार करली (१६१४ ई०)।

सारांश

दिल्ली

१४१४-१४५० ई० सैयद वंश
१४५०-१५२६ ,, लोदी वंश
१४५०- ८९ ,, बहलोल
१४८९-१५१७ ,, सिकन्दर
१५१७-१५२६ ,, इब्राहीम
१३९९ ई० ,, ख्वाजा जहानने जौनपुर राज्य की नींव डाली।
१४७६ ,, बहलोल लोदीने जीता
१४०१ ,, मुज़फ्फरशाहने गुजरात राज्यकी नींव डाली
१५७२ ,, अकबर ,, ,, ,, को जीता
१३४० ,, इलियास शाहने बंगाल राज्यकी नींव डाली
१८७६ ,, अकबरने ,, ,, ,, को जीता
१४०१ ,, दिलावर खांनने मालवा राज्य स्थापित किया

१५३० ई० बहादुर शाहने जीता
१३३६ ,, हरिहर तथा बुक्कारायने विजयनगर राज्यकी नींव डाली
१५६५ ,, तलीकोटकी लड़ाई
१३४७ ,, हसन शाहने बहमनी राज्यकी नींव डाली
१४८२ ,, बहमनी राज्य टूट गया

६) दिल्ली सलतनतके समयमें देशकी अवस्था।

दिल्लीके सुलतान—कुरानके नियमोंके अनुसार दिल्लीका सुलतान केवल हिन्दोस्तानमें स्थापित इस्लामी राज्यहीका प्रधान नहीं था वरन् वह धार्मिक जगत्‌का भी प्रधान पुरोहित था। अतः उसे बाध्य होकर धर्मके कट्टर मौलवियों तथा उलमा लोगोंका अनुयायी होकर काम करना पड़ता था। जो ऐसा नहीं करता था उसकी निन्दा होती थी। एक धार्मिक मुसलमान सुलतानके ये कर्त्तव्य थे—मूर्त्ति-पूजाका अन्त कर देना, अपने धर्मके अनाचारियोंको दबाना तथा काफ़िर जातिके लोगोंको इसलाम धर्ममें लाना। प्रायः कुल सुलतान इसी रीतिके अनुसार काम करते गये। केवल अला-उद्दीन और मुहम्मद तुगलकने विपरीत काम किये। अतः मौलवी लोग इन दोनोंसे अप्रसन्न थे। इन दोनों सुलतानोंने राष्ट्रनीतिको धर्मनीतिसे अलग करनेका प्रयत्न किया। परन्तु फ़ीरोज़ तुगलक तथा सिकन्दर लोदी बड़े कट्टर थे। अतः उलमा लोग इनकी बड़ी प्रशंसा करते हैं।

सेना—पहिले पहल सेना दलमें केवल मुसलमानोंकी ही भर्त्ती होती थी। ये अपने सरदार ही को मानते थे। सुलतान सर्दारोंको जागीर आदि देता था। अला-उद्दीनने इन सबोंको सरकारी नौकर बना लिया और प्रत्येकको तनख़ाह देता था। उसने 'दाग' देनेकी रीति भी चलाई। परन्तु फ़ीरोज़ तुगलकने पुनः जागीर देनेकी प्रथा चलाई। लूटके मालका पांचवा भाग

तथा दास आदि सेना दलमें विभक्त करनेका नियम था। सलतनतके नष्ट होनेके बाद प्रादेशिक सलतनतोंमें हिन्दू सेनादल भी होता था।

शासन पद्धति—सबके सब सुलतान मनमौजी होते थे। फिर भी उनको राज काजमें सहायता देनेके लिये (१) मजलिस-इ-खास, और (२) मजलिस-इ-आम होता था। मजलिस-इ-खास में केवल बड़े बड़े अफसर लोग उपस्थित रहते थे। सुलतान उनसे नीति, लड़ाई भिड़ाईके बारेमें राय पूछता था। साधारण लोगोंके लिये मज्लिस-इ-आम था। इस दरबारमें बड़े ठाट-बाटके साथ राजकाज होता था। अफसर लोग हाथ जोड़ कर खड़े रहते थे। इस दरबारमें जानेके लिये दरख्वास्त देनेका नियम था। वहां सब प्रकारके काम होते थे। अपीलों की सुनाई होती थी तथा सहायताके लिये दरख़ास्त, सरकारी नौकरोंके विरुद्ध शिकायत आदि पेश किये जाते थे।

सरकारी अफसरोंमें वज़ीर का स्थान सर्वोच्च था। वह मालगुज़ारी वसूल करता था तथा सरकारी खर्च चलाता था। दीवान-इ-अर्ज़ सेना विभाग की देखरेख करता था। सेनापति का पद स्थायी रूपमें नहीं था। लड़ाई छिड़ने पर सेनापति नियुक्त किये जाते थे। दीवान-इ-इन्शा प्रादेशिक हाकिमोंसे लिखा पढ़ी करता था। दीवान्-इ-रियासत बाज़ार भाव पर दृष्टि रखता था। बड़े बड़े नगरोंमें न्याय करनेके लिये काज़ी नियत किये जाते थे। सद्र-उस्-सुदूर अपील सुनता था। अन्तिम अपील दरबारमें सुनी जाती थी। १०,००० वा अधिक सैन्यों के मालिककी उपाधि "खां" होती थी। १००० के प्रधानका नाम 'मालिक' तथा १०० के मालिक 'अमीर' कहे जाते थे।*

इसलामका प्रचार—पहिले ही कहा गया है कि एक मुस-

---

*M. Habib: Madras Oriental Conference, 1924.

लमानके लिये जिस किसी प्रकारसे हो अपने धर्मका प्रचार करना उसका प्रधान कर्त्तव्य माना जाता था। पहिले पहल यहां करनेवाले इसलाम धर्म ग्रहण करनेके लिये लोगोंको बाध्य करते थे। अरबके लोग, महमूद गज़नवी, फ़ीरोज़, तैमूर तथा सिकन्दर लोदीने लोगोंको ज़बरदस्ती मुसलमान बनाये। कुछ लोगोंने लालचमें पड़ कर राजकीय धर्म ग्रहण किये। ये लोग अधिकतर नीच जाति के थे। कुछ तो ज़ज़िया आदि करोंके हाथ से छुटकारा पानेके लिये मुसलमान बने। फ़ीरोज़ तुग़लक़ने इसी प्रकारसे बहुतोंको इसलाम धर्ममें कर लिया। कुछ बाहर से आकर इस देशमें रहने बसने लगे, ये लोग पूर्व ही से मुसलमान थे। और कुछ लोगोंने सूफ़ी फ़क़ीरोंके फन्देमें आकर अपनी इच्छासे इस्लाम धर्म ग्रहण किया। इसी प्रकारसे सब भारतवर्षमें धीरे धीरे इसलाम धर्मका प्रचार हुआ। हिन्दू और मुसलमानोंके बीच अधिक मेल जोल रहनेके कारण आज भी पूर्वी बंगाल, काश्मीर, पञ्जाब और सिन्धके अधिकतर लोग इसलाम धर्मके मानने वाले हैं।

सूफ़ी मत—मुसलमानोंकी विजयके उपरान्त हमारे देश में सूफ़ी मतका प्रचार हुआ और १२०० से १५०० ई० तक इस सम्प्रदाय वालोंकी धाक अच्छी रीतिसे जमी हुई थी। सूफ़ी मत इसलाम धर्मकी एक शाखा मात्र है। इस मतका उदय सर्व प्रथम ईरानमें हुआ। हकीम सनाई ग़ज़नवी तथा फ़रीद-उद्दीन अत्तार (११वीं सदी) तथा जलाल उद्दीन रूमी (१२वीं सदी) इस सम्प्रदायके प्रख्यात प्रचारक होगये हैं। परन्तु कट्टर मुसलमानोंने प्रथम प्रथम इनको बहुत सताया। इस देशमें अमीर खुसरो (१२६० ई०), अजमेरके ख्वाजा मुईन-उद्दीन चिश्ती (११४२-१२३६ ई०), पाक पत्तन (पञ्जाबमें) के फ़रीद-उद्दीन शकरगञ्ज (११७३-१२६५ ई०) तथा गुलबर्गे के ख्वाजा बन्दे नवाज़ (१३२१-१४२२ ई०) आदि बड़े

सूफी हो गये हैं। इनमेंसे अमीर खुसरो राजकवि थे, परन्तु दूसरोंने शान्त भावसे फुसला कर वहुतसे हिन्दुओं को इस-लाम धर्ममें लेलिया। सूफी मतके कई एक सम्प्रदाय हैं। प्रत्येक का प्रधान एक एक पीर होता है। स्थापकके नामके अनुसार सम्प्रदायका नाम पड़ता है। प्रत्येक सम्प्रदायके नियमादि भी पृथक होते हैं। सूफी मत वेदान्तसे वहुत कुछ मिलता जुलता है। इसका मूल-मन्त्र है "हमा-ओ-अस्त" वा सब कुछ वही है। साथही साथ वे जाति-पांतका भेद तथा मूर्ति पूजाकी उपयो-गिताको नहीं मानते, भक्ति तथा प्रेमपर ज़ोर देते हैं, देशी भाषा में अपने मतका प्रचार करते हैं तथा अपने पीरको ईश्वरका प्रतिनिधि कहकर मानते हैं। सम्भव है कि पश्चात् आने वाले भक्ति आन्दोलनके मुखिया लोग इस सम्प्रदाय वालोंके थोड़ा बहुत ऋणी हों। नानकने निःसन्देह अपने धार्मिक सिद्धान्तोंको सूफी मतसे लिया है।

हिन्दुओंकी अवस्था—पहिलेकी चढ़ाई करने वालोंने हिन्दुओंको इतना सताया, उनपर इतना अत्याचार किया, जिससे वे बहुतही भयभीत हो गये। तलवारकी नोकपर धर्मका प्रचार, लाखोंको भेड़ बकरीके ऐसा देश-विदेशमें बेच देना, उनकी भक्ति तथा आदरकी सम्पत्ति देव मन्दिर तथा विद्यास्थानों को नष्ट भ्रष्ट कर देना, तथा दूसरे धर्म वालों पर निष्प्रयोजन अत्याचार करना आदि बातोंसे प्राचीन हिन्दू बिलकुल परिचित नहीं थे। अतः जब इस्लामी सेनाने इस देशपर ऐसा उपद्रव मचाना आरम्भ किया, तब सम्भव है कि पहिले पहल कुछ दिनों के लिये विवश होकर वे अत्याचार सह लिये हों। परन्तु शीघ्रही जाग उठे। तब अपने धर्म मत तथा अपनी जान व मालकी रक्षा करनेके लिये वे भी लड़नेको तैयार होगये तथा लगातार ३०० वर्ष तक वे लड़ते रहे। इन्होंने सुलतानोंको देश शासन करने में कुछ भी सहायता न दी। सुलतानोंने भी हिन्दुओंसे

बड़ा कड़ा बर्ताव किया। उन्होंने उनपर जज़िया कर लगाया, उनको न तो सेना दल में लिया जाता था और न कोई सरकारी नौकरी आदि ही मिलती थी। उनको मुसलमान किसानोंसे कहीं अधिक राज कर देना पड़ता था। अला-उद्दीनने पैदावारका आधा हिस्सा लिया, मुहम्मद तुग़लकने भी बहुत अधिक कर लगा दिया। इसके अतिरिक्त उनके धर्म कर्मपर सदा रोक टोक डाला जाता था। उनके मन्दिर आदि तोड़ दिये जाते थे तथा नये मन्दिर बनवाने की आज्ञा नहीं दी जाती थी। मेले आदि बन्द करवा दिये जाते थे। फीरोज़ तुग़लक़ तथा सिकन्दर लोदीने ऐसाही किया। मुसलमानोंके अत्याचारके बारेमें बंगाल के कवि मुकुन्द राम चक्रवर्ती तथा विजय गुप्तने बहुत कुछ लिखा है। परन्तु हर्षकी बात यह है कि इतना अत्याचार होते हुए भी हिन्दुओं की जातीयता तथा शिष्टताका लोप नहीं हुआ। क्योंकि इन दिनोंमें भी बड़े बड़े स्मार्त्त पण्डित, अच्छे अच्छे धार्मिक सुधारक तथा उच्च कोटिके साहित्य-रथियोंका उदय हुआ था। उसका प्रधान कारण यह है कि हिन्दू समाज पूर्व जैसा बना रहा तथा ब्राह्मणोंकी शक्ति भी नहीं टूटी। यद्यपि नगरोंमें मुसलमानोंकी प्रभुता स्थापित हो गई थी, तथापि देशमें ब्राह्मणों का महत्व पूर्ववत् बना रहा।

परन्तु दिल्ली सलतनत टूटनेके पश्चात् जबसे छोटे छोटे सलतनत स्थापित हुए तबसे हिन्दू-मुसलमानोंके सम्बन्धमें परिवर्त्तन हो गया। स्वार्थके कारण मुसलमान सुलतान लोग अधिकतर राज्योंमें बड़े प्रेमसे हिन्दुओंसे मिलने लगे। सेना तथा दरबारमें भी अधिकतर लोग हिन्दू होते थे। मुहम्मद तुग़लकका भी रतन नाम का एक हिन्दू अर्थ-सचिव रह चुका था। इस मेल मिलाप का प्रभाव समाज तथा धर्म पर भी पड़ा। जनता फकीर, पीर आदि को मानने लगी, हिन्दुओंने गाज़ीमियाँ तथा सत्य पीर, सुवचनी, मुहर्रमकी ताज़िया, पीर, दरगाह

आदिकी पूजा और मेला आज तक चल रही है। भक्ति आन्दोलनके अगुए लोग हिन्दू मुसलमान दोनों धर्मके लोगोंको अपने सम्प्रदायमें ले लेते थे। इसी प्रकारसे जब हिन्दू जनता फकीर और पीर आदि को मानने लगी, तब मुसलमान भी हिन्दू देवताओंका सम्मान करने लगे। मसजिदकी ऊँची मीनारके बगलहीमें हिन्दू मन्दिरकी चोटी दीख पड़ने लगी तथा मुहर्रम और ईदके साथ हिन्दू पर्वों की खुशियां मनाई जाने लगीं। धीरे धीरे मुसलमान भी अरबी फारसीको भूलकर इस देशकी भाषा को अपनी मातृ-भाषा मानने लगे। यहां तक कि मुसलमानोंने हिन्दी तथा बंगलामें कविता आदि भी रची। पुनः मुसलमान लोग वाध्य हो कर हिन्दू स्त्रियोंसे व्याह शादी भी करने लगे। राना मल्ल भट्टीके साथ तुग़लक शाह की, मालवा के बज़ बहादुरसे वैश्या रूपमतीकी, फीरोज़ बहमनीसे देवरायकी बेटीकी तथा खिज़िर खां खिलजीसे देवल देवीकी शादी इने गिने नमूने हैं। इस एकता और इस पुण्य सम्मेलनकी नींवपर ही मुग़ल साम्राज्यकी पक्की इमारत खड़ी की गई थी।

धार्मिक आन्दोलन—जब इसलाम धर्मके फैलावके साथ हिन्दू धर्मका सामना हुआ तब ऐसा मालूम होता है कि हिन्दू समाज दो भागोंमें विभक्त होगया। ब्राह्मणोंने सनातन धर्मके आचार व्यवहारका फिर से संकलन कर वहुत से स्मृतिके ग्रन्थ लिखे। इसीका नाम 'नव्य स्मृति' पड़ा है। इसमें छूत–छात, खान–पान, देशाटन, समुद्र–यात्रा* आदिके नियम बड़े कठोर कर दिये गये। ये लोग रक्षणशील दलके थे। ये लोग छोटे छोटे अपराध करने पर भी लोगोंको समाजसे वहिष्कार कर देनेके पक्षमें थे। पुनः कुछ

* प्राचीन स्मृति-कारोंमें केवल बौधायनने समुद्र–यात्राकी मनाईकी है। मनुके दिना ऐसे लोगोंकी सामाजिक स्थिति कुछ हीन सी रही।

लोगोंने उदार दलके होकर इसका विरोध किया। ये जाति-पांत, छूत-छात, खान-पानके नियमादि कुछ शिथिल करना चाहते थे। इन्होंने रामानुजका प्रचारित द्वैतवाद वा भक्तिवाद पर ज़ोर देते हुये एक बड़े भारी आन्दोलनकी सृष्टि की। परन्तु प्रभेद इतनाही था कि रामानुज पात्रापात्रका भेद मानते थे और इन्होंने पात्रापात्रका भेद बिलकुल नहीं माना। इन्होंने सीधी सादी भाषाओंमें जनताको सिखलाया कि "ईश्वरके सामने सभी कोई बराबर हैं। उसकी भक्ति करनेसे सब जीवोंको मुक्ति मिलती है।" वे मुसलमानोंसे द्वेष नहीं रखते थे। बहुतसे मुसलमान इनके चेले बन गये। इन सुधारकोंमें रामानन्द, कबीर, नानक और चैतन्य बड़े नामी हैं।

रामानन्द— रामानन्द (१३००–१४०० ई०) पहिले पहल रामानुजके चेले थे। पीछेसे इन्होंने अपना एक सम्प्रदाय बनाया जिसका नाम "रामाइत" पड़ा। रामानुजियोंकी तरह रामानन्द खान पीनेका छुआछूत नहीं मानते थे। वह बनवाटी ढकोसलोंको धर्म नहीं कहते थे और न जातिभेदकी प्रथा मानते थे। उनके चेलोंमें एक नाई, एक चमार और एक मुसलमान भी था। इन्होंने काशीको अपना कर्म क्षेत्र बनाया।

कबीर—कबीर (१३८०—१४२० ई०) रामानन्दके चेलोंमेंसे थे और जातिके मुसलमान जुलाहे थे। कबीरने हिन्दू और मुसलमानोंको एक धर्ममें लानेकी चेष्टाकी। वह दोनोंके गुण और दोषोंको स्पष्टतया कह देते थे। जातिभेद और मूर्त्तिपूजाकी रीतियोंकी निन्दा करते थे। दुनियाई कार्रवाइयोंको माया बताते थे। इनकी राय यह थी कि कुल आदमियोंका अधिकार बराबर है। इनके सम्प्रदायका नाम "कबीरपन्थ" पड़ा। उन्होंने हिन्दी भाषामें बहुतसी कवितायें भी लिखी हैं।

नानक—नानक पञ्जाबके रहने वाले थे १४६८ ई० में उनका जन्म हुआ था। ये जातिके क्षत्रिय थे।

होसे नानक धर्म सम्बन्धी बातें सुननेमें बड़ा उत्साह दिखाते थे। उनके बापकी यह इच्छा थी कि नानक व्यापारी बने। इस लिये उनके हाथ कुछ रुपये देकर उन्हें परदेश भेजा परन्तु नानकने कुल रुपया साधु फकीरोंको दे दिया। पीछेसे उन्होंने हिन्दू और इस्लामी धर्म पुस्तकोंको पढ़कर यह स्थिर किया कि "सब धर्म एक हैं और ईश्वर भी एक ही है। ईश्वरके सामने क्या हिन्दू और क्या मुसलमान, सभी कोई बराबर हैं। जिसका मन साफ हो वही सच्चा हिन्दू है, और जिसका जीवन पवित्र हो, वही सच्चा मुसलमान है।" बहुत से हिन्दू और मुसलमान उनके चेले बने। वह उनको अपना "सिख" (शिष्य) कहते थे। सिख लोग पहिले पहल बड़े शान्त स्वभावके होते थे। पर मुग़ल बादशाहोंके अत्याचारसे वे बिगड़कर लड़ाकू बन गये।

चैतन्य—चैतन्य (१४८६-१५२७ ई०) का जन्म नवद्वीप (बंगाल) में हुआ था। जब उनकी अवस्था कुल १४ बरसकी थी तभी वह संन्यासी हुये। वे पक्के वैष्णव थे और उन्होंने पहले पहल कृष्णपूजाकी रीति चलाई। वह भी जातिभेदकी प्रथा नहीं मानते थे। एक मुसलमान उनका चेला था। उनकी राय यह थी कि भक्ति पैदा होनेसे बड़े बड़े पापियोंको भी मुक्ति मिल सकती है। चैतन्यके पहिले लोगोंका यह विश्वास था कि धूमधाम से पूजा करनेहीसे ईश्वर मिलता है। पर चैतन्यने उनको समझा दिया कि "बिना प्रेमके नहीं मिले नन्दलाला"। चैतन्यके समयसे बंगला भाषाकी बड़ी उन्नति होने लगी।

उर्दू भाषाका जन्म—विद्वानोंकी यह राय है कि चौदहवीं सदीके अन्तिम भागमें इस भाषाका जन्म हुआ था। इसमें हिन्दी अरबी और फारसीके शब्द एक साथ मिले हुए हैं। तुमको मालूम है कि जबसे मुसलमानोंने इस [illegible] तुर्किस्तान, अरब, ईरान आदि दूर दूरके देशोंसे मुसलमान लोग

होसे नानक धर्म सम्बन्धी बातें सुननेमें बड़ा उत्साह दिखाते थे। उनके बापकी यह इच्छा थी कि नानक व्यापारी बने। इस लिये उनके हाथ कुछ रुपये देकर उन्हें परदेश भेजा परन्तु नानकने कुल रुपया साधु फकीरोंको दे दिया। पीछेसे उन्होंने हिन्दू और इस्लामी धर्म पुस्तकोंको पढ़कर यह स्थिर किया कि "सब धर्म एक है और ईश्वर भी एक ही है। ईश्वरके सामने क्या हिन्दू और क्या मुसलमान, सभी कोई बराबर है। जिसका मन साफ़ हो वही सच्चा हिन्दू है, और जिसका जीवन पवित्र हो, वही सच्चा मुसलमान है।" बहुत से हिन्दू और मुसलमान उनके चेले बने। वह उनको अपना "सिख" (शिष्य) कहते थे। सिख लोग पहिले पहल बड़े शान्त स्वभावके होते थे। पर मुग़ल बादशाहोंके अत्याचारसे वे बिगड़कर लड़ाकू बन गये।

चैतन्य—चैतन्य (१४८६–१५२७ ई०) का जन्म नवद्वीप (बंगाल) में हुआ था। जब उनकी अवस्था कुल १४ बरसकी थी तभी वह संन्यासी हुये। वे पक्के वैष्णव थे और उन्होंने पहले पहल कृष्णपूजाकी रीति चलाई। वह भी जातिभेदकी प्रथा नहीं मानते थे। एक मुसलमान उनका चेला था। उनकी राय यह थी कि भक्ति पैदा होनेसे बड़े बड़े पापियोंको भी मुक्ति मिल सकती है। चैतन्यके पहिले लोगोंका यह विश्वास था कि धूमधाम से पूजा करनेहीसे ईश्वर मिलता है। पर चैत्यन्यने उनको समझा दिया कि "विना प्रेमके नहीं मिलै नन्दलाला"। चैतन्यके समयसे बंगला भाषाकी बड़ी उन्नति होने लगी।

उर्दू भाषाका जन्म—विद्वानोंकी यह राय है कि चौदहवीं सदीके अन्तिम भागमें इस भाषाका जन्म हुआ था। इसमें हिन्दी अरबी और फारसीके शब्द एक साथ मिले हुए हैं। तुमको मालूम है कि जबसे मुसलमानोंने इस देशको जीता तभीसे तुर्किस्तान, अरब, ईरान आदि दूर दूरके देशोंसे मुसलमान लोग

इस देशमें आने लगे। अब ऐसी एक भाषाकी आवश्यकता हुई जिसे सब लोग समझ सकें। इस आवश्यकताका फल उर्दू भाषा है। सुलतानी सेनामें हरएक देशके लोग भर्ती कर लिये जाते थे। इसीलिये छावनीमें इस भाषाका व्यवहार होने लगा। तुर्की भाषामें "उर्दू" छावनीके बाज़ारको कहते हैं। यह भाषा हिन्दू-मुसलमानोंके सम्मेलन का प्रधान फल है।

साहित्य—इस युगको साहित्यका "सुवर्ण युग" कह सकते हैं। क्योंकि संस्कृतके अतिरिक्त देश भाषा—जैसे बंगला, हिन्दी, गुजराती, मराठी आदिके बड़े बड़े नामी कवि इसी समय में हो गये हैं। फारसी भाषामें भी कई एक अनमोल इतिहास की पुस्तकें लिखी गयीं। संस्कृतमें विज्ञानेश्वरने "मिताक्षरा" नामकी कानूनकी पुस्तक लिखी। पन्द्रहवीं सदीमें जीमूत वाहनने "दायभाग" लिखा उन्हीं दिनों पूर्व बंगालमें "साहित्य दर्पण" बना। विजय नगरके माधवाचार्य और सायनाचार्य (पन्द्रहवीं सदी) ने भी संस्कृत भाषामें 'सर्वदर्शनसंग्रह' तथा वेदोंकी टीका लिखी। तथा बिहारमें चण्डेश्वर ठाकुर, बंगालमें रघुनन्दन शिरोमणि आदिने स्मृतिशास्त्र पर बहुत से अनमोल ग्रन्थ लिखे।

सुलतानोंके उत्साहसे बंगला भाषाने बड़ी उन्नति की। कृत्तिवास ओझाने "रामायण" लिखी (सोलहवीं सदी)। विद्यापति और चण्डीदासकी कृष्ण लीला सम्बन्धी कवितायें अनमोल हैं (पन्द्रहवीं सदी)। इनमें विद्यापति मैथिल थे। चैतन्यके चेलोंने सैकड़ों अच्छी अच्छी पुस्तकें लिखीं। इनमेंसे ज्ञानदास बड़े नामी हैं। हिन्दी भाषामें कबीरके अतिरिक्त सूरदासने "सूर सागर" रचा और मीराबाईने कृष्णलीलाके बारेमें मधुर कवितायें गाईं। महाराष्ट्रमें नामदेव और गुजरातमें दादू इसी समय हुये थे।

उन दिनों फारसी भाषामें कई एक अच्छी अच्छी इतिहास

की पुस्तकें लिखी गयीं । मिनहाज-उद्दीनने "तबकात-इ-नासिरी" लिखा । सिराज-इ-अफीफने "तवारीख-इ-फीरोज़ी" लिखा। अमीर खुसरो बलबन तथा अलाउद्दीनके राजकवि थे। अबदुल्ला ने "तवारीख-इ-दाऊदी" लिखा ।

समाज—इन्हीं दिनों में बाल्य-विवाहकी रीति चल निकली। लोग ७-८ वर्षकी लड़कियोंका व्याह देना परम कर्तव्य समझने लगे। बड़े लोग बहु विवाह करते थे। हार होने के बाद राजपूत लोग अपनी बहू बेटी को जला कर नंगी तलवार हाथ में ले शत्रु सेना में कूद पड़ते थे। इस रीतिका नाम जौहर व्रत था। इनकी देखा देखी मुसलमान भी ऐसा करने लगे थे। तैमूरने अपनी पुस्तकमें ऐसी एक घटनाका वर्णन किया है। अला-उद्दीन जब दोआबके हिंदू निवासियोंसे हद्दसे अधिक कर लेने लगा। तब एक लेखक* का यह कहना है कि अच्छे कुलकी स्त्रियां मुसलमानोंके घरमें काम करने लगी थीं। हिन्दू स्त्रियां विधवा होने पर सती हो जाती थीं। परन्तु इसके लिये अब सुलतान की आज्ञा लेनी पड़ती थी। पर्देकी प्रथा कठिन और साधारण हो गई।

मुसलमान लोग सुख विलास में दिन बिताते थे। इनकी अवनति भी होने लगी थी। शराब पीना, जुआ खेलना और दासी रखना साधारण व्यसन थे। अच्छे कुलकी स्त्रियां भी चरखा चलाती थीं। इनके लिये घरके बाहर जाना बिलकुल असम्भव था। दास दासी रखने की रीति बहुत प्रचलित हो गई थी।

पुरानी बंगला कितावोंके पढ़नेसे उन दिनोंकी सामाजिक रीति-नीतिके बारे में बहुत कुछ पता चलता है। उन दिनों लोग थोड़ेहीसे सन्तुष्ट रहते थे और उनकी आवश्यकताएँ भी

* बर्नी-तारीख-इ-फीरोज़-शाही ।

थोड़ी थीं। रामायण के रचने वाले कृत्तिवास ओझाने गौड़ सुलतानकी दी हुई एक "पटुपकी धोती" बड़े प्रेमके साथ पहिनी। चैतन्यके समय तीन रुपयेका एक भोटिया कम्बल अनमोल समझा जाता था। अधिकतर लोग खेती बारी करते थे। व्यापार करनेके लिये समुद्र-यात्रा करनेमें रुकावट न थी। ज़हाजके कप्तान का नाम "गाबूर" था। मल्लाह "सारि" गाते गाते नाव खेते थे। समुद्रमें लहर उठने पर मल्लाह लोग तेल छोड़कर उसे शान्त करते थे।

शिल्प-कला—दिल्लीके सुलतानोंके समयमें हिन्दुस्तानके प्रत्येक प्रान्तमें बड़ी नामी इमारतें और मसजिदें बनी थीं। दिल्ली की कुतुबमीनार अलतमशके समयमें बनी थी। जौनपुरकी नामी अटाला मसजिद, बंगालेमें पाण्डुआकी अदीना मसजिद, गौड़की सोना मसजिद और दक्षिणमें बीजापुर, अहमदनगर और विजयनगरकी बड़ी बड़ी इमारतें भी इन्हीं दिनों में बनी थीं। रेखागणितकी शकलके अनुसार बगीचे और फुलवारी भी बनने लगीं।

सुलतान लोग धर्म के बड़े पक्के थे। इसलिये उन दिनों चित्र-विद्या की अधिक उन्नति नहीं हो सकी। क्योंकि पैगम्बर साहब की मनाई थी कि चित्रकार मनुष्य आदि के चित्र न बनावें। फीरोज़ तुग़लकने सजावट आदिके लिये भी मूर्ति आदि खींचना बिलकुल बन्द करवा दिया फिर भी फल फूल और रेखागणितकी शकलें अच्छी तरहसे खींची जाती थीं।

खेती और व्यापार—दिल्लीके सुलतानोंके समयमें इस देशके लोगोंको खाने पीनेका कोई कष्ट नहीं था। अला-उद्दीन के राज्यमें लोगोंकी आमदनी कम थी परन्तु अनाज बहुत ही सस्ता था। इब्न-बतूताने लिखा है "मेरे एक परिचित व्यापारी बंगाल में कुछ दिन तक रहे थे। उनके परिवारमें तीन आदमी थे, वे, उनकी स्त्री, और एक नौकर। इस परिवारका सालाना खर्च बारह रुपया था"। ऐसी अवस्थामें किसानोंके हाथ अधिक

रुपया नहीं लगता था। पर कोई भूखों नहीं मरता था। "कोई खेत ऊसर नहीं पड़ा है। प्रत्येक रियायाके मकानके चारों ओर बगीचे और खेत हैं।" वह समुद्रके किनारेके स्थानों की बढ़ती देखकर अचम्भेमें आगया था। पर पानी न बरसनेके कारण किसी किसी देशमें अकाल पड़ता था। जिससे लोगोंको बहुत कष्ट उठाने पड़ते थे। अकालके समय बहुत लोग भूखों मरते थे। सुलतान और अमीर लोग अपने भरसक अन्न बांटकर लोगोंकी सहायता अवश्य करते थे, पर रेल आदिके न रहनेसे अधिक अन्न एक साथ नहीं ला सकते थे, और रियाया बिना अन्नके भूखों मरती थी। उन दिनों मुसलमान व्यापारियोंकी तरह हिन्दू व्यापारी भी दूर दूरके देशोंमें व्यापार करनेके लिये जाते थे। वे पश्चिममें ईरान, अरब, अफ्रिका और मिसर तक और पूर्वमें चीन देश तक सदा आते जाते थे। इस देशसे अनाज, चीनी, रूई मसाला, तरह तरहके कपड़े आदि खूब बाहर भेजे जाते थे। गोलकुण्डेसे कीमती पत्थर, पश्चिमीय किनारेसे सुगंधित वस्तुएं और बंगालसे कपड़े और अनाज परदेशी व्यापारी लोग बड़े चावसे ले जाते थे। उस समयभी अरबी व्यापारियोंके हाथसे इस देशकी चीजें यूरोपको जाती थीं, और हमारे देशकी बनी हुई चीजें वहां बहुमूल्य समझी जाती थीं। दिल्लीकी सल्तनतके अन्तिम दिनोंमें जब पुर्तगीज़ लोगोंने भारतवर्षमें आनेका समुद्री रास्ता निकाला (१४९८ ई०) तबसे यूरोपके साथ सीधे सीधे हमारे देशका व्यापार आरम्भ हुआ।

मुसलमानोंकी जीतके कारण—वीरतामें उन दिनोंके हिन्दू लोग मुसलमानोंसे किसी प्रकार कम नहीं थे, फिरभी युद्ध विद्यामें मुसलमान लोग हिन्दुओंसे बढ़े बढ़े थे। वे केवल ऐसे स्थानोंको लेनेके लिये लड़ते थे, जिसकी युद्ध विद्याके अनुसार कोई विशेषता हो। उन दिनों हिन्दुओंमें एकता बिल्कुल न थी। मुसलमानोंकी संख्या एक तो कम थी पुनः वे बाहरी थे, इसलिये उनमें एकता अधिक

थीं । मुसलमान लोग घोड़ेपर सवार होकर लड़ते थे। पहिले पहल हिन्दू हाथियों पर अधिक भरोसा रखते थे । फिर किसी देशपर विजय प्राप्त करनेके बाद मुसलमान लोग हिन्दुओंकी सामाजिक रीति नीतिपर हस्तक्षेप नहीं करते थे । इसलिये जनताको बहुत दिनों तक पताही नहीं चलता था कि राज्य मुसलमानोंने जीत लिया है । सेना-दलमें भी हिन्दू लोग जाति विचार मानकर खाना करते थे । इसलिये यातो उनको भूखों लड़ना पड़ता था, या "तीन कनौजिया तेरह चूल्हा" बनाना पड़ता था । अन्तिम बात यह है कि मुसलमानोंमें धार्मिक उत्साह हिन्दुओंसे कहीं अधिक था। उनका यह पूरा विश्वास था कि जीत होने से पृथिवीके अधीश्वर बनेंगे और मरनेसे शहीद बनेंगे । इसी बढ़ावेने उनमें बड़ी शक्तिका सञ्चार कर दिया । उन दिनों हिन्दुओंमें धर्मभाव इतना अधिक नहीं रहा और इन्हीं कारणोंसे अन्त तक मुसलमानोंकी जीत हुई ।

(१०) भारतवर्षमें पुर्तगीज़ व्यापारी।

मध्य युगका व्यापार—भारतवर्षके इसलाम धर्मवाले विजयी लोग पश्चिमोत्तरीय कोनेके स्थलपथसे आये थे। परन्तु इस देशके ईसाई व्यापारी विजयी लोग दक्षिणकी ओरसे जल पथ से आये। तुमसे पहिले ही कहा गया है कि इसलामी दुनियांमें जब अरबके लोगोंका रोबदाब जमा हुआ था, तबहीसे उन्होंने कुल भारतीय व्यापार अपने अधीन कर लिया था। सीधे पन्द्रहवीं सदी तक यह व्यापार उन्हींके हाथमें रह चुका था। अरब तथा ईरानके लोग हिन्दुस्तानसे रेशम और सूती वस्त्र आदि, मणि-मुक्ता, रंग (जैसे नील), सुगन्धित वस्तु और हर प्रकारके मसाले आदि ले जाकर भूमध्य सागरके पूर्वी बन्दरगाहों तक पहुंचाते थे। वहांसे विनिस और जेनोआ (इटली में) के व्यापारी लोग उनसे ये सब वस्तु खरीद कर यूरोपके दूसरे दूसरे देशोंमें सौ गुना दामपर बेचते थे। इन दिनोंमें यूरोपसे केवल नाना प्रकारके ऊनी वस्त्र, चमड़े, टिन और शीशा इस देशमें आते थे। चौदहवीं तथा पन्द्रहवीं सदीमें भारतीय व्यापारका केन्द्र होने के कारण उन दिनोंमें विनिस और जेनोआसे बढ़ कर दूसरा कोई समृद्धिशाली स्थान यूरोपमें नहीं रहा।

उन दिनोंमें भारतके साथ व्यापार करनेके लिये दो प्रधानमार्ग थे। (१) रूम और भूमध्यसागरके पूर्वीय बन्दरगाहोंसे स्थलपथ के द्वारा लोग ईरानकी खाड़ीतक आते थे। फिर वहांसे जलपथ के द्वारा भारतवर्षकी पश्चिमीय तटभूमि तक; वा (२) स्थलपथसे मिसर पार कर सुयेज़, पुनः लाल समुद्रसे जलपथके द्वारा भारत-वर्षकी पश्चिमीय तट भूमि तक पहुंचते थे। परन्तु १४५३ ई० में तुर्की लोगोंने रूम जीता और धीरेधीरे भूमध्यसागरके पूर्वीय भागमें अपना रोबदाब भली भांति स्थापित कर लिया। इसके कारण विनिस और जेनोआके हाथसे कुल भारतीय व्यापार चला गया।

इस प्रकार जब मुसलमानोंने ईसाइयोंके हाथसे कुल व्यापार ले लिये तब ईसाई लोग भारतमें आने का एक सीधा व्यापारिक पथ खोज निकालने के लिये तत्पर हुए। और चूंकि स्थल मुसलमानोंके अधीन था इसलिये इन्हें वाध्य होकर जलपथ की शरण लेनी पड़ी।

जलपथकी खोज—यूरोपकी भिन्न भिन्न जातियोंने ... से यह जलपथकी खोजमें अपनी सारी बुद्धि तथा ... भिड़ाई, तबसे बहुतसे नये नये स्थान खोज निकाले गये। स्पेन वालोंने १४९२ ई०में कोलम्बसके अधीन हो अमेरिका का आविष्कार किया; पुर्त्तगाल वालोंने अफ्रिकाके बहुतसे स्थानों को खोज निकाले; अंग्रेज़ोंने न्यूफाउण्डलैंण्ड, ... आदि स्थानों को खोज निकाले और रूसके साथ व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित कर लिया; तथा नारवे वालोंने पोलर प्रदेश की बहुत सी जगहें खोज निकालीं। पुर्त्तगालके कुमार हेनरी ने आजीवन-नौ विद्या तथा नक्शे आदिका अध्ययन ... (मृत्यु १४६० ई०)।

वास्को डा गामा—अन्तमें १४९७ ई० के जुलाई महीने में कप्तान वास्को डा गामा अपने साथ कुल तीन जहाज ले लिसबनसे निकल पड़ा। २० नवेम्बर तक उसने उत्तमाशा अन्तरीप की प्रदक्षिणा कर ली थी। १४९८ के मार्चके ... दिन वह मोजाम्बिककी तट भूमिको पहुंचा। वहींपर ... सर्व प्रथम अरबके लोगोंसे परिचय किया। एप्रिलमें वह मोम्बासा पहुंचा। वहीं उसने पहिले पहल हिन्दोस्तानी व्यापारियों को देखा। फिर एक अरब जातिके समुद्री पथ प्रदर्शककी सहायता से जुलाईके महीनेमें वह कालिकट पहुंचा। पृथ्वीके इतिहास में यह एक स्मरणीय तिथि है। इस प्रकार जल-पथके आविष्कार होनेपर एशिया, अफ्रिका तथा अमेरिकाके कुल व्यापार ... के हाथ लगे। व्यापारकी उन्नतिके साथही साथ नाना ...

के यन्त्रादिके आविष्कारभी हुए। संसारमें यूरोपकी प्रधानता हुई और साथही साथ पूर्वके कुल देश कच्चा मालके देने वाले बन गये। इस मामलेमें अन्त तक इंगलैण्डकी विजय हुई। अतः वास्को डा गामाके द्वारा हिन्दुस्तानमें आनेके लिये जलपथका आविष्कार अंग्रेज़ जातिके इतिहासमें भी एक स्मरणीय घटना है। इसी प्रकारके यूरोपके धर्मान्ध वणिक योद्धा 'अरब वालों, तुर्कों तथा हिन्दुओंको नाश करनेके लिये और गंगाका पानी पीनेके लिये' हिन्दोस्तानमें पहुंचे।

यूरोपके साथ सीधा व्यापार करके लाभ करनेकी आशासे कालीकटके ज़ामोरिन्ने पहिले पहल डा गामासे अच्छाही बर्त्ताव किया। पश्चात् अरबी सौदागरोंका दबाव पड़ने पर उसने उनका विरोध किया। इसलिये पुर्त्तगीज़ोंने बड़ा उपद्रव मचाया। अन्तमें १४६६ ई० में डा गामा घर लौटा।

बादकी चढ़ाइयां—डा गामा घर तो अवश्य लौटा परन्तु वह इस देशकी धन सम्पत्ति और साथही साथ यहांके लोगोंकी राजनीतिके क्षेत्रमें असफलताकी बातोंसे अच्छी रीतिसे परिचित होगया। इस आविष्कारके बादही पूर्त्तगालके राजाने "Lord of the conquest, Navigation and Commerce of Ethiopia, Arabia. Persia and India" की लम्बी उपाधि प्राप्त की। १५०० ई० में कप्तान कब्राल (Cabral) के अधीन एक शक्तिमान् जहाज़ी बेड़ा भेजा गया। उसने रास्ता भूल कर ब्रेज़िल का आविष्कार किया। अन्तमें कालिकट पहुंच कर एक कोठी स्थापित की और लूट मार कर घर लौटा (१५०१ ई०)। दूसरे साल वास्को डा गामा पुनः एक भारी जहाज़ी बेड़ा लेकर इस देशमें आया और एकाएक कालिकट पर चढ़ाई की। पुर्त्तगीज़ोंके पास तोप आदि रहनेके कारण उन्होंने आसानी से बन्दरगाहको ले लिया और नगरके निरस्त्र अधिवासियों पर बड़ा अत्याचार किया। इसके बाद डा गामाने चालबाज़ी

करके ज़ामोरिन्के विपक्षके राजाओंको उसके विरुद्ध उभाड़
इसी रीतिसे धीरे धीरे उसने पश्चिमीय तट-भूमि पर पुर्त्तगीज़
रोबदाब अच्छी रीतिसे जमा दिया।

इसके बाद पुर्त्तगाल वालोंने अधिकतर जहाज़ और से
अफ्रिका और भारतवर्षमें भेजना आरम्भ किया और इन महा
की तट-भूमि पर किले और छावनी आदि बनवाने लगे।
यूरोपकी और और जातियोंको भारतमें आनेसे रोकना चाहते
इसलिये उन्होंने ऐसी नीतिका अवलम्बन किया। १५०५ ई०
आलमेदा (Almeida) भारतका प्रथम राज-प्रतिनिधि बन
आया। १५०६ ई० तक पुर्त्तगीज़ लोग लङ्का तथा मलय प्राय
तक पहुंच गये। इस देशमें इन्होंने प्राचीन नीतिके अनुयायी
कर काम किया। प्रयोजन होनेपर हिन्दू राजाओंको तथा मुसल
सुलतानोंको एक दूसरेसे लड़ा देते थे और कभी हिन्दुओं
मुसलमानोंसे लड़ा देते थे। परन्तु हिन्दुओंकी अपेक्षा मुस
मानोंसे वे अधिक द्वेष रखते थे। अतः बारी बारीसे वे बीजा
और गुजरातके सुलतानोंसे मुग़ल बादशाहसे, ईरानके शा
मिसर तथा, तुर्कके सुलतानोंसे लड़े। लड़ाईमें सदैव इ
जीत होती थी। इसका कारण यह था कि उनके पास
बन्दूक आदि होते थे तथा उनका जहाज़ी बेड़ा भी अच्छा
था। अतः सोलहवीं सदीमें पूर्व तथा पश्चिममें पुर्तगाल वालों
बढ़कर और कोई समुद्रीय शक्ति नहीं रह गई।

आलबुकर्क(१५०६–१५ ई०)—आलबुकर्क (Al-
querque) राज-प्रतिनिधि बनकर हिन्दुस्तानमें आया।
बीजापुरसे गोआ (Goa) नगर जीत लिया (१५१० ई०)।
पश्चिमी किनारे पर पुर्त्तगीज़ लोगोंका रोब बढ़ाया। गोआ थो
दिनोंमें भारी व्यापारका स्थान बन गया। १५११ ई० में
मलक्का नगर जीता और भारतीय द्वीप समूह (The In
Archipelago)में अपना व्यापार बढ़ाया। इसके बाद हिन्दु

व्यापारियोंसे कुल व्यापार छीननेके लिये उसने एडेनपर चढ़ाईकी और अरमूज़ लेही लिया (१५१५ ई०)। आलबुकर्क इस देशमें एक रियासत स्थापित करना चाहता था। इसलिये हिन्दुस्तान की राजनीतिमें हस्तक्षेप करता था। इसका फल यह हुआ कि हिन्दुस्तानका सब व्यापार पुर्त्तगीज़ोंके हाथ लग गया।

आलबुकर्कका प्रबन्ध—राजकाजमें आलबुकर्क बड़ा चतुर था। उसने कई एक नये नियम चलाये जिनका अनुकरण उसके बाद आनेवाले फरासीसी और अंग्रेज़ोंने किया। उसने गोआ देशको कई एक ज़िलेमें बांट दिया। हरेक ज़िलेका मालिक एक पुर्त्तगीज़ थानेदार होता था। वह मालगुज़ारी वसूल करता था और फौजदारी मुकद्दमोंका फैसला भी करता था (आज कलके District Collector और Magistrate के कामसे मिलान करो)। हिन्दुओं पर वह बड़ा प्रसन्न था और दफ्तरोंमें वह उनको नौकरी भी देता था। उनको काम सिखानेके लिये स्कूल खोले गये उसनेही पहले पहल वहांके निवासियोंको सिपाही बनाना आरम्भ किया। सती होने की प्रथा भी उसने बन्द कर दी।

आदिल शाह सूरके समयमें (१५५४ ई०) पुर्त्तगीज़ बंगालमें गये और धीरे धीरे चटगांव, सन्द्वीप (The Sandwip Isles) आदि में अपना प्रभुत्व स्थापित किये। सौ बरस तक पुर्त्तगीज़ बिना रोक टोकके व्यापार करते रहे। लाभ उठानेके लिये वे लोगोंको बहुत सताते भी थे। इस लिये शाहजहांके समयमें उन लोगों को हुगली से निकाल दिया गया।

पुर्त्तगीज़ोंकी घटती—इसके पश्चात् १५८० ई० में पुर्त्तगाल राज्य स्पेनके साथ मिल जानेके लिये और नये नये आये हुये डच् (Dutch) और अंग्रेज़ व्यापारियोंकी डाहसे इस देश में पुर्त्तगीज़ लोगोंकी हार हुई। पुर्त्तगीज़ों की हार होनेके और भी बहुतसे कारण हैं, उनकी व्यापार नीति "इजारा" पर

बनी हुई थी। अर्थात् वे स्वयं कुल लाभ उठाना चाहते थे और दूसरों को अफ्रिका और हिन्दोस्तानके साथ व्यापार करनेसे रोकना चाहते थे। इसलिये उनको समुद्रके किनारे किनारे किले आदि बनाने और पहरेदार रखने पड़े थे। इसमें खर्च बहुत होता था। फिर उनका केन्द्र स्थान गोआ लड़ाईके लिये बहुत अच्छी जगह होने पर भी व्यापारके लिये ठीक जगह नहीं है। उसका कारण यह है कि उसके पीछे कलकत्ता, बम्बई या रंगूनकी ऐसी उपजाऊ भूमि नहीं है जहांकी पैदावार बाहर भेजी जा सके। अन्तिम बात यह है कि वे धर्मके नामपर गरीब प्रजापर भारी अत्याचार करते थे तथा विजयके मदने उनके चरित्रको भी बिलकुल बिगाड़ दिया था। पुर्त्तगीज़ राज प्रतिनिधियोंके बारेमें यह कहा गया है कि 'वे प्रथम वर्ष गद्दीपर बैठाये जाते थे, दूसरे वर्ष डाका मारते थे और तीसरे वर्ष घर चल देते थे'। उन्होंने अफ्रिकासे अगणित निग्रो दास लाकर सारी पश्चिमीय तट भूमिके रूप रंग तक बदल दिये। उपकारमें उन्होंने इतनाही किया था कि उनकी देखा देखी देशी शक्तियां भी अपने सेना दल को यूरोपीय नियमसे युद्ध-विद्या सिखाने लगीं तथा लड़ाइयोंमें तोप, बन्दूक आदिका व्यवहार करना आरम्भ किया। अभी तक गोआ, डामन और डिऊ द्वीप पुर्त्तगीज़ोंके अधीन हैं।

सारांश

१४९८ ई०	वास्को डा गामा हिन्दुस्तानमें आया
१५०५ „	आलमेदा
१५१० „	आलबुकर्कने गोआ जीता

मुग़ल साम्राज्यकी कथा।

(११) बाबर (१५२६-३० ई०)।

बाबर—बाबरका जन्म १४८३ ई० में हुआ था। उसका [पि]ता तुर्की तैमूरलंगके वंशका था और उसकी मां मुग़ल सर्दार जंगिश (चंगेज़) खां की सन्तति थी। इसीसे इतिहास में इसका नाम मुग़ल पड़ा। पर असलमें वह तुर्क था। बाबरने हिन्दुस्तानमें मुग़ल साम्राज्यकी नींव डाली।

मुग़ल साम्राज्यकी विशेषता—पानीपत आदिकी लड़ाइयां जीत कर बाबरने भारतवर्षमें जो नया साम्राज्य स्थापित किया वह पूर्वकी स्थापित सलतनतसे कई बातोंमें विभिन्नता रखता था। इस नवीन साम्राज्यसे हिन्दू राजपूत तथा मुसलमान अफ़-गान, तुर्क, ईरानी, मुग़ल आदि जातियोंकी मार्मिक सहानुभूति थी और सभी लोगोंने इसकी उन्नति करनेमें सहायता दी थी। वस्तुतः यह एक इसलामी साम्राज्य था। फिर भी ईरान तथा रूम आदि पृथ्वीके अन्यान्य सुलतानोंसे इसका बराबरी का बर्ताव रहा। सुलतान लोग अपनेको खलीफा आदिके प्रतिनिधि मानते थे। सुलतानोंके समयमें धर्मनीति और राष्ट्रनीतिमें कोई भेद नहीं था। अतः उन दिनोंमें मौलवी और उल्माओंका प्रभाव बहुत बढ़ा चढ़ा था। परन्तु मुग़ल साम्राज्यमें राजनीतिको प्रधान स्थान दिया गया और धर्मको दूसरा स्थान मिला। हिन्दुओंसे अच्छी तरह परिचित होनेके कारण उनके शास्त्र ग्रन्थ, साहित्य आदि का पठन-पाठन आरम्भ हुआ। हिन्दू मुसलमानोंमें एकता होनेके कारण रहन सहन, शिल्प-कला, वास्तु-विद्या आदि विषयों

में एक नवीन प्रणाली चल निकली। इन्हीं दिनोंमें हमारे देशसे यूरोपका जल-पथ द्वारा सीधा सम्बन्ध स्थापित हो गया।
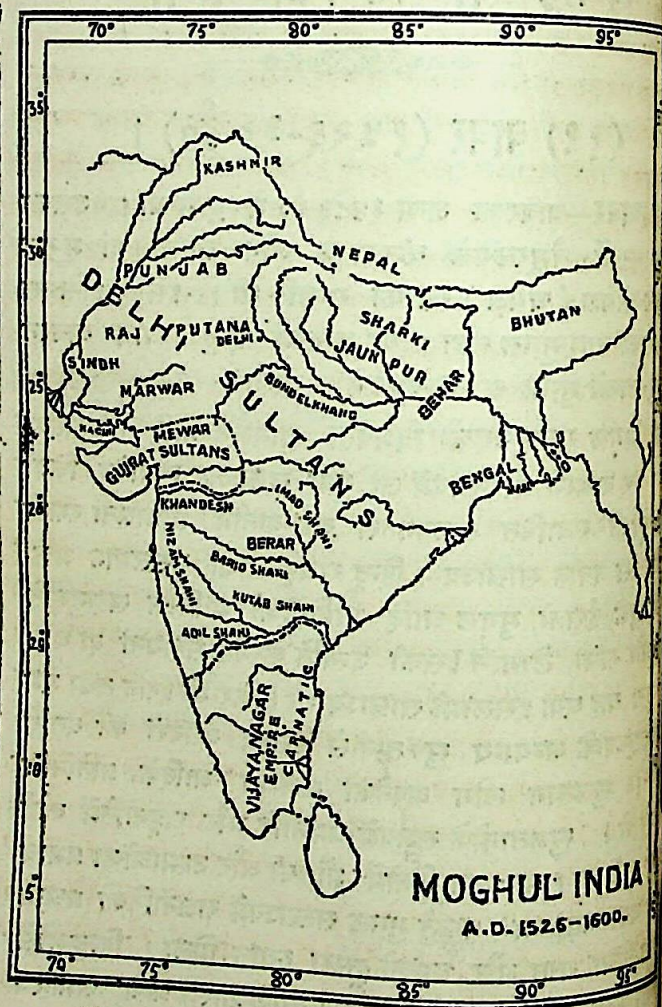
पूर्वजीवन—बाबरकी कथा पढ़नेसे हम लोग यह सीखते हैं कि किसी बड़े कामको करनेके लिये कितनी दृढ़ता और धैर्य

की आवश्यकता पड़ती है। जब बाबर का पिता मर गया तब वह केवल बारह बरसका था और तभीसे उसको अपनी जान बचानेके लिये सदा शत्रुओंसे लड़ना पड़ता था। "जिसकी लाठी उसकी भैंस" ही उस समय की नीति थी। निर्बलोंको बड़ी विपत्ति उठानी पड़ती थी। बाबरको बालक समझ कर उसके सम्बन्धी लोग उसके शत्रु बन गये और उन्होंने उसकी फरगना नामकी रियासत छीन ली। बाबर अपने पिताका राज्य फिर वापस पानेके लिये पन्द्रह बरस तक लड़ता रहा। जब बहुत दिन तक लड़ भिड़कर अपना राज्य जीत न सका तब बाबर कुछ तुर्की मित्रोंके साथ काबुल चला आया। और उसने उस देशको १५०४ ई० में जीत लिया। वहींसे हिन्दुस्तानके पश्चिमके कोनेपर उसने चार पांच बार चढ़ाई की (१५१९-२४ ई०)। परन्तु कुछ कर न सका।

दौलत खां—इस समय इब्राहीम लोदी दिल्लीका सुलतान था। उससे अफ़गान सर्दारोंसे बनती न थी। कितनेही स्थानों में बलवा होने लग गया था। अन्तमें पंजाब के सूबेदार दौलत खांने काबुल जाकर बाबर को इसलिये आमन्त्रित किया कि हिन्दुस्तानमें आकर वह इब्राहीमके अत्याचारोंसे उसकी रक्षा करे।

बाबरकी चढ़ाइयां—१५२४ ई० में एक सेना लेकर बाबरने पंजाबके कुछ हिस्से जीत लिये। लेकिन दौलतखांसे बिगाड़ हो जानेके कारण उसको फिर काबुल लौटना पड़ा। १५२५ ई० के अन्तमें उसने एक बड़ी भारी सेना लेकर हिन्दुस्तानपर फिर चढ़ाई की। सारे पंजाबको जीतकर १५२६ ई० में वह पानीपतके मैदानमें आ खड़ा हुआ। हिन्दुस्तानके इतिहासमें पानीपत बड़ा प्रसिद्ध स्थान है। इसी जगह पर तीन तीन बार हिन्दुस्तानके भाग्योंका निपटारा हुआ है, जिसका यह पहला अवसर था।

पानीपतकी पहिली लड़ाई (१५२६ ई०)—बाबरके

साथी शत्रुकी बड़ी सेना, हिन्दुस्तानी रिसालेके हमले और लड़ाईके बड़े बड़े हाथियोंकी बातें सुनकर बहुत घबड़ा गये थे। इसलिये बाबरने सातसौ बैलगाड़ियां एक साथ बांधकर अपने सामने रक्खीं। बीचमें उसने हमला करनेके लिये जगह खाली रक्खी। उसने अपने तोप और बन्दूक छोड़ने वालोंको बीचमें रक्खा और सेनाके दोनों ओर मुग़ल घुड़सवार रख दिये। सामने बहुत दूर तक उसने बड़ी खाइयां खुदवा दीं। इब्राहीम लोदी अपने साथ एक लाख सेना लेकर तड़के वहां पहुंच गया। सूरज निकलतेही लड़ाई छिड़ गई। लोदीकी सेना बड़ी बीरताके साथ आगे बढ़ी। पर थोड़ी दूर जातेही बहुतसे हाथी और घोड़े गड्ढोंमें गिर पड़े। उससे उधर बड़ी गड़बड़ी मची। इस समयपर मुग़ल घुड़सवारोंने इब्राहीमकी सेनाके दोनों बगल घूमकर पीछेसे हमला किया और सामनेसे उस्ताद अलोकुलीने तोप दागना शुरू कर दिया। इस तरह जब सुलतानकी सेनापर चारों ओरसे हमला होने लगा तब वह भागने लगी। सुलतान मारा गया और उसके साथ हजारों सिपाही भी मारे गये। इसी तरहसे दोपहर होते होते बाबरने पानीपतकी पहिली लड़ाई जीत ली। दूसरे दिन दिल्ली लेकर मुग़ल साम्राज्यकी नींव डाल दी और बादशाह बन बैठा। शीघ्रही आगरा ले लिया गया।

राना संग्रामसिंह—बाबरके समय में राजपूतोंका मुखिया चित्तौरके राना संग्राम सिंह था। उसके समान वीर उस समय कोई न था। लड़ते लड़ते उसको ८० स्थानोंमें चोटें लगीं थीं। और लड़ाईमें उसकी एक आंख फूट गई थी और एक बांह भी कट गई थी। लोग उसे 'आदमीका टुकड़ा' कहते थे। वह मुसलमानोंको हिन्दुस्तानसे निकालकर एक हिन्दू साम्राज्य स्थापित करना चाहता था। लेकिन जब और एक मुसलमानने आकर दिल्ली लेली तब उसने अपना मतलब पूरा करनेके लिये बड़े बड़े राजपूत सर्दारोंके साथ इस

विजयी वीरसे लड़नेकी तैयारी की। फतहपुर सिकरीके पास खनुआमें दोनोंको एक बड़ी भारी लड़ाई हुई। (१५२७ ई०)।

राजपूतोंसे लड़ाई (१५२७ ई०)—राजपूतोंकी वीरता की बात मुग़लों को मालूम थी। बाबरने इसके पहले बड़ी बड़ी लड़ाइयां लड़ीं थीं; पर राजपूत ऐसे वीरोंके साथ वह कभी नहीं लड़ा था। बाबरने सारी सेनाको एकत्रित करके उनसे यह कहा "एक दिन तो मरनाही है। दुनियांमें सदा कोई जीता न रहेगा। जब ऐसी बात है तब भागकर अपनी जातिका अपमान क्यों करूं? ईश्वरकी इच्छा होगी तो हमी लोग लड़ाई जीतेंगे। सारी सेनाने कुरान छूकर कसम खाई कि या तो लड़ाई जीतेंगे" या जान दे देंगे। इसी अवसर पर बाबरने शराब पीना छोड़ दिया। तब वे खुदाका नाम लेकर लड़ने चले। राजपूत आगे बढ़े और लड़ाई छिड़ गई। मुग़ल सेनाने चारों ओरसे हमला किया और तोपें दगने लगीं। राजपूत बड़ी वीरताके साथ लड़े। पर मुग़ल घुड़सवार घूमकर उनके पीछेसे हमला कर दिया। इससे वहां बड़ी गड़बड़ी मची और अन्तमें राजपूतों की हार हुई। राजपूतोंने अपने भरसक चेष्टा की थी पर वे जीत न सके।

इस लड़ाईमें हार होनेके कारण राजपूतोंकी शक्ति बिलकुल टूट गई। इसलिये थोड़ेही दिनोंके बाद जब अफगान और मुग़ल हिन्दुस्तान में राज्यके लिये आपसमें लड़ मरते रहे तब राजपूत लोग मुंह ताकते ही रह गये। ५० बरस बीतने पर जब राना प्रताप सिंहका उदय हुआ तब मुग़ल साम्राज्य इस देशमें अच्छी तरहसे जम गया था। इसीलिये उनसे भी कुछ करते न बन पड़ा।

अफ़गानोंसे लड़ाई (१५२८ ई०)—इसके बाद बाबरने यमुना पार होकर चन्देरी गढ़ (ग्वालियर राज्यमें) ले लिया। फिर १५२८ ई० में उसने बिहार और बंगालके अफ़गान

सरदारों को घाघरा और गंगा के संगमपर हराया। घाघराकी लड़ाईमें अफ़गानोंकी हार तो अवश्य हुई पर राजपूतोंकी तरह उनकी शक्ति बिलकुल टूट न गई। हार होनेके बाद अफ़गान झट बंगाल और बिहार को भाग गये। वहां उन दिनों उनकी धाक अच्छी रीतिसे जमी हुई थी। शीघ्रही अफ़गान लोग शक्तिशाली बन गये। बाबरकी इस भूलका फल बेचारे हुमायूंको भोगना पड़ा है।

इन जीतोंका परिणाम यह हुआ कि बाबरका साम्राज्य आमू दरिया (Oxus) से लेकर बिहार तक, और हिमालयसे लेकर ग्वालियर तक फैल गया।

बाबरकी मृत्यु—सन् १५३० ई० में बाबरकी मृत्यु हुई। उसकी मृत्युके बारेमें एक अजीब कहानी कही जाती है। एक बार उसका बेटा हुमायूं बहुत बीमार पड़ गया। जब उसके जीने की कोई आशा न रह गई तब बाबरने एक फकीरके कहनेसे हंसते हंसते अपनी जान हुमायूं के बदलेमें निछावर कर दी। उसी दिनसे हुमायूं तो अच्छा होने लगा पर बाबर बीमार पड़ने लगा। अन्तमें वह मर गया।

बाबरने जिन जिन देशोंको जीता था उनका प्रबन्ध ठीक न कर पाया था। हिन्दुस्तानमें उसका अधिकतर समय लड़ाइयोंमें बीता। उसने लड़कर देशमें अपना अधिकार मात्र जमाया था पर गड़बड़ीसे देशको बचा न सका। अभीतक इधर उधर उसके शत्रु लोग छिपे थे और उसपर हमला करनेके ठीक अवसरकी प्रतीक्षामें थे।

बाबरका चरित्र—तुमने देखा है कि बाबर कैसा वीर और परिश्रमी था। हिन्दुस्तानमें जितनी नदियां उसके सामने पड़ीं उन सबोंको उसने तैरकर पार किया था। उसका मन पानीकी तरह स्वच्छ था। कितनी ही विपत्ति क्यों न आपड़े वह सदा प्रसन्न रहा करता था। बड़े भारी शत्रु तथा कपटियों

का भी विश्वास करता था। बारबार धोका खानेपर भी वह उनको क्षमा कर देता था। वह बड़ा भारी दाता भी था। उसके मित्र उसे "कलन्दर" कहते थे। उन दिनों उसके बराबर शिल्पकलाके जानने वाले लोग बहुतही कम थे। कारीगरीमें, तुर्की और फारसीमें कविता बनानेमें, गाने बजानेमें, बाग़-बानीमें तथा वास्तु-विद्यामें बाबरके समान कोई न था। उसका चरित्र-बल भी कम न था। जिसका प्रमाण यह है कि इतने दिनोंकी शराब पीनेकी पुरानी आदत भी उसने एकही दिनमें छोड़ दी।

उसने स्वयं अपना जीवन चरित्र लिखा था। इसका नाम "बाबर-नामा" है। इसके पढ़नेसे हम लोगोंको बाबरके लिखने का ढंग देखकर बड़ा अचम्भा करना पड़ता है। क्योंकि इसमें बाबरने उन गड़बड़ीके दिनोंका सच्चा इतिहास ही नहीं लिखा है वरन् यह उन दिनोंका सच्चा भूगोल भी है। जैसे उसके बयान किये हुए आदमी हमारे सामने जीते जागते खड़े हो जाते हैं वैसेही जिन जिन देशोंकी उसने सैर की थी उनका भी पूरा पूरा हाल हमको मिलता है। सबसे भारी बात यह है कि उसके पढ़नेसे हमको यह पता चलता है कि बाबरका दिल फूलके बराबर कोमल था। एक प्यारे मित्रके मरनेपर वह लगातार सात दिन तक रोता रहा। सच है उन दिनों बाबरके ऐसा वीर योद्धा साहसी सेनापति, प्यारा भाई, सच्चा मित्र दूसरा और कोई न था।

सारांश

१४८३ ई०	बाबरका जन्म
१५०४ "	" ने काबुल जीता
१५२४ "	" ने पञ्जाब जीता
१५२६ "	पानीपतकी पहिली लड़ाई

१५२७ ,, फतहपुर सिकरीकी लड़ाई
१५२८ ,, घागराकी लड़ाई
१५३० ,, बाबरकी मृत्यु

(१२) हुमायूं।

(१५३०—१५५६ ई०)

विपत्तियां—हुमायूं १५०८ ई० में पैदा हुआ। यह बाबर का सबसे बड़ा बेटा था। हुमायूं २३ वर्षकी अवस्थामें गद्दी पर बैठा। उसके और भी तीन भाई थे। कामरान काबुल और कन्दहारका तो मालिक था ही, पीछेसे उसने पंजाब भी दबा लिया। और दो भाइयोंको हुमायूंने हाकिम बना दिये। कामरानके स्वतंत्र हो जानेसे हुमायूंको बड़ी असुविधा हुई। क्योंकि गुजरातसे बहादुर शाह और बङ्गालसे पठान लोग उसे खूब छेड़ने लगे। पश्चिमका मार्ग बन्द रहनेके कारण उस मार्गसे आये हुए परदेशी सिपाहियोंको वह अपनी सेनामें भरती नहीं कर सकता था। और कामरान ऐसे लोगोंको अपनी सेनामें ले लेता था। अब हुमायूंके पास केवल दिल्ली, ग्वालियर और सुबा जौनपुर रह गया।

हुमायूं आदमी तो अच्छा था लेकिन बड़ा विलासी और आलसी था। उस समय जब कि मुग़ल साम्राज्यकी केवल नींव भर डाली गई थी और चारों ओर शत्रु छिपे हुए थे, ऐसी दशामें एक आलसी आदमी कैसे राज्यकी रक्षा कर सकता था! परिणाम यह हुआ कि हुमायूं अधिक दिनों तक राज्य नहीं करने पाया।

गुजरात—गुजरातके सुलतान बहादुरशाहने राना संग्राम सिंहके मरनेके बाद मालवा जीत कर मेवाड़पर चढ़ाई की। इस

पर रानी कर्णावतीने हुमायूं से सहायता मांगी। हुमायूंने मेवाड़से बहादुरशाहको निकाल दिया और सारे मालवा और गुजरातको जीतकर अपने राज्यमें मिला लिया। बहादुरशाह भाग कर ड्यू द्वीपमें पुर्तगीज़ोंकी शरणमें आया। इसके बाद शेर शाह से लड़ाई छिड़नेपर बहादुरने उन देशोंको फिर ले लिया।

शेर शाह—शेरखां सहसरामके जागीरदारका बेटा था। १४८६ ई० में वह पैदा हुआ था*। इसके लड़कपनका नाम फ़रीद है। एकबार उसने तलवारसे एक शेर मार डाला था, तबसे उसका नाम शेर खां पड़ा। पहिले शेर खां जौनपुरके सुलतानोंकी नौकरी करता था। बाबरने जब जौनपुर जीत लिया तब शेर खां उसका नौकर हो गया। इसी समय शेर खांने मुग़लोंकी दुर्बलताओंसे भलीभांति परिचित होगया था। वह स्पष्ट रूपसे कहता था कि "इन विदेशियोंको हिन्दुस्तानसे भगा देना बिलकुल आसान है। स्वयं बादशाह राज़ काज़की देखभाल करते नहीं। लालची और निर्दय अफसर लोग मनमाना काम करते हैं। यदि कुल अफगान लोग एक साथ होकर मेरी सहायता करना स्वीकार करें तो मैं ही इस कामको पूरा कर सकता हूं।" बाबर के मरनेके बाद हुमायूं जब गुजरातमें लड़ रहा था, तब उसने धीरे धीरे बिहार देश जीता। कुछ दिनोंके बाद चुनारगढ़ लेकर उसने बंगाल पर चढ़ाई की। बंगालके सुलतानने हुमायूं से सहायता मांगी। हुमायूं गुजरातसे लौटकर बिहार की ओर चल दिया। वह जब तक चुनारगढ़ घेरकर बैठा रहा तब तक शेर खांने बंगाल जीत लिया और सारा कीमती माल रोहतसगढ़में ले जाकर छिपा रक्खा। जब हुमायूं चुनार जीतकर बंगालको गया, शेर खांने पीछेसे घूमकर चुनार आदि जो जो जगहें हुमायूंने ली थीं उन्हें फ़िरसे अपने हाथमें कर

*Qanungo—Sher Shah.

लिया। उधर हुमायूं गौड़ लेकर वहां बड़े सुखमें दिन बिताने लगा। बरसात होनेके कारण बंगालमें आने जानेके रास्ते भी बन्द थे। इसलिये हुमायूं को वहीं ठहरना पड़ा।

अब हुमायूं को यह पता लगा कि उसके भाई हिन्दालने आगरेमें बलवा किया है। समाचार पातेही वह आगरेको रवाना हुआ, पर शेरखांने उसको रास्तेमें ही रोका, और गंगाके किनारे १५३९ ई० में चौसा (शाहाबाद जिलेमें) की लड़ाईमें हुमायूंको बेतरह हराया। इस लड़ाईमें बहुतसे मुग़ल मारे गये और कुछ भागते समय गंगामें डूब मरे। हुमायूं भी डूबने ही चाहता था कि एक भिश्तीने उसकी जान बचाई। शेरखां अब शेरशाहकी उपाधि प्राप्तकर बंगाल और बिहारका सुलतान बन गया। दूसरे वर्ष (१५४० ई०) में उसने फिर हुमायूंको कनौजकी लड़ाईमें बिलकुल हरा दिया। हुमायूंको भागना पड़ा और शेरशाह दिल्ली और आगरा लेकर स्वयं हिन्दुस्तानका बादशाह बन बैठा। इसी समय उसे सन्तुष्ट करनेके लिये कामरानने पंजाब देश उसे दे दिया।

हुमायूंकी दशा—हुमायूं अब मारा मारा फिरने लगा। किसीने उसकी सहायता न की। जब वह राजपुतानेसे होकर सिन्ध देशको जा रहा था, उन्हीं दिनों अमरकोटमें उसका बेटा अकबर १५४२ ई० में पैदा हुआ। सिन्धसे होकर बहुतसे कष्टोंको झेलते हुए वह ईरान पहुंचा। शाहने पहले पहल उसके साथ बड़ी रुखाईका बर्त्ताव किया। लेकिन जब हुमायूंने शियां* मुसलमान बनना स्वीकार किया, तब उसने उससे शिष्टताका

* (१) शियालोग अबू बकर आदि पहलेके तीन खलीफ़ाओंको नहीं मानते, सुन्नी लोग उन्हींको इमाम कह कर मानते हैं। (२) शियालोग हज़रत अलीको हज़रत मुहम्मदसे बढ़कर या बराबरका मानते हैं, (३) सुन्नीलोग शरीयत (सुन्ना) भागको भी कुरानके बराबर मानते हैं। Sale's Koran

व्यवहार किया। वहां प्रायः दो वर्ष ठहरनेके बाद एक ईरानी सेनाको साथ लेकर उसने कन्दहार, काबुल आदि देश जीत लिये। हुमायूं जिस समय ईरान में था उस समय अकबर कामरानके पास कैद था। अब कामरान कैद कर लिया गया और अकबरको छुटकारा मिला। इस तरह भाईकी शत्रुतासे छुटकारा पाकर हुमायूंने हिन्दुस्तानपर चढ़ाई करके १५५५ ई० में दिल्ली और आगरा फिरसे ले लिया, पर बाबर की तरह वह भी रियासत का प्रबन्ध कुछ न कर सका। एकाएक पैर फिसल जानेसे उसकी मृत्यु १५५६ ई० में हुई। हुमायूं जब भागता फिरता था (१५४०-५५ ई०) उस समय सूर वंशके सुल्तान हिन्दुस्तानमें राज करते थे।

उसका चरित्र—हुमायूंको चाल चलन विचित्र ढंगकी थी। किसी किसी समय वह बहादुर बन जाता था। तब वह किसीकी नहीं सुनता था। वह अकेले सौ आदमियोंका काम करता था। पर काम समाप्त होते ही वह अपने आनन्दमें निमग्न हो जाता था। उसका स्वभाव अच्छा था। वह दयालु, न्यायवान् और मित्रोंको प्यार करनेवाला था। वह सोच विचारकर काम नहीं करता था। उसका मन लड़कों की भांति चञ्चल था। चापलूसी वह बहुत चाहता था। वह न तो बाबर के ऐसा कष्ट सहने वाला था और न अच्छा सेनापति ही था। वह स्वयं कविता बनाता था और गणित तथा ज्योतिष अच्छी तरह जानता था। उसने एक मानमन्दिरभी बनवाने का विचार किया था। वह अपने धर्मका पक्का था। लोग उसे शिया कहते थे।

(१३) सूर वंश ।

शेरशाह (१५४०-४५ ई०)—शेरशाह अफगान था पठान था। हुमायूंके भागनेके बाद उसने मालवा जीता और भूपाल का रायसीन गढ़ जा घेरा। गढ़के हिन्दू सर्दारको आशा दिलाई गई कि उसकी जान और धन सम्पत्ति कुछ न ली जायगी। इस पर उसने शेरशाहके हाथ गढ़ सौंप दिया। पर शेरशाहने अपनी प्रतिज्ञाका पालन नहीं किया और सब हिन्दुओंको मार डाला। पश्चिमके कोनेकी रक्षा करनेके लिये उसने झेलम नदीके किनारे रोहतसगढ़ बनवाया और उधर रहनेवाली जंगली जातियोंको अपने अधीन कर लिया। इसके बाद राजपूतोंके मारवाड़ पर चढ़ाई की, पर कुछ कर न सका। वहां एक बार वह हारते हारते बच गया तब उसने कहा था "हाय! एक मुट्ठी भुट्टे के लिये मैं हिन्दुस्तानकी सलतनत खोने बैठा था!" १५४५ ई० में बुन्देलखण्डमें कालिञ्जर लेनेके समय वह मारा गया। सहसराममें उसका मक़बरा अभी तक वर्तमान है।

उसका प्रबन्ध—शेरशाह बड़ा बुद्धिमान और राजकाजमें चतुर था। पर वह कभी कभी अपनी प्रतिज्ञा पूरी नहीं करता था। उसने थोड़े ही दिन तक राज किया था पर प्रजाकी भलाईके लिये उसने बहुत कुछ काम किये। उसने बंगालसे लेकर पञ्जाब तक एक पक्की सड़क बनवायी। इस सड़कके दोनों ओर उसने पेड़ लगवा दिये और सात सात कोसकी दूरी पर सराय और कूएं बनवा दिये। घोड़ेकी डाक भी उसने बैठाई थी और नापके अनुसार भूमि पर लगान लगाता था। वह स्वयं आमदनी व खर्च की जांच करता था। अमीर लोगोंकी सेनाकी देख भाल भी करता था। प्रत्येक जिलेमें अदालतें स्थापित कर दी गई। वहां काज़ी और मीर अदल इन्साफ करते थे। उसने बंगालके अतिरिक्त सारे हिन्दुस्तानको ४७ सरकारों

बांट दिये, हर एक सरकारको फिर परगनोंमें बांटे। सरकारका खास अफसर एक अमीर होता था। हर परगनेमें एक शिकदार और अमीर मालगुजारी वसूल करनेके लिये होते थे। पैदावारके हिसाबसे किसानोंको लगान देना पड़ता था। बंगाल पर शासन करनेके लिये उसने कई एक अफसर नियुक्त किये। एक अफसरका दूसरेसे कोई सम्बन्ध नहीं था। इन सभों की देख-रेख अमीन करता था। हिन्दू प्रजाको धर्मके लिये वह कभी सताता न था और हिन्दू पण्डितोंको भी दान देता था।

उसका चरित्र—एक साधारण गृहस्थका बेटा होते हुए भी शेरशाहने अपने चरित्रके बलसे राज पद प्राप्त कर लिया। और सम्राट् बनने पर वह राजाओंका आभूषण बना। बुद्धिमत्ता, विज्ञता, अनुभव, राज्य शासन करने तथा लड़ाई भिड़ाईके काममें उसका स्थान अतीव उच्च है। उसने अपने समयको चार भागोंमें विभक्त कर लिया था। इसमें एक भाग राज-काजमें, दूसरा सेना दलकी देख रेख करनेमें, तीसरा धार्मिक कामोंमें और चौथा भाग आनन्द करनेमें व्यतीत करता था। लड़नेके समय वह बड़ा सावधान तथा उत्साही हो जाता था। सदा खाई आदि खोद कर अपने शिविर की रक्षा करता था, तथा तोपखाने और रसद आदि की स्वयं देखरेख करता था। उसका स्वभाव उदार था, बड़ा न्यायवान तथा मालगुजारी और किसानी के कामोंसे भलीभांति परिचित था। वह बड़ा प्रजा पालक था और विचार करते समय वह गरीब और अमीरोंको एकसी दृष्टिसे देखता था।

शेरशाहका बेटा इसलामशाहने सात वर्ष तक राज्य किया (१५५३ ई०)। सूर वंशीय सम्राटोंके उदय होनेके कारण उनके नातेदार और सहायक अफगानोंकी धाक फिरसे जम गई थी। इसलामशाह उनकी शक्ति मिटाना चाहता था। अतः और एक बार राज्य भरमें अशान्तिकी आग भड़क उठी। परन्तु कार्यकुशल

होनेके कारण सम्राटने इन्हें दबा दिया। उसके मरनेके बाद इसलामका एक साला आदिलशाह सिंहासन पर बैठा। वह बिलकुल निकम्मा था और राजकाज उसका हिन्दू वज़ीर हीमू देखता था। सूरवंशका यही अन्तिम सुलतान था।

आदिलशाह हीमू—आदिलशाहके समयमें फिर चारों ओर हलचल मची। पञ्जाबमें शेरशाहके भतीजे सिकन्दर सूर और इब्राहीम सूर आपसमें लड़ने लगे। बङ्गालमें अन्धेर छा गया। इसी समय हुमायूं हिन्दुस्तानको लौटा और सिकन्दर सूरको हराकर उसने दिल्ली और आगरा ले लिया। हीमू बंगालके बलवाइयोंको दबाकर दिल्ली चला। रास्तेमें उसने इब्राहीम सूरको हरा दिया और मुग़लोंसे दिल्ली छीन ली। हुमायूंके मरने पर अकबर मुग़लों का सरदार बना। अकबरके मित्रोंने उसे हिन्दुस्तान छोड़कर भागनेकी सलाह दी। पर अकबर अपने बूढ़े सरदार बैराम खांकी सलाहसे लड़नेके लिये तैयार हो गया।

पानीपत की दूसरी लड़ाई (१५५६ ई०)—१५५६ ई० में पानीपतकी दूसरी लड़ाई हुई। उसमें हीमू हार गया और कैद कर लिया गया। ऐसा सुननेमें आता है कि जब हीमू पकड़कर अकबरके सामने लाया गया तब बैराम खांने अपनी तलवार अकबरके हाथमें देकर कहा—"तुम अपने हाथसे इस काफ़िरका सर उड़ा दो और ग़ाज़ी बनो"। अकबरने उस तलवारसे हीमूका सर छूकर उसे रख दिया। इसके बाद बैराम खांने उस तलवारको उठा लिया और उसीसे बेचारे हीमूका सर उड़ा दिया। इधर आदिल शाह बङ्गालकी एक लड़ाईमें मारा गया। पुनः दूसरी बार हिन्दुस्तानमें पठानोंके राज्य स्थापित करनेका प्रयत्न बेकार हुआ।

सारांश

१५०८ ई०	हुमायूंका जन्म
१५३० ,,	,, को गद्दी मिली
१५३९ ,,	चौसाकी लड़ाई
१५४० ,,	कनौजकी लड़ाई
१५४०-४५ ई०	शेरशाह सुलतान
१५४२ ई०	अकबर का जन्म
१५४५-५३ ई०	इसलाम शाह
१५५३-५६ ई०	आदिल शाह
१५५५ ई०	हुमायूंने दिल्ली और आगरा लिया
१५५६ ,,	पानीपत की दूसरी लड़ाई

(१४) अकबर (१५५६-१६०५ ई०)।

अकबर—हुमायूं जब देश छोड़कर मारा मारा फिर रहा था उसी समयमें अमरकोटमें १५ अक्तूबर १५४२ ई० में इस महापुरुषका जन्म हुआ। सुननेमें आता है कि जब हुमायूंको यह आनन्द समाचार मिला तब उसके पास अपने मित्रोंको भेंट देनेके लिए कुछ कस्तूरी के सिवाय और कुछ भी न था। हुमायूं ने वह कस्तूरी कई हिस्सोंमें तोड़कर अपने मित्रोंको बांटी और उनसे कहा—"इस कस्तूरीकी सुगंधकी तरह मेरे बेटेका नाम चारों तरफ फैल जावे"। दुखी पिताका वह आशीर्वाद पूरा हुआ।

थोड़े ही दिनोंके बाद उसके चचा कामरानने साल भरके बच्चे अकबरको कैद कर लिया। तीन साल बाद हुमायूं ने जब कामरानको हराकर काबुल छीना तब अकबरको भी कैदसे मुक्ति मिली। बहुत यत्न होनेपर भी अकबरने बचपनमें लिखने पढ़नेकी ओर बिलकुल ध्यान नहीं दिया। तथापि वह मूर्ख नहीं

था। वह सदा वाचकोंके द्वारा पठित अच्छी अच्छी पुस्तकें सुना करता था। तथा जलाल-उद्दीन रूमी, ख्वाजा हफीज़ आदि सूफी कवियोंकी रचनाओंसे भली भांति परिचित था। सब धर्मके गूढ़ तत्त्वोंको भी वह आसानीके साथ समझ लेता था। बचपनहीसे अकबर पिताके साथ लड़ने भिड़नेमें समय बिताने लगा। और बराबर लड़ने भिड़नेके कारण वह बहुत शूरवीर और काम काजमें चतुर हो गया था। १४ बरसकी अवस्थामें अकबरने बादशाह बनकर पानीपतकी लड़ाई जीती। असलमें अकबरहीने इस देशमें मुग़ल साम्राज्य जमाया है। जब अकबर सिंहासन पर बैठा था तब कोई जगह ठीक तरहसे उसके अधीन न थी। पचास वर्ष तक राज्य करनेके बाद उसने सारे आर्यावर्त तथा दक्षिणी भारतके कुछ अंशमें मुगल साम्राज्यकी नींव दृढ़ कर दी। इसके अतिरिक्त उसने अपने अच्छे गुणोंसे प्रजाके हृदयमें अपने लिये ऐसा प्रेम और भक्ति पैदा कर दी जिससे उसकी सन्ततिके लोग २०० साल तक निश्चिन्त होकर राज्य शासन करते रहे।

तुमको मालूम है कि हीमूने दिल्ली ले ली थी। पानीपतकी दूसरी लड़ाईका यह फल हुआ कि दिल्ली अकबरके हाथमें फिर आ गई और पांच सालके भीतर बैराम खांने अजमेर ग्वालियर आदि जीत लिये। इसके अतिरिक्त अवध और ज़ौनपुरसे भी उसने अफगानोंको निकाल दिया।

हिन्दुस्तानकी राजनैतिक अवस्था—इस समय भारतवर्षभरमें बहुतसे स्वतंत्र राज्य थे। काबुलमें अकबरका भाई महम्मद हकीम बिलकुल स्वतंत्र था। काश्मीरमें एक अफगान राज करता था। बङ्गाल, बिहार और उड़ीसा सुलेमान करानीके अधीन थे। राजपुतानेमें छोटे छोटे राजपूत रजवाड़े राज करते थे सिन्ध, मालवा और गुजरात मुसलमान सुलतानोंके हाथमें थे। नर्मदा और ताप्तीके बीचमें खान्देशका स्वतंत्र राज्य

और दक्षिणमें ताप्ती और तुङ्गभद्रा नदियोंके बीच अहमदनगर बरार, बीदर, बीजापुर और गोलकुण्डामें कई सुल्तान राज करते थे। तुंगभद्रा और कृष्णाके दक्षिणमें विजयनगरका हिन्दू राज्य था। पश्चिमी किनारेपर पुर्तगीज़ व्यापारियोंने अपना रोब अच्छी तरह से जमा लिया था। उस समय उनके अधीन गोआ, बम्बई, डामन, ड्यू आदि जगहें थीं।

बैरामखांकी बिदाई—अकबरके गद्दीपर बैठनेके बाद हुमायूंका विश्वासी सेनापति और वज़ीर बैरामखां सब राज-काजकी देख-भाल करता था। पर उसका स्वभाव बड़ा रूखा और झक्की था। इससे अकबरने उसको कामसे अलग करके १५६० ई० में स्वयं राज करने का निश्चय किया। उस समय उसकी अवस्था अठारह वर्षकी थी। इससे असन्तुष्ट होकर बैराम ने बलवा किया। पर हार जानेपर अकबरने उसे क्षमा कर दिया। अन्तमें बैराम मक्का चला गया लेकिन रास्तेमें एक अफ़गान शत्रु ने उसे मार डाला।

बैरामकी तो विदाई हुई पर अकबरकी आशा पूरी न हुई। उसकी माता, दाई और दाईका बेटा आदम खां, ये तीन मिलकर राजकाज करने लगे। अकबर छोटी अवस्थाका था, इससे कुछ देखता न था। दरबारमें बड़ा अन्धेर मच गया। कुप्रबन्धका अन्त करनेके लिये अकबरने कई एक नामके हितैषियोंको कठिन दण्ड दिया तथा कुछ लोगोंको राजकाजसे अलग कर दिया। इनमेंसे मालवा विजयी आदम खां भी एक था। अकबर ने इसे हत्याके अपराधमें मार डाला और स्वयं राज करने की ठानी।

अकबरकी राजनीति—अकबरकी अवस्था तो कम थी, पर उसने दुनियाको भलीभांति समझ लिया था। उसने देखा कि उसके पहिले जो जो मुसलमान बादशाह हिन्दुस्तानमें हो गये हैं, वे केवल मुसलमानोंहीके बादशाह थे और उन्हींको जानते

मानते थे। डाहके कारण वे लोग इस देशके हिन्दुओंसे दूर रहते थे। और जितना उनसे हो सकता था वे उन्हें सताया करते थे। इस नीतिका फल यह हुआ कि मुसलमान लोग बड़े अभिमानी होगये और बादशाहसे भी ईर्षा करने लग गये थे; सहयोग न रखने तथा सदा सताये जानेके कारण हिन्दू लोग भी बादशाहको नहीं मानते थे। उसने देखा कि इस नीतिका कुफल पानीपत की दोनों लड़ाइयोंमें मिल चुका है। उसने यह भी देखा कि हिन्दुस्तानमें हिन्दू और मुसलमान एक देशके रहने वाले होकर भी आपसमें धर्मके लिये खूब लड़ते भिड़ते हैं। अतः अकबर हीने पहिले पहल इस बातका निश्चय किया कि जिस देशमें पृथक धर्मके माननेवाले लोग बसतेहैं, उस देशमें धर्म को राजनीति और प्रबन्धके काममें बिलकुल अलग कर देना चाहिये। इसी विचारसे उसने अपने राज्यमें धर्मको दूसरा स्थान दिया।

यह सब देख सुन कर उसने शासनका नया ढंग निकालना चाहा। उसने इस बातका दृढ़ निश्चय किया कि हिन्दुस्तानके कुल हिन्दू और मुसलमानोंको एक साथ मिलाकर एक बलिष्ठ जाति बना दें। बहुतसी छोटी छोटी रियासतोंके समवायसे एक ऐसी भारी रियासत स्थापित करें जिसपर केवल एक बादशाह हो, सारी प्रजा, क्या हिन्दू और क्या मुसलमान, सभी उसीके अधीनमें रहें, उनका धर्म एकही, भाषा एक ही और उनके साथ बर्ताव भी एकही हो।

इस इच्छा को पूरी करनेके लिये उसको सहायता के लिये बहुतसे मित्रों की आवश्यकता थी। हिन्दुस्तानमें बसे हुए अफगान उससे खुल्लम खुल्ला शत्रुता रखते थे। इस लिए उनसे कोई सहायता नहीं मिल सकती थी। उसके साथी मुगलोंकी संख्या बहुत कम थी, और उनमेंसे अधिकतर स्वार्थी थे। सब लोग बैराम खां की तरह विश्वासी न थे। अब बचे हिन्दू लोग। उसने देखा कि यदि हिन्दुओंके साथ भलमंसाहत का बर्ताव

किया जाय तो शायद वे लोग उसके मित्र बन जायं। तब उनकी सहायता लेकर पुरानी मुसलमानी रियासतों को दबाकर एक बड़ा साम्राज्य स्थापित करना कठिन न होगा। यह विचार कर राजपूतोंको वशमें लानेके लिए उसने पहिले पहिल राजपुतानेकी ओर अपनी दृष्टि फेरी।

राजपूतोंके साथ बर्ताव—पचीस बरस की अवस्थामें अकबरने राजपुतानेपर अपना प्रभाव जमाना आरम्भ किया। इसके पहिले और कोई मुसलमान सुलतान सारे राजपुतानेको अपने अधीन नहीं कर सका था। वह अपनी बुद्धिमानी और अच्छे बर्तावसे यहां तक सफल हुआ हुआ कि थोड़े ही दिनोंमें अम्बरके राजा विहारीमलने उसकी अधीनता मानली (१५६२ ई०)। विहारीमलका बेटा राजा भगवानदास सेनापति बनाया गया और विहारीमलकी लड़कीके साथ अकबरने व्याह कर लिया। यही लड़की जहांगीर बादशाह की मां हुई। मारवाड़के राजा भी हार गये और उनको संधि करनी पड़ी। इसी समय अकबरने हिन्दू तीर्थ-यात्रियोंसे कर लेना बन्द कर दिया (१५६३ ई०) और साथ साथ जज़िया कर भी वसूल करना बन्द कर दिया (१५६४ ई०)। सन् १५६५ ई० में अकबर के एक सेनापति ने चन्देल-दुहिता महारानी दुर्गावतीको परास्त कर गोंड़वाना (मध्यप्रदेश) राज्य पर विजय प्राप्त की।

चित्तौर—इसके बाद अकबरने मेवाड़की राजधानी चित्तौर पर चढ़ाई की (१५६७ ई०)। उस समय चित्तौरके राना संग्राम सिंहके बेटे उदय सिंह थे। उदयसिंह अपने बापके ऐसे वीर न थे। जब अकबरने चढ़ाई की तब उदयसिंह अपने सेनापति जयमलके हाथ चित्तौर सौंप कर स्वयं दूसरे स्थान को चले गए। जयमल बड़ी वीरताके साथ गढ़ की रखवाली करता रहा। दोनोंमें घमासान लड़ाई होने लगी। प्रतिदिन अकबर की सेना किलेपर आक्रमण किया करती थी और जयमल उनको हटा देता था।

अन्तमें अकबरने बारूदसे किलेका कुछ हिस्सा उड़ा दिया। और मुग़ल सेना बार बार उस टूटे हुए मुकाम पर आक्रमण करने लगी। एक दिन अंधेरी रातमें जयमल स्वयं इसी जगह की मरम्मत करा रहे थे। अकबरने उनको दूरसे देखा और अपनी बन्दूक उठाकर उन्हें मार डाला। जयमलकी मृत्युके बाद राजपूतोंकी हिम्मत जाती रही। तब राजपूत स्त्रियां जलती हुई चिता में कूद पड़ीं और राजपूत वीरोंने अपनी जानकी परवाह न कर मुसलमानोंपर धावा किया। जब कि एक भी सिपाही जीता न बचा तब चित्तौर १५६८ ई० में अकबरके हाथ लगा।

चित्तौर जीत लेने के बाद और और राजपूत सर्दारोंके साथ अकबरने मित्रता कर ली। इस तरहसे सारे राजपुतानेने उसकी प्रधानता स्वीकार की। राजपुताना एक सूबा गिना जाने लगा और अजमेर उसकी राजधानी हुई। दूसरे साल अकबरने रनथम्भोर गढ़ ले लिया। जब राजपुताना जीत चुका तब वह राजपूतोंकी सहायता लेकर धीरे धीरे और और मुसलमानी रियासतोंको जीतने लगा।

गुजरात व बंगाल—बहादुरशाहकी मृत्युके बाद गुजरात में बड़ी हलचल मची। देशमें शान्ति स्थापित करनेके लिये अकबर बुलाया गया। अवसर पाकर उसने इस देशको जीत लिया (१५७२ ई०)। सुलेमान करांनीकी मृत्युके बाद उसके बेटे दाऊद खांको हराकर अकबरने बंगालको भी अपने साम्राज्यमें मिला लिया (१५७५ ई०)। कई सालके बाद १५९२ ई० में उड़ीसा भी जीत लिया गया।

राना प्रताप सिंह—राना उदय सिंहके मरने पर उसके बेटे महावीर प्रतापसिंहने अकबरको सम्राट मानने से इन्कार किया। अकबर अपनेको एकताके सूत्रसे मिलाया हुआ सारे हिन्दुस्तान का सर्दार बनाना चाहता था। यदि राना प्रताप उसकी सर्दारी मानना अस्वीकार करते तो अकबरका उद्देश्य पूरा नहीं होता।

इसलिये अकबरको उनसे लड़ना पड़ा। पहले तो वे हार गए। इसके लिये राणाको पहाड़ और जंगलोंमें मारे मारे फिरना पड़ा।
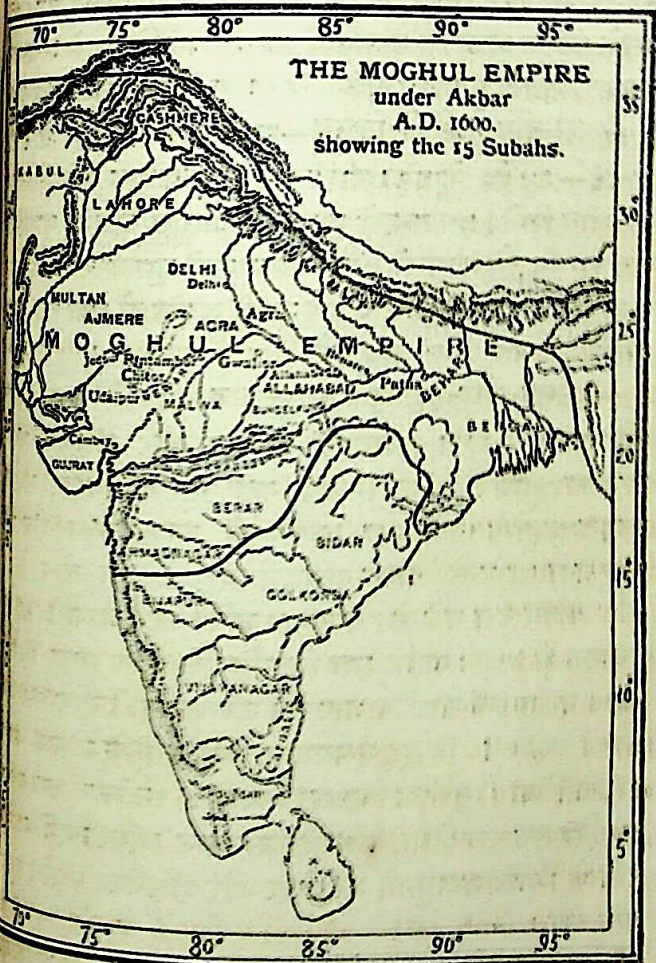
इस पर भी उन्होंने अकबरकी अधीनता स्वीकार न की। अन्तमें मुग़लोंको हराकर उन्होंने अपने पिताके राज्यका बहुत कुछ हिस्सा १५८० ई० में जीत लिया, पर चित्तौर न ले सके। कहते हैं कि

इसी समय प्रतापसिंहने प्रतिज्ञा की थी कि जब तक चित्तौर न ले सकूंगा तब तक सोनेकी थालीमें भोजन न करूंगा और घास पर सोया करूंगा। प्रताप अपनी प्रतिज्ञाको पूरी न कर सके। इसके कारण आजतक उदयपुरके राना अपने बिस्तरोंके नीचे घास रखकर सोते हैं और थालीके नीचे पत्तल रखकर भोजन करते हैं।

प्रान्तीय देशोंकी विजय—इसके बाद अकबरने धीरे धीरे १५८६—९४ ई० के बीच काश्मीर, सिन्ध, काबुल और कन्दहार भी जीत लिये। इस तरहसे अकबरने चालीस बरसमें काश्मीरसे नर्मदा तक, कन्दहारसे बंगाल तक सारे भूभागपर अपना राज जमा लिया। जब कुल आर्यावर्त उसके अधीन हो गया तब उसने दक्षिणकी ओर अपनी दृष्टि फेरी।

उत्तर और दक्षिणके मुसलमान - प्राचीन कालके आर्य और द्रविड़ोंके ऐसा मध्ययुगमें भी उत्तर और दक्षिणके मुसलमानोंका आपसमें मेल मिलाप नहीं रहा। पैगम्बर साहबके देहान्त होनेके बाद जब पृथ्वीभरमें अरबवालोंका दौर दौरा फैल गया था उसी समय दक्षिणमें बहुतसे अरब तथा ईरानी लोग आकर बस गये थे। वे लोग अधिकतर व्यापारी वा धर्म प्रचारक थे। अतः वहांके मूल निवासियोंके साथ इनका मेलजोल रहा। परन्तु जब उत्तरीय भारतको जीतकर तुर्की लोग दक्षिण जीतने चले तब हिंदू मुसलमान दोनों जातिके लोगोंने उनका विरोध किया। तुर्की इतिहास लेखकोंने इन्हींका नाम दक्षिणी वा देशी दल रख दिया, दक्षिणी मुसलमान अधिकतर शिया मतके होते थे। अतः मध्ययुगमें भी उत्तर और दक्षिणका संबन्ध पूर्ववत् बना रहा।

दक्षिणकी लड़ाइयां १५९५—१६०० ई०—अहमदनगर में देशी दलके लोग आपसमें खूब लड़ते भिड़ते थे। अब एक तरफ के लोगोंने अकबरसे सहायता चाही। इसपर उसने अपने बेटे मुरादको १५९५ ई० में भेजा। मुरादने जब अहमदनगर

ड़ाई की तब चांदबीबी नामकी एक रानी बड़ी वीरताके साथ दसे लड़ने लगी। मुग़ल लोग अन्तमें हट गये, पर चांद बीबीने अकबरको बरार राज्य देकर संधि कर ली। यह संधि त दिन तक न रही। अहमदनगरमें फिर बलवा हुआ और बरको फिर एक ओरके लोगोंने देश जीत लेनेका न्योता ता। चांद बीबीको कुछ सर्दारोंने मार डाला था, इसीलिये की रक्षा न हो सकी। इस बार अकबरने अहमदनगर ही लिया और इस राज्यका कुछ हिस्सा १६०० ई० में मुग़ल यासतमें मिला लिया गया।

खान्देश—उन दिनों दक्षिणमें आने जानेकी सड़क न्देश होती हुई गई थी। इसलिये अहमदनगरपर चढ़ाई करने पहिले ही १५९९ ई० में अकबरने खान्देशको अपने अधीन लिया था। पर असीरगढ़का किला घेरकर उसे बहुत दिनों बैठे रहना पड़ा। अन्तमें उसने इसे भी ले लिया। और १ ई० में खान्देश को अपने साम्राज्यमें मिला लिया। असीर का किला जीतनेके बाद दक्षिणकी सड़क पर मुगलोंका पूरा अधिकार हो गया।

अकबरका राज्य संगठन—(१) मेलकी नीति—किसी छोटी रियासतको अकबर जीत लेता था तब उस देशके राज काजका ठीक ठीक प्रबन्ध कर देता था। के सुलतानोंसे अच्छा प्रबन्ध होनेके कारण लोग उससे रहते थे। और अपने पुराने सुलतानोंके पक्षपाती होकर ससे लड़ते न थे। फिर जिन जिन सुलतानोंको वह हरा था उनका वह बड़ा आदर करता था और उनको अपने में बड़ी बड़ी नौकरियां देता था। इससे हारे हुए सुलतान उससे प्रसन्न रहते थे और उससे लड़ते न थे।

(२) धर्ममतकी उदारता—आजकल यद्यपि हमारे

बादशाह ईसाई हैं पर वह तुमको कभी ऐसी बात नहीं कहे
हैं कि तुम स्वधर्मको छोड़कर ईसाई बन जाओ। वैसे
अकबर स्वयं तो मुसलमान था पर वह किसी हिन्दू या ईसा
को मुसलमान हो जानेको नहीं कहता था। आजकलकी त
ही अकबरके राज्यमें सबकोई बिना रोक टोकके अपना अपना
पाल सकते थे। पर दिल्ली सलतनतके समयमें ऐसी बात न
थी। अधिकतर सुलतान हिन्दुओंसे द्वेष रखते थे तथा उन
सताते थे। इससे हिन्दू असन्तुष्ट रहते थे और राज्यका प्र
भी ठीक ठीक नहीं होता था।

यह सब देख सुनकर अंग्रेज़ सरकारकी भांति अकबर
हिन्दू और मुसलमान सभीको एक समान बड़ी बड़ी नौकरि
देता था। सारी प्रजा-क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, सबको
दृष्टि से देखता था। इस नियम का फल यह हुआ कि राजा भ
ग्वानदास और इनके बेटे राजा मानसिंह सूबेदार तक ब
गए। और राजा टोडर मल और राजा बीरबल सिपह-सा
बने थे अकबर ने जज़िया आदि कर उठा दिए, इससे हिन्दू औ
मुसलमान का भेद-भाव जाता रहा।

ब्याह शादी करके हिन्दू और मुसलमानोंको एक महाजा
बन जाय इसकी राह उसने स्वयं दिखायी। वह यह भी
चाहता था कि धर्मके कारण हिन्दू मुसलमान आप
लड़ें भिड़ें। इसलिये उसने नानक, कबीर और चैतन्य
तरह एक नया धर्म चलाने का प्रयत्न किया, जिसे सब
आसानीके साथ मान सकें। साथ ही साथ उसने सब धर्मों
बुरी रीतियोंको बन्द कर दिया। बल पूर्वक विधवाको
देना (सती प्रथा) बन्द कर दिया गया। उसी तरह उ
मुसलमानोंका कट्टरपन तोड़नेका भी प्रयत्न किया।

(३) शासन प्रबन्ध— अंग्रेज़ सरकारने जिस प्र
सारे राज्यको भाई एक सूत्रमें बांट दिया है उसी प्रकार अकब
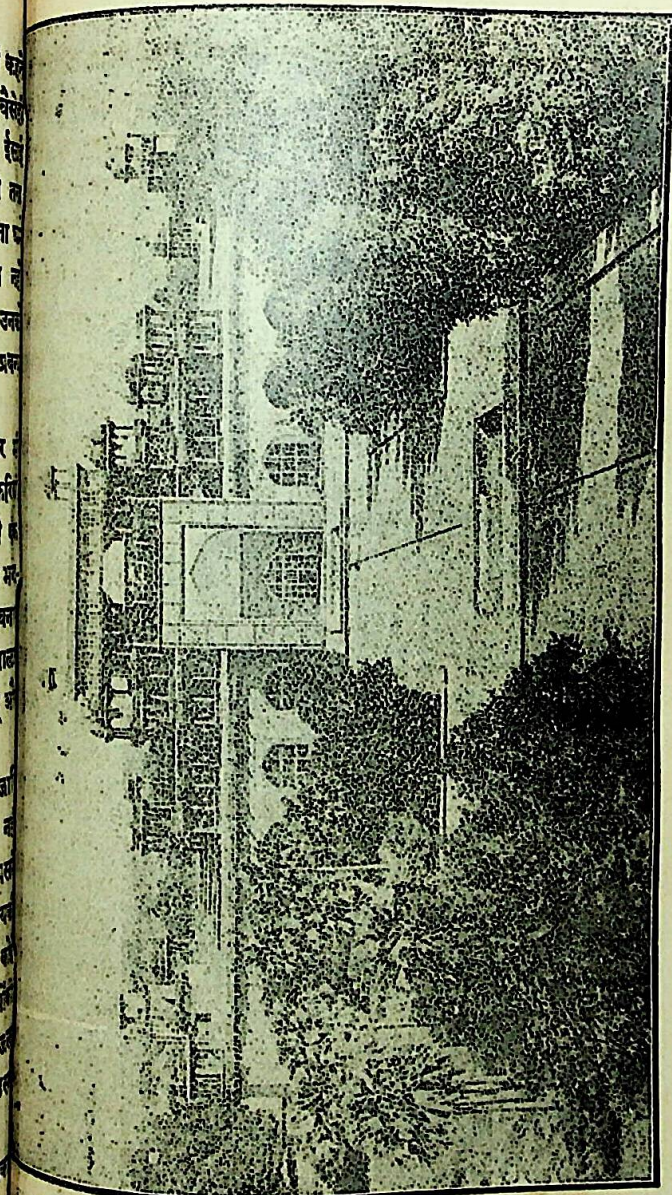
(*Chap. 14*)

Akbar's Mausoleum, Sikandra.

ने अपने राज्यको कई एक सूबोंमें बांट दिया था*। प्रत्येक सूबेका एक एक सूबेदार होता था। ये लोग आजकलके Governor की तरह थे। मालगुजारी पर देख रेख करनेके लिये प्रत्येक सूबेमें एक एक दीवान था। कभी कभी बादशाहके दरबारसे आज्ञायें भी निकला करती थीं। हाकिम और सेनापतियोंका काम सूबेदार करता था। दीवान और और अफसरोंकी सहायतासे वार्षिक मालगुजारी जमा करता था।

आजकल जैसे कई एक गांवोंको मिलाकर एक तहसील बनती है, और कई एक तहसील मिलाकर एक ज़िला बनता है, उसी तरह उस समय कई एक गांव मिलाकर एक 'परगना' बनता था और कई परगने मिलाकर एक 'सरकार' बनता था। आजकल जैसे जिलेके अफसर Magistrate हैं वैसेही उनमें सरकारका अफ़सर फौज़दार होता था। फौज़दार अपने ज़िले की रखवाली करता और मालगुजारी भी वसूल करता था। प्रत्येक शहर में कचहरी थी, वहां काज़ी मुकद्दमा करता था और कोतवाल शहर में शान्ति की रक्षा करता था। हर एक सूबेकी राजधानीमें आज कलके Judge की तरह एक एक मीर-अदल होता था। बड़े बड़े मुकद्दमों की अपील बादशाह स्वयं सुनता था।

पहिले पहल प्रत्येक सेना नायकको जागीर दी जाती थी। जागीरदारोंको अपनी आमदनीसे अपने अधीन सिपाहियों को वेतन देना पड़ता था। पर ये लोग सदा बहुत कम सिपाही रखते थे और अपनी जागीरकी मालगुज़ारी देनेमें बड़ी हुज्जत

* सूबोंके नाम सिलसिलेवार ये थे. (१) आगरा (२) अजमेर (३) इलाहाबाद (४) विहार (५) वंगाल व उड़ीसा (६) वरार (७) दिल्ली (८) गुजरात (९) काश्मीर (१०) लाहौर (११) मालवा (१२) ख़ानदेश (१३) [illegible] (१४) काबुल (१५) कन्दहार।

करते थे। अकबर जागीर किसीको नहीं देता था वरन् हरएक अफ़सर और सिपाहीको वेतन देता था। इससे जागीरदार अपनी जागीरमें स्वतन्त्र नहीं हो सकते थे। कई प्रकारके सेनापति या मनसबदार होते थे, जैसे पंज हज़ारी मनसबदार, हज़ारी मनसबदार आदि। हर एक मनसबदारको कुछ पैदल और कुछ सवार रखने पड़ते थे।

(४) मालगुज़ारीका प्रबन्ध—हिन्दू राजे पैदावार का छठवां हिस्सा राज कर लेते थे। शेर शाह पैदावारका चौथा हिस्सा लेता था। अकबरने और सब दूसरे करोंको उठा दिया और एक तिहाई राजकर लेने लगा। पहले सारी उपजाऊ भूमि नापी गयी, फिर पैंदावार देखकर बराबरकी उपजके खेतोंको अलग कर दिया गया। इसके बाद हर एक खेतकी दस वर्ष की पैंदावारकी औसत, और बिकाऊ अन्नकी कीमतकी औसत लगाकर लगान ठहराया गया। ज़मीन किसान को दे दी गयी और अकालके समय उनको सरकार की ओरसे रुपये बीज आदि तकावीके रूपमें पेशगी दिये जाते थे। इसका फल यह हुआ कि किसान लोग खूब अन्न पैंदा करने लगे, व्यापार की उन्नति हुई, और खाने पीने की चीज़ें बहुत सस्ती बिकने लगीं

अकबरका धर्म मत - अकबर धर्मका मुसलमान अवश्य था परन्तु उसमें कट्टरपन कभी न था। तब भी उसकी विशेषता यह थी कि वह सब धर्मोंका आदर करता था। धीरे धीरे मुसलमानी धर्मसे उसका विश्वास हटता गया। उन्हीं दिनों उसने धर्मसम्बन्धी कुल बातोंको राजकाजसे बिल्कुल अलग कर धर्मको दूसरा स्थान दे दिया, और कुल मौलवियोंको धर्मके सम्बन्धमें बादशाहको 'मुज्तहीद' वा जज माननेके लिये बाध्य किया (१५७९ ई०) वह इसके बाद प्रत्येक धर्म और ईसाई, हिन्दू, पारसी, जैन आदिके बड़े बड़े विद्वानोंको बुलाकर

...से धर्मकी बातें सुना करता था। इन सब मतोंकी बातें सुन-... उसे विश्वास हो गया कि सब धर्म एक ही प्रकारकी शिक्षा ...ते हैं। इसी विश्वासके बलसे उसने हर धर्मवालोंको बिना रोक ...टोकके अपना अपना धर्म मानने दिया (सुलह-इ-कुल)। अन्तमें ...नानक और कबीरके समान उसने १५८२ ई० में एक नया धर्म ...लाना चाहा। इस धर्मका नाम 'दीने इलाही' पड़ा। हिन्दू, ...मुसल्मान आदि सब धर्मके लोग इसे मान सकते थे। इस धर्मके ...अनुसार अकबर ईश्वरका प्रतिनिधि बना। इस धर्मके मानने ...वालोंको बादशाह की सेवामें चार बातें—जान, माल, सम्मान ...और धर्म निछावर करनी पड़ती थी। वे शराब पी सकते थे और ...लम्बी दाढ़ी भी रख सकते थे। वे सूरज और जलती हुई आगको ...पूजते थे और बादशाहको दण्डवत् करते थे। इस तरह एक नया ...धर्म चलाकर अकबर इस लोकका और साथ साथ परलोकका ...मालिक बन बैठा। यह भी सम्भव है कि अपनेको ईश्वरका ...प्रतिनिधि बतानेसे लोग उसका कहना और भी अधिक मानें ...और साथ ही उसका राजनैतिक अर्थ भी पूरा हो इसीलिये ...उसने इस नवीन धर्मके चलानेकी व्यवस्था की हो।

...अन्तिम दशा—अकबरका अन्तिम समय सुखमय न था। ...उसके दानियाल और मुराद नामके दो बेटे मर गये। उधर इसके ...पुत्र सलीमने बलवा किया, और उसके प्रिय मित्र अबुलफ-...जलको मरवा डाला। इन सब दुखोंके कारण अकबरका स्वास्थ्य ...बिगड़ गया और कुछ दिनोंके बाद वह बीमार पड़ा। तब वारिस ...होनेका झगड़ा चलने लगा। बहुतसे दर्बारी सलीमको चाहते ...थे। इस लिये सलीमके बेटे खुसरूको तख्त पर बैठानेका प्रयत्न ...होने लगा। पर सब हाल मालूम हो जाने पर अकबरने मरनेसे ...पहले सलीमको अपने पास बुला कर उसके सब अपराधोंको ...क्षमा किया और उसीको अपना वारिस बना कर १६०५ ई० में ...इस दुनियासे कूच कर गया।

अकबर तो मर गया पर उसका काम न बिगड़ा। उसने अपनी राजनीतिके द्वारा हिन्दू मुसलमानोंको आपसमें मिल कर रहना सिखाया था। हिन्दुओंने बड़ी इमानदारीके साथ उसका कहना किया और जब तक मुसलमान बादशाह उनके विरुद्ध न हुये तब तक वे साम्राज्यके लिये अपनी जान तक निछावर करनेको तैयार रहे।

अकबरका चरित्र—बादशाह जहांगीर लिखता है—

"पिता जी सदा विद्वानोंके साथ रहना पसन्द करते हैं। यद्यपि वे स्वयं लिखे पढ़े नहीं है तिसपर भी अच्छी सोहबतके कारण बातचीत में किसीको मालूम नहीं पड़ता है कि वे अनपढ़े हैं। उनकी बनाई गद्य और पद्यकी रचना बहुत सुन्दर है। वे बड़े शूरवीर और साहसी हैं। बड़े बड़े मस्त हाथियों पर वह हंसते हंसते सवार हो जाते हैं और हत्यारे हाथियोंको आसानीके साथ अपने वशमें कर लेते हैं। पिता जी जो जो व्रत रखते हैं उनमेंसे एक यह है कि साल भरमें वह सिर्फ तीन महीने मांस खाते हैं और बाकी नौ महीने वह फल और अन्न खाया करते हैं। जीवोंकी हत्या करना वह बिलकुल नहीं पसन्द करते। उन्होंने हर महीनेमें कई दिन लोगोंको मांस खानेसे मना कर दिया है।"*

अकबर था तो अनपढ़, लेकिन फिर भी किसी बातके लिये हठी भी था। वह एक अच्छा हाकिम होने पर भी बड़ा धूर्त आदमी था। सेनापति तो ऐसा अच्छा था कि केवल एक छोटीसी सेना साथ लेकर बागियोंकी बड़ीबड़ी सेनाओंको भी धूलमें मिला देता था। इसका कारण यह है कि वह कभी आलसमें समय नहीं खोता था। उसकी सैनिक शिक्षा भी अच्छी थी और उसके पास हथियार भी अच्छे होते थे। उसके बराबर राजनीतिके जानने वाले भी उनदिनों बहुतही कम थे। जबकि यूरोपमें धर्मके लिये बड़ेबड़े राजा आपसमें लड़ मरते थे, तब धर्मके झगड़े

* तुज़ुक-इ-जहांगीरी।

अन्त करके अकबरने हिन्दुस्तानमें मुग़ल साम्राज्य की नींव दृढ़ की। अकबरका स्वभाव रूखा होनेपर भी वह सदा उसे रोके रखता था। वह बड़ा दयालु और वीरोंका आदर करने वाला था। हारे हुए राजासे अच्छा बर्ताव करके वह उनको अपना प्यारा मित्र बना लेता था। उसके समयमें शिल्प कला आदिकी बड़ी उन्नति हुई थी, तिसपर भी शासन प्रबन्ध अथवा सैनिक शिक्षामें कुछ भी अन्तर न पड़ा। उसकी सफलताका मुख्य कारण यह है कि वह बुद्धिमानोंको उत्साहित करने में सदा तत्पर रहता था और केवल उपयुक्त लोगोंको बड़े बड़े पदोंपर नियत करता था।

अकबरके दरबारमें यूरोपियन—तुमको मालूम है कि अकबर किसी एक विशेष धर्मका अनुयायी नहीं था। हर एक धर्मकी अच्छी अच्छी बातों को वह जानना और सीखना चाहता था। इसके लिये वह बनारससे हिन्दू पण्डितोंको, गुजरातसे जैन और पार्सी पुरोहितोंको भी बुला भेजता था। ईसाइयोंके धर्ममतसे परिचित होनेके लिये उसने गोआ से तीन बार पादरियोंको बुला भेजा। (१५६८;१५९१ और १५९५ ई०)। इन पादरियोंमेंसे पादरी आक्वेभिया (Father Aquavia), मानसेरेट (Monserrate), जिरोम जेभियर (Jerome Xavier) और पिनहीरो (Pinheiro) के नाम विख्यात हैं। इनमें आक्वेभियाने १५ सालके लगभग दरबारमें विताया। पादरी लोग अकबरको केवल धर्मकी बातेंही नहीं सुनाते थे। वे छिपे छिपे पुर्त्तगीज़ सरकारकी ओरसे भेदियेका काम भी करते थे। १५८३ ई०में निऊबेरी (Newbury) नामका एक अंग्रेज़ भी इस देशमें आया था। इन लोगोंकी लिखी हुई पुस्तक और चिट्ठियोंके पढ़नेसे हम लोगोंको अकबरके दरबारकी राजनीति, लड़ाई-भिड़ाई, उसके धर्ममत आदिके बारेमें बहुत कुछ बातें मालूम हो जाती हैं।

अकबरके सभासद—अकबर गुणियों और विद्वानोंका आदर करनेमें सदा तत्पर रहता था। कोई भी विद्वान पुरुष, चाहे हिन्दू हो अथवा मुसलमान, अकबर उसका सम्मान अवश्य करता था। इसलिये उसके दरबारमें सारे हिन्दुस्तान और दूर दूर देशोंके विद्वान और गुणी आदमियोंका जमाव रहा करता था।

मुसलमान दरबारियोंमें फैज़ी और अबुल फ़ज़ल बड़े प्रसिद्ध थे। ये दोनों सगे भाई शेख मुबारक नामक एक मौलवी के बेटे थे। फैज़ी उस समयके अच्छे कवि और दार्शनिक थे। इन्होंने हिन्दू दर्शन भी पढ़ा था। अबुल फ़ज़ल अकबरके मंत्रियोंमेंसे एक थे। उन्होंने 'अकबरनामा' लिखा है। इस पुस्तकमें अकबरके समयका इतिहास लिखा हुआ है। "आईन-इ-अकबरी" इसी पुस्तकके एक भागका नाम है। अकबर इनको बहुत मानता था। इनको सलीमने मरवा डाला।

राजा भगवानदासके बेटे राजा मानसिंह अम्बरके राजा थे और अकबरके सबसे बड़े सेनापतियों और सूबेदारोंमेंसे थे। इन्होंने बंगाल जीता था, और बंगाल और काबुलकी सूबेदारी भी की थी।

राजा टोडरमल पहिले साधारण लेखकका काम करते थे। पर अपनी योग्यता और परिश्रमसे उन्होंने बड़ी उन्नति की थी। वह धीरे धीरे सारे साम्राज्यकी मालगुजारीके अफ़सर (दीवान) बन गये थे। वह बड़े धर्मात्मा और स्वामिभक्त थे।

राजा बीरबल प्रारम्भमें एक गरीब ब्राह्मण कवि थे। अकबरको प्रसन्न करके उन्होंने इतना ऊँचा पद पाया था। तुमने उनकी कहानियां अवश्य सुनी होगी। उनको अकबरने पश्चिमी प्रान्तमें लड़नेको भेजा था। वहींपर वे लड़ाईमें मारे गये। इनके अतिरिक्त दासवन्त नामक एक अच्छे चित्रकार और तानसेन नामक एक अच्छे गायक अकबरके दरबारियोंमें से थे।

सारांश

१५५६ ई०	अकबरको गद्दी मिली
१५५६ ,,	पानीपतकी दूसरी लड़ाई
१५६० ,,	अकबर स्वयं राजकाज देखने लगा
१५६८ ,,	चित्तौर-विजय
१५७३ ,,	गुजरात-विजय
१५७६ ,,	बंगाल और विहार विजय
१५८६-९४ ई०	सिन्ध, काश्मीर, काबुल विजय
१६०० ,,	अहमदनगर विजय
१६०१ ,,	असीरगढ़ विजय
१६०२ ,,	सलीमका बलवा
१६०५ ,,	अकबरकी मृत्यु

(१५) भारतवर्ष में डच् और अंग्रेज़ व्यापारी।

डच् व्यापारी—सोलहवीं शताब्दीके मध्य भाग तक हालैण्ड ...न साम्राज्यका एक सूबा था। परन्तु डच् लोगोंका धर्म मत ...क होनेके कारण इनसे स्पेनके सम्राट फिलिप (२) से नहीं ...। १५८१ ई० में डच् लोगोंने इंग्लैण्डकी सहायता ले कर ...ने देशमें एक प्रजातन्त्र राज्य स्थापित किया। इस घटना ...र्व हीसे डच् व्यापारी लोग पुर्तगालसे भारतीय वस्तु खरीदते ...र इंग्लैण्ड, जर्मनी, नारवे आदि देशोंमें बेच कर लाभ उठाते ...। परन्तु १५८० ई० में जब फिलिप (२) ने पुर्त्तगाल भी दबा ...था तभीसे उसने डच् व्यापारियों को भारतीय माल देनेसे ...कार किया। ऐसे बर्त्तावसे असन्तुष्ट होकर डच व्यापारी ...योंने पुर्त्तगीज़ लोगोंके द्वारा आविष्कृत जल पथसे भारतवर्षके

साथ सीधा व्यापार कर लाभ उठानेकी ठानी। १५८८ ई० में अंग्रेज़ोंने जब स्पेन वालोंकी समुद्री शक्ति बिलकुल नष्ट कर दि[illegible] तभीसे डच् व्यापारी लोगोंने हमारे देशके साथ सीधे व्याप[illegible] करना आरम्भ किया और इस उद्देश्यसे उस देशमें बहुत [illegible] छोटी छोटी कम्पनियां खोली गईं। अन्तमें १६०२ ई० में [illegible] सरकारने ये सब छोटी छोटी कम्पनियोंको एक साथ मिला [illegible] एक बड़ी भारी कम्पनी बना दी जिसका नाम The Unit[illegible] East Indian Company of the Netherlands पड़ा।

१५९५ ई० में सर्व प्रथम डच् लोग वण्टम (जावा में) पहुं[illegible] थे। पुर्त्तगीज़ोंने उनका विरोध किया। परन्तु जल युद्धमें उन[illegible] हार हुई। बढ़ावे में आ कर तभीसे डच्वालोंने पुर्त्तगी[illegible] छेड़ना आरम्भ किया। पुर्त्तगीज़ोंको कई बार हार होनेके का[illegible] पूर्व में उनका रोब दाब दिन प्रतिदिन घटता गया। धीरे धी[illegible] भारतवर्षमें कई एक स्थानों में इन्होंने कोठी खोली और भार[illegible] द्वीपपुञ्जको अपना कर्म क्षेत्र बनाया। डच् लोग नई नई आ[illegible] दियां स्थापित करने तथा खेती बारीके द्वारा मसालेके व्याप[illegible] कुल लाभ उठानेकी आशासे ही उन्होंने ऐसा किया। चूं[illegible] डच् लोगोंके विरोधके कारण इस देशमें उस समय तक पु[illegible] गीज़ोंका रोबदाब बिल्कुल नष्ट हो गया था अतः देवने भार[illegible] को अंग्रेज़ोंके हाथमें निछावर कर दिया।

इसी समय अंग्रेज़ व्यापारियोंने जावा आदि टापुओंमें व्या[illegible] करना आरम्भ किया। कई वर्ष तक डच् लोग अंग्रेज़ोंसे [illegible] रहे। अन्तमें हालैण्डके राजा तीसरे विलियम (William I[illegible] जब अंग्रेज़ोंके राजा बने तभी इस लड़ाईका अन्त हुआ। [illegible] अवसर पर डच् लोगोंने भारतीय द्वीप समूह और मलाबारके कि[illegible] रेकी बहुतसी जगहें पुर्त्तगीज़ोंसे छीन ली थी। अन्तमें अंग्रे[illegible] विरोधसे तंग आकर वे भारतवर्षसे चल दिये। अब त[illegible] सुमात्रा, जावा, बोर्नियो आदि कुल द्वीप डच् लोगोंके अधी[illegible]

अंग्रेज़ी कम्पनी—परन्तु पहिले पहल अंग्रेज़ों का उद्देश्य कुछ और ही था। नई आबादी, राज्य विस्तार तथा खेती बारी के लिये उनदिनों वे अमेरिका की विस्तृत भूमिपर अधिक निर्भर थे। तब पूर्व में वे केवल अपना व्यापार बढ़ाना चाहते थे। और जब तक आस्ट्रेलिया तथा उत्तमाशा अन्तरीप हाथ न लगे वा अमेरिका वालोंने बलवा नहीं कर दिया, तबतक इस देशमें वे राज्य स्थापना नहीं करना चाहते थे। सन् १५८८ ई० की जीत से बढ़ावा पाकर कुछ अंग्रेज़ सौदागरोंने पुर्त्तगोज़ और स्पेन-वालोंके हिन्दुस्तानी व्यापारमें हाथ डालना चाहा। अन्तमें सन् १६०० ई० के अन्तिम दिनोंमें इंगलैंडकी महारानी एलिज़बेथने (Elizabeth) एक कम्पनी बनाने की आज्ञा दे ही दी। इस कम्पनीका नाम (The company of Merchants of London Trading into the East Indies) पड़ा। इंग्लैण्डसे हिन्दुस्तानमें व्यापार करनेका पूर्ण अधिकार इस कम्पनीको दिया गया। इस कम्पनीकी पूंजी साढ़े तीन लाख रुपयेकी थी। पहिले पहल अंग्रेज़ लोग केवल सुमात्रा और जावा द्वीपोंमें व्यापार करते थे। इसके बाद हिन्दुस्तानके पश्चिमी किनारे पर भी इन्होंने व्यापार करना आरम्भ किया। इस प्रकार व्यापार करनेके दस बरस बाद देखा गया कि कम्पनीने रुपये पीछे दो सौ रुपया लाभ किया है।

अंग्रेज़ी कम्पनीकी कोठियां—पहिले पुर्त्तगीज़ और डच व्यापारी अंग्रेज़ोंको खूब छेड़ते थे। परन्तु अंग्रेज़ोंके साथ पुर्त्तगीज़ लोग एकबार सूरतके पास जलयुद्ध में हार गये थे (१६१२ ई०)। तबसे अंग्रेज़ोंकी बढ़ती और पुर्त्तगीज़ोंकी घटती होने लगी। इस जीतका यह परिणाम हुआ कि अंग्रेज़ व्यापारियोंको १६१३ ई० में सूरत आदि स्थानोंमें कोठियां स्थापित करनेकी आज्ञा मिल गयी। जावा द्वीप में बण्टम और इस देशमें सूरत अंग्रेज़ व्यापारियोंका केन्द्र हो गया। १६१५ ई० में सर टॉमस

रो (Sir Thomas Roe) ने तीन सालके साम बादशाह जहांगीरके दरबारमें रहकर कम्पनीकी बड़ी भ की। पर भारतीय द्वीपसमूहोंमें डच् लोग अंग्रेज़ोंके स बड़ी शत्रुता करने लगे। अन्तमें अंग्रेज़ोंको वहांसे चला आ पड़ा। इस समय अंग्रेज़ोंने कारोमण्डल किनारेपर मछ पत्तन उड़ीसामें बालेश्वर तथा हरिहरपुर आदि स्थानोंमें अ कोठियां बनवाईं। पुनः ईरानकी ओर व्यापार बढ़ानेके कार १६२२ ई० में अंग्रेज़ोंने पुर्त्तगीज़ोंसे अरमूज़ छीन लिया। इस बादहो इन दोनों शक्तियोंका मेल हो गया और विरोधका अन्त हो गया। यहां यह कहना आवश्यक है कि अंग्रेज़ सरक से इस कम्पनीका कोई विशेष सम्बन्ध न था। कम्पनी व्यापारियोंकी थी और व्यापार करनेकी आज्ञा दे कारण यह कम्पनी अंग्रेज़ सरकारको सालाना कर देती थी

सारांश

१५८८ ई०	यूरोपमें स्पेन वालों की हार
१६०० ,,	अंग्रेज़ी कम्पनी बनी
१६०२ ,,	डच कम्पनी बनी
१६१३ ,,	सूरतमें अंग्रेज़ी कोठी स्थापित हुई
१६१५ ,,	सर टामस रो मुग़ल सम्राट्के दरबारमें आये

(१६) जहांगीर ।

(१६०५-२७ ई०)

पूर्व जीवन—सलीम अकबर बादशाहका ज्येष्ठ पुत्र था। इसकी मां एक राजपूत महिला थी। उसका जन्म सन् १५६८ ई० में हुआ। बादशाह होनेसे पहिले वह कई देशोंका सूबेदार रह चुका था। एक बार उसने अपने पिताके विरुद्ध विद्रोह भी किया था पर मरनेके पहिले अकबरने अपराध क्षमा करके उसीको अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। अकबरके मरनेके बाद उसने अपना नाम जहांगीर (भुवन-विजयी) रक्खा और सिंहासन पर बैठा। इस समय उसके चार बेटे थे जिनके नाम खुसरू, परवेज, खुर्रम (शाहजहां) और शहरियार थे। उसके राज्यमें सुख शान्ति नहीं थी और बराबर लड़ाई या बलवे होते रहे।

जहांगीरके सुधार—सम्राट होनेके उपरान्त जहांगीरने बहुतसे नये नये नियमादि रचे और इनके पालन करनेके लिये वह सबको बाध्य करता था। जागीरदार लोग लाभके लिये जो चुंगी आदि वसूल करते थे उसने उनको बन्द करवा दिये। अफसरोंके विरुद्ध शिकायत आदि सुननेके लिये उसने आगरेके किलेकी दीवारसे एक सांकल लटका दी थी। अपराधियोंकी नाक कान कटवाना बन्द करवा दी। सालमें कई दिन जानवरों की हत्या बन्द करवादी। सरकारी नौकर व्यापारियोंके माल असबाब नहीं खोल सकते थे। राज्य भर में शराब, भांग आदि तैयार करना भी बन्द करवा दिया। बहुतसे वाकया नवीस चारों ओर नियुक्त किये गये—ये लोग रिपोर्टरका काम करते थे। गरीबोंको भोजन बांटनेके लिये बहुतसे खानकाह खोले गये। प्रान्तीय साम्राज्य भरमें डाक—चौकियां नियत की गईं। अमीर लोग किसीको बलात् मुसलमान नहीं बना सकते थे।

खुसरूका बलवा—पहले कहा गया है कि दरबारके कुछ लोग जहांगीर के स्थानमें खुसरूको बादशाह बनाना चाहते थे। राज्य पाते समय जहांगीरने खुसरू और उसके मित्रोंको क्षमा कर दिया था। पर एक दिन खुसरूने आगरेके किलेसे भाग कर बलवा मचा दिया। वह लाहौर न ले सका और कैद कर लिया गया। जहांगीरने खुसरूके सामने दूसरे विद्रोही कैदियोंको बड़ी निर्दयताके साथ मरवा डाला और खुसरूको जीवन भर कैद रक्खा। खुसरूको लोग बहुत चाहते थे। अन्तमें लोग कहते हैं कि शाहजहांने उसे मरवा डाला। इलाहाबादके खुसरूबागमें अभीतक उसका मकबरा मौजूद है।

नूरजहां—बादशाह होनेके छः बरस बाद जहांगीरने प्रसिद्ध नूरजहांके साथ शादी करली। अब नूरजहांकी कहानी सुनो। उन दिनों हिन्दुस्तानमें बहुत दूर दूरसे मुसलमान लोग बसनेके लिये वा नौकरीकी खोजमें आते थे। मिहर-उन्निसाका बाप जो ईरानका रहने वाला तथा अच्छे कुलका था हिन्दुस्तानमें नौकरीकी खोज में आया। कहते हैं कि मिहर-उन्निसा रास्तेमें पैदा हुई थी। उसके बापका एक मित्र दिल्लीका सौदागर था। वह आकर पहिले पहल उसीके यहां टिका।

कुछ दिनोंके बाद सौदागरने अकबरके दरबारमें उसकी नौकरी लगवा दी। मिहर-उन्निसाके बड़ी होनेपर बर्धवानके फ़ौजदार शेर अफगानसे उसकी शादी हुई। शेर अफगानके बलवा करने पर वह बंगालके सूबेदारके हाथ मारा गया। उसने उसकी विधवा स्त्रीको आगरा रवाना कर दिया। वहां पर मिहर-उन्निसा चार साल तक अकबरकी बेगमकी एक सहेली होकर रही। १६११ ई० में बादशाह जहांगीरने इससे शादी कर ली।† तभीसे इसका नाम नूरजहां पड़ा और

---

† Beni Prasad—History of Jahangir.
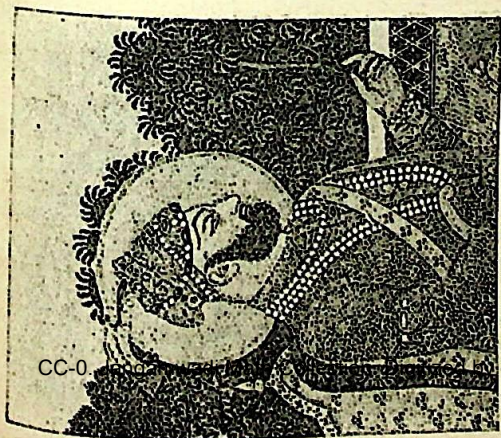
(Chap 14)
Akbar.

(Chap. 16)
Jahangir.

(Chap 16)
Nurjehan.

धीरे धीरे राजकाज सब वही करने लगी। सभी बातोंमें जहांगीर उसका कहना मानता था। उसने मुहर तक उसके नामसे खुदवाई थी। नूरजहां बड़ी चतुर थी और वह शासन करना बहुत पसन्द करती थी। जब कभी दरबारमें किसीका प्रभाव जमने लगता था तभी वह उसे शासन द्वारा दबानेकी चेष्टा करती थी, ताकि उसके आगे किसीका रंग न जमने पावे। अपना रोब दाब बनाये रखनेके लिये वह जहांगीर और उसके लड़कोंको आपसमें लड़ा भी देती थी।

शाहज़ादा खुर्रमका बलवा—नूरजहांके छलसे घबड़ाकर जहांगीरका प्रिय पुत्र खुर्रम बलवा कर बैठा। खुर्रमकी तरह चतुर आदमी जहांगीरके समयमें दूसरा कोई न था। उसकी वीरता और युद्धमें प्रवीणता देखकर चित्तौरके महाराना प्रताप सिंहके बेटे अमर सिंहने १६१४ ई० में मुग़लोंकी अधीनता स्वीकार करली। स्वयं अकबरके बहुत प्रयत्न करने पर भी राना नहीं हारे थे। दक्षिणमें भी शाहज़ादेने मुग़लोंका साम्राज्य बढ़ाया था। उसने अहमदनगरका कुछ अंश जीत कर साम्राज्यमें मिला लिया। इसीसे शाहज़ादेका नाम शाहजहां पड़ा। इन्हीं दिनोंमें ईरानके शाहने मुग़लोंसे कन्दहार छीन लिया (१६२२ ई०)। नूरजहां अपने दामाद शहरियारको तख्त पर बैठाना चाहती थी। इसी लिये उसने खुर्रमको दरबारसे हटाना चाहा और उसे कन्दहार जानेको कहा। पर शाहजहां उसकी अभिलाषा समझ गया और उसने जानेसे अस्वीकार करके बलवा कर दिया। नूरजहांने महाबतखां नामके एक सेनापतिको शाहजहांसे लड़नेके लिये भेजा। शाहजहां लड़ाईमें हार कर एक बार दक्षिणमें और फिर बंगालमें मारा मारा फिरने लगा। अन्तमें वह अपने पिताके वशमें आया और उसने अपने दो बेटों दारा और औरंगज़ेबको जहांगीरके पास जमानतके रूपमें रक्खा।

महाब्बतखांका बलवा—महाबतखांकी शक्ति बढ़ती हुई देखकर नूरजहांने उसको दबानेकी चेष्टा की। पर महावतखांने एक बड़ी भारी राजपूती सेना लेकर झेलम नदीके किनारे सो जहांगीरको कैद कर लिया। नूरजहां लड़कर जहांगीरको छुड़ानेका प्रयत्न करने लगी। उसने स्वयं हाथी पर सवार हो एक भारी सेना लेकर पुरुषोंसे भी अधिक वीरता दिखलाई। परन्तु उसके सारे यत्न व्यर्थ गये और जहांगीरको छुटकारा न मिला। तव उसने भी जहांगीरके साथ कैदी वनना चाहा। महावतखां राजी हो गया और नूरजहां कैद कर ली गई। वादशाह और बेगम दोनोंको कैद करनेके पश्चात् महावतखां कुछ निश्चिन्त हो गया। तव दोनों कैदी धीरेसे चल दिये। महावतखांको जब यह समाचार मिला तब वह दक्षिणकी ओर भाग कर शाहजहांसे जा मिला। इसके बाद थोड़े ही दिनोंमें बादशाह जहांगीरकी सन् १६२७ ई० में मृत्यु हो गई।

जहांगीरके दरबारमें अंग्रेज़-हाकिन्स—जहांगीरके समयमें ही अंग्रेज़ लोग इस देशके साथ पहिले पहल व्यापार करने लगे थे। इंगलैंडके राजा जेम्स (James I) के दो एलची जहांगीरके दरवारमें आये थे। हेक्टर नामक एक अंग्रेज़ी जहाज़का कप्तान हाकिन्स (W Hawkins) १६०८ ई० में जहांगीरके दरवारमें आया। हाकिन्स अपने साथ राजा जेम्स (१) की एक चिट्ठी लाया था। वह बहुत कष्ट सहकर मुग़लोंके दरबार तक पहुंचा था। बादशाह उसको इंगलिश खांके नामसे पुकारता था और उसने उसको इस देशमें रखने की चेष्टा भी की थी। बादशाहके साथ उसकी बहुत बनती थी। जहांगीरने उसको एक मनसबदार भी बना दिया था। उसके लेखसे सम्राट की चाल-चलन तथा दरबार की शानके बारेमें बहुत कुछ बातें मालूम होतीं हैं। उसका कहना यह है कि सम्राटके कुल ३६,००० नौकर चाकर थे। इनके अतिरिक्त बहुतसे मनसबदार भी थे। सर्वोच्च पद १२ हजारीका

था तथा सबसे नीचा २० का था। अमीरोंकी मृत्यु होने पर उनकी कुल सम्पत्ति सरकार ले लेती थी। सम्राट की आमदनी ५० करोड़ की थी। खर्च भी बहुत होता था। अपराधियोंको कठिन दण्ड दिया जाता था। सम्राटके दिनचर्याका भी उसने वर्णन किया है। उसने सम्राटको निर्दयी तथा क्रोधी स्वभाव का बतलाया है।

सर टामस रो—इसके बाद १६१५ ई० में राजा जेम्स (१) ने सर टामस रो (Sir Thomas Roe) को अपना दूत बनाकर जहांगीरके दरबारमें भेजा। सर टामस रो बड़ा विद्वान, बुद्धिमान और निडर आदमी था। उस समयमें अंग्रेज़ व्यापारियोंको बहुत दुःख उठाने पड़ते थे। डरके मारे अंग्रेज़ लोग यह सब दुःख चुपचाप सह लेते थे। पर सर टामस रो उस तरहका आदमी न था। वह समय पाने पर वज़ीरको भी कड़ी बातें सुना देता था। वहां रहकर सर टामसने जो कुछ देखा सुना था उसको वह एक किताबमें लिख गया है। इस किताबके पढ़नेसे जहांगीरके दरबारका ठीक ठीक हाल मालूम होता है। बादशाह सर टामसको बहुत चाहता था। गुसल खानेमें रात के समय जो बैठक होता था, सर टामस उसमें प्रायः जाता था। बादशाह जो शराब पीता था उसकी महक बहुत तेज़ होती थी और उससे सर टामस छीकने लगता था। यह देखकर दरबारी लोग बहुत हंसते थे। इस प्रकार आनन्दमें निमग्न होकर बादशाह सो जाता था और बत्ती भी बुझा दी जाती थी। अंधेरेमें टटोलते टटोलते सर टामस उस स्थानसे बाहर निकलता था।

अजमेरमें रहते समय सम्राटके लश्करगाहका व्यास २० मील था। इसमें सड़कें, गलियां आदि होती थीं और खेमे भी उसी रीतिसे लगाये जाते थे। इसमें बड़े बड़े बाज़ार, छावनी, कारखाने आदि भी होते थे। सूबेदार लोग भारी तनख्वाह पाते थे, इसके अतिरिक्त वे ऊपरी आमदनी भी कर लेते थे।

सर टामसने अपनी किताबमें बादशाहके जन्मदिनके उत्सव का वर्णन किया है। वह लिखता है :—

"एक सुन्दर बाग है, उसके चारों ओर पानी बह रहा है, उसके पास तरह तरहके पेड़ और फूल लगे हुए हैं। एक ऐसे बगीचेके भीतर कीमती पत्थरोंसे जड़ी हुई सोनेकी एक तराजू बनी हुई है। बादशाह उसीमें तौले जाते हैं। एक पल्लेमें बादशाह स्वयं बैठते हैं और दूसरे पल्लेमें सोना, चांदी, धोती, अनाज आदि रक्खे जाते हैं। इसके बाद यह सब वस्तु ग़रीबोंको बांट दी जाती है।"

पर उन दिनों दूर दूरके सूबोंका प्रबन्ध बुरा था। सूबेके अफसर लोग मनमाना काम करते थे। उनको रोकने वाला कोई न था। भेंटके बिना कोई काम न निकलता था। मुग़लोंमें लड़नेकी शक्ति बहुत घट गयी थी। उस समयकी कारीगरी बहुत ही अच्छी थी। मालगुज़ारी वसूल करनेके लिये ठीकेदार नियुक्त किये जाते थे। दक्षिणमें बहुत दिनों तक लड़ाई चलती रही। इसलिये वहांकी अवस्था बड़ी बुरी हो गई थी। बड़े बड़े शहर उजाड़ बन गये थे।

उसका चरित्र—यदि सच पूछो तो जहांगीरका राज्य काल अकबरके ही राज्यकालका एक अंश मात्र था। उस महान् सम्राटकी नीतिके ही बलसे जहांगीरके ऐसा एक अयोग्य पुरुष भी बाइस वर्षतक विराट् मुग़ल साम्राज्यका धुरन्धर बना रहा। जहांगीरकी मानसिक शक्ति तथा चरित्र बल कुछ भी नहीं था। वह सदा नशेमें चूर रहा करता था तथा उसने 'प्याला भर शराब और एक टुकड़ा गोश्त' के बदलेमें साम्राज्यका धूर नूरजहांके हाथ सौंप दिया। वह बड़ा विलासी तथा चञ्चल स्वभावका था। न वह विचारशील ही था न वह धर्म हीका कट्टर था। टामस रोने उसे धर्महीन कहकर वर्णन किया है। प्रान्तीय अमीरोंपर सख्त मनाही थी कि वे किसीको बलात् मुसलमान न करें। परन्तु कांगड़ा-विजयके उपरान्त (१६२० ई०) उसमें

धार्मिक उत्साह इतना उभड़ आया कि उसने कुर्बानी चढ़ाई तथा ज्वालामुखी देवीके मन्दिरके बग़ल ही में एक मसजिद बनवा दी। अजमेरमें भी उसने वसह देवकी मूर्त्ति उखाड़ डाली थी। फिर भी हिन्दुओंसे उसका बर्त्ताव अच्छा ही था। अपने पिताका अनुयायी होकर अच्छे अच्छे हिन्दू पण्डितोंसे मिलता था। उसके दर्बारमें तरह तरहके हिन्दू पर्व यथा रक्षाबन्धन, होली, दिवाली आदि मनाये जाते थे। वेदान्तके पण्डित यद्रूप संयासी और बनारसके रुद्र भट्टाचार्यसे सम्राट्ने अच्छा ही बर्त्ताव किया। प्रति बृहस्पतिवार वह अकबरके ऐसा वादानुवाद भी सुना करता था। क्रुद्ध होने पर वह बड़ा निर्दयी भी बन जाता था। परन्तु साथही साथ वह बड़ा पितृ-भक्त, प्रकृति का उपासक, दरिद्रोंका सच्चा मित्र तथा कला-कौशलमें बड़ा अनुभवी पुरुष था। सर्वोपरि उसके "तुजुक" के पढ़नेसे ऐसा मालूम होता है कि वह पक्का भारतीय था।

सारांश

१५६८ ई०	जहांगीरका जन्म
१६०५ ,,	,, बादशाह हुआ
१६०६ ,,	खुसरूका बलवा
१६०८ ,,	हाकिन्स दरबारमें आये
१६१५ ,,	सर टामस रो ,,
१६२२ ,,	शाहजादा शाहजहांका बलवा
१६२७ ,,	जहांगीरकी मृत्यु

(१७) शाहजहां (१६२७–५८ ई०)

शाहजहांका जन्म सन् १५९२ ई० में हुआ था। जिस समय जहांगीरकी मृत्यु हुई उस समय वह दक्षिणमें था। पिता के देहान्त होनेका समाचार पातेही वह आगरेकी ओर गद्दी लेने चला। इधर नूरजहांका कुछ औरही उद्देश्य था। वह अपने दामाद शहरियारको बादशाह बनाना चाहती थी। पर उसकी दाल न गली। शाहजहां अपने ससुर आसफ़खां और नूरजहां के भाईकी सहायतासे बड़े ठाट बाटके साथ सिंहासनपर बैठा। इसके अनन्तर उसने अपने भाई शहरियार और अपने भतीजोंको मरवा डाला। इसका परिणाम यह हुआ कि सिंहासनके लिये अब कोई दावा करने वाला न बचा; परन्तु उसकी करनीका उदाहरण भविष्यके लिये बहुत बुरा हुआ। नूरजहांको राज-काज से अलग हो जाना पड़ा। इसके बाद भी वह बीस वर्ष तक जीती रही।

लड़ाइयां—अकबर और जहांगीरकी तरह शाहजहां भी दक्षिणकी रियासतोंको जीतना चाहता था। उसके शासनके प्रथमांश में खां जहां लोदी नामके एक सेनापतिने बलवा किया और अहमद नगरके सुलतानके साथ जा मिला। इसके कारण दस वर्ष तक लड़नेके बाद १६३२ ई० में अहमद्नगरका राज्य मुग़ल साम्राज्यमें मिला लिया गया। इन्हीं दिनोंमें शिवाजीके पिता शाहजीने टूटता हुआ निज़ामशाही राज्यकी रक्षा करनेके लिये बहुत कुछ चेष्टा की। जब वह सफल नहीं हुआ और राज्य जीतही लिया गया, तब उसने बीजापुर दरबारमें नौकरी कर ली। इसके बाद शाहजहां बीजापुर और गोलकुण्डाके सुलतानोंके साथ बहुत दिनों तक लड़ता रहा। फिर शाहजादा औरङ्गज़ेब दक्षिणका सूबेदार बनकर सुलतानोंके साथ लड़ने लगा। गोलकुण्डाका वज़ीर मीरजुमला सुलतानसे झगड़ कर

औरङ्गज़ेबसे आ मिला। तब कुछ दिनतक लड़नेके बाद सुलतानने १६३६ ई० में औरङ्गज़ेबसे संधि कर ली। बीजापुरके सुलतानने भी हारकर मुग़लोंसे सुलह कर ली।

इसी बीचमें पुर्तगीज़ लोग बंगालमें उपद्रव मचानेके कारण बंगालसे निकाल दिये गये। कन्दहारका ईरानी सूबेदार अलीमर्दान ईरानके शाहके साथ झगड़ गया। और उसने शाहजहांको कन्दहार सौंप दिया और स्वयं मुग़लोंकी नौकरी कर ली। अली मर्दानने दिल्लीके पास एक नहर बनवाई थी। शाहजहांने कई बारकी चेष्टाके बाद बल्ख राज्य भी जीत लिया। परन्तु थोड़ेही दिनोंके बाद ईरानके शाहने कन्दहार और बल्ख दोनों राज्योंको मुग़लोंसे फिर छीन लिया। शाहज़ादा औरङ्गज़ेबने इन राज्योंको वापस जीत लेनेके लिये बड़ी चेष्टाएं कीं परन्तु सब व्यर्थ हुए। इन लड़ाइयोंके कारण व्यर्थही बहुतसे रुपये पानीमें मिल गये। ये सब पहाड़ी देश हैं तथा वहांके निवासी भी साधारणतया उपद्रवी होते हैं। पुनः ऊंचे ऊंचे पहाड़ आदिके द्वारा पृथक कर दिये जाने, तथा अच्छी सड़क आदि न होनेके कारण एक हिन्दोस्तानी राजा कदाचित्‌ही इस देशसे उनको अपने अधीन रख सकता है। शाहजहां अपनी शान बढ़ानेके कारण ही उन देशोंको जीतने गया। औरङ्गज़ेब चतुर था। अतः सम्राट होने पर उसने फिरसे इन राज्योंको जीतनेकी चेष्टा नहीं की। फिरभी बहुतसे राजपूत सिपाहियोंने स्वमीके कार्य करनेके लिये अपनी जान दे दी। पुनः हार होनेहीके कारण दारा और औरङ्गज़ेब की आपसमें अनबन होगई जिसका परिणाम दारा तथा साम्राज्यके लिये शुभ नहीं हुआ।

देशकी दशा—शाहजहांके राज्य कालमें उत्तरी हिन्दुस्तान और विशेषकर बंगाल खूब हरा भरा था। देशभरमें बड़ी सुख शान्ति फैली हुई थी और लोग बड़े आनन्दमें दिन बिताते थे। बादशाह बड़ा दयालु था। वह सूबेदारों और माल-

गुजारी वसूल करने वाले अफसरोंके अत्याचारसे गरी
प्रजा को सदा बचाता था। घूस लेने वाले अफसरोंको कठि
दण्ड देता और उनका बड़ा अपमान करता था। यदि कि
अफसरके विरुद्ध शिकायत सुनाई देती थी तो बादशाह तुर
उसे नौकरीसे छुड़ा देता था। देश भरमें शान्ति होनेसे उन दि
व्यापारकी बड़ी बढ़ती हुई और दूर दूरके देशोंसे सौदाग
व्यापार करनेके लिये इस देशमें आते थे। इससे बादशाह
आमदनी बहुत बढ़ गई और वह उस धन को देशकी शो
सम्पदा बढ़ानेमें लगाता था।

शाहजहांके राज्यकालके अन्तिम भागमें बर्नियर (Bernie
नामका एक फरासीसी इस देशमें आया था। उसका व
पढ़नेसे हम लोगोंको यह मालूम होता है कि उन दिनों
दूरके सूबोंका प्रबन्ध अच्छा न था। सूबेदार और उनके अफ
लोग गरीबोंको बहुत सताते थे। बर्नियर कहता है कि "वे
बालूसे तेल निकालनेकी चेष्टा करते थे।" किसानोंकी अ
स्था अत्यन्त शोचनीय थी और खेत अधिकतर उजाड़ पड़े
थे। पर बर्नियर को बंगालकी उपजाऊ भूमि, प्राकृतिक शो
और हरीभरी अवस्था देखकर बड़ा अचरज हुआ। इस स
बंगाल शाहजादा शुजाके अधीन एक स्वतन्त्र रियासतके स
था। वह लिखता है कि यहां नाना प्रकारके अन्न बहुताय
पैदा होते हैं और सस्ते विकते हैं। मनुष्यके कामकी प्रायः स
वस्तुएं यहां मिलती हैं। यहांके रहने वाले डच, पुर्तगीज़
अंग्रेज़ लोगोंमें एक कहावत प्रचलित है कि 'सूबे बंगा
आनेके लिए सैकड़ों दरवाज़े खुले पड़े हैं पर वहांसे निकल
दरवाज़ा एक भी नहीं।

कला-कौशल—चाहे जो कुछ हो, यह बात सच है
शाहजहांके समयमें मुग़ल साम्राज्य उन्नतिके शिखर पर पहुंच
था। शाहजहां बड़ा शानदार बादशाह था। परदेशी यात्री
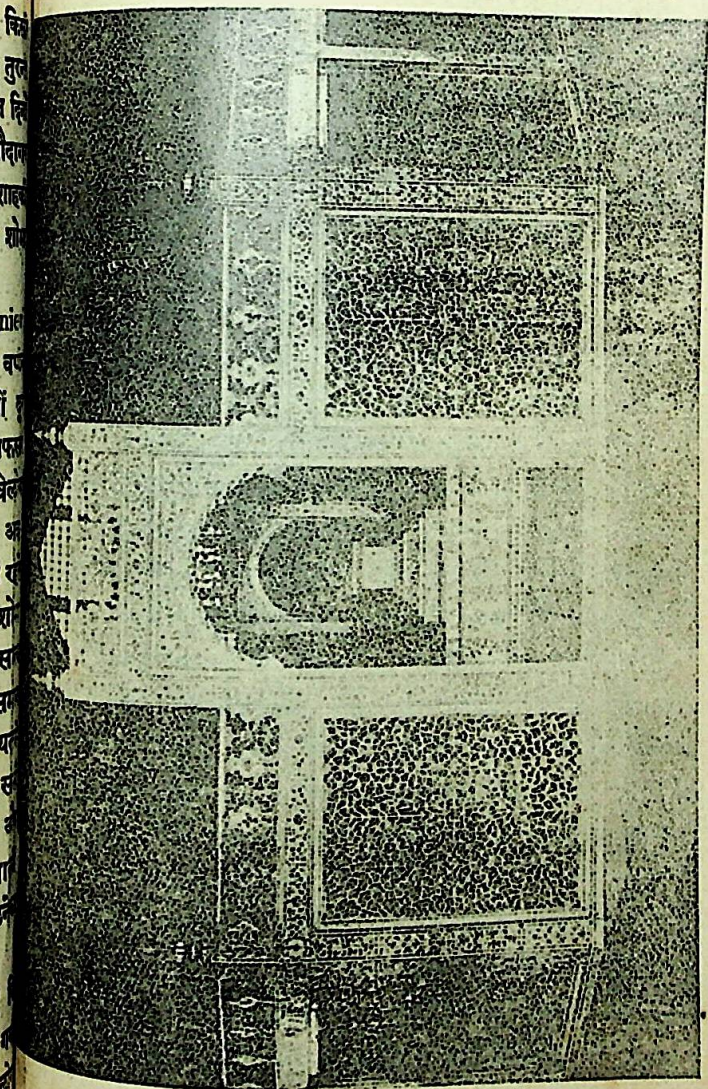
(Chap. 17)

उसकी सभाका ठाट बाट देखकर आश्चर्य करते थे। दरबारकी शोभा बढ़ानेके लिए उसने भांति भांतिके मणियोंसे मढ़ा हुआ तख्त-ताऊस नामका एक अति सुन्दर सिंहासन बनवाया था। यह सिंहासन सोनेके पहियोंपर बना हुआ एक पालनेके समान था। इसके ऊपर एक कामदार शामियाना नीलमसे जड़ी हुई बारह खूंटियोंके सहारे टंगा हुआ था। हर एक खूंटीपर मणियोंसे मढ़े हुये दो दो मोर थे और इन दोनों मोरोंके बीचमें तरह तरहके जवाहिरातोंसे बना हुआ एक पेड़ था। यह सिंहासन सन् १७३९ ई० तक दिल्लीके बादशाहोंके पास था। उसके बाद नादिरशाह उसे अपने साथ ले गया।

शाहजहांने अपनी सबसे प्यारी बेगम मुमताज महलकी स्मृतिमें ताजमहल नामका एक बहुत ही सुन्दर मकबरा बनवाया। यह मकबरा संगमर्मरका बना हुआ है और पृथिवीकी अजीब वस्तुओंमेंसे एक है। सुनते हैं कि २२००० मज़दूर और कारीगरोंने २२ वर्ष तक काम करके इस मकबरेको बनाया है। इसके बनानेमें करीब १० करोड़ रुपये लगे थे। इस मकबरे की पच्चीकारी बहुमूल्य मणियोंसे की गई थी। नाना प्रकारके बड़े बड़े महलोंसे आगरेको सजाकर शाहजहां अपनी राजधानी दिल्ली लेगया। नई दिल्लीका नाम उसके नामसे शाहजहांबाद पड़ा। थोड़े ही दिनोंमें दिल्ली शहर भी अच्छी अच्छी इमारतोंसे सज गया। इनमें जामा मसजिद और मोती मसजिद सौन्दर्यके लिये विख्यात हैं। दिल्लीका दीवान-इ-खास नामका दरबार भी शाहजहांका बनवाया हुआ है। इसी स्थानमें सोनहले अक्षरोंमें यह लिखा हुआ है—"दुनियामें यदि कहीं स्वर्ग है तो यहीं है, यहीं है, यहीं है।"

साहित्य—कला कौशलकी उन्नतिके साथही साथ साहित्यकी भी बड़ी उन्नति हुई। अब्दुल हमीद लाहौरीने "बादशाह नामा" और इनायत खांने "शाहजहां नामा" नामके इतिहासके

ग्रन्थ लिखे। शाहजहां संस्कृतका भी प्रेमी था। पण्डित राज जगन्नाथ उसके राज कवि थे। जातिके वे तैलंगी थे। संस्कृत भाषाके वेही अन्तिम कवि थे। बंगाल जाते समय वर्नियर इनसे बनारसमें मिला था। बनारसके कुछ नामी पण्डित सं विद्यानिधान कवीन्द्र आचार्य सरस्वतीके अधीन होकर तीर्थ यात्रियोंका कर बन्द करनेके लिये दरबारमें पहुंचे थे। बादशाहने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली।

शाहजहांकी अन्तिम दशा—शाहजहांके चार बेटे थे। इनके नाम दारा, शुजा, औरंगज़ेब और मुराद थे। बड़ा लड़का दारा था। समझदार और उच्च हृदयका था। बहुतसी बातोंमें वह अकबरका अनुयायी था। धर्म-मत भी उसका बड़ा उदार था। अकबर के ऐसा उसने भी बहुत से धार्मिक मतोंसे परिचय कर लिया था। उसने कई उपनिषदोंका फ़ारसीमें अनुवाद करवाया। धर्म विषयमें उदार होनेके कारण कट्टर इसलामी इसके विपक्ष थे। परन्तु शाहजहां इसे बहुत मानता था और उसके राज्यकाल के अन्तिम दिनोंमें वही राज काज देखता भालता था। शुजा बंगालका सूबेदार था। वह बड़ा लड़ाकू था। परन्तु राज धानीसे बहुत दूर रहनेके कारण लोग उसे जानते ही न थे। औरंगज़ेब बड़ा चतुर तथा भारी चालबाज़ था। धर्मका पक्का होनेके कारण इसलाम धर्मके लोग उसे बहुत चाहते थे। इन दिनों वह दक्षिणका सूबेदार था। मुराद बड़ा शूर वीर था परन्तु निर्बोध था। वह उन दिनों गुजरातका सूबेदार था। चारों शाहजादे राजकाजसे भलीभांति परिचित थे। पुनः इसलामी मतके अनुसार सब बेटोंका अधिकार बराबर समझा जाता है। इसीलिये हरएक शाहजादा अपने आप बादशाह बनना चाहता था। परिणाम इसका यह हुआ कि चारों भाई आपसमें लड़ गये।

सन् १६५७ ई० में शाहजहां बहुत बीमार हो गया। इस कारण उसका ज्येष्ठ पुत्र दारा राजकाज देखने लगा। पूर्व

औरंगज़ेब और दाराकी बनती नहीं थी। एक दूसरेसे जलता था। अपना दल पुष्ट करने तथा इसलाम धर्मवालेको सन्तुष्ट रखनेके लिये उसने मुरादको लिख भेजा कि "काफ़िर दाराको निकाल और तुम्हें सिंहासनपर बैठा कर मैं मक्का चल दूंगा"। सीधे-सादे मुरादने उसकी बात मान ली और उसके साथ अपनी सेना मिला दी। इसी रीतिसे एक बड़ी भारी सेना लिये हुये दोनों भाई आगरे की ओर चले। शुजा भी बंगालसे आगरे की ओर आ रहा था। परन्तु रास्तेमें हार खाकर उसे अपने सूबेको लौट जाना पड़ा। इधर दाराने औरंगज़ेबको रोकनेके लिये महाराजा यशवन्त सिंहको भेजा था। यशवन्त सिंह औरंगज़ेबको रोक न सका। अन्तमें आगरेके निकट सामूगढ़की लड़ाईमें (१६५८ ई०) दाराकी हार हुई और जान बचाने लिये उसे भागना पड़ा।

इधर औरंगज़ेबने आगरा ले लिया और अपने बापके पास दूत भेजा। परन्तु शाहजहांने दाराके सिवाय औरंगज़ेबका [illegible] लेनेसे अस्वीकार किया। इस लिए औरंगज़ेबने शाहजहांको आगरेके क़िलेमें क़ैद कर लिया। पश्चात् मुरादको भी क़ैद करके ग्वालियरके क़िलेमें भेज दिया और स्वयं बादशाह बन बैठा।

शुजा फिर बंगालसे आगरेकी ओर चला। पर मीर ज़ुमला उसे फिर हराया और उसका पीछा करने लगा। अन्तमें [illegible] बिचारेको अराकान भागना पड़ा। वहीं वह मारा गया। [illegible] दारा दिल्लीसे भागकर पहले लाहौर गया। वहांसे [illegible] गुजरात गया। वहां भी हार जानेसे उसको सिन्धमें भागना पड़ा। परन्तु वहां वह पकड़ लिया गया। अन्तमें [illegible] धर्मका पक्का न होनेके कारण कई एक मौलवियोंकी रायसे औरंगज़ेबने दाराको मरवा डाला। इसके बाद खून करनेका [illegible] लगाकर मुरादको भी उसने मरवा डाला। शाहजहां [illegible] क़ैदकी अवस्थामें १६६६ ई० तक जीता रहा। इस तरहसे सिंहा-

सनके दावा करने वालोंको मार कर या उन्हें कैद करके १६ ई० में औरंगज़ेब सचमुच बादशाह बन बैठा। भाई भाईका झगड़ा साम्राज्यके लिये शुभ नहीं हुआ। क्योंकि इसके साम्राज्यमें अशान्तिकी आग भड़क उठी और बहुतसे अच्छे सिपाही मारे गये तथा बहुतसा धन भी नष्ट हुआ।

सारांश

१५६२ ई०	शाहजहांका जन्म
१६२७ ,,	,, को गद्दी मिली
१६३२ ,,	अहमदनगर राज्यका अन्त
१६३६ ,,	बीजापुर और गोलकुण्डासे सन्धि
१६५७ ,,	बादशाह बीमार पड़ा
१६५८ ,,	सामुगढ़की लड़ाई—दाराकी हार
१६५९ ,,	औरंगजेबको गद्दी मिली
१६६६ ,,	शाहजहांकी मृत्यु

(१८) विदेशी सौदागरोंका विवरण ।

अंग्रेज़ी कम्पनी—इस समय तक हिन्दुस्तानमें अंग्रेज़ी कम्पनीके अधीन कोई ऐसी जगह न थी जिसे वह अपनी कह सकती थी। यद्यपि कई एक स्थानोंमें उन्होंने छोटी छोटी कोठियां बना रखी थीं जो कि केवल मालगोदामका काम देती थीं। अब हमारे सामने एक नवयुगका प्रारम्भ होता है जब कि अंग्रेज़ी कम्पनीको दूसरी दूसरी कम्पनियों और रजवाड़ोंके आक्रमणसे अपने मालको बचानेके लिये भूमिकी आवश्यकता हुई और वह उसके पानेकी चेष्टा करने लगी।

मद्रास—१६३९ ई० में विजयनगर राज्यके हिन्दू राजाओंकी सन्तति चन्द्रगिरिके राजासे अंग्रेज़ोंने कारोमण्डलके किनारे ६ मील लम्बी और एक मील चौड़ी ज़मीनका टुकड़ा लिया। इस स्थानका उन्हें सालाना ६००० रुपये किराया देना पड़ता था। उसी स्थानपर अंग्रेज़ोंने अपनी जान व मालकी रक्षाके लिए एक किला बनवाया जिसका नाम फोर्ट सेन्ट जार्ज (Fort Saint George) पड़ा। व्यापारके सुभीते और [illegible] ओंसे बचनेके लिये बहुतसे लोग यहांपर आकर बसने लगे। [illegible] सा गांव धीरे धीरे एक बड़ा शहर बन गया। इसीको अब मद्रास कहते हैं। पूर्वीय तट-भूमिमें उन दिनों छींट तथा मलमल के सादे कपड़े बहुतायतसे बनाये जाते थे। [illegible] भारतीय द्वीप पुञ्ज, मलय, चीन और अफ्रीका तक थी। [illegible] व्यापारको अपने हाथमें कर लेनेके लियेही मद्रास स्थापित [illegible] या गया था।

बम्बई—मद्रासके बाद बम्बई इनके हाथ लगा। [illegible] [illegible] नोंने खरीदा नहीं था। बम्बई पहले पुर्तगालवालोंका था। [illegible] ई० की सन्धिके सिलसिलेमें [illegible] ई० में पुर्तगाल [illegible] [illegible] दूसरे चार्ल्स (Charles II) [illegible]

(१८) विदेशी सौदागरोंका विवरण।

अंग्रेज़ी कम्पनी—इस समय तक हिन्दुस्तानमें अंग्रेज़ी कम्पनीके अधीन कोई ऐसी जगह न थी जिसे वह अपनी कह सकती थी। यद्यपि कई एक स्थानोंमें उन्होंने छोटी छोटी कोठियां वना रखी थीं जो कि केवल मालगोदामका काम देती थीं। अव हमारे सामने एक नवयुगका प्रारम्भ होता है जब कि अंग्रेज़ी कम्पनीको दूसरी दूसरी कम्पनियों और रजवाड़ोंके आक्रमणसे अपने मालको वचानेके लिये भूमिकी आवश्यकता हुई और वह उसके पानेकी चेष्टा करने लगी।

मद्रास—१६३९ ई० में विजयनगर राज्यके हिन्दू राजाओंकी सन्तति चन्द्रगिरिके राजासे अंग्रेज़ोंने कारोमण्डलके किनारे ६ मील लम्बी और एक मील चौड़ी ज़मीनका टुकड़ा खरीदा। इस स्थानका उन्हें सालाना ६००० रुपये किराया देना पड़ता था। उसी स्थानपर अंग्रेज़ोंने अपनी जान व मालकी रक्षाके लिए एक किला वनवाया जिसका नाम फोर्ट सेन्ट जार्ज (Fort Saint George) पड़ा। व्यापारके सुभीते और डाकुओंसे वचनेके लिये वहुतसे लोग यहांपर आकर वसने लगे। छोटासा गांव धीरे धीरे एक वड़ा शहर वन गया। इसीको अव मद्रास कहते हैं। पूर्वीय तट-भूमिमें उन दिनों छींट तथा वहुत अच्छे सादे कपड़े वहुतायतसे वनाये जाते थे। जिसकी मांग भारतीय द्वीप पुञ्ज, मलय, चीन और अफ्रीका तक थी। इसी व्यापारको अपने हाथमें कर लेनेके लियेही मद्रास स्थापित किया गया था।

वम्वई—मद्रासके वाद वम्वई इनके हाथ लगा। इसको कम्पनीने खरीदा नहीं था। वम्वई पहले पुर्तगालवालोंका था। सन् १६३५ ई० की सन्धिके सिलसिलेमें १६६१ ई० में इङ्गलैण्डके राजा दूसरे चार्लस (Charles II) का विवाह पुर्तगालकी

राजकुमारीसे हुआ। पुर्तगालके राजाने यह गांव उसी स
दहेजमें दामादको दिया था। चार्लसने अंग्रेज़ी कम्पनीको
स्थान दे दिया। इसके लिये कम्पनीको सालाना १५० रुपये
पड़ता था। पहिले पहल जब यह गांव अंग्रेज़ोंके हाथ
उस समय वहां कुछ मछुए रहते थे और उस स्थानका जल
भी खराब था। परन्तु अब उसी स्थानपर एक बड़ा भारी
बस गया है। बम्बईके साथ ईरान, अफ्रीका आदि स्थानोंका
व्यापार चलता था।

कलकत्ता—शुजाके समयमें कम्पनीने हुगली, का
बाजार, पटना तथा ढाकामें नई नई कोठियां बनवाईं। बहुत
तक कम्पनी चुपचाप व्यापार करती रही। औरङ्गज़ेबके रा
कालमें सूबेदार शाइस्ताखांके साथ इन लोगोंकी कुछ
हुई। उस समय अपने बचावके लिए अंग्रेज़ सौदागरोंको
पड़ा और हार होनेपर अंग्रेज़ व्यापारी बंगालसे निकाले
इसके बाद औरंगज़ेबने जब उनको बुलवाया तब चार्णक (
Charnock) नामक एक अंग्रेज़ सौदागरने हुगलीके
१६८० ई० में तीन गांव मोल लिये। इनमेंसे एक गांवका
कालीघाट था। इसीके कारण इस नई बस्तीका नाम
पड़ा। सन् १६५२ ई० में इन्हें बिना करके व्यापार
आज्ञा मिली थी।

अब ध्यान लगाकर देखो कि हिन्दुस्तानमें अंग्रेज़ी
नींव इस तरहसे समुद्रके किनारे किनारे जमी। इन
जगहोंको केन्द्र मानकर अंग्रेज़ी राज्य धीरे धीरे सारे
फैल गया। इसका मुख्य कारण यह है कि अंग्रेज़ लो
शक्ति समुद्रपर सबसे बढ़कर है। इस समयसे यह बात
हो गई कि हिन्दुस्तानपर जो शक्ति राज करना चाहती हो
समुद्री शक्ति होना बहुत आवश्यक है।

इसी समय धनकी कमी होनेके कारण अंग्रेज़ी

एक नई कम्पनी खोलनेका विचार किया । पुरानी कम्पनीको तीन सालकी नोटिस दे दी गई और नई कम्पनी खोल दी गई । कई साल तक ये दोनों कम्पनियां आपसमें लड़ती रहीं । अन्तमें १७०८ ई० में दोनों कम्पनियोंने आपसमें मेल कर लिया । अबसे इस कम्पनीका नाम The United Company of Merchants of England Trading to the East Indies" पड़ा । इसीने १७५७ ई० से १८५८ ई० के बीच सारे हिन्दुस्तानमें अंग्रेज़ी राज्यका झंडा फहरा दिया ।

फरासीसी व्यापारी—कुछ दिनोंके बाद फरासीसी भी हिन्दुस्तानमें आये । उनकी कम्पनी १६६४ ई० में स्थापित हुई । १६७६ ई० में उनका प्रधान स्थान पाण्डिचेरी उनके हाथ लगा । फरासीसी कम्पनी व्यापारसे अधिक लाभ न उठा सकी और उनकी दृष्टि सदा राज्य स्थापित करने पर थी । इसलिये इस कम्पनीकी कुछ भी उन्नति नहीं हुई । हिन्दुस्तानमें अभी तक पाण्डिचेरी, चन्द्रनगर, कारिकल, माही आदि स्थान फरासीसियोंके अधिकारमें है । हिन्दुस्तानमें ये लोग अपना रोब जमानेके लिये अंग्रेज़ोंसे बहुत लड़े, पर सफल नहीं हुए ।

अब देखो, पुर्तगोज़, डच् और फरासीसी सभी हिन्दुस्तानमें आये, परन्तु अन्त तक जीत अंग्रेज़ोंकी ही हुई । इसका कारण यह है कि अंग्रेज़ोंकी समुद्रीय शक्ति बढ़ी चढ़ी थी । उनकी कम्पनीके लोग व्यापारकी बातोंको अच्छी तरहसे समझते थे और साथही साथ उनकी सर्कार भी उनको सहायता देती थी । इसके कारण अंग्रेजोंकी दिन प्रति दिन उन्नति होने लगी तथा दूसरोंकी अवनति होती गई ।

सारांश

१६३९ ई० अंग्रेज़ी कम्पनीने मद्रास खरीदा

१६६१ „ „ „ को बम्बई मिला

१६६४ ,,	फरासीसी कम्पनी बनी
१६६० ,,	जाब चार्णकन कलकत्ताकी नींव डाली
१७०८ ,,	दो विरोधी अंग्रेज़ी कम्पनियां मिल गईं

(१९) औरंगज़ेब

(१६५८—१७०७ ई०) ।

साम्राज्यकी अवस्था—अकबरकी मृत्युके उपरान्त उत्तरी भारतमें साम्राज्यकी सीमा बढ़ी न थी। केवल कन्दहार और बलख़ देशोंको ईरानी लोगोंने छीन लिया था। पर दक्षिणमें मुग़ल लोग अभी तक साम्राज्य बढ़ा रहे थे। दक्षिणके राज्योंमेंसे अहमदनगर, खान्देश, बरार आदि जीत लिये गये थे। अब बीजापुर और गोलकुण्डा जीतनेकी चेष्टा हो रही थी।

अब मुग़ल अपने पूर्व पुरुषोंकी तरह शूर वीर तथा लड़ाकू न रहे। इसके तीन कारण हैं। पहिला कारण तो यह है कि इस देशमें अधिक दिनोंतक रहनेके लिये, वा आवश्यकताके कारण, वा अकबरकी चलाई हुई मेलकी नीति पालन करनेसे ये लोग इस देशके रहने वाले अफगान और हिन्दुओंके साथ शादी ब्याह करने लगे थे। इसलिये उनका बल घटता गया। दूसरा कारण यह है कि अकबरके मरनेके बाद मुग़ल विलासी हो गये थे। उन्हें सुख-विलास अधिक सूझने लगा था। इसलिये ये लोग पहलेकी भांति लड़ने वाले न रहे। तीसरा कारण यह है कि मुग़ल कभी कट्टर मुसलमान न थे। अकबरके उदार धर्मके फैलनेपर अधिकतर लोग धर्महीन बन गये। ये लोग किसी धर्मको नहीं मानते थे। इसका फल यह हुआ कि ये सब स्वेच्छाचारी बन गये और दुर्बलता, सुख-विलास और स्वाधीनता सारी सेना और दरबारमें छा गई थी।
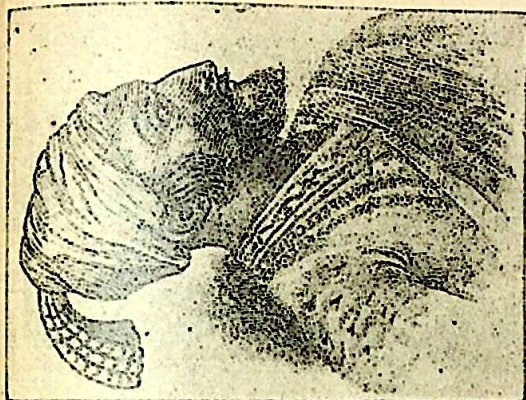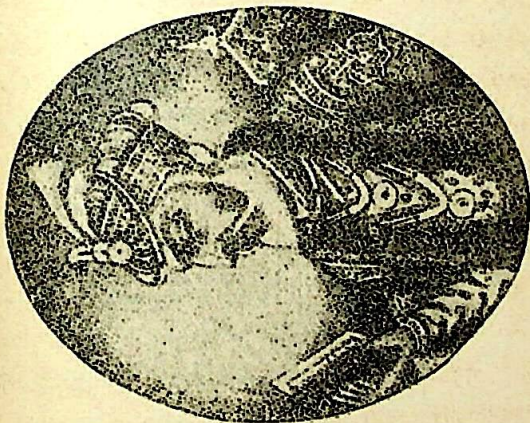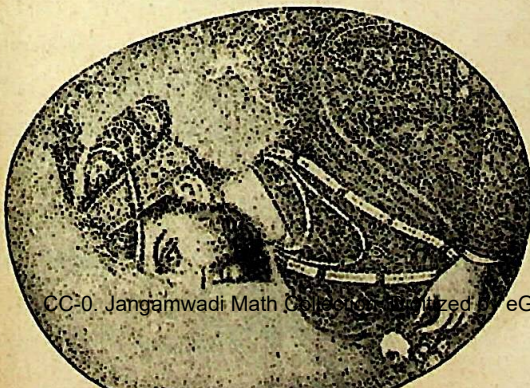
(Chap. 17)
Shah Jehna.

(Chap. 19)
Aurangzeb

(Chap. 20)
Shivaji.

इसके अतिरिक्त अकबरकी तरह जहांगीर और शाहजहां राजनीतिज्ञ न थे। अकबरकी सफलताका प्रधान कारण यह था कि वह मेलकी नीतिपर काम करता था और सबको अपना अपना धर्म बिना रोक टोकके मानने देता था। पर जहांगीर और शाहजहांने इस नीतिका ठीक ठीक पालन नहीं किया। इसका फल यह हुआ कि फिर हिन्दू और मुसलमानोंमें धार्मिक झगड़े होने लगे। मेलकी नीतिके अनुसार काम न करनेसे दक्षिणके नये जीते हुये राज्योंमें गड़बड़ी मचने लगी। ये नये जीते हुये राज्य मुग़ल साम्राज्यके साथ बिलकुल न मिले। साम्राज्यकी सीमा दिन प्रतिदिन बढ़नेके कारण एकही आदमी से ठीक ठीक प्रबन्ध भी नहीं हो सकता था। उधर नूरजहांकी निकाली हुई मालगुज़ारीको ठीकेपर देनेकी रीतिसे रियासतका समूचापन जाता रहा। सूबेदार और ठेकेदार लोग अभीसे अपनी अपनी भूमिको मौरूसी समझने लगे थे। फिर शाहजहांने जब अपने चार शाहजादोंको चार बड़े बड़े देशोंका मालिक बना दिया तबसे साम्राज्यके टूटनेकी आशंका बहुत बढ़ गयी। भाई भाईके झगड़ेके कारण साम्राज्यका बल और भी घट गया।

शाहजादा औरंगज़ेब—सन् १६१८ ई० में औरंगज़ेबका जन्म हुआ था। जब इसकी अवस्था केवल दो बरसकी थी उसी समय शाहजहांने जहांगीरके विरुद्ध बलवा किया। सन्धि हो जानेपर शाहजहांको अपने दो बेटे, दारा और औरंगज़ेबको दरबारमें जमानतके रूपमें देने पड़े। इस समयसे १६२७ ई० तक औरंगज़ेबको नूरजहांकी निगरानीमें रहना पड़ा। सम्भव है कि नूरजहांकी सख्ती और दरबारके छल कपटोंके कारण औरंगज़ेब इतना शक्की और चतुर बन गया हो। चाहे जो हो पर यह सच है कि मौलवियोंकी कट्टर और अनुदार शिक्षाके कारण वह धर्मके विषयोंमें बड़ा पक्का और हठी बन गया था। सत्रह वर्षकी अवस्थामें वह दक्षिणका सूबेदार बनाया गया। इसी समय

दारासे इसकी अनबन हो गयी । कुछ दिनोंके बाद एकाएक उसने फ़कीरी ले ली । एक सालके बाद वह फिर संसारी बना। जीवनकी गतिको इस प्रकार बदलनेके कारण वह बड़ा कट्टर मुसलमान बन गया । और सारे साम्राज्यमें इसलाम धर्म फैलानेकी चेष्टा करने लगा। इसके बाद तीन साल तक उसने गुजरातकी सुबेदारी की। इसी समय ईरानियोंने कन्दहार छीन लिया । इसलिये औरंगज़ेबको सिपहसालार बनाकर शाहजहांने अफगानिस्तानको भेजा। औरंगज़ेब कन्दहार ले न सका पर उसने इस लड़ाईसे बड़ा लाभ उठाया। इसी अवसर पर उसका साम्राज्यकी सबसे अच्छी सेनासे पूर्णतया परिचय हो गया और सारी सेना उसके पक्षमें हो गई। वहांसे लौटनेपर वह दक्षिणका सूबेदार बनाया गया । वहीं औरंगज़ेबने गोलकुण्डा और बीजापुरके जीतनेका प्रयत्न किया और थोड़ा बहुत सफल भी हुआ। इसी समय दारासे भी इसकी खुल्लम खुल्ला शत्रुता हो गई। क्योंकि दारा इसकी राजनीतिक चाल पसन्द नहीं करता था। दक्षिणकी रियासतोंको जीतनेके पहले ही समाचार मिला कि शाहजहां बीमार है और दारा बादशाह बन गया है। इसलिये १६५७ ई० में उसको अपना दावा पेश करनेके लिये तलवार उठानी ही पड़ी। अन्तमें उसने तख्तके दूसरे दावा करने वालोंको हरा दिया और अपने पिताको सन् १६५८ ई० में कैद कर स्वयं बादशाह बन बैठा।

बंगाल—औरंज़ेबके सिपहसालार मीरजुमलाने आसाम जीतनेकी चेष्टा की परन्तु सफल न हुआ और बंगालमें मर गया। उसके बाद नवाब शाइस्ताखां बंगालका सूबेदार होकर आया। इसने आराकानके राजाको हरा कर चटगांव जीत लिया। इसीके समयमें उस देशमें रुपयेका आठमन चावल बिकता था। उसने उस समयकी राजधानी ढाकामें एक फाटक

[लगा] कर उसे बन्द करवा दिया और उसपर लिखवा दिया कि जिसके राज्यमें रुपयेका आठ मन चावल बिके वही महात्मा इस फाटकको खोले। फिर १७३६ ई० में चावलका भाव आठ मन होनेके कारण यह फाटक बड़े ठाटबाटके साथ खोला गया।

औरंगज़ेबकी धर्म नीति—स्वभाव हीसे औरंगज़ेब धर्मका बड़ा पक्का था। इसलिये वह यही चाहता था कि हिन्दुस्तान अपने धर्मके पक्के, सुन्नी मुसलमानोंका ही वासस्थान हो। इस उद्देश्यको पूरा करनेके लिये वह सब तरहकी विपत्तियां झेलना और रुपये पैसेका नुकसान सहना अपना धर्म समझता था। वह धर्मके मामलेमें कपटी न था। राजनीतिमें चालबाज़ी करने और धोखा देनेसे धर्मको किसी प्रकारकी हानि नहीं होती यही उसका पक्का विश्वास था। अपने भाइयोंको मार करके या बूढ़े बापको क़ैद करके उसने कभी पछतावा नहीं किया। वह राजनीति और धर्मनीतिको एक दूसरेसे अलग मानता था। इसलिये वह अपने धर्मके फैलानेके लिये सारे विधर्मियोंको जिस प्रकारसे हो सके, अपने धर्ममें लाना चाहता था। पुनः सम्भव है कि उसे वाध्य होकर ऐसी धर्मनीतिका अवलम्बन करना पड़ा हो। उसने अस्वाभाविक उपायोंके द्वारा सिंहासनको प्राप्त किया था। इसके कारण शिया मुसलमान यथा ईरानके शाह आदि, तथा राजपूत लोग जिन्होंने खुल्लमखुल्ला दाराका पक्षपात किया था, सभी कोई उससे अप्रसन्न थे। अतः अपने कुशलके लिये, स्वार्थान्ध होकर उसने आर्यावर्त्तके कुल सुन्नी मुसलमानोंको अपने पक्षमें लानेके लिये, ऐसी नीतिका अवलम्बन किया हो। परन्तु उससे उसकी अदूरदर्शिता ही प्रकट होती है।

विधर्मियों पर अत्याचार—सिंहासन पर बैठनेके बाद कुछ दिनों तक उसने पहलेके बादशाहोंकी तरह उदार नीतिसे

राज्य किया। इसका कारण यह था कि उस समय तक राजपूतोंका रोब दरबारमें बढ़ा चढ़ा था। पर अम्बरके महाराज जयसिंहके मरने और मारवाड़के महाराज यशवन्त सिंहके काबुलमें बदली होनेके बाद उसने अपनी धर्म नीतिका अनुसार होकर काम करना निश्चय किया। सन् १६६६ ई० में उसको समाचार मिला कि काशी आदि तीर्थस्थानोंके ब्राह्मण लोग जनताके बीच अपने धर्मका उपदेश देते हैं और मुसलमानोंको भी अपने धर्मकी शिक्षा देते हैं। इससे असन्तुष्ट होकर उसने आज्ञा दी कि सब सूबेदार अपने अपने सूबेमें हिन्दुओंके मन्दिरोंको और पाठशालाओंको तोड़दें और किसीको मूर्त्तिपूजा न करने दें। इस प्रकारकी आज्ञाका परिणाम यह हुआ कि काशी, मथुरा आदि जगहोंके अच्छे अच्छे सुन्दर मन्दिर तोड़ दिये गये और उनके स्थान पर मसजिदें बनवा दी गयीं। महाराज यशवन्त सिंहके मरनेके बाद उसने हिन्दुओं पर फिर जज़िया कर लगाया। जो व्यापारी मुसलमान न थे उनपर अधिक कर लगाया और सरकारी नौकरियोंसे हिन्दुओंको छुड़ाने लगा। इसका फल यह हुआ कि सताये जानेके कारण अप्रसन्न होकर हिन्दू लोग अपने धर्म और मानकी रक्षाके लिये अत्याचारी सम्राट्से लड़नेको तैयार हो गये।

बलवे—चारों ओरसे हिन्दुओंने विद्रोह आरम्भ कर दिया। सबसे पहिले नारनौल (पटियाला राज्यमें) के निकट सतनामी सम्प्रदाय वालोंने बलवा किया। इस सम्प्रदाय वाले एकेश्वरवादी थे तथा जाति-पांतका भी भेद नहीं मानते थे। इसमें अधिकतर लोग नीच जातिके होते थे, तथा इनकी धार्मिक क्रियाएं भी पवित्र नहीं समझी जाती थीं। चाहे कुछ हो, उनसे बड़ा कठोर बर्त्ताव किया गया। सिख गुरु तेग बहादुरने जब मुसलमान बननेसे इनकार किया तो उन्हें औरंगजेबने मरवा डाला। इसका फल यह हुआ कि उस समयसे सिखोंकी एक

लड़ाकू जाति बन गयी।

राजपूतोंसे लड़ाई—औरंगज़ेबके अत्याचारसे राजपूत उससे पहिलेसे ही बिगड़ गये थे। अन्तमें जब यशवन्त सिंहकी मृत्युके बाद औरंगज़ेब उसके दो कुमारों तथा महारानीको कैद कर लेना चाहा तब दुर्गादास नाम का महाराजका एक बहुत पुराना सरदार बड़ी बहादुरीसे उन्हें लेकर चित्तौरके महारानाके पास चला गया। तब मारवाड़ और मेवाड़ मुग़लोंसे लड़नेके लिये तैयार होगये। औरंगज़ेब अपने बेटोंके साथ राजपुताना गया। कई जगहोंमें उसने राजपूतोंको हराया तो अवश्य पर उन्हें दबा न सका। इसी बीचमें उसका प्रिय पुत्र अकबर उससे बिगड़ कर राजपूतोंसे जा मिला। पहले तो औरंगज़ेबने मीठी मीठी बातोंसे भरी हुई चिट्ठियां लिख कर उसे अपनी ओर लानेकी चेष्टा की। पर जब वह ऐसा न कर सका तब एक झूठा पत्र लिखकर उसने राजपूतों और शाहजादा अकबरके बीच फूट डाल दी जिससे अकबरको वहांसे भागना पड़ा। कई सालों तक वह मारा मारा फिरा। अन्तमें ईरान चला गया। इधर जज़िया कर लेना बन्द कर औरंगज़ेबने महारानासे १६८१ ई० में सन्धि कर ली। इस लड़ाईका फल यह हुआ कि तभीसे राजपूतोंने मुग़लोंको सहायता देनेसे हाथ खींच लिया और जब दक्षिणमें लड़ाई छिड़ी तब उन्होंने औरंगज़ेबकी सहायता नहीं की।

मराठा जातिका उदय—बंगालमें जिस समय सेनापति मीरजुमला आसाम जीतनेका प्रयत्न कर रहा था उसी समय दक्षिणभारतमें मराठा सरदार शिवाजीने मुग़ल राज्यकी दक्षिणी सीमा पर उपद्रव मचाना आरम्भ कर दिया (१६६०ई०)। मराठा जाति और शिवाजीका वर्णन आगे होगा। औरंगज़ेबके जब बड़े बड़े सेनापति उसे हरा न सके तब सन् १६६३ ई० में शिवाजीसे सन्धि करके औरंगज़ेबने उसे आगरा आनेके लिये न्यौता भेजा। जब शिवाजी वहां पहुंचा तब दरबारमें उसका बड़ा अपमान करके

औरंगज़ेबने उसे कैद कर लेना चाहा। परन्तु चतुर शिवाजी भेष बदलकर वहांसे निकलही आया। घर पहुंचकर शिवाजी मुगलोंसे फिर लड़ने लगा और राजाकी उपाधि प्राप्त कर उसने सूरत बन्दर लूट लिया। औरंगजेबने उससे लड़नेके लिये फिर एक बड़ी भारी सेना भेजी। इस सेनाको शिवाजीने हरा कर भगा दिया और मुसलमानी राज्योंसे चौथ (एक राज-कर जिसमें आमदनीका चौथाई हिस्सा देना पड़ता है) वसूल करने लगा। १६८० ई० में शिवाजीकी मृत्यु हुई। इसके बाद भी मराठा जातिमें वही उत्साह और बल बने रहे जैसे कि शिवाजीके समयमें थे। बादशाही सेना किसी प्रकारसे उसे दबा न सकी। इसलिये मराठोंको दबानेके लिये औरंगज़ेब स्वयं दक्षिणको चला।

दक्षिणकी लड़ाइयां—अपने राज्यको बढ़ानेके लिये और दक्षिणके शिया सम्प्रदायके दो मुसलमानी राज्यों और मराठे हिन्दुओंकी शक्ति चूर करनेके लिये, राजपूतोंको दबा कर, सन् १६८१ ई० में औरंगज़ेब दक्षिणकी ओर चला। पहिले पहल उसने मराठोंको दबाना चाहा पर कुछ कर न सका। अन्तमें उसने मुसलमानी रियासतोंको ही पहिले जीतना ठीक समझा।

बीजापूर—अपनी सूबेदारीमेंही औरंगज़ेबने बीजापुरके पूर्वी हिस्सोंको जीत लिया था। अब पश्चिमी प्रान्तको भी मराठोंने जीत लिया। अन्तमें सन् १६८६ ई० में औरंगज़ेबने बीजापुर लेही लिया। और नाबालिग सुलतानको कैद कर लिया। इसी प्रकार सारा राज्य मुग़ल साम्राज्यमें मिला लिया गया।

गोलकुण्डा—गोलकुण्डा (या हैदराबाद) के सुलतान अबुल हसनके शिया सम्प्रदायके होने, मराठोंको चौथ देने और उसकी बदचलनीके लिये औरंगज़ेबने उसके राज्यपर चढ़ाई कर दी। इसकी चाल-चलन अवश्य बुरी थी, पर जब उसने देखा कि अब औरंगज़ेबके हाथसे छुटकारा नहीं है तो इसने लड़कर जान देनेही का निश्चय किया। अपने सेनापति अबदुर

रज़ाककी सहायतासे उसने बहुत दिनोंतक मुग़लोंकी चढ़ाईसे किलेको बचाया। औरंगज़ेबके सब तरहके प्रयत्न विफल हुए। अन्तमें एक विश्वासघाती सेनापतिको घूस देकर औरंगज़ेबकी सेना किलेमें घुस गयी। अबदुर रज़ाक बड़ी बहादुरीके साथ लड़ता रहा, अन्तमें मूर्छित होकर गिर पड़ा। औरंगज़ेब उसकी स्वामिभक्तिकी बातें सुनकर बड़ा सन्तुष्ट हुआ और उसकी चिकित्सा करनेके लिये दो हकीम भेजे। अन्तमें अबुल हसनको भी उसने कैद कर लिया और सारा गोलकुण्डा राज्य १६८७ ई० में अपनी रियासतमें मिला लिया।

इन दोनों राज्योंको औरंगज़ेबने जीत तो अवश्य लिया परन्तु साम्राज्यके लिये इसका फल शुभ नहीं हुआ। इन राज्योंको नष्ट कर देनेके कारण तभीसे मुग़लोंको मराठोंका सीधा सामना करना पड़ा और उनकी डिपू दूर होनेके कारण वे कभी मराठोंको दबा नहीं सके। उन रियासतोंके सिपाहियोंको नौकरीसे छुड़ानेके कारण कुछ तो देशभरमें लूटमार करने लगे और कुछ मराठी राजा शम्भाजीसे जा मिले। देशभरमें इस तरहकी हलचल मच जानेके लिये मराठोंको बड़ा सुभीता हुआ। शम्भाजी अवसर पाकर पुराने बीजापुर रियासतके बहुतसे गढ़ दबा बैठे। फिर इन दोनों राज्योंको मिला लेनेसे साम्राज्यका विस्तार इतना अधिक हो गया कि एक आदमीसे उसका ठीक ठीक प्रबन्ध नहीं हो सकता था।

मराठोंसे लड़ाई—ईसी प्रकारसे दक्षिणी भारतके इन दोनों शिया राज्योंको जीत कर औरंज़ेबने हिन्दू मराठोंसे लड़नेके लिये कमर बांधी। इतने दिनों तक मराठोंसे थोड़ी बहुत लड़ाई अवश्य चलती रही, परन्तु इससे कुछ काम नहीं निकला। औरंगज़ेबके इधर पहुंचते ही नवीन उत्साहसे लड़ाई आरम्भ हो गई। मुग़ल सेनाने गोलकुण्डा तथा बीजापुरके सूबोंसे मराठोंको बिलकुल भगा दिया; रायगढ़, पनहल आदि बड़े बड़े गढ़ घेर

लिये गये, अन्तमें विलासी शम्भाजी भी कैद कर लिया गया। औरंगज़ेबने जब उसे इसलाम धर्म ग्रहण करनेके लिये कहा तब उसने सम्राट्को गालियां दीं। क्रुद्ध होकर औरंगज़ेबने उसका बड़ा अपमान किया और अन्तमें मरवा डाला। शम्भाजीके बेटे साहुको राजा बना कर मराठे बीस वर्ष तक बड़ी वीरताके साथ मुग़लोंका सामना करते रहे। परन्तु उनके कुल प्रयत्न विफल हुए। मुग़लोंने कुल गढ़ ले लिये और प्रायः सभी लड़ाईमें मराठोंको नीचा दिखाया। फिर भी स्वाधीनताके संग्रामका अन्त नहीं हुआ। अन्तमें जब साहुको कैद कर लिया गया और रायगढ़ तथा पनहलके किले जीत लिये गये तब राज-प्रतिनिधि राजाराम कर्णाटकके जिञ्जीगढ़में चला गया (१६९० ई०)। फिर भी लड़ाई चलती रही। एकबार इन्होंने शाही ख़ेमा तक लूट लिया। बादशाह एक एक गढ़ घेर कर कुछ दिनोंके लिये बैठ जाता था और इधर मराठे लोग देश भरमें उपद्रव मचाये रहते थे। अन्तमें पांच साल तक घेर कर रहनेके बाद जब ज़ुलफिकरख़ांने जिञ्जीगढ़ ले लिया (१६९८ ई०) तब राजारामने सताराको अपनी राजधानी बनाई और वहींसे उसने खान्देश, बरार और गोदावरीकी तरेटी पर चढ़ाई की। मुग़ल अफसरोंसे बज़ात् चौथ * और सरदेशमुखी† वसूल किये तथा अपनी ओरसे सूबेदार आदि भी नियुक्त किये। बड़े बड़े नगरोंमें खूब लूटमार भी किये। १७०० ई० में राजारामका देहान्त होने पर उसकी धर्मपत्नी ताराबाईने अपने बेटे शिवाजीको गद्दी दिलाई। उधर बादशाह एकके बाद दूसरा गढ़ जीतता गया। १७०४ ई० तक पनहल, सतारा, सिंहगढ़, रायगढ़, तोरणा आदि कुल बड़े बड़े गढ़ ले लिये गये।

---

* चौथ—मालगुज़ारीका चौथा हिस्सा,

† सरदेशमुखी—मालगुज़ारीका दसमांश।

वीर रमणी ताराबाईके उत्साहसे सारी मराठा जातिमें एक नवीन शक्तिका सञ्चार होगया। १७०५ ई० में उन्होंने मध्य प्रदेश तथा गुजरात पर चढ़ाई की तथा खूब लूटमार किये। १७०६ ई०में बादशाह एक विद्रोही सर्दारसे लड़नेके लिये मध्य प्रदेश गया। अवसर पाकर मराठोंने कुल जीते हुए गढ़ छीन लिये। श्रान्त होकर सम्राट् अहमदनगर चला आया। मराठोंने तब उस स्थानको घेर लिया। परन्तु जुलफ़िकरखांने उनको वहांसे भगा दिया (१७०७ ई०)। अन्तमें उसी स्थानमें सम्राट्की मृत्यु भी हुई।

असफलताका परिणाम—औरंगज़ेब मराठोंको दबा न सका। इसका फल साम्राज्यके लिये बड़ा अशुभ हुआ। सताये हुए मराठोंने बदला लेनेके लिये सारे साम्राज्यको रौंद डाला। दक्षिणी लड़ाइयोंमें बहुत रुपये व्यय हो जानेके कारण मुग़ल बादशाहका दिवाला निकल गया। दक्षिणके राज्योंको साम्राज्य-में मिला लेनेसे साम्राज्यका विस्तार बहुत बढ़ गया। परन्तु औरंगज़ेबके बेटोंकी अयोग्यता तथा कुप्रबन्धसे सारा साम्राज्य हाथसे जाता रहा। हार खाते खाते मुग़ल सेनाका बल घटता गया और वह नाम मात्रकी सेना रह गयी। बादशाहके बहुत दिनोंतक दक्षिणमें रहनेके कारण उत्तरी भारतमें राज्यका प्रबन्ध ठीक ठीक नहीं हो सका, जिससे अन्तमें कई एक सूबेदार स्वतन्त्र बन गये।

औरंगज़ेबका चरित्र—उस समय औरंगज़ेबके बराबर धार्मिक मुसलमान कोई न था। उसके जीवनका मुख्य उद्देश्य यह था कि वह एक आदर्श मुसलमान सम्राट बने। बादशाह बन कर उसने कुरानकी हरएक बात मानकर वैसे ही चलने का प्रयत्न किया। सारा कुरान उसने कण्ठ कर लिया। इस-लामके धर्म ग्रन्थोंको भी पढ़ा था और वह धर्म विरोधी वस्तुएं कभी नहीं खाता पीता और न अपनी सुख शान्तिके लिये

खज़ानेसे एक पैसा ही लेता था। स्वयं गाना बजाना जानते पर भी उसने बादशाह हो जाने पर गाना बजाना छोड़ दिया था। उसके धर्ममें जितने व्रत (रोजे) रखनेके नियम हैं वह उन सबको रखता था। उन दिनोंके धार्मिक मुसलमानोंकी तरह वह विधर्मियोंको—जो इस्लामको नहीं मानते और दूसरे धर्मके अनुयायी थे—सताना अपना कर्तव्य समझता था। इससे वह हिन्दुओंको सरकारी नौकरी नहीं देता था। उनके मन्दिरोंको तोड़ देता और उन्हें सब प्रकारसे तंग करता था। इसी विश्वाससे उसने जज़ियाकर फिरसे उन लोगोंपर लगा दिया था। धर्मका ऐसा पक्का होनेके कारण ही, मुसलमान लोग उसे एक आदर्श सम्राट मानते हैं।

परन्तु जब हमलोग उसकी बादशाहीके बारेमें विचार करते हैं तो हमें उसे एक अयोग्य बादशाह कहना पड़ता है। "धर्म पुस्तकोंके अनुयायी होकर वह मुसलमानोंको किसी प्रकारका दण्ड नहीं देता था। इससे उसके मुसलमान दरबारी और सेनापति आपसमें लड़ते झगड़ते थे। इसका फल यह हुआ कि सम्राट सफल न हुआ।"* उसे न किसीका विश्वास था और न किसीसे प्रेम। इसलिए न तो उसके नौकर ही स्वामिभक्त थे और न उसके बेटे ही पितृभक्त। उसका मन साफ न था और उसकी राजनीतिका मूलमन्त्र था चालबाज़ी, धोखेबाज़ी और धूर्त्तता। वह दूरदर्शी भी न था, जिन कामोंको करता उसके परिणाम पर दृष्टि नहीं करता था। वह स्वयं अच्छा सेनापति भी न था। इसके प्रमाण कन्धार और दक्षिणकी लड़ाइयां हैं। उसके समयमें कला, शिल्प, विद्या और साहित्यमें कुछ भी उन्नति न हुई। असलमें औरंगज़ेब का स्थान भारतके बड़े बड़े बादशाहोंमें नीचा है। यथा इसी

* खाफी खां।

लिये उसने अपने राज्य कालका इतिहास दूसरोंको लिखनेके लिये मना कर दिया था ?

सारांश

१६१८	ई०	औरंगज़ेबका जन्म
१६२०-२७	,,	औरंगज़ेब जमानतके स्वरूप रहा
१६५८	,,	,, ने सामूगढ़की लड़ाई जीती
१६५९	,,	,, बादशाह बना
१६६०	,,	शिवाजीने मुग़ल राज्यपर चढ़ाई की
१६६९	,,	हिन्दुओं पर अत्याचार
१६७४	,,	शिवाजीने स्वाधीन हिन्दूराज्य स्थापित किया
१६७९	,,	हिन्दुओं पर जज़ियाकर लगाया गया
१६८०	,,	शिवाजीकी मृत्यु
१६८०-८१	,,	राजपूतोंसे लड़ाई
१६८६	,,	बीजापुर मुग़ल साम्राज्यमें मिला लिया गया
१६८७	,,	गोलकुण्डा ,, ,, ,,
१६८९	,,	शम्बाजी मारा गया
१६६२-१७०७	,,	मराठोंसे लड़ाई
१७०७	,,	औरंगज़ेबकी मृत्यु

(२०) मराठा जातिका अभ्युदय।

महाराष्ट्र देश—दक्षिणी भारतके पश्चिमी किनारे प
बसनेवाली जातिको मराठा कहते हैं। ये लोग जिस दे
रहते हैं उसे महाराष्ट्र देश कहते हैं। इस देशके उत्तरमें सतपु
पहाड़, दक्षिणमें गोआ और बीदर, पूर्वमें वर्धा नदी और पश्चिम
अरब सागर है। यह देश अधिकतर पहाड़ी और जंगली है।
प्रत्येक पहाड़के ऊपरी भागके चौरस होनेके कारण और च
नोंकी भीत लगी रहनेके लिये करीब करीब सभी पहाड़
चोटियों पर एक एक गढ़ दीख पड़ते हैं। ये सब गढ़ सुदृढ़
और उस समयमें अजेय समझे जाते थे।

मराठा जाति—पहाड़ी देशमें रहनेके कारण मराठे ना
हट्टे-कट्टे, बुद्धिमान् और फुर्तीले होते हैं। इनको परिश्रम कर
पेट पालना होता है। इसके लिये ये बड़े दुनियादार होते हैं
कामको पूरा करनेकी ओर इनका ध्यान अधिक रहता है—
उपाय पर नहीं। यद्यपि राजपूतोंके समान ये आदर्श नहीं
फिर भी राजपूनोंकी वीरता इनमें अधिकतासे पायी जाती है।
तुमको मालूम है कि इस देशको—जिसमें मराठे बसते हैं पहि
देवराष्ट्र कहते थे, जिसे अला-उद्दीन खिलजीने सबसे पहि
जीता था। उसके बाद यह राज्य बहमनी राज्यके साथ मि
लिया गया। इस समय यह देश बीजापुरके अधीन था। प
पहाड़ोंमें कहीं कहीं छोटे छोटे रजवाड़े स्वतंत्र थे और
मराठे सरदार राज काजमें सहायता देते थे। ये लोग पहा
किलोंमें रहकर आसपासकी भूमिपर राज्य करते थे। लड़ा
समय अपनी सेना लेकर मुसलमानोंकी सहायता करते थे
जो सरदार बीजापुरके सुलतानके अधीन थे उनमें महा
शिवाजीके पिता शाहजी भी एक थे। शिवाजीकी मां जीजा

देवगिरिके प्राचीन राजवंशकी थीं इसीलिये शाहजी अपनेको क्षत्रिय मानते थे। शाहजी पहले अहमदनगरके सुलतानके सेनापति थे। अन्तमें जब मुगलोंने अहमदनगरको जीत लिया तो शाहजीने बीजापुरके सुलतानके यहां नौकरी कर ली।

देशकी अवस्था—शिवाजीके जन्म लेनेके पूर्वहीसे मराठा लोगोंमें एक जातीय भावका विकास हो रहा था। पन्धरपुरके धार्मिक आन्दोलनके अगुए ज्ञान देव, रोहिदास, नरहरि, नामदेव आदि महात्माओंने जाति पांतके भेद को व्यर्थ बता कर मानव जातिकी समानताका प्रचार किया। पुनः तीर्थयात्री लोगोंने इसी भावको महाराष्ट्रके आर पार प्रचार किया। इसी धार्मिक आन्दोलनके कारण महाराष्ट्रीय भाषाकी भी बड़ी उन्नति हुई तथा अहमदनगरके दरबारमें भी इसी भाषाका व्यवहार होने लग गया था। साथही साथ अहमदनगर तथा बीजापुर राज्योंसे निकट सम्बन्ध होनेके कारण इनकी राजनीतिके विषय में भी अच्छी शिक्षा मिली थी। इस प्रकार शिवाजीके उदय होनेके समय महाराष्ट्र देशका वायुमण्डल एक विराट जातीयताके भाव से पूर्ण था। भूमि प्रस्तुत थी, केवल एक नायकका अभाव था। शिवाजीने इसी अभावकी पूर्त्ती की।

शिवाजीकी बाल्यावस्था—सन् १६२७ ई० में, जिस साल शाहजहां सम्राट हुआ, उसी साल शिवाजीका जन्म हुआ था। पिता अधिकतर नौकरी ही पर रहते थे और माता पूना ज़िलेमें जुन्नरगढ़में रहती थीं। वह बड़ी बुद्धिमती और धार्मिक थीं। इस लिये अपनी माताकी शिक्षा और उनके उदाहरणसे शिवाजी भी बाल्यावस्थाहीमें धर्मका बड़ा पक्का बन गया और उसी समयसे ब्राह्मण, गौ और वर्णाश्रमपर इनका प्रेम और भक्तिभाव भी पैदा हुआ। सन् १६३६ ई० से शिवाजी और उसकी माता पूनामें रहने लगीं। तभीसे दादाजी कोन्ददेव नामके एक ब्राह्मण शिवाजीके निरीक्षक और आचार्य नियुक्त हुए। वह रामायण और महाभार-

तके आदर्श वीरोंकी कहानियां कहते थे जिन्हें शिवाजी मन लगाकर सुनते थे। बड़े बड़े वीरोंके अद्भुत बलवीर्यका वर्णन सुनते सुनते बालकका मन उत्साह, वीरता और बढ़ावेसे फूल उठता था। किताबी शिक्षाके स्थानमें घोड़ेपर सवारी करना, तीर, बरछा, तलवार आदि चलाना अच्छी तरहसे सिखाया गया। कुछ बड़ा होनेपर शिवाजीने पहाड़ी मावलियोंका दल जुटा लिया। उनको अपने साथ लिये हुए शिवाजी देशभरके पहाड़ों और जंगलोंमें फिरा करता था और अवसर मिलजानेपर लूट-पाट भी करता था। इस घूमने फिरनेका फल यह हुआ कि उसे अपने देश की प्राकृतिक अवस्था, जिसे तुम Geography कहते हो-भली भांति मालूम हो गयी। क्योंकि सेनापतियोंको उस देशका जिसमें लड़ाई होती हो, भूगोल जानना अत्यन्त आवश्यक है। इसके बाद शिवाजी तोरणा, चाकण, सूपा आदि पहाड़ी किलोंको लेने और नये नये किले यथा रामगढ़ आदि भी बनाने लगा। सन् १६४८ ई० में उसने कोंकणके दक्षिणीय भाग पर अच्छी रीतिसे अपनी प्रभुता जमाली। शिवाजीको बढ़ती देख कर बीजापुरके सुलतान भयभीत हो गया, तथा शाहजीको उसने कैद कर लिया। इसी समय बादशाह शाहजहांकी सहायता ले कर शिवाजीने शाहजीकी मुक्ति कर दी। अन्त में १६५५ ई० में उसने एकाएक जौलीके हिन्दू राजा पर आक्रमण कर उसके राज्यको जीत लिया।

बीजापुरके साथ लड़ाई—अफ़ज़लखां—जौलीका राजा सुलतानका सामन्त रहा अतः सुलतानने शिवाजीको दबानेके लिये अपने सेनापति अफ़ज़लखांको भेजा। अफ़ज़लखां बड़ा शूरवीर तथा अभिमानी था। वह बिना लड़ाई किये धूर्त्ततासे काम निकालना चाहता था। अन्तमें उसने सन्धि करनेका प्रस्ताव कर शिवाजीके पास एक दूत भेजा। शिवाजीने घूस देकर दूतसे अफ़ज़लखांका अभिप्राय मालूम कर लिया अन्तमें

यह तय हुआ कि शिवाजी और अफ़ज़लखां दोनों बिना हथियार लिये बीच रास्तेमें मिलेंगे। शिवाजी उस समयके मुसलमान राजपुरुषोंकी धूर्त्तताओंसे अच्छी रीतिसे परिचित था, इसलिये अपने सिपाहियोंको प्रस्तुत रहने की आज्ञा दे, तथा, स्वयं गुप्त हथियार आदि लेकर शत्रुसे मिलने चला। मिलने पर पहिले पहल अफ़ज़लने बड़ी नम्रतासे उससे बातचीत की। जब एक दूसरेसे गले मिलने लगे, उस समय उसने चतुराईसे शिवाजीपर आक्रमण किया परन्तु शिवाजी पूर्वहीसे प्रस्तुत था। अतः उसने उसी जगहपर उसका काम तमाम कर दिया। इसी समय समाचार पातेही मराठी सेना एकाएक मुसलमानी सेनापर टूट पड़ी और उनको बेतरह हरा दी, तथा उनका सारा सामान लूट ली। इस जीतका परिणाम यह हुआ कि तभीसे अपने देशवासियोंकी दृष्टिमें शिवाजीका स्थान बड़ा ही उच्च हो गया। चारों ओर आनन्द छा गया। तथा शिवाजीको लोग स्वाधीनताके संग्रामके प्रधान पुरोहित कह कर मानने लगे, क्योंकि उसने मन्दिरोंको अपवित्र करने वाला विधर्मीका दांत खट्टा कर दिया था। बाद और कई बार बीजापुरके सुलतानको हराकर शिवाजीने उसके राज्यका पश्चिमीय भाग जीत लिया और मुग़लोंके राज्यपर चढ़ाई करना आरम्भ कर दिया।

औरंगज़ेबके साथ लड़ाई-शाइस्ता खां—सन् १६६० ई० में शिवाजीको दबानेके लिये औरंगज़ेबने अपने मामा शाइस्ता खांको दक्षिणका सूबेदार बनाकर भेजा। शाइस्ता खां कई एक किले और पूना जीत कर उसी शहरमें बरसात बिताने लगा। परन्तु शिवाजीने अचानक एकदिन रात्रिके समय उसके मकान पर चढ़ाई कर दी। शाइस्ताखां खिड़कीसे कूद कर निकल भागा पर हाथकी दो अङ्गुलियोंसे उसे हाथ धोना पड़ा। इसी समय मुग़ल सिपाहियोंके आजानेके कारण सभी मराठे वहांसे चल दिये (१६६३ ई०)। इस घटनाके उपरान्त लोगोंकी दृष्टिमें शिवाजीकी

प्रतिष्ठा बहुतही बढ़ गई। मुग़ल लोग उसे शैतानका अवतार कहने लगे। उसके शत्रु लोग बड़े भयभीत हो गये क्योंकि उसके लिये कोई भी स्थान अगम्य नहीं रहा था उसके लिये कोई भी काम असाध्य नहीं रहने पाया। शाही दरबारमें अन्धेरा छा गया अतः शीघ्रही शाइस्ता खां की बदली बंगालमें करदी गई। इसके बाद शिवाजीने सूरत बन्दर लूट लिया (१६६४ ई०)। सूरतसेही मक्काके यात्री रवाना होते थे। अतः इसलाम धर्मका कट्टर बादशाह अत्यन्त बिगड़ गया और १६६५ ई० में राजा जयसिंहको उसके विरुद्ध भेजा।

शाही-दरबारमें शिवाजी—राजाने शिवाजीको कई बार हराया। इसके बाद राजाकी सलाहसे औरंगज़ेबने शिवाजीसे संधि कर ली। तबसे सालभर तक शिवाजी बादशाहकी ओरसे बीजापुरसे लड़ता रहा। अन्तमें बड़ी बड़ी कारवाइयां करके राजा जयसिंहने शिवाजीको आगरा रवाना किया। दरबारमें शिवाजीको तीसरे दर्जेके मनसबदारोंके साथ खड़ा होना पड़ा। इस बर्तावसे बिगड़ कर शिवाजी वहांसे चल देनेका उपाय सोचने लगा। परन्तु उसके मकानके चारों तरफ मुग़ल पहरेदार रहते थे। इसलिये वह शीघ्र आगरेसे भाग नहीं सका। पहिले उसने अपने साथियोंको एक एक करके रवाना कर दिया और स्वयं बीमारीका बहाना करके पड़ा रहा और साधु फकीरोंको टोकरीमें भर भरके मिठाई बांटने लगा। एक दिन संध्याके समय एक टोकरीमें स्वयं बैठ कर और दूसरे में अपने बेटेको बैठा कर आगरेसे चल दिया। इस रीतिसे धूर्त्त औरंगज़ेबके हाथसे बच कर नौ महीनेके बाद शिवाजी बंगाल और मद्रास होते हुए अपने घर लौटा।

मुग़लोंकी हार—शिवाजीके घर लौटतेही लड़ाई छिड़ गयी। उन दिनों बीजापुरके साथ मुग़लोंकी लड़ाई चल रही थी तथा पश्चिमीय प्रान्तमें भी गड़बड़ी मची थी। इसलिये औरंग

बने उसके साथ सन्धि कर ली। शिवाजीने इस अवसरमें पना राज्य-संगठन कर लिया। परन्तु कुछ दिनोंके वाद पुनः ड़ाई छिड़ गई (१६७० ई०)। अतः शिवाजीने सूरत बन्दर र लूट लिया। इसी प्रकार बार बार लूट होनेके कारण कुल यापारी सूरतसे चल दिये और तभीसे दिन प्रति दिन बम्बईकी वृद्धि होने लगी। इसके उपरान्त उसने वरार तथा खान्देश न्तोंको बिलकुल रौंद डाला। औरंगजेबका अपने किसी सेनापतिपर विश्वास न था। इसलिये बार बार उनको बदली रता था। ये लोग भी अच्छी तरहसे अपना काम नहीं करते थे। बहुतसे तो शिवाजीसे घूस भी ले लेते थे। सन् १६७३ ई० में शिवाजीने और एक बार बीजापुरके सुलतानको हरा कर उसके ई एक परगने लूट लिये।

छत्रपति शिवाजी—अब तक यद्यपि शिवाजीने बहुतसे न्तोंको जीत लिये थे, तिस पर भी तब तक उसकी राजनैतिक स्थिति पूर्व जैसी बनी रही। मुग़ल सम्राट उसे ज़मींदारही कहते थे, बीजापुरके सुलतान उसे विद्रोही जागीरदार मानते थे। जब तक न तो वह अपनी प्रजाकी भक्तिपरही दावा कर सकता था और न राजेही उसके साथ बराबरी का बर्त्ताव कर सकते थे। अतः इस कठिनाईको दूर करनेके लिये सन् १६७४ ई० में बड़े ठाटबाटके साथ शिवाजीका राज्याभिषेक हुआ। उस समय उसने महाराज छत्रपतिकी उपाधि प्राप्त की। अब और अधिक उत्साहके साथ मराठोंने सारे मुसलमान राज्योंको रौंदना आरम्भ कर दिया और वे चौथ वसूल करने लगे। मुगलोंकी बार बार हार होने लगी। शिवाजीके दबदबेसे सारा देश कांपने लगा। बीजापुरकी गहरी हार हुई तथा गोलकुण्डेके सुलतानने उसे कर देना स्वीकार किया (१६७६ ई०)।

उसी वर्ष शिवाजी धन जुटानेकी अभिलाषासे दिग्विजय करने निकला। बीजापुर तथा गोलकुण्डाकी सलतनतसे होकर

उसने दक्षिणी आरकटका जिञ्जीगढ़ लेलिया। वेल्लोर, आर्न
बंगालोर, तंजोर, बेलारी तथा रायचूर दोआब आदि स्थानों
भी जीते। इन जीतोंका परिणाम यह हुआ कि शिवाजीका
साम्राज्य विजयनगरके ऐसा दक्षिणी प्रायद्वीपके आर पार
गया। अब मुग़लोंके लिये यह राज्य जीतना कठिन हो गया।
सन् १६७६ ई० में मुग़लोंने जब बीजापुरपर चढ़ाई की
सुलतानने शिवाजीसे सहायता मांगी। शिवाजीने मुगलोंको
ऐसा सताया कि उन्हें बीजापुरके साथ सन्धि करनी
पड़ी। अन्तमें १६८० ई० में दक्षिणी हिन्दुस्तानमें एक शक्तिशाली
हिन्दू-राज्य स्थापित करके, एक सुप्त जातिको जगाकर
महापुरुष वैकुण्ठको सिधारा। कहते हैं कि इस समयमें
पुच्छलतारा दिखायी दिया था।

शिवाजीका चरित्र—शिवाजी एक साधारण जागीरदार
का बेटा था, परन्तु अपनी बुद्धि, साहस और बल वीर्यके
दक्षिणमें एक शक्तिमान जातिका संगठन किया। उसके साहस
धीरता, लड़ाईकी चतुराई और राजनीतिक चालोंकी सब
प्रशंसा करते हैं। मुसलमानोंके साथ लड़ाईके समय कभी
वह "शठे शाठ्यं समाचरेत्" वाली नीतिपर काम करता था।
उसके चरित्रमें आदर्श हिन्दू राजाओंके बहुतसे अच्छे गुण
स्वयं मुसलमान इतिहास लेखक* इसके बारेमें लिखता है—

"यद्यपि इसकी सेना देशको लूटती फिरती थी पर ये लोग कभी
या बच्चोंपर अत्याचार नहीं करते थे। न तो ये लोग मसजिद तोड़ते
कुरानको जलाते थे। जब कभी लूटके मालके साथ कुरान हाथ आता
तो वे उसे किसी मुसलमानको दे देते थे, अगर कभी हिन्दू या मुसलमान
महिला पकड़ ली जाती थी तो शिवाजी स्वयं उसकी रक्षा करते थे
उसके सम्बन्धियोंसे रुपये मिलनेपर उसे विदा कर देते थे।"

*ख़ाफ़ी ख़ां।

राजधर्मको वह बड़ी कुशलतासे पालता था। स्वयं अनपढ़ होनेपर भी वह विद्योत्साही था तथा उसने अपने राज्यका प्रबन्ध ठीक रीतिसे किया। एक हिन्दू राज्यकी नींव डालना ही उसके जीवनकी अभिलाषा थी। इस उद्देश्यको पूर्ण करनेके लिये उन दिनों जिन जिन उपायोंकी आवश्यकता थी, शिवाजीने उन्हीं उपायोंसे काम लिया। बहुतसे लोग उसे 'डाकुओंके सरदार' 'धूर्त' आदि कहकर अपनी नाक सिकोड़ते हैं। पर ऐसा कहते समय लोग यह नहीं विचारते कि शिवाजीके समयमें देशकी क्या दशा थी, उस समयकी नैतिक अवस्था आजकलके मुकाबिलेमें कितनी गिरी हुई थी।

शिवाजी इसलामके विरोधी नहीं थे—लोगों का यह अनुमान है कि शिवाजी स्वयं हिन्दू धर्मको मानने वाला था और वह गौ और ब्राह्मणोंकी रक्षाके लिये इसलामी बादशाहसे लड़ रहा था। अतः वह इसलामका भी विरोधी था। परन्तु ऐसा सोचना बड़ी भूल है। शिवाजीका धर्म मत बड़ा उदार था। लड़ते समय उसने किसी धर्मवालोंके पवित्र स्थानोंको कभी नष्ट नहीं किये। वह हिन्दू ब्राह्मण तथा मुसलमान पीर वा फकीर दोनोंका बराबर आदर करता था। उसने कभी किसीको इसलामी धर्मके होनेके कारण नहीं सताया। उसके अफसरोंमें भी अनेक मुसलमान रह चुके थे। वह जैसे अपने गुरू रामदास स्वामीको मानता था, वैसेही जलेसीके बाबा याकूतका भी आदर करता था। अतः वह इसलामका विरोधी नहीं था।

शासनका प्रबन्ध—मरहठोंका उदय हिन्दू और मुगल शासनके बाद हुआ इसलिये उनके शासनप्रबन्धमें हिन्दू और मुगलोंके शासन प्रबन्धकी जो जो अच्छी बातें थीं कुल पायी जाती हैं। राज्यके प्रधान राजा होते थे। राजाकी सहायता करनेके लिये आठ मन्त्रियोंकी सभा होती थी। इनका नाम अष्ट प्रधान था। प्रधान मन्त्रीको पेशवा कहा जाता था। हर

एक मन्त्री एक एक विभागके अफसर थे। इनमें ... शास्त्री हिन्दू-धर्मके अनुसार राजकाज चलानेके लिये ... था। सारा राजकाज हिन्दूधर्म-ग्रन्थोंके अनुसार चलाया जाता था। मामूली झगड़ोंका निपटारा पञ्चायत द्वारा होता था। मालगुजारीका ठेका या जागीर किसीको नहीं दी जाती थी। भूमि नाप कर उपजके अनुसार लगान लगाई जाती थी। ... जको पांच हिस्सेमें विभक्त कर दो हिस्से सरकार लेती थी। सालाना आमदनीका अधिक भाग चौथ और सरदेशमुखी ... मिलता था। ये कर दूसरे देशके राजाओंसे वसूल किये जाते थे। बड़े बड़े महलोंके हाकिमका नाम सूबेदार था। वे मजुमदार आदिकी सहायतासे मालगुज़ारी वसूल करते थे।

सेना विनीत तथा शान्त थी। आज्ञा न मानने वालेको प्राणदण्ड होता था। फौज़में दो तरहके सिपाही होते थे, एक पैदल, दूसरे घुड़सवार। घुड़सवार भी दो तरहके होते थे, जिन लोगोंको सरकारकी ओरसे घोड़े और हथियार दिये जाते थे उनका नाम 'वर्गीर' था, और जो लोग अपना घोड़ा व हथियार लाते थे उनका नाम 'सिलादार' था। प्रधानसेनापति मन्त्री सभाके मेम्बर थे। सेनापति कई तरहके होते थे। जैसे पंच-हजारी दोहज़ारी आदि (अकबरकी चलाई हुई मन्सबदारी-प्रथासे मिलान करो)। जागीरके बदले सिपाहियोंको तनख्वाह मिलती थी और लूटकी वस्तुमेंसे लूटने वालोंको तांबे और पीतलके सामान मिलते थे। लेकिन सोने चांदीकी वस्तु, अच्छे वस्त्र आदि सरकारमें जमा होतीं थीं। प्रत्येक किला व थानेके तीन अफसर होते थे हवलदार, सबनिस और सर-इ-नौबत। कारखाना-नवीस रसद आदिका हिसाब किताब रखता था। प्रति वर्ष आठ महीने तक सेनादलको लड़नेमें बिताने पड़ते थे। सेनादलमें स्त्रियां नहीं रहने पाती थीं। लड़ते समय स्त्रियों, बच्चों, तथा ब्राह्मणोंको कोई सता नहीं सकता था। मुग़लोंके जहाज़ोंको

लूटने और समुद्री डाकुओंको दवाने तथा व्यापार करनेके लिये शिवाजीने जहाज भी वनवाये थे।

बादकी घटनाएं—शिवाजीका अयोग्य पुत्र शम्भाजी और शम्भाजीके वेटे साहुजीका बयान पूर्वमें आ चुका। अब औरंगजेबकी मृत्युके बाद साहुजीको मुगलोंने छोड़ दिया। साहुके घर लौटनेके बाद मराठा लोग आपसमें लड़ने लगे। शिवाजीका दूसरा वेटा राजाराम और उसकी मृत्युके बाद उसकी पत्नी ताराबाईने औरंगज़ेबको किस तरहसे हराया था यह भी तुमको मालूम है। मुग़लोंको हरा देनेके कारण ही इस समय ताराबाईका रोब बहुत बढ़ गया था। ताराबाईने साहुकी जगहपर अपने वेटेको कोल्हापुरके सिंहासन पर वैठाया। इधर साहु भी मराहठोंका राजा बना। उसकी राजधानी सतारा हुई। साहु बहुत दिनों-तक मुगल-दरवारमें रहनेसे विलकुल निकम्मा हो गया था। पर उसके ब्राह्मण मन्त्री पेशवा बालाजी विश्वनाथ (१७१४-२० ई०) बड़ा कार्य-कुशल था। उसकी चतुरतासे मुग़लोंने साहुको महाराष्ट्रका राजा मान लिया और उससे सन्धि भी करली। पेशवाका रोब इसी समयसे बढ़ने लगा। अन्तमें यह पद मौरूसी हो गया। साहुकी मृत्युके वाद सन् १७४८ ई० में पेशवा बालाजी बाजीराव सतारा छोड़कर पूना चला आया। उन्हीं दिनोंसे पेशवा मराठोंके असली राजा हो गये थे। शिवाजीकी सन्ततिके लोग सतारा और कोल्हापुरके केवल नाम हीके राजा रहे। अब तो सताराके राजवंशका अन्त हो गया है परन्तु कोल्हापुरमें शिवाजीके ही सन्ततिके लोग अभीतक राज करते हैं। इन्हें अंग्रेज़ोंको कर देना पड़ता है।

सारांश

१६२७ ई० शिवाजीका जन्म

१६५९ ,, शिवाजीने अफ़ज़ल ख़ांको हराया

१६६३ ,,	शिवाजीने श.यस्ता खां को हराया
१६७४ ,,	,, स्वतन्त्र हिन्दूराज्य स्थापित किया
१६७६ ,,	,, दक्षिणी भारतको जीता.
१६८० ,,	,, की मृत्यु
१७४८ ई०	साहुकी मृत्यु.

(२१) मुग़ल साम्राज्यकी अवनति।

(१७०७—१८५७ ई०)

बहादुरशाह (१७०७-१२ ई०)—औरंगज़ेबकी मृत्युके बाद उसके तीनों लड़के सिंहासनके लिये लड़ने लगे। जेठा पुत्र बहादुरशाह काबुलका सूबेदार था। दूसरा लड़का शाहज़ादा आज़म बादशाहके साथ रहता था और तीसरा शाहज़ादा कामबख्श बीजापुर और गोलकुण्डाका सूबेदार था। बूढ़े बादशाहकी मृत्यु होते ही बहादुरशाह और शाहज़ादा आज़म आगरेकी ओर चले। आगरेके पास जाजौकी लड़ाईमें भाईको मार कर बहादुरशाहने १७०७ ई० में सिंहासन प्राप्त किया। दो सालके बाद कामबख्श भी लड़ाईमें मारा गया। १७०८ ई० में अम्बरके राजा जय सिंह, जोधपुरके अजित सिंह और मेवाड़के राना अमर सिंह(२) तीनोंने एक साथ मिल कर विद्रोहका झण्डा फहरा दिया। उन्होंने बहुतसे स्थानोंसे मुग़ल अफसरोंको निकाल दिये। उसी समय सिखोंका बलवा हो जानेके कारण बादशाहने उनसे सन्धि कर ली। उसी अवसर पर मराठोंको शान्त करने और उन्हें आपसमें लड़ा देनेके लिये बादशाहने साहुको भी छोड़ दिया।

सिख जातिका उदय– तुमसे पूर्वहीमें कहा गया है कि नानक (१४६९–१५३८ ई०) ने हिन्दू मुसलमानोंके बीच के अन्त करनेके लिये सिख सम्प्रदायकी नींव डाली थी। इसके बाद सिख सम्प्रदायके दस गुरू हो गये। पहिले पहल सम्प्रदायके लोग बड़े शान्त स्वभावके होते थे। अतः के चार गुरुओंसे इनका धर्मिक सम्बन्ध मात्र था। चौथे गुरु रामदास (मृत्यु १५८१ ई०) ने अकबर की दी हुई भूमिपर अमृतसरका प्रसिद्ध सिख मन्दिर बनवाया। इसके पुत्र पांचवें गुरु अर्जुनने सर्व प्रथम राजनीतिमें हस्त- किया। उन्होंने 'ग्रन्थ साहब' का भी प्रणयन किया। जिसमें के गुरुओंके उपदेश संकलन किये गये। इन्होंने सिख यके लोगों पर "मसनद" नामका एक करभी लगाया था। ई० में खुसरूका पक्षपात करनेके लिये जहांगीरने इनको डाला। अर्जुनका बेटा हरगोविन्द छठां गुरु हुआ। वह ड़ा लड़ाकू था। वह जहांगीर तथा शाहजहांके दरबारमें था। अन्तमें उसने बलवा कर दिया। परन्तु हार जानेके पहाड़ोंमें जा छिपा। वहीं उसकी मृत्यु हुई (१६४५ ई०)। धर्मभाव अधिक नहीं था तथा उसके चेलोंमें अधिकतर ठ थे। इसका पौत्र हर राय सातवां गुरु हुआ। उसने पक्षपात किया, परन्तु औरंगज़ेबने उसे क्षमा कर दिया इस सम्प्रदायके नवम गुरु तेग बहादुर हुए। इन्होंने "सच्चा ह" की उपाधि प्राप्त की। इसके कारण औरंगज़ेबने इनको कठोरताके साथ मरवा डाला। (१६७५ ई०)।

सिखोंके धार्मिक सिद्धान्त—बाबा नानक ने नवीन हिन्दू के सिद्धान्तोंको रद्दकर एकही ईश्वरके अस्तित्वके बारेमें किया। उन्होंने सूफी मतके सिद्धान्तोंको भी ग्रहण किया। उन्होंने हिन्दू मुसलमानोंमें भेद भावका अन्त कर दिया प, सुख विलासका त्याग, तीर्थ स्नान, दान और हरिनाम

के जप आदि पर ज़ोर दिया। इस सम्प्रदाय वालोंको ... मन तथा वचनोंसे गुरुके चरणोंमें शरण लेनी पड़ती थी, ... उनकी अभिषेक क्रिया भी वही करते थे। वह गार्हस्थ्य जीवन... आदर्श मानते थे। दसवें गुरु गोविन्द सिंहने इनके साथ ... कुछ बाहरी ढकोसले जोड़े। उसने शिष्योंके नामके अन्तमें सिं... शब्द जोड़ा। तबसे शिष्योंकी अभिषेक क्रियाके समय कमसे कम पांच शिष्योंको उपस्थित रहना पड़ता था तथा चीनीका ... बनाकर उसे कृपाणसे घोलके, कुछ शिष्योंके शरीर पर छिड़का जाता था और बाकी प्रसादके रूपमें भक्तोंके बीचमें बांट दि... जाता था। तभीसे शिष्यों को केश बढ़ाने पड़ते हैं, नीले र... व्यवहार करने पड़ते हैं, हिन्दू और मुसलमान ढंगके पूजा ... आदि बन्द कर दिये गये। तभीसे उनके शिष्य धोती ... पायजामा पहिनने लगे, अपने साथ कृपाण रखने लगे तथा ... और तम्बाकू का व्यवहार भी नहीं करते। गुरु गोविन्द सिं... शिष्योंमें अधिकतर लोग जाठ थे। ये बड़े उपद्रवी होते हैं।

गुरु गोविन्द सिंह—(१६५७-१७०८ ई०) गोविन्द सि... नवें गुरुतेग बहादुरके बेटे थे। १६६६ ई० में पटने में इ... जन्म हुआ। ये बड़ी वीरताके साथ नाहान आदि पहाड़ी दे... राजाओंसे लड़े थे। परन्तु हार होनेके कारण उन्हें भागना पड़ा... उन्हीं दिनों में इन्होंने 'ग्रन्थ साहब' का पुनराय संकलन कि... कुछ दिनोंके बाद ये बहादुर शाहके पक्षमें होकर उसके भा... से लड़े थे। १७०८ ई० में गोदावरीके तट पर इनका दे... हो गया। सिख सम्प्रदायके वह अन्तिम गुरु माने जाते हैं। गोविन्द सिंहकी मृत्युके उपरान्त बन्दा नामके एक मनु... अपनेको गुरु गोविन्दका अवतार कहने लगा। शीघ्रही ... एक भारी दल जुटा लिया और सर हिन्द तथा सहारन... परगनोंमें बड़ा उधम मचाया। वहांके फौजदार आदिको हरा... और हिन्दू मुसलमान सभी लोगोंको सताने लगा। कुछ ...

अमृतसरसे लाहौर पर चढ़ाई करदी । परन्तु हार होनेके कारण को पहाड़ोंमें जाकर छिपना पड़ा (१७१० ई०) । बहादुरने
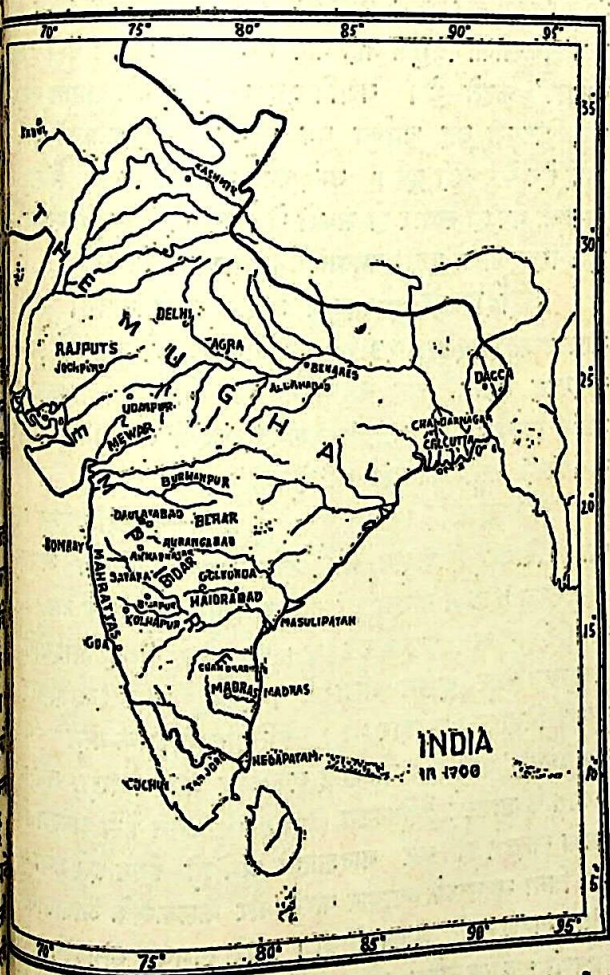
सिख युद्ध को जिहाद कह कर वर्णन किया । ६० वर्षकी अवस्थामें बहादुर शाहका देहान्त हुआ (१७१२ ई०) ।

सम्राट बड़ा शान्त स्वभावका, विद्वान्, रोबीला तथा बड़ा दानी था। अपने पिताके ऐसा वह भी बड़ा धूर्त्त था तथा अपने भाव विचारोंको प्रकट नहीं करता था। दानी तो ऐसा था कि कभी किसीको विमुख नहीं करता था। अतः लोग उसे "शाह बेखबर" कहते थे। यद्यपि वह औरंगज़ेबके समान कट्टर नहीं था, फिर भी वह धर्मका पक्का था। हिन्दुओंकी अवस्था में कोई हेर फेर नहीं हुई। उन्हें कोई उच्च पद नहीं मिले, न पालकी पर ही सवार हो सकते थे। सिखोंसे लड़ते समय इसने कुल हिन्दुओंको दाढ़ी बनवानेके लिये वाध्य किया।

जहाँदारशाह—बहादुर शाहके बाद उसका बड़ा बेटा जहांदारशाह (१७१२-१३ ई०) अपने भाइयोंको लड़ाईमें मार कर बादशाह बना। यह बड़ा निकम्मा निकला। कुल महीने राज्य करनेके बाद "दो सैयद भाइयों"ने इसे गद्दीसे उतार कर इसके भतीजेको गद्दी पर बैठाया।

फर्रुखसियर (१७१३—१९ ई०)—जहाँदारका भतीजा फर्रुख-सियर सिंहासन पर ठाट बाटसे बैठा तो अवश्य, राजकाज कुछ न करता था, केवल नामका बादशाह था। असल में दोनों सैयद सब कुछ करते थे। इन दोनों सैयद भाइयोंके नाम अब्दुल्ला और हुसेन अली थे। इनमें एक इलाहाबाद का और दूसरा बिहारका सूबेदार था। इतिहासमें इनके नाम "बादशाह बनानेवाले" पड़ा है। बादशाह एक बार बीमार पड़ा, तब अंग्रेज़ी कम्पनीके डाक्टर हैमिलटन (Hamilton)ने उसे अच्छा किया। इससे सन्तुष्ट हो कर बादशाहने अंग्रेज़ी ईस्ट इण्डिया कम्पनी को बिना महसूलके व्यापार करने और कलकत्तेके आसपासके गांव खरीदनेकी आज्ञा दे दी। इसके समयमें सैयदोंने मराठों को दक्षिणी सूबोंसे चौथ और सरदेशमुखी वसूल करनेकी आज्ञा दी थी। बादशाहने हिन्दुओंसे अच्छा ही बर्त्ताव किया। जज़िया कर वसूल करना बन्द कर दिया तथा अजित सिंह
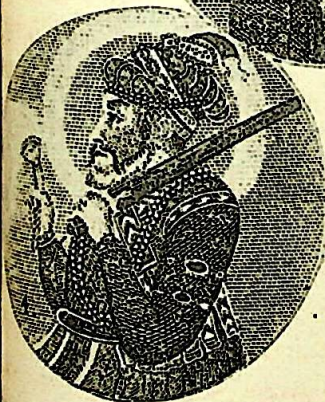
(Chap. 21.)

1. Jahandar Shah, 2. Farrukhshiar, 3. Nadir Shah, 4. Alamgir (II), 5. Mahammad Shah.

शादी कर ली। कुछ हिन्दुओंको उच्च पद मिले। अन्तमें के विरुद्ध षड़यन्त्र रचनेके कारण उन दोनोंने बादशाहको १७१९ ई० में मरवा डाला। इसको मार कर सैयदोंने बारी बार बादशाहोंको सिंहासन पर बैठाया।

महम्मदशाह (१७१९-४८ ई०)—अन्तमें इन दोनोंने शाहको सिंहासन पर बैठाया। परन्तु महम्मद शाहने द्वारा इन दोनोंको मरवा डाला। अब बादशाहको सैयदोंके मुक्ति तो हुई परन्तु दूर दूरके सूबेदार इसे नहीं मानते थे। लोग भी इस समयमें बड़े शक्तिमान बन गये। इन्हीं मथुरा प्रान्तके जाठ सरदार चुरामनने अजित सिंह राठौर कर बलवा किया। उसने कई बार बादशाही सेनाको हरा तथा अजमेर, अलवर, नारनोल आदि लूट लिये। मृत्यु होने पर (१७२१ ई०) जाठ लोगोंको शान्त किया रुहेलखण्डके रुहेले सरदारोंने भी बदाऊंके राजाके साथ बहुत उपद्रव मचाया। परन्तु वे दबा दिये गये (१७२२ दक्षिणका सूबेदार आसफ़जाह हैदराबाद दबाकर स्वतन्त्र । इसकी सन्ततिके लोग आजतक हैदराबाद रियासतके हैं। विराट् मुग़ल साम्राज्यकी स्मृति तथा उसके ठाट तक उसी राज्यमें रह गये हैं। सादतखां नामके एक अवधकी रियासतकी नींव डाली और अलीवर्दीखां और बिहारमें स्वतन्त्र बन गया। मराठोंने मालवा, गुजरात बुन्देलखण्ड जीत लिए तथा अम्बरके सवाई जयसिंहकी से इन्होंने राजपुताना और आगरा तक रौंद डाला। में बाजीरावने दिल्ली पर भी चढ़ाई करदी। ऐसी नादिरशाहने हिन्दुस्तानपर चढ़ाई की।

नादिरशाहकी चढ़ाई (१७३९ ई०)—नादिरशाह (१६८८ ई०) में एक अतीव साधारण कुलमें हुआ था। अठारहवीं सदीके प्रारम्भमें जब अफ़ग़ानोंने ईरान जीता

तभी नादिर कुली धीरे धीरे उन्नति करता गया। अन्तमें
शाह तहमस्पका सेनापति बना तथा अफ़ग़ानोंको ईरानसे
दिया। पश्चात् तहमस्पको हटा कर १७३६ ई० में वह
ईरानका बादशाह बन बैठा। थोड़ेही दिनोंमें आसपासकी
जीतकर सन् १७३९ ई० में हिन्दुस्तान पर उसने चढ़ाई
दक्षिणसे महम्मदशाहके कहनेसे आसफ़जाह और अवधसे
खां आकर बादशाही सेनाके सेनापति बने। इन दोनोंका
मेल न रहने, सवाई जयसिंह आदिके न मिलने और
सेनामें कुप्रबन्धके कारण बादशाह महम्मद शाह करनालकी
हार गया। वहांसे नादिरशाह बादशाह और असफ़जाह
कर दिल्ली चला। वहां वह महम्मदशाहके साथ दिल्लीके
महलोंमें रहने लगा। कुछ दिनोंके बाद ईरानी सिपाहियोंसे
बनियोंसे खटपट हो गई। इससे दिल्लीके लोगोंने करीब
ईरानी सिपाहियोंको मार डाला। क्रोधके वशमें होकर
शाहने कत्ले आमकी आज्ञा दी। सबेरेसे लेकर तीसरे
भयंकर हत्या होती रही। सड़कें आदमियोंके खूनसे लाल हो
दुष्ट ईरानी सेनाने घर जला दिये, इमारतें गिरा दीं,
सब कुछ लूट लिया और जिसको जहां पाया उसको
डाला। सजी हुई सुन्दर नगरी कुछ घण्टोंके बाद
तरह डरावनी हो गयी। अन्तमें महम्मदशाहके क्षमा
नादिर शाहने हत्या बन्द करवायी। दिल्लीका सरकारी
और प्रजाका सब कुछ लूटकर, दूसरे सूबोंकी भी
वसूल कर, कोहेनूर हीरा तथा शाहजहांके तख्त-ए
हाथ साफ कर और महम्मदशाहको सूने सिंहासनपर
नादिरशाह लौट गया। इसके कुल लूटके मालोंका अनुमान
७० करोड़ तकका किया जाता है। इस चढ़ाईके
सिन्धु नदीके पश्चिम किनारेका भूभाग अपनी सल्तनत
लिया। अब तो अफगानिस्तान, सिन्ध आदि देश भी

सै निकल गये। इस रीतिसे जब पश्चिमोत्तरका कोना
रके अधीन हो गया तब उसी ओरसे भविष्यतमें औरभी
इयोंके होनेकी शंका बढ़ गई। अब बादशाहोंके पास
ल पञ्जाब, दिल्ली और आगराही रहगये। नादिरशाहके
जानेके बाद मुगल बादशाहोंके पास कुछ भी न रहा और
ओर गड़बड़ी फैल गयी। पञ्जाबमें सिखोंने बड़ा लूट
करना आरम्भ कर दिया तथा दिल्ली, सरहिन्द, सहारनपुर,
, हरद्वार आदि स्थानों पर अपनी प्रभुता जमायी। ऐसी
बड़ीकी दशामें अफगान सरदार अहमदशाह अबदाली तथा
ठोंने पञ्जाब पर चढ़ाई की।

अहमदशाह अबदाली—नादिरशाहकी मृत्यु होनेके उप-
त उसके एक सेनापति अहमदशाह अबदालीने अफ़गानोंका
दार बनकर आसपासके सब देशोंको जीत लिया था। उसने
वार हिन्दुस्तानपर चढ़ाई की। पहली बार महम्मदशाहके
अहमदशाहने १७४८ ई० में उसे हराया। उसी साल महम्मद-
की मृत्यु होनेपर अहमदशाह बादशाह बना। अबदालीके
चढ़ाई करनेपर लाचार होकर बादशाहको पञ्जाब छोड़
पड़ा (१७५१ ई०)। इसी समय आसफ़जाहके मरनेके
उसका बेटा गाज़ी-उद्दीन वजीर-बन गया। उसने १७५४ई०
बादशाहको मरवा डाला और जहांदारशाहके एक बेटेको
आलम-गीरका नाम देकर सिंहासनपर बैठाया। अब-
ने सन् १७५६ ई०में फिर चढ़ाई कर दिल्ली ले ली। इस
भी अफगानवालोंने दिल्लीके निवासियोंकी हत्या की।
के बाद इन लोगोंने मथुरा जीत कर बहुतसे मन्दिरोंको ढहा
। बादशाह आलमगीरकी निगरानी करनेके लिये एक
हिला सरदारको छोड़ अबदाली घर लौट गया। इसी समय
वा बालाजी बाजीरावके भाई राघोवाने १७५८ ई० में पञ्जाब
र दिल्ली जीत लिया। इधर अबदालीके घर लौटनेपर गाजी-

उद्दीनने मराठोंकी सहायतासे आलमगीरको अपने अधीन
लिया। इससे भयभीत होकर आलमगीरका लड़का अलीगौ
दिल्ली छोड़ कर भागा।

बादके सम्राट—सन् १७५६ ई० में आलमगीरकी मृ
बाद अलीगौहरने शाह-आलमकी उपाधि प्राप्त कर ली।
अंग्रेज़ी कम्पनीसे पेंशन लेकर इलाहाबादमें जा बसा।
मराठोंके कहनेपर वह फिर दिल्ली चला आया तब अंग्रे
कम्पनीने उसकी पेंशन बन्द कर दी। लेकिन जब अंग्रेज़ों
सन् १८०३ ई० में दिल्ली जीत लिया तब उसे फिर वही पें
मिलने लगी। उसके मरनेके बाद उसके बेटे दूसरे अकबर
भी पेंशन और बादशाहकी उपाधि मिली थी। अन्तमें जब दू
अकबरके बेटे दूसरा बहादुर शाह सन् १८५७ ई० के गदरमें श
हुआ तब अंग्रेज़ी सरकारने उसको रंगून (ब्रह्मामें) में भेज दि
यही दूसरा बहादुरशाह मुग़ल घरानेका अन्तिम बादशाह था।

मुग़ल साम्राज्यकी घटतीके कारण—तुमको मालूम है
कि अकबर बादशाहने अपनी उदार राजनीतिके प्रभावसे हि
ओंको अपने साम्राज्यकी बढ़तीके लिये अच्छे अच्छे पद दिये
इसीलिये उसके समयसे हिन्दू सेनापतियोंकी बहादुरीसे कोई
बाहरी शक्ति हिन्दुस्तानपर चढ़ाई नहीं कर सकती थी
न सूबेदार लोग ही विद्रोही बन सकते थे। पर औरंगज़े
कट्टर-पनसे और उसके शक्की होनेके कारण हिन्दू लोग अ
गये। जज़िया कर लगानेके कारण चारों ओरसे हिन्दू
स्वतन्त्र बननेकी चेष्टा करने लगे। नयी नयी जाति जैसे म
सिख, जाठ, बुन्देले आदि की उत्पत्ति होने लगी। उ
दबानेकी शक्ति दुर्बल बादशाहओंमें कहां थी? अवसर पा
दूसरे सूबोंके सूबेदार लोग भी स्वतन्त्र बनने लगे। सिंहा
वा सूबेदारीके लिये आपसमें लड़ मरनेके कारण तथा
विद्रोहियोंसे बहुत दिनों तक लड़ाई-भिड़ाई होनेके कारण

जाति का दीवाला निकल गया। पश्चात् उस जातिके योग्य मूल्य बहुत ही कम निकले। इसके कारण अन्तिम दिनोंमें मुग़लोंमें न तो अच्छे सेनापति ही निकले न अच्छे शासक ही। पश्चात्के कुल बादशाह भी निकम्मे निकले। इनकी शिक्षा आदि का ठीक ठीक प्रबन्ध न होनेके कारण वे सबके सब चरित्र हीन होगये। पुनः दरबारमें कई एक दल होजानेके कारण कभी कोई काम ठीक रीतिसे नहीं होता था। अन्तमें नादिरशाह और उसके सेनापति अबदालीकी चढ़ाइयोंके कारण मुग़ल-राज्य-शक्तिका बिलकुल नाश हो गया।

सारांश

१७०७-१२ ई०	बहादुरशाह
१७१२-१३ ,,	जहांदारशाह
१७१३-१६ ,,	फर्रुख़-सियर
१७१५ ,,	अंग्रेज़ी कम्पनीने हामिल्टनको दूत बनाकर [भेजा
१७१६-४८ ,,	महम्मद शाह
१७२४ ई०	दक्षिणी भारत तथा अवध स्वतन्त्र बन गये
१७३६ ,,	नादिरशाहकी चढ़ाई
१७४० ,,	बंगाल स्वतन्त्र बना
१७४८ ,,	अबदालीकी पहली चढ़ाई
१७४८-५४ ई०	अहमदशाह
१७५४-५६ ई०	दूसरा आलमगीर
१७५६ ई०	अबदालीने दिल्ली ले ली
१७५८ ,,	राघोबाने दिल्ली ले ली
१७५६-१८०६ ई०	दूसरा शाहआलम
१८०६-३७ ई०	,, अकबर
१८३७-५७ ,,	,, बहादुरशाह

(२२) मुग़ल बादशाहोंके समयमें देशकी अवस्था ।

शासन प्रबन्ध—मुग़लसाम्राज्य दिल्ली-सलतनतसे बड़ा था और उसका प्रबन्ध भी सुलतानोंसे कहीं बढ़ कर था। काम काज, सेनाविभाग, भूमिको माप और मालगुज़ारी वसूल करनेके बारेमें मुग़ल बादशाहोंने अच्छे अच्छे नियम चलाये थे परन्तु फिर भी विदेशी यात्रियोंके वर्णन पढ़नेसे हम लोगोंको मालूम पड़ता है कि दूर देशके सूबेदार लोग कभी कभी मनमाना काम भी कर बैठते थे। सुलतानोंके राज्यकालमें वे बिलकुल स्वतन्त्र थे। पर अब इनकी स्थिति पूर्व जैसी न रहने पायी।

दूर दूरके सूबेदारों और बड़े बड़े अफसरोंकी मनमानी रोकनेके लिये दो तीन सालके बाद इन लोगोंकी एक सूबेसे दूसरे सूबेमें बदली कर दी जाती थी। कभी कभी तो स्वयं बादशाहके पाससे ही हुक्मनामें आते थे। सूबेदारोंको इसीके अनुसार काम करना पड़ता था। वाक़िया-नवीस बादशाहके पास सूबेके प्रबन्धके बारेमें सदा रिपोर्ट भेजा करते थे। दीवान, फौज़दार और सूबेके बड़े बड़े अफसरोंकी नियुक्ति वा पदच्युति स्वय बादशाह करते थे। मुग़ल बादशाह मनमानो करनेवाले तो अवश्य थे पर सब प्रजाकी भलाई चाहने वाले थे। औरंगज़ेबने भी प्रजाकी भलाईके लिये बहुत कुछ किया था। उन्हीं दिनोंसे हिन्दू और मुसलमानोंका धीरे धीरे भेदभाव भी जाता रहा। योग्यताके अनुसार हिन्दुओंको बड़ी बड़ी नौकरियां दी जाती थीं।

प्रादेशिक प्रबन्धके अतिरिक्त जिसका वर्णन ऊपर किया गया है, सरकार-इ-खासके काम काजकी देखरेख करनेके लिये आठ अलग अलग विभाग थे। आमदनी व खर्चका निगरानी वज़ीर करता था। मीरबक्शी तनखाह बांटता था

2

(Chap. 22.)

Diwan-i-Khas, Delhi.

खान्-इ-सामानको बादशाहका कुल खर्चा सम्भालना पड़ता था।' काज़ी और मुफ्ती लोग काज़ी-उल-कुज़ातके अधीन होकर इसलामी शरीयतके अनुसार मुकद्दमोंका फैसला करते थे। ये लोग बहुत घूस लेते थे। सद-रुस-सुदूर दान देता था। मुहतसीब जनताकी चालचलन पर दृष्टि रखता था।

खेती-बारी और अकाल—उन दिनों अन्न बहुतायतसे पदा होने और देशके बाहर न जानेके कारण बड़ा सस्ता बिकता था।" अतः लोगोंको खाने पीनेका कष्ट न था। "अकबर और जहांगीरके राज्य कालमें लोगोंको अन्न-चिन्ता बिलकुल नहीं थी"। तरह तरहके अन्नादिके अतिरिक्त मोतियोंका शिकार, सोना, चांदी, शीशेकी खान खुदाई, नमक, गुड़ व चीनी बनाना, तेल निकालना, अफीम और तम्बाकू बनानेका काम चारों ओर होता था। * कभी कभी समयपर पानी न बरसनेसे अकाल भी पड़ता था। एक स्थानपर अकाल पड़नेसे उसका प्रभाव सारे देश पर नहीं पड़ता था। क्योंकि उन दिनों आजकलकी तरह रेल, स्टीमर आदि न रहनेके कारण इच्छा रहने पर भी सरकार लोगोंकी सहायता नहीं कर सकती थी। फिर भी बादशाह और मालदार लोग अन्न बांटकर, रुपये पैसेका दान देकर और किसानोंको तकावी देकर जहां तक बन पड़ता था सहायता करते ही थे। सन् १६३२ ई० में गुजरात सूबेमें एक बार अकाल पड़ा था। उस समय शाहज़हांने जगह जगहपर खिचड़-हाई स्थापित किया था। जिसमें हर सोमवारको ५००० रुपये गरीबोंको बांटे जाते थे उसने ७०,००,००० रुपयोंका कर भी माफ़ कर दिया था।†

कला-कौशल—मुग़लोंके समयमें कारीगरी और व्यापा-

---

* Moreland—India in 1605.

† बादशाह—नामा।

रकी बड़ी उन्नति हुई थी। प्रायः सभी बादशाह बड़े विलासी होते थे, और बड़े ठाटबाटसे रहते थे। हर एक बादशाहने बड़े बड़े महल, किले बनवा और शहर आदि बसाकर कारीगरीकी बड़ी उन्नति की। मुगल सम्राटोंकी बनाई हुई कुल इमारतोंमें हिन्दू वास्तु-शास्त्रके चिह्नादि भी दीख पड़ते हैं। पतले और छोटे छोटे खम्भे, मेहराबोंके नीचेके ताखे और कामकाज अधिकतर हिन्दू ढंगके हैं। तथा बीचका भारी गुम्बज, चारों कोनेके मीनार, बारादरीके दालान तथा फाटक मुसलमानी ढंगके हैं। इसी मिश्रित ढंगपर अकबरने आगरेका किला और उसीमें जहांगीरी-महल बनवाया। इसके अतिरिक्त उसने सिकन्दरा और फ़तहपुरसिकरी की बड़ी बड़ी इमारतें और अटकका किला बनवाया था। ये सब इमारतें लाल पत्थरकी बनी हुई हैं। जहांगीरने आगरेमें इत्माद-उद्-दौलाका मकबरा बनवाया। शाहजहांके समयमें मुग़ल कारीगरीकी सबसे अधिक उन्नति हुई थी। वह इमारतोंके बनवानेमें संगमर्मरका बहुत अधिक व्यवहार करता था। यमुना नदीके किनारे इसी पत्थरका ताजमहल बना हुआ है। बीचमें कब्रके ऊपर एक बड़ा भारी गुम्बज़ है, और उसके चारों ओर चार छोटे छोटे गुम्बज़ हैं। ताजमहलके चारों खूंट पर चार ऊंची ऊंची मीनारें हैं। इसकी दीवार पच्चीकारीके कामसे सजी हुई है। ताजमहलके चारों ओर मुग़ल ढंग पर लगाया हुआ एक बड़ा भारी बाग है। औरङ्ग़ज़ेब धर्म्मका बड़ा कट्टर था, इसीलिये उसके समयमें कोई भी नामी इमारत नहीं बनी थी।

चित्रकारीकी भी बड़ी उन्नति हुई थी। मुसलमानी और हिन्दुस्तानी ढंगके मेलसे एक नये ढंगका आविष्कार हुआ जिसका नाम Indo-Saracenic School पड़ा। अकबर और शाहजहांके राज्यमें इसकी बड़ी उन्नति हुई थी। उस समयके उस्ताद मंसूर, अबुलहसन, दसवन्त, बिसुनदास आदि बड़े बड़े
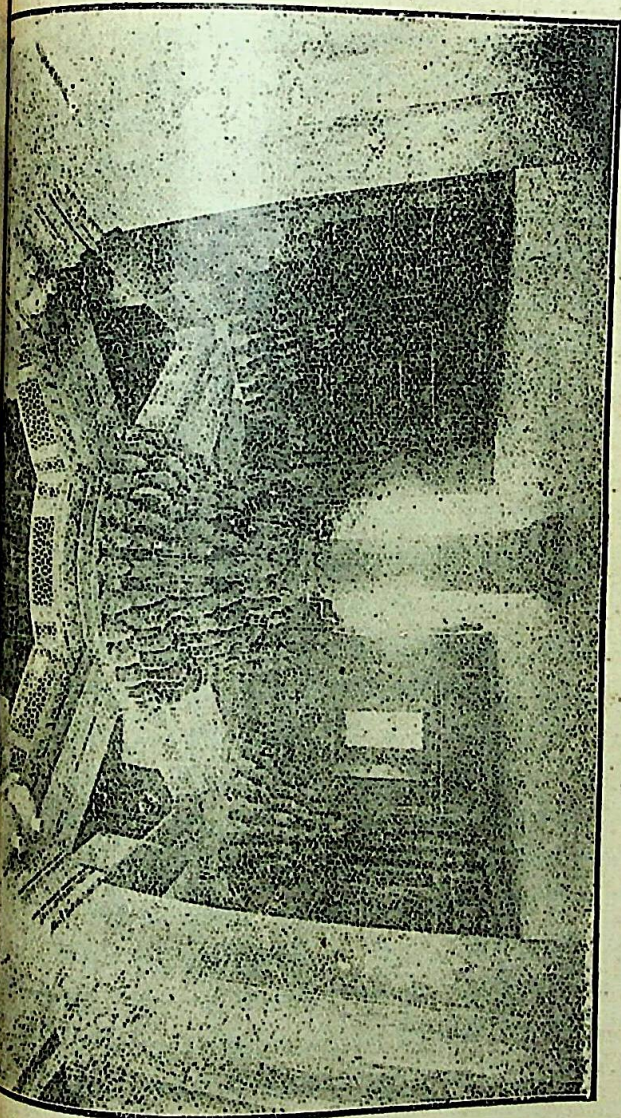
(*Chap. 22.*)

Diwan-i-Khas, Fatehpur-Sikri.

नामी चित्रकार थे। फ़तहपुरसिकरीके महलोंकी दीवालोंपरकी तसवीरें और शाहज़ादा दाराकी चित्रपुस्तक अभी तक देखनेमें आती हैं। इन्हीं दिनोंमें हिन्दू राजाओंके दरबारोंमें "राजपूत ढंग" की चित्रकारीका उदय हुआ। इन चित्रकारोंकी शिक्षा मुग़ल दरबारमें होती थी। अतः इनके चित्रोंमें भी हिन्दू तथा मुग़ल ढंगका अपूर्व मिश्रण होता था। जयपुर आदि स्थानोंमें आज तक इसी ढंगकी तसवीरें बनती हैं। यह विद्या उन दिनों महिलाओंको भी सिखायी जाती थी। बादशाहोंके उत्साहसे संगीत विद्याकी भी बड़ी उन्नति हुई थी। इसी समय नयी नयी रागिनी और सितार, एसराज आदि बाजे भी बने थे। हाथके कामोंमें हाथी दांत परकी खुदाई, मिट्टी के बरतन और उनपर चित्रकारीकी भी बड़ी उन्नति हुई थी।

दरबारकी देखादेखी अमीर लोग भी बड़े विलासी बनने लग गये थे। इसके प्रधान कारण ये थे कि उन दिनों वे धनकी वृद्धि कदाचितही कर सकते थे। आजकलके समान बैंक आदिके न होने, व्यापार आदि करनेमें असुविधा होने तथा मृत्युके उपरान्त सरकारी नौकरोंकी सम्पत्ति सरकारमें जमा होनेके कारण, अमीर लोग बड़े अमितव्ययी होते थे। अतः उस समयमें अन्यान्य सूक्ष्म कलाओंकी भी बड़ी उन्नति हुई। बूटीदार सूती और रेशमी कपड़े, किमखाब, तरह तरहके दुशाले, गलीचे, सोने, चांदी और मणियोंके गहने आदि बहुत सुन्दर बनते थे। ढाकेकी महीन मलमल भी उन्हीं दिनोंमें बनती थी। ये कपड़े इतने महीन बनते थे कि एक धोती एक अंगूठीके भीतरसे आरपार निकाल ली जा सकती थी और घासपर बिछाकर पानी छिड़कनेसे वह दिखायी तक नहीं देती थी। सरकारी कारखाने खोलकर कच्चे मालोंकी खपत की जाती थी। पंजाब और काश्मीरमें दुशालेके, अहमदाबाद (गुजरात), मछलीपत्तन (मद्रासमें) और ढाकेमें सूत व रेशमके

कारखाने थे। फरासीसी यात्री बर्नियरने दिल्लीके कारखानेका वर्णन अपने सफर-नामेमें किया है। उसका कथन है कि "बड़े बड़े दालानोंमें कारखाने हैं। कारखानेके कई एक विभाग हैं। प्रत्येक विभागका प्रधान एक दारोगा होता है। उसके अधीन होकर सैकड़ों ज़री बूटीके काम करनेवाले, कपड़ा बिनने वाले, चित्रकार, सुनार, बढ़ई, दरजी, रेशम और मलमलके कपड़े बनाने वाले दिन भर काम करते हैं। उनको प्रतिदिन मज़दूरी दी जाती है।" बादशाहकी आवश्यकताके ऊपरकी वस्तु अमीर तथा राजाओंके बीच पर्व आदि पर भेंटकी जाती और बेची भी जाती थी। बादशाहको समय समयपर भेंट देनेके लिये अमीर और रजवाड़े भी अपने अपने इलाकेमें अच्छे अच्छे कारखाने खोले थे।

व्यापार—यूरोपीय व्यापारियोंके अतिरिक्त सिन्ध, गुजरात मलाबार, मछलीपत्तन आदि स्थानोंके मुसलमान व्यापारी लोग अरब, ईरान, मिस्र आदि देशोंसे व्यापार करते थे। शिवाजी के भी कई एक व्यापारी जहाज रहे। उन दिनों सूरत, मछली-पत्तन, बंगालमें—हिजली, सातगांव, चटगांव पटना, आदि बड़े बड़े बन्दरगाह थे। १७ वीं सदीमें अफीम, नील, सूती और रेशमी कपड़े, मणि-मुक्ता, घी, चीनी, मसाले आदि बहुतायतसे बाहर भेजे जाते थे। विदेशी वस्तुओंमें यूरोपसे पारा, सेंदुर, मखमल, शीशा, ऐनक, लोहेके बने हुए सामान आदि; मध्य एशियासे मेवे, हींग आदि; तिब्बत और हिमालयसे कस्तूरी ऊन, सोना, तांबा, चामर, मधु, आदि; मलयसे मसाले; पेगुसे लाल; और अरब तथा ईरानसे मोती और मणि आदि खूब आते थे। इनके अतिरिक्त अरब, ईरान, तातार आदि देशोंसे अच्छे अच्छे घोड़े भी लाये जाते थे।

साहित्य—बादशाह लोग साहित्यसेवियोंका उत्साह बढ़ाने के लिये सदा तत्पर रहते थे। स्वयं अनपढ़ होनेपर भी अकबरने

अपना दरबार साहित्यसेवियोंका केन्द्र बना रखा था। उन दिनों फारसी भाषामें बड़े बड़े इतिहास और काव्य आदि रचे गये थे। अबुल कासिम फिरिश्ता, अबुलफज़ल, बदौनी, खफ़ीख़ां आदि बहुत बड़े बड़े इतिहास लेखक हो गये हैं। स्वयं बाबर, जहांगीर, औरंगज़ेब तथा बहादुरशाह (२) अच्छे लेखक थे। दो चार हिन्दुओंने भी फ़ारसी भाषामें इतिहास लिखे हैं। रामायण, महाभारत, उपनिषद् और शास्त्र-ग्रन्थोंका फारसीमें अनुवाद भी उसी समयमें हुआ।

उन दिनों संस्कृत भाषाकी भी चर्चा होती थी। अकबर तथा दाराने बहुतसे ग्रन्थोंका भाषान्तर तो करवाया ही था। इनके अतिरिक्त जहांगीरका एक संस्कृत पुस्तकालय था। शाहजहांने एक सभा पण्डित भी रख लिया था। इन्हीं दिनोंमें बंगालमें 'नव्य न्याय' नामके दर्शनका उदय हुआ। जगदीश तर्कालंकार तथा गदाधर भट्टाचार्य इस विभागके बड़े नामी पण्डित हो गये हैं। देशी भाषाओंकी इस समय बड़ी उन्नति हुई। हिन्दी भाषामें तुलसीदास (१५३२-१६२३ ई०) ने काशी में "राम-चरित-मानस" आदि पुस्तकें लिखीं। महात्मा सूरदासने "सूरसागर" नामक एक महाकाव्य रचा। और जयपुरके रहने वाले बिहारी लालने "सतसई" बनाई। शिवाजीके सभा-कवि भूषण भी हिन्दी भाषाके प्रख्यात कवि हो गये। मराठीमें तुकाराम अच्छे कवि हो गये। बंगला भाषामें काशीराम दासने "महाभारत" रचा और मुकुन्दरामने "कवि-कंकण चण्डी" रची। अकबर, तानसेन, रहीम आदि मुसलमानोंने भी हिन्दी भाषामें कविताएं कीं।

धर्म—इन दिनोंमें हिन्दू धर्म का कोई विशेष परिवर्त्तन नहीं हुआ। लोग पूर्वके ऐसे नवीन हिन्दू धर्मके अनुयायी होकर चलते थे। परन्तु इस धर्ममें दिखौआपन बड़ा अधिक हो गया था। विदेशी यात्रियोंके लिखित विवरण तथा उन

दिनोंकी लिखी हुई देशी-भाषाकी पुस्तकोंको पढ़नेसे मालूम होता है कि बंगालमें वैष्णव धर्मका प्रभाव टालनेके लिये नाना प्रकारके देवताओंकी पूजा प्रचलित की गई थी। इनमेंसे तन्त्रोक्त शक्ति पूजा प्रधान थी। मनूची नामका एक इटालियन पर्यटकका कहना है कि देवीकी मूर्त्तिके सामने कापालिक लोग नर-बलि तक चढ़ाते थे।(1) जनताके मन पर कुसंस्कारादिका बड़ा प्रभाव पड़ा हुआ था। लोग गंगा-सागरके संगममें प्राण देना वा जगन्नाथजीके रथके पहियेके नीचे दब मरना पुण्य समझते थे।(2) लोग गंगा और गौको बहुत मानते थे। गुजरातमें भी मूर्त्ति-पूजा तथा गौ-पूजाकी रीति प्रचलित थी तथा अहिंसा मतका प्रचार था।(3) चौल तथा सूरतमें भी गौ-पूजा तथा अहिंसा मतका प्रचार था। इन स्थानोंमें दुखी पशु-पक्षियोंकी चिकित्सा तथा सेवाके लिये बड़े बड़े अस्पताल थे।(4) घूस देकर लोग गृहणादिके समय स्नान-दान करते थे।(5) मैगस्थनीज़के समान इन दिनोंके पर्यटक लोगोंने भी हिन्दुओंके स्वभाव चरित्रकी बड़ी प्रशंसा की है।(6) देश भरमें संन्यासी तथा योगी लोग घूमा करते थे वा जप-तपमें लगे रहते थे।(7)

इन दिनोंमें इसलाम धर्मके कई एक सम्प्रदाय स्थापित हुए। परन्तु, सुन्नी होनेके कारण बादशाहने इन सभोंको दबा दिया। इसलामशाह सूरके समय शेख अलाई और शेख अब्दुल्ला नियाज़ीने मेहदी मतका प्रचार किया। ये अपनेको पैगम्बरके समान मानते थे। बहुतसे लोग घर गृहस्थी छोड़ इनके अनुयायी बने। परन्तु बादशाहने इस आन्दोलनको दबा दिया। अकबरके समयमें पश्चिमीय प्रान्तमें बायज़ीद (मृत्यु १५८५ ई०)

---

(1) Maunchi-Storia de Mogor. (2) Bernier and Father Manrique. (3) Pietro della Valle. (4) Ralph Fitch and Father Aquavia. (5) Bernier. (6) Pietro Della Valle. (7) Bernier.

ने रौशनिया सम्प्रदायका संगठन किया। वह अपनेको पैग़म्बरके बराबर मानता था। वह कुरानको नहीं मानता था। पश्चिमी प्रान्तकी कुल उपद्रवी जातियां इसके अनुयायी बन गयीं। १५ वर्ष तक लड़नेके बाद अकबरने इसको दबाया। सूफी मतका भी प्रचार अच्छा ही था। बहुतसे हिन्दू और मुसलमान इस मतके अनुयायी थे। शेख अलाई अकबर, दारा, आदि इस युगके नामी सूफी हो गये हैं। दीन इलाहीका वर्णन पूर्व ही में हो चुका है। पादरी लोगोंने अपने धर्मका प्रचार करनेके लिये बहुत प्रयत्न किया। वे अकबरको ईसाई बनाना चाहते थे तथा जहांगीर पर भी उनकी दृष्टि थी। परन्तु वे सफल नहीं हुए। तथापि सभी बादशाह उनसे दयाका बर्त्ताव करते थे। पुर्त्तगीज़ोंने बंगाल और बम्बई प्रान्तोंमें बलात् बहुतोंको ईसाई बनाया।

समाज—सरकारी नौकरी मिलनेकी आशासे जैसे आजकल लोग अंग्रेज़ी पढ़ते हैं, वैसेही उन दिनों फ़ारसी सीखते थे। सरकारकी ओरसे बालकोंको शिक्षा देनेका ठीक ठीक कोई प्रबन्ध नहीं था। फिर भी बड़े बड़े पण्डित और मौलवियोंको उत्साहित करनेके लिये सरकारकी ओरसे उनको पेंशन या माफ़ी ज़मीन दी जाती थी। आजकल जैसे लोग अंग्रेज़ोंकी देखा देखी अंग्रेज़ी पोशाक तथा सभ्यताकी नकल करते हैं, वैसेही उन दिनों मुसलमानी पोशाक और सभ्यताकी नकल करते थे। सरपर बड़े बड़े घूंघर वाले बाल रखना "परम-नरम" आदि नामके शाल ओढ़ना "नादिरी, जुब्बा, चारकुब" आदि पहिनना "इत्र-ए-जहांगिरी"का व्यवहार करना, फैशन था। उन दिनों बड़ोंकी खुशामद बरामद करने की चाल सी थी। बादशाह चाहे कुछ भी क्यों न बोलें कुल दरबारी एक साथ "करामत! करामत!" चिल्लाते थे। उसी तरह पठानोंकी बंधी हुई कसम इस प्रकारकी थी "अगर मेरी बात सत्य न हो तो मुझे दिल्लीका सिंहासन न मिले।" सभी कोई ज्योतिषमें विश्वास करते थे तथा बादशाहसे लेकर

छोटेसे छोटे आदमी तक सब कोई ज्योतिषीसे विना पूछे कुछ भी काम नहीं करते थे। तम्बाकू पीनेकी रीति जहांगीरके समयमें पहिले पहल चल निकली। बादशाहने इसे बंद करवा देना चाहा पर वह सफल न हुआ (१६१७ ई०)।

शाही दरबारमें ईद और नौ-रोज़के अतिरिक्त तरह तरहके हिन्दू पर्व भी बड़े ठाट-बाटके साथ मनाये जाते थे। इनमें रक्षा-बन्धन, बसन्त, दिवाली, होली आदि प्रधान हैं। ऐसे अवसर पर कभी कभी बादशाही महलोंमें खुश-रोज़का मेला होता था। ऐसे मेलोंमें अच्छे कुलकी स्त्रियां नाना प्रकारके सामान बेचती थीं तथा बादशाह मोल भाव कर वस्तुएं खरीदते थे। उन दिनों हाथियोंकी लड़ाई, शिकार तथा बाज पालना लोगोंके व्यसन थे। बड़े लोग या तो शराब पीते थे वा अफीम खाते थे। परन्तु अधिकतर जनता नशा आदिसे दूर रहती थी।(1) पर्देकी रीति बहुत कठिन हो गई थी। मुसलमान स्त्रियां बुर्क़ेका व्यवहार करती थीं। हिन्दू स्त्रियां ग्रहणके समय कनातोंमें बन्द होकर नहाईं थीं।(2) परन्तु आश्चर्यकी बात यह है कि उन दिनोंमें भी गुजरात प्रान्तकी हिन्दू स्त्रियां पर्दा नहीं करती थीं।(3) मन्दिरोंमें देवदासियां होती थीं। ये जीवन भर कुमारी रहतीं थीं।(4) बंगाल, गुजरात, अहमदनगर आदि स्थानोंमें बाल्य विवाहकी रीति प्रचलित थी।(5) देश भरमें विधवा हिन्दू स्त्रियां सती हो जाती थीं।(6) दासत्व प्रथा पूर्व जैसी चलती रही। इसमें कोई परिवर्त्तन नहीं हुआ था। कर्ज़दार लोगोंको कर्ज़ न चुकानेपर बालबच्चोंके समेत बेच दिया जाता था।(7) एक पर्यटकका यह कथन है कि उन दिनों बंगालमें विवाह

(1) Rev Terry and Bernier. (2) Bernier. (3) Pietro Della Valle. (4) Bernier. (5) Della Valle; Ralph Fitch etc. (6) Bernier. Manrique, Della Valle etc. (7) Rev. Terry.

समय दुलहा और दुलहिनको गायके सामने पानीके भीतर खड़ा होना पड़ता था।(1) राजपूतोंमें पूर्व जैसी वीरता बनी रही। यशोवन्तसिंह हार कर जब घर लौटे थे तब उनकी धर्मपत्नी, मारवाड़की महारानीने किलेका फाटक बन्द करवा दी।(2) अभिषेक तिथि पर मेवाड़के राना "टीका-डोर" का उत्सव मनाते थे— अर्थात् निकटके विरोधी राजापर आक्रमण करते थे। टाडका कथन यह है कि फर्रुख-सियरकी मृत्युके उपरान्त मारवाड़के अजितसिंहने अपनी बेटीको पुनराय हिन्दू बनाकर अपने घरमें रख लिया।(3) इन दिनों हिन्दुओंने समुद्रयात्रा बिलकुल बन्द कर दी थी।

मुग़लोंका काम—अंग्रेज़ इतिहास लेखकोंका यह अनुमान है कि मुग़ल साम्राज्य तलवारके जोर पर निर्भर था। पर थोड़ासा ध्यान देनेसे हम लोगोंको यह बात स्पष्टतया प्रमाणित हो जायगी कि उनका अनुमान सर्वथा भूल है। साम्राज्यकी नींव दृढ़ रखनेके लिये लोगोंमें प्रेम तथा भक्तिका उदय करना चाहिये। मुग़लोंने ऐसाही किया था। प्रजाको धर्मके मामलोंमें स्वतन्त्रता दे, उनके सामाजिक रीति नीतिमें हस्तक्षेप न कर, ग्राम-संस्थाओंमें दखल न दे, उन्होंने एक शक्तिमान् साम्राज्य स्थापित कर दिया था। साम्राज्यका बल स्थिर रखनेके लिये हिन्दू और मुसलमानोंकी राजनीतिमें एकता थी। गुप्त साम्राज्यके टूटनेके बाद भारतवर्ष भरमें ऐसा साम्राज्य किसीने स्थापित नहीं किया था।

मुग़ल साम्राज्य करीब करीब कुल हिन्दुस्तानमें फैल गया था। इसके बीसों सूबोंमें एक ही राजकीय भाषा—फ़ारसी, एक ही ढंगका शासन-प्रबन्ध, एक हीं सिक्का और एक ही ढंगकी सभ्यता, एकसी कारीगरी, एक साहित्य और एक ही बादशाहका

(1) Ralph Fitch. (2) Berrier. (3) Todd.

शासन चला कर मुग़लोंने दक्षिणी हिन्दुस्तानको उत्तरी
हिन्दुस्तानके साथ मिला दिया था। उसी युगसे अन्य देशोंके
साथ व्यापारके द्वारा हमारे देशका निरालापन जाता रहा।
सच है, मुग़लोंहीकी डाली हुई नींवपर अंग्रेज़ोंने आज अपने
साम्राज्यकी इमारत खड़ी की है। या यों कहिये कि मुग़लोंने
जिस कामका आरम्भ किया था अंग्रेज़ोंने उसी कामको अ
पूरा किया।

इसलामके दान—इस पुस्तकके द्वितीय खण्ड सम
करनेके पूर्व भारतीय सभ्यताके क्षेत्रमें इसलाम धर्मने जो
दान दिये वा नवीन भाव विचारोंको प्रचलित किये हैं उन
बारेमें दो चार बातें कहनेकी आवश्यकता है। इसलामके आने
पूर्वमें हमारे देशमें राजनीतिके विषयमें एकताका भाव कदाचि
था। प्राचीन समयके हिन्दू राजे देश जीतते थे, परन्तु वे अधि
कतर देशोंको स्वराज दे देते थे। इससे उन दिनों राजनीति
क्षेत्रमें एकताके स्थानमें सदा विद्रोह आदिसे यह भाव क
नहीं उदय हुआ। परन्तु जबसे इसलामके अनुयायी लोग
देशमें आये तभीसे राजनीतिके क्षेत्रमें एकताके भाव
विकाश होता गया। तथा एकही सरकारके होनेके कारण
साथही साथ भाषा, चाल-चलन, अदब कायदा आदि
प्रकारके होनेके कारण देशवासियोंके हृदयमें एक जातीय
भावकी उत्पत्ति हुई। इसलामके आनेके उपरान्तही हमारे दे
ऐतिहासिक साहित्यकी उन्नति हुई। प्राचीन हिन्दुओंने तारी
वार इतिहासकी रचना शायदही की हो। इसी युगमें यूरोपके
जलपथके द्वारा हमारे देशका सम्बन्ध स्थापित हुआ, जि
परिणाम यह हुआ कि आज एक यूरोपीय जाति हमारे दे
राज्य कर रही है। हिन्दू-मुसलमानोंकी बराबरी स्थापित कर
लिये एक नवीन भाषा—उर्दू, तथा नये नये धर्म मत
नानक-पन्थ, कबीर-पन्थ, दादू-पन्थ, सूफी मत आदि

निकले। साथही साथ अरबी, फारसी और तुर्की भाषाओंके बहुतसे शब्द देशी भाषाओंमें मिला लिये गये। वास्तु-विद्यामें हिन्दू और मुसलमान ढंगोंके मिलावसे एक नये ढंगका आविष्कार हुआ; चित्र-विद्यामें Indo-Saracenic और राजपूत ढंगोंके उदय हुए। युद्ध-विद्या तथा संगीत-शास्त्रमें भी उन्नति की शैली नहीं विगड़ी। आजकलकी भारतीय शिष्टता हिन्दू तथा इसलामी सभ्यताओंके सम्मेलनहीसे बनी हुई है।
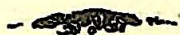
(२३) मराठा पेशवे।

इसके पहलेही कहा जा चुका है कि मराठा राजाओंके प्रधान मन्त्रीकी उपाधि पेशवा थी; तथा यह पद धीरे धीरे मौरूसी हो गया था। जातिके पेशवे चितपावन ब्राह्मण थे। इनका विश्वास है कि परशुरामके समयसे यह वंश चला है। बालाजी विश्वनाथ भट्ट राजा साहुका प्रधान मन्त्री तथा पेशवा-वंशकी नींव डालने वाला था।

बालाजी बिश्वनाथ भट्ट (१७१३–२० ई०)–इसके पूर्वपुरुष कई एक ग्राम्य-संस्थाओंके देशमुख रह चुके थे। बालाजीने राजाराम के समयमें मराठा दरबारमें एक छोटी सी नौकरी कर ली। धीरे धीरे उन्नति करते करते वह सर-सूबेदार बना, पीछे सभासदके पदको भी प्राप्तकर लिया। साहुके मुक्त होनेके बाद जब ताराबाई उससे लड़ गई, तब बालाजीने साहुका पक्ष लेकर उसकी बड़ी सहायता की। इन दिनों उसने ताराबाईके पक्षके कई एक सरदारोंको हरा दिया, कुछ लोगोंको फुसला कर साहुकी ओर ले आया तथा धूर्त्तता करके ताराबाई और उसके बेटेको भी कैद कर लिया (१७१२ ई०)। इन उपायोंके द्वारा जब उसने साहुको राजसिंहासन दिला दिया, तब वह पेशवा बनाया गया (१७१३ ई०)।

उसीने पहिले पहल बड़े बड़े अफसरोंको वेतन देनेके बदले जागीर देनेकी प्रथा चलाई थी। इस नियमके रचनेके उपरान्त महाराष्ट्र चक्रकी स्थापना हुई। दिल्लीमें जिस समय सैयद भाइयोंकी धाक जमी हुई थी, उन्हीं दिनोंमें बालाजीने सैयदोंका पक्ष लेकर मुहम्मदशाहसे दक्षिणके छः सूबोंके चौथ, सरदेशमुखी आदि कर वसूल करनेके अधिकार प्राप्त किये। उसकी धर्मपत्नी राधाबाई लिखी पढ़ी थी। १७२० ई०में बालाजीका देहान्त होगया।

बाजीराव (१७२०-४० ई०)—कुल २२ वर्षकी अवस्थामें बाजी रावने पेशवाका पद प्राप्त किया। वह अपने पिताके ऐसा विद्वान् तो न था परन्तु बड़ा शूरवीर था। उसने बालाजीके अन्तिम दिनोंमें लड़ाई भिड़ाईके काममें दहिने हाथके बराबर सहायता दी थी। मुग़ल राज्य-शक्तिको नष्ट भ्रष्टकर उसके स्थानमें एक महान् हिन्दू राज्य स्थापित करना ही उसके जीवनका परम लक्ष्य था। पेशवा बनाए जानेके बाद ही उसने साहुको सलाह दी कि "आइये, हम लोग तनेको काट डालें, तभी कुल शाखायें गिर जायेंगी। हमारे मतके अनुयायी होकर काम कीजिये, हम अटकके किलेपर मराठोंकी विजय पताका फहरा देंगे"। इसके उत्तरमें बढ़ावेमें आकर साहुने कहा "निःसन्देह आप हमारी विजय पताका स्वर्ग तक फहरा देंगे।" १७२४ ई० में उसने मालवा पर चढ़ाई की तथा मल्हार रांव होलकर और राणोजी सिन्धियाको साहुके प्रतिनिधि बना दिये। पश्चात् इन्हीं दोनोंने इन्दौर तथा ग्वालियर राज्योंकी नींव डाली थी। इन्हीं दिनोंमें दक्षिणका सूबेदार आसफ जाह स्वतंत्र बन गया था। उसने अपनी रियासतकी सीमा बढ़ाने तथा मराठोंको चौथ देनेसे छुटकारा पानेकी आशासे पुनः उनको आपसमें लड़ा देनेके लिये कार्रवाइयां कीं। परन्तु बाजी रावने उसे हरा दिया तथा चौथ देने और साहुको मराठोंका राजा माननेके लिये वाध्य किया (१७२८ ई०)। परन्तु निज़ाम हारकर भी शान्त नहीं बैठा रहा। इसके बादही उसने गुजरातके सेनापति त्रिम्बकराव

दभाड़े और सताराके प्रतिनिधि श्रीपति रावको पेशवेके विरुद्ध उभाड़ा। बाजीरावने दभाड़ेको लड़ाईमें मार कर गुजरात जीता और वहांकी मालगुज़ारीका आधा हिस्सा अपना लिया। इसी समय पीलाजी गायकवाड़ दभाड़ेका सहायक बनकर गुजरातमें पहुंचा। वही बरोदा राजवंशका आदि पुरुष था। उधर श्रीपति रावके बर्त्तावसे बिगड़ कर साहुने बाजीरावकोही प्रतिनिधिका पद दे दिया। निज़ामका मुंह फिर नीचा हो गया। अन्तमें निज़ामने बाजीरावसे सुलह कर ली। इसी अवसर पर दोनोंमें यह समझौता हुआ था कि पेशवा और निज़ाम एक दूसरेको उत्तर और दक्षिणमें अपनी अपनी प्रभुता बढ़ानेमें नहीं रोकेंगे। इसी समझौतेके अनुसार बाजीरावने मालवा तथा बुन्देलखण्ड के हिन्दू सरदारोंकी सहायतासे सूबेदार मुहम्मद खां बंगुशको हरा कर मालवा जीता (१७३३ ई०)। इसके बाद ही गुजरातके सूबेदार अभयसिंहको हरा कर दामोजी गायकवाड़ने गुजरात भी जीत लिया (१७३५ ई०)। सन् १७३६ ई० में बाजीराव एका-एक दिल्ली तक पहुंच गया। शहरके बाहर ही बाहर लूट पाट कर वहांसे चल दिया। इसी तरहसे पेशवाने दिल्लीके बादशाह को मराठोंकी बढ़ती हुई शक्तिका थोड़ा सा परिचय दे दिया। मराठा शक्तिकी ऐसी उन्नति देख कर उधर निज़ाम बड़ा भयभीत हो गया और उसने बादशाहसे पुनः सन्धि कर ली। सन्तुष्ट होकर मुहम्मदशाहने उसे दक्षिणी सूबोंके अतिरिक्त गुजरात और मालवा भी दे दिये और उसे उन सूबोंसे पेशवाको दूर भगाने के लिये भेजा। निज़ाम बुन्देलखण्ड जीत कर बिना रोक टोक भूपाल तक पहुंचा। वहीं पर बाजीरावने उसे घेर लिया। उसी समय नादिरशाहकी चढ़ाईका समाचार सुनते ही निज़ामने चुपचापसे सन्धि कर ली और दिल्लीकी ओर चल दिया (१७३८ ई०)। इस सन्धिके अनुसार मालवा तथा चम्बल और नर्मदा नदीके बीचके भूभाग पेशवाके अधीन हो गये। इसके बाद

बाजीरावने पुर्तगीज़ोंको हरा कर सालसेट, वेसिन और चौल जीता। अन्तमें उसने निज़ामके बेटे नासिरजंगको हरा कर उससे इन्दौरके निकट कुछ जागीर छीनी। वहीं पर १७४० ई० में कुल ४२ वर्षकी अवस्थामें उसकी मृत्यु हुई।

उनदिनों बाजीरावके समान शूरवीर तथा साहसी सेनापति कदाचित् ही कोई था। लड़ते समय वह एक साधारण सिपाहीके ऐसा जीवन व्यतीत करता था। वह बड़ा सुपुरुष तथा बड़ा रोबीला भी था। साहु तक उससे डरता था। युद्धक्षेत्रमें दल मलते हुए उसका एक चित्र देखकर महम्मदशाहकी आंखें खुल गईं थीं। मस्तानी नामकी एक मुसलमानीको रख लेनेके कारण उसके घर वाले भी उससे सदा अप्रसन्न रहा करते थे। मरते समय वह १४½ लाख रुपयेका कर्ज़दार था। फिर भी, मराठा शक्तिके बनाने वालोंमें बाजीरावका स्थान बहुतही ऊंचा है।

बालाजी बाजीराव (१७४०-६१ ई०)—बाजीरावके मृत्युके उपरान्त उसका बेटा बालाजी बाजीराव पेशवा बना। अभिषेकके दिन महाराज साहुने उसे 'अपने बाप दादाके अनुयायी हो कर अटकके किलेपर मराठोंकी विजय पताका फहरा देने'के लिये कहा था। तब उसकी अवस्था केवल १९ वर्षकी थी। इसी समय साहुकी आज्ञासे रघुजी भोसलेने चांद साहबके आक्रमणसे तञ्जोरके मराठे राजाको बचानेके लिये कर्णाटकपर चढ़ाई कर दी। वहां वह कुछ दिनों तक खूब लूट मार करता रहा। इसी समय फरासीसी गवर्नर डूमाने रघुजीको नीचा दिखाया था। इसके बादही पेशवाकी सम्मति लेकर रघुजीने बंगाल लूटने के लिये भाष्कर पन्थको भेजा। अन्तमें बंगालके नवाब अलीवर्दीने उड़ीसा देकर रघुजीसे सन्धि कर ली।

साहुकी मृत्युके उपरान्त (१७४८ ई०) में जब ताराबाईका पौत्र रामराजा मराठोंका राजा बना, तब बालाजीने पूनाको अपनी राजधानी बनाई। तभीसे पेशवा ही मराठोंका असली राजा बन

तथा शिवाजीकी सन्ततिके लोगोंकी कोई पूछ ताछ नहीं रह गई।
इधर हैदराबादकी निज़ामतमें भी गड़बड़ी मची हुई थी। मुज़फ्फरजंगकी हत्याके उपरान्त (१७५१ ई०) आसफ़ जाहका बड़ा बेटा गाज़ी–उद्दीन अपने छोटे भाई सलावत् जंगसे हैदराबादका सिंहासन छीनना चाहता था। उसने पेशवासे सहायता मांगी इसके बदले गाज़ी-उद्दीनने बरारका कुछ अंश दे दिया। पश्चात् गाज़ी-उद्दीनकी हत्या होनेपर पेशवाने बरार आदि तथा रघुजी गाविलगढ़ आदि दबा लिये। पुनः १७५६ ई० में निज़ामको हरा कर पेशवाने अहमदनगर, दौलताबाद, बीजापुर और असीरगढ़ आदि जीत लिये। इस प्रकारसे मराठे दक्षिणी हिन्दुस्तानकी प्रधान शक्ति बन गये थे। अब पेशवाने उत्तरी हिन्दुस्तानमें मराठोंका रोब बढ़ाना चाहा। अवसर भी अच्छाही था, क्योंकि नादिरशाहके चले जानेके बाद पञ्जाब और दिल्लीमें बड़ी गड़बड़ी मच गयी थी। सन् १७५६ ई० में अफगान सरदार अहमद शाह अबदालीने हिन्दुस्तानपर चढ़ाई की। उसने पञ्जाब जीतकर दिल्ली ले ली। हिन्दू साम्राज्य स्थापित करनेके लिये पहले अफगानोंको पञ्जाबसे हटानेकी आवश्यकता हुई। इससे अबदालीके घर लौटनेपर पेशवाके भाई रघुनाथ (राघोबा) ने सन् १७५८ ई० में अबदालीके बेटे को हराकर सारा पञ्जाब अफगानोंके हाथसे छीन लिया। इस समय मराठे उन्नतिके शिखरपर पहुंच गये थे। इन दिनोंमें सिन्धुनदसे बंगाल तक और हिमालयसे कुमारी अन्तरीप तक इनका दबदबा फैल गया।

पानीपतकी तीसरी लड़ाई (१७६१ ई०)—जिस प्रकार दीपक बुझते समय एक बार ज़ोरसे भभक उठता है वैसेही मुसलमानोंके प्रभावने अन्तहोनेके पूर्व एक बार और ज़ोर बांधा। अवधके नवाब शुजा-उद्दौला, रोहिले सरदार और अहमदशाह अबदाली मुसलमानोंके पक्षमें होकर हिन्दुस्तानमें अपना रोबदाब जमा रखनेके लिए हिन्दू-मराठोंसे लड़नेको तैयार होगये। इधर

पेशवाका भतीजा राव सदाशिव भाऊ मराठी सेनाका सेनापति बनकर उत्तरी हिन्दुस्तानमें आया और उसने दिल्ली लेली। सदाशिव बड़ा शूर-वीर था, पर बड़ा हठी, अभिमानी तथा क्रूर स्वभावका था। होलकर आदि प्रवीण सेनापतियोंने उसको मराठी-युद्ध-नीतिके अनुयायी होकर अनियमित युद्ध करनेकी सलाह दी। सदाशिवने उनकी एक न सुनी। उसने फ्रांसीसी रीतिके अनुसार तोपें लेकर सम्मुख युद्ध करनेकी ठान ली। पुनः बादशाही कब्रोंपर आक्रमण कर लूट पाट करनेके लिये जाठ-राज सूर्यमल और और राजपूत सरदारोंके साथ चल दिया।

पानीपतके मैदानमें १७६० ई० में एकबार फिर दो सेनाएं अक्तूबरके महीनेमें लड़नेके लिये आ पहुंची। शत्रुपर पहिले वार करनेका साहस किसीका नहीं हुआ। दोनों ओरके सिपाही खाईं खोदकर अपने अपने मोरचे सुदृढ़ बनाते रहे। अन्नकी कमीके कारण प्रायः तीन महीनोंके बाद मराठे चेते और सदाशिव भाऊने आक्रमण करनेका निश्चय किया (६ वीं जनवरी)। उनकी सेनाके पहले दलने बड़ी वीरताके साथ आक्रमण किया और रोहिले सरदार और अवधके नवावको हरा दिया। पर दोपहरके बाद जब मराठे थक गये थे तब अहमदशाहने अफगानोंकी एक ताज़ी सेना मराठोंपर पीछेसे आक्रमण करनेके लिये भेजी और स्वयं एक दूसरी ताज़ी सेना लेकर सामनेसे लड़ने लगा। इस दो- तरफी चढ़ाईका वेग थकी माँदी मराठी सेना सह न सकी और लगभग तीन बजे दिनके मराठी सेना भागने लगी। अब्‌दालीने उनका पीछा किया और बहुतसे लोगोंको मार डाला। सदाशिव भाऊ और पेशवाके पुत्र, विश्वास राव और बहुतसे नामी मराठे मारे गये। सिन्धिया और नाना फड़नवीसने भाग कर अपनी जानें बचायीं। पेशवाको इस लड़ाईका समाचार इन गूढ़ शब्दोंमें भेजा गया, "दो मोती गल गए, २७ सोनेकी

भी नष्ट हो गयी हैं, और चांदी और तांबेकी तो कोई गिनती न थी। यह समाचार पाते ही पेशवा बालाजी बाजीरावका दिल टुकड़े टुकड़े हो गया और थोड़ेही दिनोंके बाद वह मर गया।

हारका परिणाम—सारी सेना नष्ट हो जानेके कारण मराठोंको उत्तरी हिन्दुस्तान छोड़ देना पड़ा। हार होनेके कारण मराठा जातिपर पेशवाका रोब घटने लगा। इससे सिन्धिया, होलकर, भोसले, गायकवाड़ आदि मराठे सरदार अपने अपने राज्योंमें स्वतंत्र बन बैठे। ग्वालियरमें सिन्धिया, इन्दौरमें होलकर, गुजरातमें गायकवाड़, नागपुरमें भोसले और दक्षिणमें पेशवा राज करने लगे। शिवाजीकी सन्ततिके लोग सतारा और कोल्हापुरमें नाममात्रके राजा रह गये। घरेलू झगड़ोंसे निर्बल हो जानेके कारण पेशवाओंको बार बार अंग्रेज़ोंकी सहायता लेनी पड़ी। अन्तमें उनका राज्य अंग्रेज़ोंने जीत लिया। इस लड़ाईके बाद उत्तरी हिन्दुस्तानमें बड़ा अंधेर फैल गया। अहमदशाहकी सेना विद्रोही बन गयी जिससे उसे घर लौटना पड़ा।

अब देखो, मुग़ल राज-शक्ति तो इसके पहिलेही नष्ट भ्रष्ट हो गयी थी। पानीपतकी तीसरी लड़ाईमें मराठा राजशक्तिके नष्ट हो जानेके कारण ऐसी कोई देशी शक्ति अब न रह गई जो सारे हिन्दुस्तानपर अपना रोब जमावे। अब बचे विदेशी लोग। इनमें अंग्रेज़ सबसे शक्तिमान देख पड़ते थे। उन्होंने १७५७ ई०में बंगाल जीत लिया था और १७६० ई० में फ़रासीसियोंको भी बेतरह हरा दिया था। जैसे सूर्य्य पूर्व दिशामें धीरे धीरे उदित होकर अपनी चमकसे अन्धकारको नाश करता है और संसारमें उजेला फैलाता है, उसी प्रकार अंग्रेज़ी राज-शक्तिने भी हिन्दुस्तानकी पूर्वी सीमा बंगालसे उदय होकर अन्धकारके समान सारे हिन्दुस्तानकी छोटी छोटी रियासतोंका नाश करके

चारों दिशाओंमें उसने अपना प्रभाव जमाया। किस रीतिसे वे सफल हुए थे आगेके खण्डमें इसीका वर्णन होगा।

सारांश

१७१३–२० ई०	बालाजी विश्वनाथ भट्ट
१७२०–४० ,,	बाजीराव पेशवा
१७३८ ,,	,, ने मालवा जीता
१७४०–६१ ,,	बालाजी बाजीराव पेशवा,
१७४८ ,,	साहूकी मृत्यु आसफजाह ,, महम्मदशाह ,,
१७६१ ,,	पानीपतकी तीसरी लड़ाई

तृतीय खण्ड।

अंग्रेज़ों का प्रभाव।

(१) अंग्रेज़ी और फ़रासीसी कम्पनियां।

(१६००—१७४४ ई०)

अंग्रेज़ी कम्पनी (The East India Company)— पहिले ही में कहा जा चुका है कि सन् १५८८ ई० में जब अंग्रेज़ोंने स्पेन और पुर्तगीज़ों को एक भारी जल-युद्धमें बेतरह हरा दिया और जब १५९९ ई० में डच् लोग अंग्रेज़ोंसे मिचका मूल्य दुगना लेने लगे (पहिले एक पौण्ड मिर्चका दाम तीन शिलिंग था; पर उनको छः और आठ शिलिंग देने पड़ते थे), तभी कुछ अंग्रेज़ सौदागरोंने भारतवर्षके साथ सीधा व्यापार करके लाभ उठानेकी आशासे १६०० ई०में The East India Company नामकी एक अंग्रेज़ी कम्पनी खोली।

इस कम्पनीने पूर्वी समुद्रमें पुर्तगीज़ तथा डच् लोगोंसे लड़ भिड़ तथा मुग़ल बादशाहोंकी आज्ञा लेकर भारतवर्षमें समुद्रके किनारे किनारे कई एक कोठियां खोलीं। इनमें सूरत (१६१३ ई०), हुगली (१६३४ ई०), मद्रास (१६३९ ई०), बम्बई (१६६८ ई०) तथा कलकत्ता (१६९० ई०) प्रख्यात हैं। इनके अतिरिक्त और भी कई एक कोठियां थीं। साथ ही साथ शाहजहां तथा फर्रुख-सियरने अंग्रेज़ी कम्पनीको बंगालमें बिना महसूलके व्यापार करने तथा कोठियां खोलनेकी आज्ञा दी थी।

जब व्यापारमें इस कम्पनीको बहुत लाभ उठाते देख कर ... की कमी पूरी करनेके लिये १६९८ ई० में अंग्रेज़ी सरकारने

एक अलग कम्पनी बनवाई। परन्तु प्राचीन कम्पनीने घर बाहर इसका बड़ा विरोध किया। अतः १७०२ ई०में दोनों कम्पनियोंको एक साथ मिला कर एक संयुक्त कम्पनी बनवाई इसका नाम "The United Company of Merchants trading to the East Indies" पड़ा। इसी कम्पनीने १७५७ और १८५७ ई०के बीच सारे भारतवर्ष पर अंग्रेज़ जाति विजय पताका फहरा दी।

पहिले ही कहा जा चुका है कि प्रारम्भमें अंग्रेज़ व्यापार करने हो की अभिलाषासे इस देशमें आये थे-राज्य जीतने वा नई आबादी स्थापित करनेके लिये नहीं। इसके उन दिनों वे अमेरिका पर अधिक निर्भर थे। तथापि घटना ऐसी आ घटीं जिससे वाध्य होकर इन्हें अन्त तक इस देश एक साम्राज्य स्थापित करना ही पड़ा।

फरासीसी कम्पनी—फरासीसी सरकारकी ओरसे १६६४ ई० में उनकी ईस्ट इण्डिया कम्पनी बनी। इसके पहिले उनकी और भी दो कम्पनियां बन चुकी थीं जिन्होंने अफ्रिका निकट मेडोगास्कर, फ्रांसद्वीप और मारिशस आदि पर अधिकार कर लिया था, और बहुत दिनों तक ये कुल द्वीप फरासीसी जहाज़ी बेड़ोंके मुख्य स्थान थे, क्योंकि वे यूरोप हिन्दुस्तानमें आने वाले जहाजोंके बीचोबीच रास्ते पर हैं।

उनकी कोठियां—इस कम्पनीके बननेके तीनसाल बाद सूरतमें पहिली कोठी खोली गई। इसके बाद फरासीसियोंने १६७४ ई० में बंगालमें चन्द्रनगर और मद्रासके दक्षिण पाण्डिचेरी नामके स्थानोंको खरीदे और वहांपर किले बनवाये। गढ़ रखवाली करनेके लिये देशी सिपाहियोंको यूरोपीय नियमों अनुसार शिक्षा दी जाने लगी।

गवर्नर दूमा (Dumas) (१७३५-४१ ई०)—दूमा पहिले पहल देशी राजनीतिमें सम्मिलित होकर दक्षिणमें फरासीसी

बल बढ़ाया। उसने अपने पक्षके राजाको तञ्जोरकी गद्दी पर बैठाया। राजाने प्रसन्न होकर फरासीसी कम्पनीको किला दे दिया। फिर रघुजी भोसलेने जब आर्कटके नवाबको डाला तब दूमाने मराठोंके आक्रमणसे उसके सम्बन्धियोंकी और उन्हें आश्रय दिया। मराठे इस वर्तावसे बहुत गये और पाण्डिचेरीपर चढ़ाई करना चाहा, फिर भी दूमा बेचारोंको उनके हाथ नहीं सौंपा। इस भलमनसाहतका परिणाम यह हुआ कि सब मुसलमानी शक्तियां फरासीसियोंके आ गईं। निज़ामने दूमाकी बड़ी प्रशंसा की और सम्राट शाहने उसको एक मनसबदार और नवाब भी बना दिया। दूमाके कामको उसके चेले और सहकारी डूप्लेने उठा लिया।

डूप्ले(Dupleix)—डूप्लेका बाप "फरासीसी ईस्टइण्डिया कम्पनी" के डाइरेक्टरोंमेंसे एक था। डूप्ले सन् १६९७ ई०में पैदा हुआ। जब उसकी उम्र २३ वर्षकी थी तब पहिले पहल वह देशमें आया। कुछ दिन तक पाण्डिचेरी कौंसिलका एक सदस्य रहनेके बाद सन् १७३० ई०में वह चन्द्रनगरका गवर्नर गया। डूप्लेने गवर्नर बनकर दूर दूरके देशोंके साथ व्यापार करना आरम्भ किया, यहां तक कि तिब्बतमें भी फरासीसी जाने लगा। जब दस सालके बाद डूप्ले पाण्डिचेरीका गवर्नर चुना गया तब तक चन्द्रनगरका रूप रंग बिलकुल बदल था। झोपड़ियोंकी जगह बड़ी बड़ी इमारतें बन गईं थीं। नदीके किनारे नित्यहो दस बारह जहाज़ मालसे लदे हुये पड़ते थे।

जिस समय डूप्ले पाण्डिचेरीका गवर्नर बना उस समय देशकी राजनीति और ही थी। "जिसकी लाठी उसकी भैंस" का समय था। डूप्लेने बंगालमें रहते समय अलीवर्दी को केवल सेना बलसे बंगालका नवाब बनते देखा था। नादिर

शाहको दिल्ली लूटते सुना था। दक्षिणमें आकर उसने अनवर-उद्दीनको नया नया नवाब बनते देखा था। यह सब देख सुनकर उसने शस्त्र बलसे दक्षिणमें एक भारी साम्राज्य स्थापित करना चाहा। उस समय वहां अन्य कम्पनियोंकी अपेक्षा फरासीसी कम्पनीकी प्रतिष्ठा बहुत बढ़ी हुई थी। उनके पास यूरोपके ढंगसे सिखाई हुई भारी सेना थी। इस सेनाके सामने देशी ढंगपर लड़ने वाली सेना कुछ नहीं कर सकती थी। इसलिए उसने दो बातें निश्चय कीं। एक तो देशी राज्योंसे लड़ भिड़कर उनपर अपनी धाक जमाना और दूसरी, दक्षिणसे अंग्रेज़ोंको हटा देना। इनमेंसे पहिली तो आसान थी, पर दूसरी ऐसी सहल न थी। इन बातोंसे तुमको विश्वास हो जायगा कि फरासीसियोंकी दृष्टि आरम्भ होसे व्यापारकी ओर न थी वरन् राज्य स्थापित करनेपर थी।

सारांश

१६००	ई०	अंग्रेज़ी ईस्ट इण्डिया कम्पनी बनी
१६६४	,,	फरासीसी ,, ,,
१७०२	,,	संयुक्त अंग्रेज़ी कम्पनी बनी.
१७३५–४१	,,	गवर्नर डूमा
१७४१–५४	,,	,, डूप्ले.

(२) कर्नाटिककी लड़ाइयाँ (१७४४–६३ ई०)

डूप्लेके पाण्डीचेरीके गवर्नर बननेके उपरान्त जब अंग्रेज़ी और फरासीसी कम्पनियोंकी स्थिति इस प्रकारकी थी, तब उसने यह समझा कि उसकी आन्तरिक अभिलाषा पूरी करनेहीके लिये यूरोपमें अंग्रेज़ और फरासीसी सन् १७४४ ई० में आपसमें लड़ गये। अतः दुनियांमें जहां जहां अंग्रेज़ और फरासीसी थे परस्पर लड़ने लगे। डूप्लेने अवसर पाकर अंग्रेज़ों पर आक्रमण किया।

कर्नाटिककी पहिली लड़ाई (१७४४-४८ ई०)— लड़ाई छिड़नेका समाचार पातेही डूप्लेने आर्कटके नवाब अनवर-उद्दीनसे मित्रता करली। जब अंग्रेज़ोंने पाण्डिचेरीपर चढाई करना चाहा तब अनवर-उद्दीनने उन्हें रोका। सन् १७४६ ई० में मारीशस् द्वीपसे कई एक फरासीसी जंगी जहाज़ आ पहुंचे। डूप्लेने इनकी सहायतासे मद्रासपर चढ़ाई कर दी। अंग्रेज़ोंने नवाबसे सहायता मांगी। पर डूप्लेने अनवर-उद्दीनसे कहला भेजा कि अंग्रेज़ोंसे मद्रास छीनकर मैं तुम्हींको दूंगा। लालचमें पड़कर नवावने अंग्रेज़ोंकी सहायता न की। फरासीसियोंने मद्रास ले लिया। वहांसे भागकर अंग्रेज़ोंने सेण्ट डेविड गढ़में आश्रय लिया।

मद्रास लेनेके बाद डूप्ले उसे दवा कर बैठ गया, इससे नवावने चिढ़कर उसके विरुद्ध एक बड़ी भारी सेना भेजी। पर डूप्लेने इसे बेतरह हराया। पहलेतो विदेशी व्यपारी नवाबकी प्रजा थे। पर इस जीतके कारण यह सम्बन्ध बिलकुल जाता रहा। डूप्लेका साहस तथा आशा और भी बढ़ गई। हिन्दुस्तानमें फरासीसी साम्राज्य स्थापित होनेकी सम्भावना देखकर उसका हृदय उछल पड़ा।

इसके बाद डूप्लेने सेन्टडेविड गढ़ लेनेका बड़ा प्रयत्न किया

पर सफल न हुआ। तब अंग्रेज़ोंका साहस बढ़ा और उन्हों
पाण्डिचेरीपर चढ़ाई की, पर उसे ले न सके।

इसी समय यूरोपमें अंग्रेज़ोंके साथ फरासीसियोंकी
१७४८ ई० में सन्धि हो गई। जिसके अनुसार डूप्लेको मद्रास
अंग्रेज़ोंको लौटाना पड़ा।

लड़ाईका परिणाम— अंग्रेज़ और नवाबको हरादेनेके का-
रण डूप्लेकी प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गई। वह भी उत्साह पूर्वक देशी
राजनीतिमें भाग लेने लगा। पर उसमें एक यही दोष था कि
अब तक वह केवल स्थल सेनापर भरोसा रखता था।
शायद उसे यह नहीं मालूम था कि एक यूरोपीय शक्तिको
अपनी जन्म भूमिसे सीधा सम्बन्ध रखनेके लिये समुद्री शक्ति
पर ही अधिक भरोसा रखनी चाहिये। फिर इस लड़ाईका परि-
णाम यह हुआ कि यूरोपमें फरासीसियोंके कुल जंगी जहाज़ नष्ट
हो गए और अंग्रेज़ोंकी समुद्री शक्ति बहुत बढ़ गई।

कर्नाटिककी दूसरी लड़ाई (१७५०-५४ ई०)—सन् १७४८
ई० में यूरोपमें अंग्रेज़ोंकी फरासीसियोंसे सन्धि हो जानेपर भी
हिन्दुस्तानमें इनके बीच फिर सन् १७५० ई० में लड़ाई छिड़
गई। इसका एक विशेष कारण है। उन दिनोंमें इङ्गलैण्ड या
फ्रांससे हिन्दुस्तान जाने आनेमें कभी कभी डेढ़ दो साल तक
लग जाते थे। इसलिये हिन्दुस्तानके गवर्नर सब बातोंमें यूरोपकी
सरकारकी राय नहीं ले सकते थे, वे बहुत कुछ मनमाना काम
करते थे। अवसर पाकर सन् १७५० ई० में डूप्लेने दक्षिणमें
फरासीसी साम्राज्य स्थापित करते हुये वहांसे अंग्रेज़ोंको
निकालनेका पक्का इरादा किया।

लड़ाईके कारण—पहले पहल चांद साहबके पुरखे कर्ना-
टिकके नवाब थे। कुछ दिनके बाद निज़ाम आसफ़ जाहने चांद
साहबको नवाब न बनाकर अनवर-उद्दीनको नवाब बना दिया।
अनवर-उद्दीनसे डूप्लेको बनती न थी और उसने उसको एक बार

हरा भी दिया था। डूप्ले एक ऐसे आदमीकी खोजमें था जिसे नवाब बनाकर अपना काम साधे। इसके लिए उसने चांद साहबको उभाड़ा और उसका पक्ष लेकर अनवरसे लड़ना निश्चित किया।

लेकिन सन् १७४८ ई० में निज़ाम आसफ़जाहकी मृत्यु हो गई और उसका दूसरा बेटा नासिरजंग निज़ाम बना। पर आसफ़जाहके नाती मुज़फ्फरजंगने कहा कि दिल्लीके बादशाह ने मुझे निज़ाम बनाया है इसलिये हैदराबादकी गद्दीका मैं उत्तराधिकारी हूं। इसने भी डूप्लेसे सहायता मांगी।

इस समय लड़ने वालोंकी दलबन्दी इस प्रकार थी:—

फरासीसी चांदसाहब (कर्नाटिक) मुज़फ्फरजंग (हैदराबाद)	{	अनवर-उद्दीन (कर्नाटिकके नवाब) नासिरजंग (हैदराबादके निज़ाम)

सन् १७५० ई०में चांद साहब और मुज़फ्फरजंगने फरासीसी सेनापति बूसी (Bussy) की सहायतासे नवाब अनवर-उद्दीनको लड़ाईमें हराकर मार डाला। उसका बेटा मुहम्मदअली त्रिचनापलीके किलेमें जा छिपा। इसी अवसर पर सेनापति बूसीने जिञ्जी आदि कई गढ़ ले लिये और चांद साहब कर्नाटिकका नवाब बना।

कर्नाटिकके नवाब निज़ामके अधीन थे। इसलिये नासिरजंग ने चांद साहबको नवाब मानना स्वीकार नहीं किया और कर्नाटिक में जाकर उसे हरा दिया। चांद पाण्डिचेरी भागा। नासिरजंग ने मुहम्मदअलीको नवाब बनाया। इतनेमें उसने मुज़फ्फरको भी पकड़ लिया। लेकिन दरबारियोंने षड़यन्त्र रचकर नासिरको मार डाला। मुज़फ्फर निज़ाम बना और उसने चांद साहबको नवाबी दी। अब मित्रोंकी जीतके साथ साथ फरासीसियोंका भी सितारा चमका। मुहम्मदअली फिर त्रिचनापलीको भागा और वह अंग्रेज़ोंकी शरणमें आया।

पहिले कहा जा चुका है कि अंग्रेज़ शान्ति-प्रिय व्यापारी मात्र थे। अभी तक उनके मनमें लड़भिड़कर इस देशमें राज्य स्थापित करनेकी इच्छा नहीं थी। किन्तु जब उन्होंने अपने शत्रु फरासीसियोंकी बढ़ती देखी, तब बेकार बैठे रहनेकी अपेक्षा अपनी आत्म रक्षाके लिये तलवार उठानाही उचित समझा। उधर जब मुज़फ्फरजंग मारा गया तब फरासीसी सेनापति बूसीने झट आसफ़जाहके लड़के सलाबतजंगको निज़ाम बनाकर दक्षिण में फरासीसियोंका रोब ज्योंका त्यों बना रक्खा। लाचार होकर अंग्रेज़ोंने मुहम्मदअलीको सहायता देनेका निश्चय किया। इस समय जिस मनुष्यकी चतुराई और बहादुरीके कारण अंग्रेज़ों की अवस्था पलटी थी उसका नाम क्लाइव था।

राबर्ट क्लाइव—इङ्गलैण्डके श्रापशायरके जिलेमें सन् १७२५ ई० में राबर्ट क्लाइवका जन्म हुआ। बचपनसे क्लाइव बड़ा उपद्रवी था। कुछ लिखता पढ़ता न था। वह छोटे छोटे छोकरोंका एक झुण्ड बनाकर स्वयं उसका सरदार बनता था। इस झुण्डकी सहायतासे वह चक्का चलानेका डर दिखाकर दूकानदारोंसे खानेकी चीज़ें वा पैसे वसूल करता था। गिर्जेके ऊँचे टीले और ऊंचीसे ऊंची दीवालें उसकी बैठक थीं। वह सदा मारपीट करनेमें लगा रहता था। उसके बापने उसकी शिक्षाके लिये बहुत कुछ प्रयत्न किये किन्तु सब व्यर्थ हुये। विवश होकर उसने अट्ठारह वर्षकी अवस्थामें क्लाइवको ईस्ट इण्डिया कम्पनीका एक मुहर्रिर बनाकर भारतवर्षमें भेज दिया कि उसकी चाल चलन कुछ सुधर जायेगी।

सन् १७४३ ई० में पहिले पहल मद्रास आकर क्लाइवको बहुत दुःख उठाना पड़ा। फिर भी उसकी चाल ढाल न सुधरी। वह बहुधा दूसरे अफसरोंसे लड़ जाता था। जब फरासीसी और अंग्रेज़ोंमें लड़ाई छिड़ी तब अंग्रेज़ मुहर्रिरोंको क़लम छोड़कर तलवार उठानी पड़ी। साथ साथ क्लाइव भी लड़ने लगा।

उसने अंग्रेज़ी सेनापति मेजर लारेन्सके साथ पाण्डिचेरीपर चढ़ाई की और सेण्ट डेविडगढ़की रक्षा करनेमें बड़ी वीरता दिखाई प्रसन्न होकर मेजरने उसे सेनाविभागमें भर्ती कर लिया। इस प्रकार दूसरी राह पर चलनेके कारण उसके जीवनकी गति बिल्कुल पलट गयी।

जब अंग्रेज़ोंने महम्मदअलीको सहायता देनेका निश्चय किया तब लड़ने वालोंकी दल बन्दी इस प्रकार थी—

अंग्रेज़ महम्मद अली	फरासीसी चांद साहब (कर्नाटिक)

युद्धकी घटनायें—इधर चांद साहब और फरासीसी महम्मदअलीको त्रिचनापलीमें घेर कर पड़े रहे। डूप्लेके बार बार कहनेपर भी फरासीसी सेनापतियोंने गढ़ पर धावा न करके व्यर्थ समय खोया। उधर क्लाइवने अंग्रेज़ोंको सलाह दी कि अब मुहम्मदअलीके पास त्रिचनापलीमें सेना भेजनेसे कोई काम न निकलेगा और बेकार बहुत सिपाही मारे जायंगे। इससे तो अच्छा यह होगा कि हम लोग चांद साहबकी राजधानी आर्कट ले लें। ऐसा करनेसे चांद साहबको या तो अपनी राजधानी आर्कटसे हाथ धोना पड़ेगा, या त्रिचनापली छोड़ कर चला आना पड़ेगा। मद्रास कौंसिलने उसकी रायसे सहमत होकर उसीको सेनापति बनाकर आर्कट भेजा।

आर्कटका घेरा (१७५१ ई०)—कुल २०० गोरे और ६०० देशी सिपाही लेकर क्लाइव आर्कटके सामने आ खड़ा हुआ। अधिकतर सिपाही चांद साहबके साथ त्रिचनापलीके आसपास पड़े रहे, इसलिये शहरकी रक्षा करनेवाला कोई न था। क्लाइवने आसानीके साथ आर्कट ले लिया और नवाबकी बची खुची सेना भाग गयी। पर थोड़ेही दिनोंमें चांद साहबने अपने बेटे राजा साहबको ... सिपाहियोंके साथ आर्कट वापस जानने

अंग्रेज़ोंका दबदबा बहुत फैल गया।

डूप्ले क्यों हारा—उस समय डूप्लेके समान उद्योगशील और नीतिज्ञ कोई न था। पर उसमें काम करनेकी शक्ति अधिक न थी। इसलिये उसे नीच लोगोंपर अधिक भरोसा रखना पड़ता था। क्लाइव और लारेंसके ऐसे सेनापति भी इसके पास न थे; जो रहे भी वे बड़े स्वार्थी थे और इनका आपसमें मेल भीं न था। फ्रान्स वालोंने उसकी कुछभी सहायता नहीं की। इन्हीं सब कारणोंसे डूप्लेकी हार हुई।

कर्नाटिककी तीसरी लड़ाई (१७५६-६३ ई०)—सन् १७-५६ ई० में यूरोपमें फरासीसी और अंग्रेज़ोंके बीच फिरसे लड़ाई छिड़ी। यह लड़ाई सात बरस तक चलती रही। इसलिये दुनियाभरमें जहां जहां अंग्रेज़ और फरासीसी रहे वे आपसमें लड़ने लगे। पर इस देशमें सन् १७५८ ई० में लड़ाई छिड़ी।

जिस समय यह लड़ाई छिड़ी थी उस समय हिन्दुस्तानमें अंग्रेज़ोंकी दशा कुछ और ही हो गई थी। उन लोगोंने बंगाल पर अपना अधिकार अच्छी तरहसे जमा लिया था। उस देशकी सारी सम्पत्ति अब उन्हीं की थी। कर्नाटिकमें भी उनका रोब बहुत चढ़ा बढ़ा था। अब उनको कौन पा सकता था?

घटनायें—लड़ाई छिड़नेका पता चलते ही १७५७ ई० में क्लाइवने चन्द्रनगर ले लिया। सन् १७५८ ई० के बीचोंबीच फ्रान्ससे काउन्ट लाली (Count Lally) आ पहुंचा। उसका स्वभाव बड़ा रूखा था। फिर उस समय पाण्डिचेरीके फरासीसी बड़े विलासी हो गये थे। सब तरहकी बुरी लत वाले उनमें जा घुसे थे। लालीको ऐसी आज्ञा थी कि वह इन सब दोषोंको सुधारे। उसका स्वभाव रूखा तो था ही, अतः आते ही वह उनके साथ बड़ी कठोरता का बर्ताव करने लगा। इसका परिणाम यह हुआ कि वे लोग उससे और भी बिगड़ गये और उसकी बिल्कुल सहायता न की।

लालीने आकर उत्तरीय सरकारके फरासीसी अफ़सर को और हैदराबादसे सेनापति बूसीको अपनी अपनी सेनाओंके साथ बुला लिया। जिसका परिणाम यह हुआ कि उन दोनों जगहोंसे फरासीसियोंको बिल्कुल हाथ धोना पड़ा। लालीने फोर्ट सेन्ट डेविड आदि कई स्थानोंको ले लिये। अब पाण्डिचेरी वालोंने उसकी सेनाको रसद भेजना बंद कर दिया। अतः उन्होंने बलवा मचा दिया। लालीने मद्रासपर चढ़ाई की। पर अंग्रेज़ोंने बड़ी बहादुरीके साथ गढ़की रक्षा की।

इसी समय कई एक अंग्रेज़ी लड़ाईके जहाज़ोंके आ जाने पर लालीको वहांसे चल देना पड़ा। थकी मांदी और भूखों मरती हुई एक सेना लेकर उसको पाण्डीचेरीकी राह लेनी पड़ी। रास्तेमें उसको अंग्रेज़ सेनापति सर आयर कूट (Sir Eyre Coote) का सामना करना पड़ा। सर आयरके साथ एक बड़ी भारी सेना थी। उसने १७६० ई० में लालीको वाण्डिवाश पर बेतरह हराया। हार खाकर लालीने पाण्डीचेरी भागकर आश्रय लिया। अंग्रेज़ोंने उस स्थानको जल्द घेर लिया। लाली बड़ी वीरताके साथ प्रायः नौ महीने तक भूखों उनसे लड़ता रहा। अन्तमें सन् १७६१ ई० में लालीको विना शर्तके अंग्रेज़ोंके हाथ अपनेको सौंप देना पड़ा, अंग्रेज़ोंने उसे कैद करके विलायत भेज दिया। जब उसको फ्रांस भेजा गया तब वहांके राजाने उसे मरवा डाला।

लड़ाई छिड़तेही कर्नल फोर्ड (Colonel Forde) ने फरासीसियोंसे कुल उत्तरीय सरकार १७५६ ई० में जीत लिया। पाण्डीचेरी ले लेनेके बाद अंग्रेज़ोंने वहांके किलेको तोड़वा दिया। इधर मालाबारके किनारे माही भी ले लिया गया (१७६१ ई०)।

परिणाम—सन् १७६३ ई० में इंग्लैण्डकी फ्रांससे संधि हो गई। पाण्डीचेरी, चन्दननगर और माही व्यापारके लिये फरासीसियोंको फिरसे लौटा दिये गये। इस लड़ाईका परिणाम

यह हुआ कि तभीसे फरासीसियोंका रोब बिलकुल जाता रहा और अंग्रेज़ोंका प्रभाव ठीक रीतिसे जम गया।

फ़रासीसियोंकी हारके कारण—फरासीसी कम्पनीके अफसर लोग व्यापारपर बिलकुल ध्यान नहीं देते थे। वे साम्राज्य स्थापित करनेकीही धुनमें अधिक रहा करते थे। अंग्रेज़ी कम्पनी पहिले पहल केवल व्यापारही करती थी, अतः वह शीघ्रही मालदार बन गई। व्यापार न करनेसे फरासीसी कम्पनी का जल्द दिवाला निकल गया। पुनः यह कम्पनी सरकारी थी। इसलिये फ़रासीसी सरकारको इसका हानि सहनी पड़ती थी। अंग्रेज़ी सरकार अपने भरसक अपने देशकी कम्पनीको सेना और धन देकर सहायता करती थी और फरासीसी सरकार अधिक हानि होने की आशंकासे अपनी कम्पनीको सहायता नहीं देती थी। फिर इस देशकी लड़ाइयोंपर समुद्री शक्तिका प्रभाव कम न था। सन् १७४८ ई० के लगभग अंग्रेज़ोंकी जहाज़ी शक्ति यूरोप भरमें बढ़ी चढ़ी रहनेके कारण जल-पथ उन्हींके अधीन हो गया। इससे फरासीसियोंके लिये इस देशमें सेना आदि भेजनेकी असुविधा हो गई।

हिन्दुस्तानमें अंग्रेज़ोंके कई एक अच्छे अच्छे सेनापति जैसे मेजर लारेन्स (Major Lawrence), क्लाइव, फोर्ड आदि हो गये थे। इनकी बराबरी करने वाले सेनापति फरासीसियोंके पास न थे, फिर जो लोग थे भी वे सब स्वार्थी थे। और इनमें एकता बिलकुल न थी। अन्तिम बात यह है कि उन दिनों फरासीसी सरकार बड़ी निकम्मी हो गई थी और इसी समय इंग्लैण्डके सबसे बड़े वज़ीर पिट साहब (Pitt) राज काज चलाते थे। इनकी बुद्धि और नीतिकी बराबरी कमज़ोर फ़रासीसी राजा पन्द्रहवां लुई (Louis XV) कैसे कर सकता था?

सारांश

कर्नाटिककी लड़ाइयां।

१७४४-४८ ई०	पहली लड़ाई
१७४६ ई०	फरासीसियोंने मद्रास लिया
१७४८ ,,	संधि
१७५०-५४ ई०	दूसरी लड़ाई
१७४८ ,,	आसफजाह निज़ामकी मृत्यु
१७५१ ,,	आर्कटका घेरा
१७५४ ,,	डूप्लेकी हार
१७५६-६३ ई०	तीसरी लड़ाई
१७५८ ,,	लालीने डेविडगढ़ ले लिया
१७५८ ,,	फोर्डने उत्तरीय सरकारको जीता
१७६० ,,	वाण्डिवाशकी लड़ाई
१७६१ ,,	अंग्रेज़ोंने पाण्डिचेरी ले लिया
१७६३ ,,	संधि

(३) बंगालकी जीत।

नादिरशाहकी चढ़ाईके बाद सन् १७३६ ई० में बंगालके नवाब बिलकुल स्वतन्त्र हो गये और उन्होंने दिल्लीको मालगुज़ारी भेजना बन्द कर दिया। मूर्शिदकुली खांके नातीको हराकर सन् १७४० ई० में अलीवर्दी खां बंगालका नवाब बना। कुछ दिनोंके बाद उसने उड़ीसा भी अपने अधीन कर लिया। रघूजी भोसलेके द्वारा उसकी हार होनेके कारण उसको उड़ीसासे हाथ धोना पड़ा। सन् १७५६ ई० में अलीवर्दीकी मृत्यु होनेके बाद उसका नाती सिराज-उद्दौला बंगालका नवाब बना।

सिराज-उद्दौला—गद्दी मिलनेके समय सिराजकी अव-
कुल २४ बरसकी थी। उसके नाना अलीवर्दीने लाड़-
करके उसका स्वभाव बिगाड़ दिया था । गद्दीपर
ही उससे दरबारके कुछ स्वार्थी लोगोंसे अनबन होगई।
किसन दास नामक एक दरबारी अपनी धन सम्पत्ति
अंग्रेजी कम्पनीकी कलकत्तेकी कोठीमें भाग आया। सिरा-
कम्पनी वालोंको आज्ञा दी कि उसको तुरन्त मेरे अधीन
। कम्पनी वाले आज्ञा टालनेका यत्न करने लगे, जिसपर
उनसे बिगड़ गया। फिर उन दिनों यूरोपमें अंग्रेज़ों और
सीसियोंके बीच सात वर्षीय लड़ाई छिड़ी थी। इस लिये
लोग नवाबकी आज्ञाके बिना अपने किलेकी मरम्मत
रहे थे। पता लगते ही नवाबने किला तोड़नेकी आज्ञा दी।
ज़ोंने इस आज्ञाका भी उल्लंघन किया। इससे अप्रसन्न
सिराजने अंग्रेज़ोंको बंगालसे निकाल देनेका निश्चय किया
बादके निकट कासिम बाज़ारमें अंग्रेज़ोंकी एक छोटी कोठी
सिराजने बड़ी सुगमतासे उसे ले लिया पुनः कलकत्ता
लिये आगे बढ़ा।

नवाबके कलकत्तापर चढ़ाई करते ही गवर्नर ड्रेक (Drake)
में रहने वाली औरतों और बालबच्चोंके साथ जहाज पर
भाग गया। जो लोग न भाग सके थे, उनका मुखिया
हालवेल (Hollwel) नामक एक अंग्रेज़ी अफसर बड़ी
के साथ दो दिन तक सिराजसे लड़ता रहा। फिर उसको
मान कर नवाबके हाथ गढ़ सौंप देना पड़ा। नवाबने बड़ी
नसाहतके साथ अंग्रेज़ कैदियोंसे बर्ताव किया। कम्पनीके
के ५०,००० रुपये उसने ले लिये। रात हो जाने पर नवाब
दियोंको एक अफ़सरके हवाले करके अपने खेमेको चला गया।
सायंकाल होते ही कुछ गोरे शराब पीकर बक झक
लगे। इससे नवाबके अफ़सरने कुल गोरोंको एक छोटी

सी कोठरीमें बन्द कर दिया। जब सवेरे दरवाजा खोला
तब १४६ में से कुल २३ आदमी वेसुध निकले। इतिहासों
घटनाको "काली कोठरीकी हत्या" कहते हैं। यद्यपि कुछ विद्वा
की रायमें उक्त घटना हालवेलकी कल्पनामात्र मानी गई है,
हालके अन्वेषणसे पता लगा है किसी आरमनी वणिकके
इस घटनाका उल्लेख है, अतः इसमें कुछ सत्यता अवश्य
होती है।*

क्लाइवकी कलकत्तेपर चढ़ाई—इस हारका समा
मद्रासमें पहुंचतेही अंग्रेज़ोंने क्लाइवको सेनापति और वा
(Admiral Watson)को जहाजी बेड़ेका अध्यक्ष बनाकर भे
उन्होंने आसानीके साथ बजबज और कलकत्ता ले लिये
हुगली शहरको भी १७५७ ई० में जीत लिया। नवाब सिराज-उद्दौ
फिर कलकत्ता पहुंचा। इस बार उसने विना लड़ाईके अंग्रेज़ों
साथ संधि कर ली जिसके अनुसार कंपनीको पहिलेकी तर
विना करके व्यापार करनेकी आज्ञा मिल गई और उनको
नुकसानीके लिये रुपये दिये गये।

इतनेमें हिन्दुस्तानमें अंग्रेज़ोंके साथ फरासीसियोंकी ल
छिड़ी। इसलिये क्लाइव और वाटसनने सन १७५७में चन्द्र
ले लिया। नवाबने अप्रसन्न होकर कहला भेजा कि अंग्रेज़
संधिकी शर्तें तोड़ी हैं। फिर वह फरासीसियोंकी ओरसे अं
से लड़नेकी तैयारी करने लगा।

नवाबके विरुद्ध षड़यन्त्र—इसी समय नवाबके
स्वार्थी दरबारी लोग उसके विरुद्ध षड़यन्त्र रचने लगे।
सिराजको गद्दीसे उतार कर उसके बहनोई और सेना
मीर जाफरको नवाब बनाना चाहते थे। क्लाइव भी
साथ जा मिला। यह बात तय हुई कि यदि क्लाइव

* Forward, May 24, 1927.

गद्दीपरसे उतार कर मीर जाफरको नवाब बनादे तो वह उसे कार देगा।

पलासीकी लड़ाई (१७५७ ई०)—बातचीत पक्की हो पर क्लाइव १००० गोरे और २१०० सिपाहियोंको लेकर कत्तेसे मुर्शिदाबादकी ओर चला। नवाबने ५०,००० पैदल १८००० घुड़सवार लेकर राजधानीके दक्षिण, पलासीमें नी डाली। क्लाइवने बहुत आगा पीछा करके पलासीके के बगीचेमें छावनी डाली। सन् १७५७ ई० के १७ जूनके के लड़ाई छिड़ी।

नवाब क्लाइवकी सेनाको घेरना चाहता था और इसी देसे लड़ाईके मैदानमें मीर जाफर और राजा राय दुर्लभके न सेना रखी और कुछ सेना और फ़रासीसी गोलं ओंको सेनापति मीर मदनके अधीन करके अंग्रेज़ोंका सामना को भेजा। मीरमदन बड़ी वीरताके साथ लड़ने लगा र थोड़ीही देरमें मारा गया। उसकी जगह मोहनलाल पति हुआ। वह भी बड़ी बहादुरीके साथ लड़ने लगा. पर न मीर जाफर और राजा राय दुर्लभने उसकी बिल्कुल यता न की। नवाबकी बारूद भींग जानेके कारण उसकी बेकार पड़ी रहीं। अंग्रेज़ लोग आमके बगीचेके भीतरसे चलाते रहे। मीरमदनके मरनेके बाद नवाब निराश होकर जाफर तथा राय दुर्लभकी सम्मतियां पूछी। दोनों बेइमानोंने कि आज लड़ाई बन्द कर दी जाय, फिर कल लड़ेंगे। इसके सार नवावने लड़ाई बन्द करनेकी अनुमति दे दी। इसी समय जाफर कुछ बायीं ओर हट गया। अनुकूल अवसर पाकर व बगीचेके बाहर आया और नवाबी सेनापर अचानक पड़ा। लड़ाई छिड़तेही नवाबी सेना भागने लगी। इस क्लाइवने पलासीकी लड़ाईमें बंगालेके नवाब सिराज-उद्दौला हराया। अंग्रेज़ी सेनाके कुल २४ गोरे और १६ सिपाही

लड़ाईमें मारे गये।

परिणाम—वास्तवमें पलासीकी लड़ाई कोई लड़ाई ही न थी। फिरभी इसका प्रभाव सारे हिन्दुस्तान पर पड़ा। लड़ाईमें हार होनेके बाद नवाब मुर्शिदाबादसे भाग गया। पर उसके शत्रुओंने उसे राजमहलके निकट पकड़ लिया। इसके बाद मीर जाफरके बेटे मीरनने उसे मरवा डाला।

इधर क्लाइवने लड़ाई जीतकर मुर्शिदाबाद ले लिया और मीर जाफरको नवाब बनाया। इसके उपलक्षमें उस दुष्टने खज़ानेके कुल रुपये क्लाइव और उसके अफ़सरोंके बीच लुटा दिये। वह कलकत्तेके रहने वाले अंग्रेज़ोंको भी नहीं भूला। उसने सभीको सन्तुष्ट किया। पर अबसे मीर जाफर नाम मात्रका नवाब रहा। क्योंकि उसका सब कुछ काम क्लाइव करने लगा। इसी समय मीर जाफरने कंपनीको कलकत्तेकी आसपासकी भूमि, जिसका नाम पीछेसे २४ परगना पड़ा, दे दिया। अब अंग्रेज़ी कम्पनी बंगालकी अतुल सम्पत्तिकी अधिकारिणी भी हो गयी। तभीसे हिन्दुस्तानके और और भागोंमें विशेष कर मैसूरसे लड़नेके लिये जितने धनकी आवश्यकता हुई उतनी बंगाल देता रहा। अब फरासीसी कम्पनीको इसका सामना करना कठिन हो गया।

सारांश

१७४०—५६ ई०	अलीवर्दी खां
१७५६—५७ ,,	सिराज—उद्दौला
१७५७ ,,	पलासीकी लड़ाई

(४) मीर जाफ़र और मीर कासिम ।

मीर जाफ़र (१७५७-६० ई०)—मीर जाफ़रने नवाब ... अंग्रेज़ अफ़सरों और गोरोंको इनाम देते देते खज़ाना ... कर दिया। फिर भी वह नाम ही का नवाब रहा। वास्तवमें ... सब राज काज चलाता रहा। फिर क्लाइव सन् ...ई० में कम्पनीका गवर्नर बना। १७५८ ई०में दिल्लीके ...शाहका बेटा, शाहजादा अलीगौहरने बिहारपर चढ़ाई की। क्लाइवने उसको वहांसे भगा दिया। इसी समय फरासी-...सीसे उत्तरीय सरकार जीतनेके लिये क्लाइवने कर्नल फोर्ड ...भेजा। फोर्डने १७५८ ई०में उत्तरीय सरकार जीत लिया।

मीर जाफ़र इसी समय अंग्रेज़ोंके हाथसे छुटकारा पानेके ...डच् लोगोंकी शरणमें गया। इन लोगोंने सहायताके लिये ...द्वीपसे कई एक लड़ाईके जहाज़ और सेना भेजी। पर ...इवने इनको हरा दिया और डच् लोगोंसे १७५९ ई० में उनके ...पारका स्थान चिन्सुरा भी छीन लिया। इस जीतका फल यह ... कि इस समय बंगालमें अंग्रेज़ोंकी विरोधी दूसरी कोई ...पीय कम्पनी हरी भरी दशामें रहने नहीं पाई। इसके बाद ...इव इङ्गलैण्ड चला गया।

मीर कासिम (१७६०-६३ ई०)—क्लाइवके चले जानेके ... 'उसका गदहा' (Clive's Ass) मीर जाफ़र बड़ी कठि-...में पड़ा। कलकत्तेके कौंसिलवाले उसके पास बार बार ...येका तकाज़ा भेजने लगे। जब वह रुपया न दे सका तब ...सिल वालोंने उसके दामाद मीर कासिमको नवाब बनाया। ...नियमानुसार कासिमने कम्पनीके नौकर चाकरोंको २०,००,००० ...ये रिश्वतमें दिये और कम्पनीकी सेनाके खर्च चलानेके लिये ...मान, मिदनापुर, और चटगांव जिले भी दे दिये।

मीर कासिम बड़ा योग्य और कार्य्य कुशल नवाब था।

नवाबी मिलनेके थोड़ेही दिनोंके बाद उसने जमींदारोंको
बाकी पड़ी हुई मालगुज़ारी देनेके लिये बाध्य किया। इसी प्रकार
से उसने नवाबी सेनाका बाकी वेतन और कम्पनी का ऋण
दे दिया। बादको बंगाल और बिहारका नयी रीतिसे लगान
ठीक करके उसने मालगुज़ारी बहुत बढ़ादी। पर अंग्रेज़ी कम्पनी
वालोंसे उसकी भी नहीं बनी।

मीर कासिमका बलवा—क्लाइवके चले जानेके बाद
कम्पनी वाले मनमानी करने लगे। इनको वेतन बहुत कम मिलता
था। फिर ये लोग इस देशमें धन कमानेकी अभिलाषासे आते
थे। और व्यापार करके या घूस लेकर जिस तरहसे हो अपनी
जेब भरते थे। बादशाह फर्रुखसियरने कम्पनीकी चीजोंको बिना
महसूलके देशमें आने जानेकी आज्ञा दे दी थी। कम्पनीके नौकर
और उनके देशी गुमास्ते लोग भी इसी आज्ञाके बलसे बिना
महसूलके अपना अपना व्यापार करते और खूब लाभ उठाते थे।
लेकिन देशी व्यापारियोंको नियम पूर्वक महसूल देना पड़ता था
इसलिये वे अधिक लाभ नहीं उठा सकते थे। अब कम्पनीके
नौकरोंको घूस देकर देशी व्यापारियोंने भी इसी क्रमका अनु-
सरण किया। इन गुमास्तों और अंग्रेज़ सौदागरोंके अतिरिक्त
कुछ देशी लोग भी अंग्रेज़ी कम्पनीके सिपाही व अर्दलीका
भेष बनाकर बिचारी प्रजाका धन और माल लूटते थे। यहां
तक कि किसी अंग्रेज़के आनेकी खबर लगतेही लोग घर छोड़
कर जंगलको भाग जाते थे, दुकानें बन्द हो जाती थीं और
बाजार लूट जाती थी। सारांश यह है कि उन दिनों बंगालमें पूरा
अन्धेर फैला हुआ था।

मीर कासिम सचमुच नवाब बनना चाहता था। वह मीर
जाफरके ऐसा किसीका 'गदहा' बनकर नहीं रहना चाहता था।
अतः अंग्रेज़ोंके हाथसे छुटकारा पानेका उपाय वह भी करता
रहा। वह इस मतलबसे अपनी राजधानी दूर हटाकर मुंगेर

...ा। और वहां अंग्रेज़ी नियमके अनुसार सिपाहियोंको ... करने लगा। जब अपनी शक्ति उसने ठीक रीतिसे जानली ... अंग्रेज़ी कम्पनीका सामना करनेके लिये तत्पर हुआ।
...कारण उपस्थित थे ही। मीर कासिमने कलकत्ता कौंसिल ...स अनुचित करके विषयमें लिख भेजा और देशी तथा ...ज़ी सभी सौदागरोंसे कर लेना बिलकुल बंद कर दिया। ...ौंसिलके स्वार्थी मेम्बरोंने देखा कि ऐसा करनेसे वे देशी ...गरोंकी बराबरी नहीं कर पायेंगे। इस लिये उन लोगोंने ...के कहनेकी कुछ परवाह न की।

...वाब और कौंसिल वालोंमें लिखा पढ़ी हो ही रही थी ...पटनाके कोठीवाल एलिस साहब एकाएक शहरके ऊपर ...के समय टूट पड़े और लूट पाट किया। नवाबने चिढ़कर ...ा, कासिमबाज़ार आदिकी कोठियोंमें रहनेवाले कुल अंग्रेज़ों ...बंद कर लिया। कलकत्ता कौंसिलने फिर मीर जाफरको ...बनाकर मीर कासिमसे लड़नेका निश्चय किया।

...लड़ाई छिड़ गयी और कई स्थानोंपर नवाबकी हार हुई, ...से बिगड़कर उसने पटनाके अंग्रेज़ी कैदियोंको मरवा डाला ...३ ई०)। जब अंग्रेज़ोंने पटना और उसकी राजधानी मुंगेर ...लिये तब वह भागकर अवधके नवाब शुजा-उद्दौलाके पास ...गया। उसके कहनेपर नाम मात्रके बादशाह शाह आलमके ...अवधके नवाब शुजा-उद्दौलाने बिहारपर चढ़ाई की (१७६४ ...)। परन्तु सेनापति मनरो (Munro) ने उसको बक्सरकी ...ई में बेतरह हराया और दूसरे साल उसने नवाबसे चुनार ...इलाहाबादके किले ले लिये।

परिणाम—पलासीकी लड़ाईमें बंगालमें ब्रिटिश साम्राज्य ...नींव पड़ी थी। बक्सरकी लड़ाईमें उसकी कमी पूरी हुई। ...के बादशाह शाह आलमने अबसे अंग्रेज़ोंके हाथ अपनेको ...दिया और अवधकी रियासत तक अंग्रेज़ोंका प्रभुत्व छागया।

सारांश

१७५७-६०	ई०	मीर जाफर
१७५६	,,	डच् लोगोंकी हार
१७६०-६३	,,	मीर कासिम
१७६३	,,	पटनेकी हत्या
१७६४	,,	बक्सरकी लड़ाई

(५) परिवर्तनके समय बंगालकी अवस्था।

(१७६५-७४ ई०)

लार्ड क्लाइव (१७६५-६७ ई०)—इस लड़ाईके बा
ही लार्ड क्लाइव दूसरी बार बंगालका गवर्नर बनकर इस देश
आया। क्लाइवने हिन्दुस्तानमें अंग्रेज़ोंका रोब दाब अच्छी तर
से जमा दिया था। इसलिये इंग्लैण्डके बादशाहने उसे 'लार्ड' क
उपाधि दी थी। मीर कासिमके साथ लड़ाई छिड़ते ही त
अपने नौकरोंके अत्याचारकी बातें सुनते ही उनकी चाल चल
सुधारनेके लिये कम्पनीने उसको बहुत बड़ा अधिकार देक
इस देशको भेजा।

इलाहाबादकी सन्धि (१७६५ ई०)—कलकत्ता पहुंचते
ही क्लाइवको पता लगा कि कौन्सिलने मीरजाफरके प
बेटेसे २० लाख रुपये घूस लेकर उसे नवाब बना दिया है।
कम्पनीने अपने नौकरोंको घूस लेनेसे बिलकुल मना कर दि
था। क्लाइवके पहुंचते ही कौन्सिलके लोग उससे लड़ने झगड़
लगीं। उनको दबाकर क्लाइव तुरंत इलाहाबाद गया,
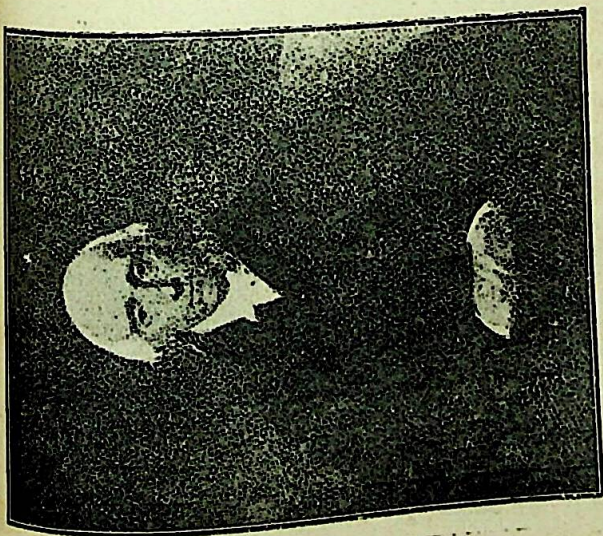
(Chap. 7.)

Warren Hastings.

(Chap. 6.)
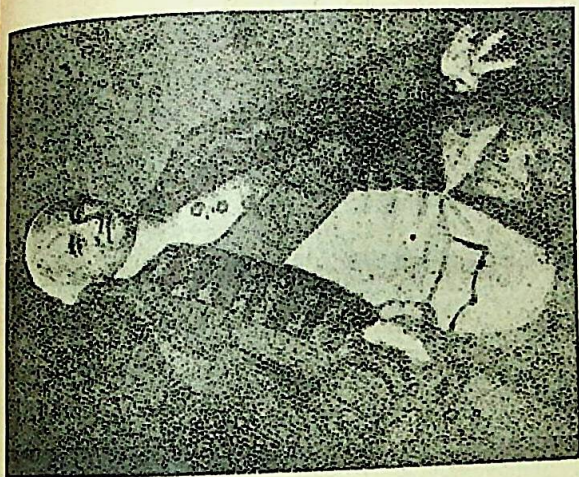
Lord Clive.

...ने शाहआलम और शुजा-उद्दौलाके साथ संन्धि कर ली (१७६५ ई०)।

इस सन्धिके अनुसार शुजा-उद्दौलाको लड़ाईके हरजानेका ...लाख रुपया कम्पनीको देना पड़ा। इलाहाबाद और कड़ा ...परगने शाह आलमको दिये गये और २६ लाख रुपये सालाना ...मालगुजारी देनेके वदले बादशाहने कम्पनीको बंगाल, बिहार ...और उड़ीसाकी दीवानी या मालगुजारी वसूल करनेका अधि-...कार दे दिया। बादशाहने उत्तरीय सरकारको कम्पनीके अधीन ...कर दिया और कर्नाटिकके नवाबको स्वतंत्र बना दिया।

परिणाम—यद्यपि दिल्लीके सम्राट नामहीके सम्राट रहे ...पर भी जनताकी दृष्टिमें उनका सम्मान बना रहा। इस संधि ...के बाद दिल्लीके बादशाह कम्पनीके पेंशन-भोगी पराधीन हो ...गये। जब बादशाहने कम्पनीको सूबे बंगाल, बिहार और उड़ीसा ...की दीवानी और उत्तरीय सरकार दे दिया तबसे यहांके लोग ...कम्पनीको एक देशीय शक्ति कह कर मानने लगे। और उनका ...प्रभाव अवधकी रियासत तक छा गया। कर्नाटिकके नवाबको ...ज्योंही निज़ामके हाथसे छुटकारा मिला त्योंही वह बिलकुल ...कम्पनीके अधीन हो गया। सारांश यह कि अबसे अंग्रेज़ोंका ...सिक्का भारतवर्षके पूर्वी हिस्सेमें अच्छी तरहसे जम गया।

द्वैत-शासन—इसी समयसे बंगाल और बिहारमें द्वैत-...शासन (Double Government) प्रचलित हुआ। इसके ...अनुसार बंगाल और बिहारका राजकाज कुछ तो कम्पनी ...करने लगी और कुछ नवाब। फौजदारी और पुलीसका प्रबन्ध ...नवाबकी ओरसे होता था, इसके बदले कम्पनी उसे सालाना ...लाख रुपये देती थी। कम्पनी सेना रखती थी और माल-...गुजारी वसूल करती थी। पर कई साल तक पहिलेकी तरह देशी ...अफसर मालगुज़ारी वसूल करते रहे। इन अफ़सरोंका नाम ...नायब नाज़िम था, जिसमें कि एक मुर्शिदाबादमें और दूसरा

पटनामें रहता था।

परिणाम—यूरोपकी अन्यान्य शक्तियों तथा अंग्रेज़ी सर-कारसे कम्पनीके राज्य मिलनेकी बात छिपानेके अभिप्रायसे क्लाइवने ऐसा प्रबन्ध किया था। नवाब सूबेदार था और कम्पनी उसका दीवानीका काम करती थी। किन्तु कम्पनीके हाथमें सेना होनेके कारण उसका अधिकार इस समयसे बंगालमें अच्छी तरहसे जम गया था। पर लोगोंपर इस द्वैत-शासनका प्रभाव अच्छा न हुआ। कम्पनीके हाथ सब कुछ अधिकार होते हुए भी उसकी जिम्मेदारी कुछ न रही। इस लिये कम्पनीके नौकर मनमानी करने लगे और नवाबके अफ़सरोंको बिलकुल न मानकर अपने अपने स्वार्थ साधनमें लगे रहे। फिर जनताने भी जब देखा कि मुख्य अधिकार कम्पनीके हाथमें है तब वे भी नवाबी सरकार को न मान कर मनमानी करने लगे। उसका परिणाम यह हुआ कि पलासीकी लड़ाई (१७५७ ई०) से वारेन हेस्टिंग्स (Warren Hastings) के समय तक बंगालमें बड़ी हलचल और गड़बड़ मची रही।

क्लाइवके सुधार—क्लाइव केवल सेनापतिही नहीं था वरन् वह अच्छा शासक भी था। इस बार आते ही उसने कम्पनीके कुल अफ़सरोंको घूस लेनेसे मना कर दिया और स्वयं भी घूस लेनेसे दूर रहा। एक सौदागरी कम्पनी खोलकर उसने उसीके लाभसे अफ़सरोंकी आमदनी बढ़ानेका प्रयत्न किया। उसने मुर्शिदाबाद और पटनेके रेसिडेण्टोंको मालगुज़ारी जमा करनेके सुपरिण्टेण्डेण्ट बना दिये। सेना विभागमें भी उसने कई एक सुधार किये। सिपाही लोग जब लड़ते रहते हैं तो उनको वेतनके ऊपर भत्ता मिलता है। पलासीके बाद मीर जाफरने अंग्रेज़ अफ़सरोंका भत्ता दूना कर दिया। इसीका नाम "डबल भत्ता" पड़ा है। क्लाइवने अफ़सरोंका "डबल भत्ता" बंद कर दिया और उनको पहिलेकी भांति केवल एक ही भत्ता

...प्रबन्ध किया। अफसर लोग बहुत बिगड़े और बलवा ...को भी तैयार हो गये लेकिन क्लाइवने उनको दबा दिया।

क्लाइवके बाद बंगालकी दशा—क्लाइव जब तक इस ...था तब तक वह कम्पनीके नौकरों पर लगाम कसे था। ...घूस लेना बंद कर उनके निजी व्यापारपर भी रुकावट ...दी थी। पर उसके चले जानेके बाद वे फिर जैसेके तैसे ...गये। निजी व्यापार पर अधिक ध्यान दिये, घूस लेने लगे ...लोगों पर अनेक प्रकारके अत्याचार करने लगे। नवाबके ...सरोंकी वे बिलकुल परवाह नहीं करते थे, प्रजाको न तो ...नी अपनी समझती थी और न नवाब! चक्कीके बीचके ...की तरहसे दोनों ओरसे उनकी पिसाई होती थी। लोग ...बारी करना छोड़ कर जंगलोंको भागने लगे, गांव ...ड़ गये, और देशकी उपजाऊ भूमिपर जंगली जानवर ...ने लगे।

सन् १७७० ई० में पानी न बरसनेके कारण बंगालमें ...ाल पड़ा। खेतोंमें पौधे जल गये, तालाब और कूओंका ...नी सूख गया। ऐसी दशा होनेपर भी कम्पनीके नौकरोंने निजी ...पार करना न छोड़ा। उन लोगोंने पहले सब अनाज खरीद ...े। बादको अधिक लाभ पर उसीको बेचने लगे। गरीब ...ग जंगलोंमें भागे और अमीर उसी अन्नको खरीदने लगे। कितने ...तड़प तड़प कर भूखों मरे। कितने लोग तलावका सड़ा ...ी और पेड़की पत्तियां खाकर बीमारीसे मरे। जब लोगोंकी ...दुर्दशा हुई तब मालगुज़ारी कौन दे? व्यापार तो पहलेहीसे ...हो गया था। इसलिये कम्पनीको हानि उठानी पड़ी। यहां ...कि खर्च चलानेके लिये उसको घरेलू सरकारसे १७७२ ई० में ...र्ज़ा लेना पड़ा। बंगालकी जिस समय ऐसी बुरी अवस्था थी ...जब खज़ानेमें रुपये न थे, मालगुज़ारी वसूल करना भी बन्द ...गया, प्रजा बिना अन्नके मर रही थी, फलतः चारों ओर अन्धेरा

छाया हुआ था उसी समय कम्पनीने वारेन हेस्टिंग्सको बंगालका गवर्नर बनाकर भेजा।

सारांश

१७६५-६७ ई०	क्लाइवकी गवर्नरी (दूसरी बार)
१७६५ "	इलाहाबादकी सन्धि
१७७० "	बंगालमें अकाल
१७७२ "	वारेन हेस्टिंग्स गवर्नर बना

(६) हैदरअली और मैसूरकी पहिली लड़ाई

पूर्वजीवन—सन् १७२२ ई० में हैदर अलीका जन्म हुआ। उसका बाप मैसूरके वोदेयर वंशीय राजाका नौकर था। छोटे पदसे हैदरने अपनी वीरता और बुद्धिके बलसे दक्षिणमें और शक्तियोंके साथ लड़ भिड़कर अपना रोब जमा लिया था। कुछ दिनोंके बाद उसने अलगसे अपनी एक छोटीसी सेना तैयार की और मैसूर दरबारमें नौकरी कर ली। धीरे धीरे उसने प्रधान सेनापतिके पदको प्राप्त कर लिया। १७६१ ई० में राजमाताके कहनेपर हैदरअली मंत्रीके हाथसे नाबालिग राजा चिक्का कृष्णराज को छुड़ाकर स्वयं उसके नामसे राज्य शासन करने लगा पश्चात् स्वयं सुलतान भी बन बैठा, और धीरे धीरे वह मराठों और उसके बाद निज़ामसे एकके बाद दूसरा परगना छीनने लगा।

इसके कारण १७६४ और १७६५ ई० में पेशवा माधवरावने उसके राज्य पर दो बार चढ़ाई की और उसे बेतरह हराकर बहुतसे स्थान छीन लिये। हार खाकर हैदरअलीने ३६ लाख

और कुछ परगने देकर मराठोंसे सन्धि करली।

मैसूरकी पहिली लड़ाई १७६७–६९ ई०—इलाहाबाद-सन्धि (१७६५ ई०) के अनुसार जब कर्नाटिक और ...थ सरकार अंग्रेज़ोंके हाथ सौंप दिये गये तब निज़ाम ...ने बदला लेनेका अवसर खोजता रहा। जब दक्षिणपर हैदर ...ने अपना दौर दौरा अच्छी तरहसे जमा लिया था तब ...की सहायता लेकर निज़ामने अंग्रेज़ोंसे लड़ना निश्चय ...और अपनी सेना हैदरकी सेनाके साथ मिला लिया।

घटनाएं—अंग्रेज़ सेनापति कर्नल स्मिथ (Colonel ...ith) ने जब निज़ाम और हैदरकी संयुक्त सेनाको चांद-...दर्रा और त्रिणामालीकी लड़ाईमें हरा दिया तब निज़ाम ...अलीको छोड़कर अंग्रेज़ोंके साथ आ मिला। तभीसे ...अली अंग्रेज़ोंके साथ अकेला लड़ने लगा। कई जगहोंमें ...जानेके बाद हैदरने सन्धि करनी चाही। पर मद्रास कौंसि-...सन्धि करना अस्वीकार किया। इसलिये हैदरअलीने अपने ...कुछ ...को साथ लेकर कर्नाटिकपर चढ़ाई करदी, और वह ...के सामने आकर खड़ा हो गया। तब मद्रास कौंसिलने तुरन्त सन्धि कर ली (१७६९ ई०)।

...इस सन्धिके अनुसार जीते हुए सब स्थान हैदरको लौटा ...गये और यह बात तय हुई कि लड़ाई छिड़नेपर एक दूसरेकी ...सहायता करेंगे। हैदरने मद्रास कौंसिलकी बात मान ली, पर ...उसे निराश होना पड़ा।

...अंग्रेज़ोंसे सहायता मिलनेकी आशा पर मराठोंके पुराने ...बदला चुकानेके अभिप्रायसे हैदरने मराठों पर आक्रमण ...किया। पेशवा माधवराव जब उसका सामना करनेके लिये ...बढ़ा तब हैदरने अंग्रेज़ोंसे सहायता मांगी परन्तु उन्होंने ...इन्कार कर दिया। अतः हैदर अकेले ही लड़ता रहा। माधव-...राव उसके सेनापति त्रिम्बकराव पेठेने उसे कई बार हरा कर

श्रीरंगपत्तम्‌में घेर भी लिया। विवश होकर हैदरने कई एक ... तथा हरजानेके रुपयेके अतिरिक्त एक वार्षिक कर देकर सन्धि करली। हैदरको अंग्रेज़ोंकी बेइमानीकी बात नहीं भूली। ... बदला लेनेके लिये वह मन ही मनमें जलता रहा।

सारांश

१७२२ ई०	हैदरअलीका जन्म
१७६७ ,,	मैसूरकी पहली लड़ाई
१७६६ ,,	सन्धि

(७) बंगालके गवर्नर वारेन हेस्टिंग्स।

(१७७२—१७७४ ई०)

पूर्व जीवन—वारेन हेस्टिंग्स (Warren Hastings) का जन्म सन् १७३२ ई० में हुआ था। अठारह वर्षकी अवस्थामें हेस्टिंग्स कम्पनीका मुहर्रिर बन कर कलकत्ता आया था। इसके बाद वह कासिमबाज़ारका कोठिवाल बनाया गया ... मुर्शिदाबादके दरबारमें बहुत दिनों तक कम्पनीका वकील भी ... चुका। १७६१ ई० में वह कलकत्ता कौन्सिलका एक मेम्बर बना ... पुनः १७७२ ई०में वह बंगालका गवर्नर बन कर इस देशमें आया।

कठिनाइयां—गवर्नर बनने पर उसे कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा इसकी सूची सुन कर तुम आश्चर्य करोगे। क्लाइवके सुधारका फल कुछ भी नहीं हुआ ... इसके चले जानेके बाद सभी बुराइयां दूनी हो गई थीं।

पुनः उसके चलाये हुए द्वैत-शासनसे अनेक प्रकारकी गड़-बड़ी बंगालमें फैल गई थी। दो दो मालिक होनेके कारण देशभरमें हलचल मच रही थी। कम्पनीके नौकर लोग मनमानी करते रहे। उनको रोकने वाला कोई न था। खजानेमें रुपये न थे। पहरोंके नामसे लोग हंसी उड़ाते थे। देशभरमें झुंड बांध कर डाकू घूमते थे। ये सब तो केवल मोटी मोटी बुराइयां थीं। इसके अतिरिक्त और भी बहुतसी बुराइयां थीं। इन सबको दूर करनेके लिये हेस्टिंग्सने नियमित रूपसे शासनका मार्ग ढूंढ निकाला। सच है—"क्लाइवने हिन्दुस्तानमें ब्रिटिश साम्राज्यकी नींव डाली और हेस्टिंग्सने उसपर शासन करनेकी राह दिखलाई"।

सुधार—हेस्टिंग्सने आरम्भ हीमें नवाबके हाथसे कुछ अधिकार ले लिये। तभीसे कम्पनीने द्वैत शासनका अन्तकर स्वयं प्रबन्ध करनेकी ठानी। मालगुज़ारी ठीक रीतिसे वसूल करनेके लिये बंगाल और बिहारके हर जिलेमें एक एक अंग्रेज़ जिलादार या कलेक्टर नियुक्त किया गया। हर एक जिलेमें एक एक दीवानी और फौज़दारी कचहरी खोली गई। अपील सुननेके लिए कलकत्तेमें दो बड़ी कचहरियां खोली गयीं। सदर दीवानी अदालतमें दीवानी मामले सुने जाते थे और सदर निज़ामत अदालतमें फौज़दारी मामले। मालगुज़ारी वसूल करनेका बड़ा दफ्तर भी कलकत्तेमें चला आया।

हेस्टिंग्सको राजकोषकी कमीकी पूर्ति करनी थी। इस लिये उसने सब तरहका अमित व्यय बिलकुल घटा दिया। मुर्शिदाबादके नवाबकी पेंशन घटा दी गयी। बादशाह शाह आलम मराठोंके आश्रयमें आकर दिल्ली चला गया। इसीलिये हेस्टिंग्सने उसको मालगुज़ारी भेजना बन्द कर सालाना २६ लाखकी बचत की तथा उनकी इलाहाबाद और कड़ेकी ज़मींदारी हेस्टिंग्सने ५० लाखपर अवधके नवाबको बेच दी, कम्पनीके नौकरोंका निजी व्यापार रोककर उसने कम्पनीका व्यापार बढ़ाया। बंगाल

और बिहारके ज़मींदारोंकी सालाना मालगुजारी बढ़ा दी गई और उनके साथ पंचसाला बन्दोबस्त किया गया। कठिन दण्ड देकर, जमींदारोंको जिम्मेदार बना कर और अच्छी रीतिसे पुलिसका प्रबन्ध कर डकैती बन्द करवा दी गयी। पण्डितों और मौलवियोंकी सहायतासे उसने कानूनकी दो किताबें भी बनवाईं।

अवधके प्रति हेस्टिंग्सकी नीति—अवधकी रियासत बंगालसे बिलकुल मिली हुई थी, इसके दक्षिण और पश्चिममें मराठी रियासतें थीं। इस लिये बंगालको मराठे घुड़सवारोंकी झपटसे बचानेके लिये हेस्टिंग्स अवधको मध्यस्थ राज्य (buffer state) बनाना चाहता था। अतः उसको सुदृढ़ करनेकी आवश्यकता हुई। इस लिये उसने अवधके बाहरी व भीतरी शत्रुओंको दबानेके लिये बहुत कुछ उपाय किये। क्लाइवने जब शाहआलमको इलाहाबाद व कड़ा अवधसे निकाल कर दे दिया तब उसने एक बड़ी भूल की थी। ये दोनों जिले गंगा और यमुनाके दोआबमें बसे हुए हैं और बड़े उपजाऊ भी हैं। उन दिनों बंगाल पर पश्चिमकी ओरसे चढ़ाई करने, या व्यापार करनेकी यही मुख्य सड़क थी। फिर इन दोनों उपजाऊ जिलोंके अवधसे निकल जानेके कारण नवाब भी कम्पनीसे अप्रसन्न था। इसलिये ज्यों ही शाहआलमने अपनेको मराठोंके हाथ सौंपा त्योंही वारेन हेस्टिंग्सने क्लाइवकी भूल सुधार ली और नवाबको उसे लौटा दिया। अवधको सुदृढ़ बनानेहीके लिये वह रोहिला लोगोंसे लड़ा, और नवाबका दिवाला न निकले इसीलिये उसने बेगमोंसे बलात् रुपया वसूल किया।

रोहिलोंसे लड़ाई (१७७४ ई०)—अवधके पश्चिमोत्तर कोनेमें रोहिला लोग रहते थे। उनके देशका नाम रुहेलखण्ड था। वे लोग बड़े उपद्रवी थे। इसलिये अवधके नवाब सदा उनसे डरा करते थे। फिर उस समय मराठे रुहेलखण्ड तक

रहे और दिल्लीमें भी उन लोगोंने अपना रोब अच्छी जमा लिया था। ऐसा न हो कि रुहेले लोग मराठोंसे कर उसे हानि पहुंचावें, अवधके नवाब शुजा-उद्दौलाने खण्ड जीतकर अपनी रियासतमें मिला लेना चाहा।

एक बार मराठोंने रुहेलखण्ड पर चढ़ाई कर बड़ी हलचल दी थी। भयभीत होकर रोहिला सरदार हाफिज़ रहमतने उद्दौलाके साथ यह शर्त किया कि यदि भविष्यमें रुहेलखण्डपर चढ़ाई करें तो नवाब उनको भगा । उसके बदले हाफिज़ उसको ४० लाख रुपये देगा। साल मराठे रुहेलखण्ड तक पहुंचे, पर पेशवा माधव-की मृत्यु होनेके कारण वे चढ़ाई न कर घर लौटे। अवध नवाब को कुछ करना न पड़ा फिर भी उसने रुहेलोंसे ४० रुपये मांगे। हाफिज़ ने देना अस्वीकार किया। नवा- उनका देश जीतना था, इसलिये उसने लड़नेके लिये बांधी।

नवाबने कम्पनीको वही ४० लाख रुपये देनेका वादा कर उससे सेना मांगी। हेस्टिंग्सने इन तीन बातोंका विचार कर सहायता देना निश्चय किया। कम्पनीकी आमदनी बढ़ ती। मित्र राज्यकी सीमा गङ्गा तक हो जानेसे उसकी बढ़ जायगी और एक स्वाभाविक सीमा बन जानेसे वह ओंके आक्रमणसे अपनी रक्षा कर सकेगा। पर रुहेलखण्ड स्वतंत्र रहता और मराठे उसे जीत लेते तो अवधकी सतको भी वे आसानीके साथ जीत लेते पर ऐसी घटना लोंकी रियासतके लिये शुभ न होती। अन्तिम बात यह है कि की सीमा मराठोंकी सीमासे मिल जानेके कारण नवाब राज्यकी रक्षाके लिये अंग्रेज़ों पर और भी अधिक र रहेगा।

सन् १७७४ ई० में एक अंग्रेज़ी पलटन साथ ले नवाबने

रुहेलखण्ड पर चढ़ाई कर दी और उस देशको जीता। लड़ाईमें हाफिज रहमत खां मारा गया। सब रोहिलोंको गङ्गा पार चला जाना पड़ा। एक रोहिले सरदारने बहुतसा धन नवाबको भेंट किया। प्रसन्न होकर नवाबने उसे रुहेलखण्डहीमें बसनेकी आज्ञा दे दी। रामपुरके नवाब उसीकी सन्तति हैं।

प्रबंध-कारिणी कानून (१७७३ ई०)—यह पहलेही कहा जा चुका है कि कम्पनीकी आमदनी घट जानेके मुख्य कारण बंगाल का अकाल, कम्पनीके नौकरोंके निजी व्यापार, तथा कुप्रबन्ध आदि थे। फिर कम्पनीको प्रतिवर्ष विलायती सरकारको एक भारी राजकर देना पड़ता था। सन् १७७२ ई० के अन्तमें कम्पनीको इतना घाटा सहना पड़ा कि खर्च चलानेके लिये उसे घरू सरकारसे कर्जा लेना पड़ा। अपना अधिकार कम्पनीपर अच्छी तरह जमानेके लिये और जीते हुए देशोंपर अच्छी तरहसे शासन करनेके लिये पार्लमेन्टने सन् १७७३ ई० में प्रबन्ध-कारिणी कानून (The Regulating Act) जारी किया।

इस कानूनके अनुसार बंगालके गवर्नर इस समयसे बम्बई मद्रास आदि भारतके कुल अंग्रेज़ी इलाकोंके गवर्नर-जेनरल बनाये गये। इनकी नियुक्ति पार्लमेन्टसे हुआ करेगी। पार्लमेन्टने वारेन हेस्टिंग्सको पहला गवर्नर जेनरल चुना। गवर्नर जेनरलकी सहायता करनेके लिये एक सभा (Council) स्थापित की गयी जिसके चार मेम्बर होंगे। इनको भी पार्लमेन्टही नियुक्त करेगी। पहिलीबार क्लेवरिं, मान्सन् और फिलिप फ्रान्सिस विलायतसे भेजे गये थे और चौथा मेम्बर बारवेल पहिलेहीसे कम्पनीका नौकर था। गवर्नर जेनरलको कौंसिलकी रायके अनुसार काम करना पड़ता था। कलकत्तेमें एक बड़ी अदालत (The Supreme Court) स्थापित की गई। इसके जज सबके सब विलायतसे नियुक्त किये जाते थे। जज और अदालत गवर्नर जेनरलके अधीन नहीं थीं। यह एक स्वतंत्र संस्था मानी गई। इसके प्रधान और

हेस्टिंगसके साथ एकही स्कूलमें पढ़े थे ।

कानूनके दोष—कानूनके बनाने वाले इस देशकी रीति नीतिसे बिलकुल अनभिज्ञ थे। इसलिये यह कानून विलायती ढांचे पर बना था। फिर गवर्नर जेनरल, उसकी कौंसिल और बड़ी अदालत आदिके अधिकार इसमें ठीक ठीक नहीं बताये गये थे। इसलिये गवर्नर जेनरलका अधिकार बिलकुल घट गया और अपनी नीतिको जारी रखनेके लिये उसको बहुत दिनों तक अपनी कौंसिल और बड़ी अदालतके साथ लड़ना पड़ा।

सारांश

१७७२ ई०	वारेन हेस्टिंग्स गवर्नर बना
१७७३ „	रेग्युलेटिंग् ऐक्ट
१७७४ „	रोहिलोंसे लड़ाई

(८) वारेन हेस्टिंग्स—पहला गवर्नर-जेनरल
(१७७४—८५ ई०)

कौन्सिलसे झगड़े—विलायती सरकारके चुने हुए तीन मेम्बर—फ्रान्सिस, क्लेवरिं, मानसन और बड़ी अदालतके कुल जज सन् १७७५ ई० के बीचोंबीच इस देशमें आये। उनके पहुंचते ही नये कानूनके अनुसार काम आरम्भ हो गया। कौन्सिलके तीनों नये मेम्बर एक रायके थे। ये लोग इस देशकी रीति नीतिसे बिलकुल अनभिज्ञ थे। पुनः इनका अनुमान ऐसा था कि वृटिश सरकारने कम्पनीके नौकरोंकी चालढाल सुधारनेके लियेही उन्हें यहां भेजा था। इसलिये पहुंचते ही वे हेस्टिंग्सके कामोंको

अच्छी तरहसे जांचने लगे और गवर्नर जेनरलको सहायता देने के बदले उसकी कार्रवाइयोंमें उलट फेर करने लगे। हेस्टिंग्स को सब कुछ चुपचाप सह लेना पड़ा, क्योंकि कौन्सिलकी मीटिंगमें हर बातमें तीन आदमीकी राय एक समान होती थी और वोटमें वह और उसके पक्षके बारवेल सदा हार जाते थे।

इसी समय अवधके नवाब शुजा-उद्दौलाकी मृत्यु हुई। कौन्सिलने उसके बेटे नवाब आसफ-उद्दौलाके साथ नया प्रबन्ध किया। इसके अनुसार बनारसके राजा कम्पनीके अधीन हो गये तथा शुजा-उद्दौलाको बेगमोंको नवाबकी सब धन सम्पत्ति दे दी गयी।

इस समय कौन्सिलका अधिकार बहुत बढ़ा हुआ देखकर हेस्टिंग्सके शत्रु कौन्सिलकी सहायता करने लगे और गवर्नर जेनरलके विरुद्ध चोरी का, घूस लेने का और अत्याचार करनेका दावा उपस्थित करने लगे। कौन्सिलने गवर्नर जेनरलकी जांच करनी चाही, पर हेस्टिंग्सने सफाई देना अस्वीकार किया।

महाराज नन्दकुमार—महाराज नन्दकुमार हेस्टिंग्सका सबसे बड़ा शत्रु था। वह मीरजाफरका दीवान था। उसने हेस्टिंग्सके विरुद्ध घूस लेनेकी शिकायत की। इतनेमें एक जालसाजीके मुकद्दमेमें फंस गया, जिसमें अदालतकी ओरसे उन दिनोंके विलायती कानूनके अनुसार सन् १७७५ ई० में इसको प्राण दण्ड दिया गया। दूसरे साल कौन्सिलके दो मेम्बर क्लेवरिंग और मानूसन मर गये। इसका फल यह हुआ कि तबसे हेस्टिंग्सको रोकने वाला कोई न रहा।

अदालतसे झगड़ा—बड़ी अदालतके जज और भी बढ़कर निकले। इन लोगोंने कौन्सिल और कम्पनीके नौकरोंपर अपना रोब जमाना चाहा। इससे देश भरमें बड़ी हलचल मच गयी। हेस्टिंग्स ने जजोंको शांत करनेके लिये उनके मुखिया इम्पेको कम्पनीकी अदालतोंका भी प्रधान बना दिया। पर ब्रिटिश सरकार

हेस्टिंग्सके इस कामको नहीं पसन्द किया और झट इसके ...सा भेजा।

मराठे—सन् १७६१ ई० में बालाजी बाजी रावकी मृत्युके ...द उसका बेटा माधवराव गद्दीपर बैठा। उस समय उसकी ...वस्था १७ वर्ष की थी। इसीलिये उसका चाचा रघुनाथ राव ...पहले पहल सब राज काज करता रहा। माधवराव बड़ा कार्य ...कुशल और बुद्धिमान था। बालिग हो जानेपर भी जब रघुनाथ ...विदा लेना नहीं चाहा, तब पेशवाने उसको कैद कर लिया ...और स्वयं राजकाज करने लगा। इसने हैदरअली और निज़ाम ...को कईवार हराकर दक्षिणमें अपना दबदबा फैलाया और उत्त- ...र भारतमें उसका सेनापति बीसाजी कृष्णने तुकोजी होलकर ...तथा माधवराव सिन्धियाके साथ मिलकर राजपूतानेसे होता ...हुआ दोआब पहुंचा। उन्होंने शाह आलमको अंग्रेज़ोंके हाथसे ...छुड़ा लिया और सिन्धियाके अधीन कर दिया। तभीसे पूनामें ...सिन्धियाका बड़ा प्रभाव जम गया। थोड़ेही दिनोंमें पेशवा माधव ...रावका भी देहान्त होगया (१७७२ ई०)।

माधवरावकी मृत्युके बाद उसके भाई नारायण रावको ...गद्दी मिली। पर उसके चाचा रघुनाथ रावकी भी दृष्टि गद्दी पर ...थी। अतः तीनही महीनेके बाद रघुनाथकी स्त्री आनन्दी बाईने ...नारायणको मरवा डाला तथा अपने पतिको गद्दी दिलवा दी। ...पेशवा बन कर रघुनाथने निज़ाम तथा हैदर अलीसे दयाका ...बर्ताव किया। तथा कुछ जीते हुये देश उनको वापस किये।

मराठों से पहली लड़ाई—इतनेमें नारायण रावकी मृत्यु ...के बाद उसके एक लड़का पैदा हुआ। तब नाना फड़नवीस आदि ...सरदार भाइयोंने बहुतसे सरदारोंको अपनी ओर कर लिया तथा ...उसी बच्चेको गद्दीपर बैठाया, उसका संरक्षक बन कर नाना ...फड़नवीस राजकाज चलाने लगा। रघुनाथने इस बच्चेको पेशवा ...माननेसे अस्वीकार किया और अंग्रेज़ोंकी सहायता लेकर गद्दी

जीतना ही निश्चय किया। वह पूनासे भाग आया और बम्बई सरकारके साथ कारोबार करने लगा। सन् १७७५ ई० में सूरतमें यह बात तय हुई कि सालसेट द्वीप और बेसिन बन्दरके देनेके बदलेमें बम्बई सरकार रघुनाथको पूनाकी गद्दी दिला देगी। बम्बई सरकारने रघुनाथको सहायताके लिये एक सेना भेजी। इस सेनाने मराठे सरदारोंको हरा दिया और सालसेट और बेसिन छीन लिया।

तुमको मालूम है कि पहिले पहल कम्पनीका एक स्थानसे दूसरे स्थानका कोई सम्बन्ध न था। बम्बई सरकार भी मद्रास और कलकत्तेकी सरकारोंके समान स्वतन्त्र थी। पर रेग्युलेटिंग एक्टके अनुसार सन् १७७४ ई० से ये सब स्थान कलकत्तेके गवर्नर जेनरलके अधीन हो गये थे। यह सब बातें जान सुनकर भी बम्बई सरकार मद्रास और कलकत्तेको तरह राज्य बढ़ानेकी इच्छासे मराठोंसे लड़ गई। जब गवर्नर जेनरलने उस लड़ाईकी बात सुनी तब वह और उसकी कौन्सिलने बम्बई सरकारकी की हुई सूरतकी सन्धिको रद्द कर दिया और नाना फड़नवीसके साथ एक दूसरी सन्धि की। पर कम्पनीने दूसरी सन्धि को अस्वीकृत कर ली और सूरतको संधि मान ली। इसीलिये १७७८ ई० में फिर लड़ाई छिड़ी।

घटनाएं—इधर चालबाज नानाफड़नवीस फरासीसियोंके साथ कार्रवाई कर रहा था तथा निजाम और हैदरअलीको अंग्रेजोंके विरुद्ध उभाड़ने लगा। उन दिनों कौंसिलमें हेस्टिंग्सको रोकने वाला कोई न था। इसलिये बम्बई सरकारको सहायता देनेके लिये उसने बङ्गालसे कर्नल गडार्डके साथ एक सेना भेजी। इसके पहुंचनेके पहले ही बम्बईके सेनापतिने लड़ाई आरम्भ कर दिया था, और नानाने १७७९ ई० में उसको बुरी तरहसे हरा दिया। गडार्ड मराठोंको हरा कर गुजरातमें आ पहुंचा और वहां पर उसने बड़ौदाके गायकवाड़से मित्रता कर ली।

सिन्धिया और होलकरने गडार्डको हरा दिया । हेस्टिंग्सने
था कि जब तक सिन्धियाको इस लड़ाईसे हटा न लिया
या तब तक जीतकी आशा नहीं है। इसलिये उसने कप्तान
हाम (Popham) को मालवा भेजा । कप्तान झट वहां
या और १७८० ई० में ग्वालियरका किला ले लिया। सिन्धिया
श होकर पेशवाको छोड़ अपनी रियासत बचाने चला गया।
र नाना फड़नवीस की बातोंमें आकर हैदर अंग्रेज़ोंसे दूसरी
र लड़ने लगगया। इसीलिये अंग्रेज़ोंने मराठोंसे १७८२ ई० में
लबाईकी सन्धि कर ली। इसके अनुसार अंग्रेज़ोंको सालसेट
मिला और रघुनाथ रावकी पेंशन करदी गई। एक दूसरेके
ते हुए स्थानोंको लौटा दिया गया।

माधवराव सिंधिया: उन दिनों मराठा सरदारोंमें माधवराव
न्धियासे बढ़ कर कोई दूसरा न था। पेशवाके संरक्षक नाना-
ड़नवीस इन्हींसे सहायता ले अंग्रेज़ोंके साथ लड़ रहे थे।
र हेस्टिंग्सने इन्हींकी सहायता ले कर पेशवाके साथ सुलह
र ली। माधवराव राणोजी पटेलका बेटा था। राणोजी पहले
ले पेशवाका जूता उठाने वाला नौकर था। पर धीरे धीरे
वा बाजीरावका सेनापति हो गया। अन्तमें उसने मालवाके
री हिस्सेमें अपनी रियासतकी नींव डाली। माधवराव बाल्या-
वस्थासेही बड़ा शूरवीर था। पानीपत की तीसरी लड़ाईमें जब
राठे हार गये तब उसने वहांसे भागकर अपनी जान बचाई, पर
तीसे वह एक पैरका लंगड़ा हो गया। सन् १७७१ ई० में
धवरावने बादशाह शाहआलमको अंग्रेज़ोंके हाथसे अपने अधीन
र लिया और दिल्ली तक अपना रोब जमाया। अंग्रेज़ोंकी
क्ति देख कर उनसे उसने मित्रता कर ली। माधवरावने
चबचाई करके अंग्रेज़ोंके साथ पेशवाको सन्धि करवा दी।
सका फल यह हुआ कि इस समयसे उसका रोब और भी बढ़
या और सब कोई उसको मानने लगे। इस घटनाके उपरान्त

अवसर पाकर वह स्वतंत्र हो गया। माधव राव डी बोयन आदि यूरोपीय अफ़सरोंको नौकर रखकर अपनी सेनाको शिक्षा देने लगा। इसलिये उसकी सेना उस समय बहुत अच्छी थी। इसकी सहायतासे सिन्धियाने सारे राजपुताना, बुन्देलखण्ड, दोआब और दिल्लीपर अपनी प्रभुता जमाई। इसकी बातोंमें आकर बादशाह शाहआलमने पेशवाको अपना वकील-इ-मुतलिक बनाया। तथा सिन्धिया उसके सहायक बनाये गये। इस उपायके द्वारा सिन्धियाने पूना दरबारमें भी अपना प्रभाव जमा लिया। इसके कारण नाना फड़नवीससे उसकी अनबन हो गई, परन्तु सिन्धियाने नानाके पक्षके तुकोजी होलकरको बिलकुल हरा दिया। इतनेमें उसकी मृत्यु हुई (१७९५ ई०)।

मैसूरसे दूसरी लड़ाई—सन् १७७० ई० में अमेरिकाकी नयी आबादीके अंग्रेज़ोंने बलवा किया और अपनी मातृ भूमिको हराकर स्वतंत्र बने। इस समय फरासीसियोंने अमेरिकाके अंग्रेज़ोंकी सहायता की थी। इसलिये अंग्रेज़ोंको यूरोपमें भी फरासीसियोंके साथ १७७८ ई० में लड़ना पड़ा। यूरोपमें लड़ाई छिड़तेही हिन्दुस्तानमें अंग्रेज़ोंने फरासीसियोंसे चन्द्रनगर, पाण्डिचेरी, माही आदि स्थानोंको छीन लिये। माही मालावारके किनारे एक बड़ा बन्दर है। हैदरअलीको इसी बन्दरसे फ्रांसके बने हुये लड़ाईके समान आदि मिलते थे। अंग्रेजोंके माही लेनेसे वह उनसे बहुत बिगड़ा। वहतो पहिलेहीसे मद्रासके अंग्रेजोंसे अप्रसन्न था। अब नाना फड़नवीसके उभाड़नेसे उसने फिर लड़ाई के लिये कमर बांधी (१७८० ई०)।

घटनायें—सन् १७८० ई० के जून महीनेमें हैदर ८०,००० सिपाहियोंकी एक सेना लेकर कर्नाटिक पर टूट पड़ा और उस देशको बिलकुल स्मशान सा बना दिया। उसने पोर्टोनोवो और काञ्जीवरम् नगरोंको लूटा और अच्छी अच्छी इमारतोंको तोड़ दी। कर्नल बेलीको काञ्जीवरम्के निकट हराकर

...को सेना समेत कैद कर लिया। और "बक्सरके वीर" मनरो ...को भी पीछे हटना पड़ा।

हेस्टिंगसको यह समाचार मिलतेही उसने मराठोंसे तुरन्त ...न्धि करली और कर्नाटिकको बचानेका प्रबन्ध करने लगा। ...पने सर आयर कूटको बंगालसे समुद्रके किनारे किनारे रवाना ...र दिया। कूटकी अवस्था बहुत होनेपर भी उसकी शक्ति घटी ...थी। उसने पोर्टोनोभो और सालिनगढ़की लड़ाईमें हैदरको ...८१ ई० में हरा दिया। इसी समय फरासीसी कप्तान सूफ्रें (Suffren) कई एक जंगी जहाज़ और सेनापति बूसी एक ...रासीसी सेनाके साथ हैदरसे मिल गये। पर इनकी दाल न ...ली। सन् १७८३ ई० में हैदरकी मृत्यु हुई। फिर भी उसका वेटा ...पू लड़ता रहा। फरासीसियोंके साथ अंग्रेज़ोंकी १७८३ ई०में ...न्धि हो जाने पर भी वह अकेले लड़ता रहा और दो एक ...ड़ाइयोंमें अंग्रेज़ोंको हरा भी दिया। अन्तमें एक अंग्रेज़ी सेना ...सूर पर चढ़ाई करके मंगलोर तक पहुंच गई। इस लिए टीपूको ...न्धि करनी पड़ी। १७८४ ई० की इस सन्धिके अनुसार एक ...सरेके जीते हुए स्थानोंको लौटा देना पड़ा।

काशी नरेश और अवधकी बेगमें—मराठों और हैदर-...लीके साथ लड़ाई चलानेके लिये रुपयेकी आवश्यकता थी। ...र विलायतसे कम्पनीके मालिक लोग भी उसे रुपयेके लिये ...हुत तगादा करते थे। अपने मालिकोंको प्रसन्न करनेके लिये ...उसने मूर्शिदाबादके नवाबकी पेन्शन घटा कर आधा कर ...दिया; बादशाह शाह-आलमको मालगुज़ारी भेजना बन्द कर ...दिया; इलाहाबाद और कड़ा परगने अवधके नवाबके हाथ बेच ...दिये; रोहिला लड़ाईमें शरीक होगया। इसके अतिरिक्त उसने ...रुपयेके लिये और भी दो काम किये जिनके लिये उसे बातें ...सुननी पड़ीं।

नवाब आसफ-उद्दौलाने बनारस परगना कम्पनीको दे

दिया। तभीसे काशी नरेश चेतसिंह कम्पनीको वार्षिक २२ लाख रुपये मालगुज़ारी देते थे। मराठोंके साथ और हैदरके साथ जब लड़ाई छिड़ी तब हेस्टिंग्सने राजाको मालगुज़ारीके अलावा और रुपये देनेके लिये बाध्य किया। दो तीन सालके बाद राजाने अधिक रुपये देना अस्वीकार किया। तब हेस्टिंग्सने राजा पर ५० लाख रुपये जुर्माना किये। राजाने २० लाख रुपये देना चाहा। पर हेस्टिंग्सने इसे स्वीकार न किया। वह स्वयं बनारस आया और राजाको कैद कर लिया। कैद होनेके बाद राजाने फ़ैज़ाबादके रहने वाली अवधकी बेगमोंसे षड़यन्त्र रचने लगा। इधर बनारस शहरमें यह समाचार फैलते ही जनता बहुत बिगड़ी और गोरोंको मार कर राजाको मुक्त कर दिया। हेस्टिंग्स बनारससे चुनार भागा; इतनेमें मेजर पपहाम बनारस आ पहुंचा। उसने राजाके किलेको ले लिया और उसकी सेनाको हरा दिया। राजा बुन्देलखण्डको भाग गये। इसलिये उनकी ज़मींदारी उनके भांजेको १७८१ ई० में दे दी गई।

नवाब आसफ़—उद्दौलाका रोब बनाये रखनेके लिये उसे एक अंग्रेज़ी सेना दी गयी थी। उसका खर्चा नवाबको देना पड़ता था। वह रुपये दे न सका और कम्पनीका भारी कर्ज़दार बन गया। लड़ाईके समय रुपयेकी अवश्यकता होनेपर हेस्टिंग्स रुपये मांगे, पर नवाबके पास रुपये न थे। अन्तमें नवाब उससे कहा कि मेरे बापका बहुतसा धन मेरी मां और मेरी नानीने, जिनका नाम इतिहासमें अवधकी बेगमें पड़ा है; दबालिया है। अगर हेस्टिंग्सकी सम्मति मिल जाय तो वह बेगमोंको लूट कर कम्पनीका कर्जा दे दे। बेगमोंने बनारसके राजा चेत सिंहको सहायता दी थी। इस लिये हेस्टिंग्स उन बेगमोंसे अप्रसन्न था। सन् १७८२ ई० में एक अंग्रेज़ी सेनाकी मदद ले अवधके नवाब बहादुरने अपनी मांकी धन सम्पत्ति

...लों और बेगमोंकी जागीर भी जप्त कर ली।

साहित्य तथा शिक्षा—हेस्टिंग्सने शासनके कामके सुभीते ...लिये और यूरोपीय पण्डितों और कम्पनीके नौकरोंको इस ...की सभ्यता, शिक्षा और साहित्यसे परिचित होनेके लिये ...प्रयत्न किये। इसके उत्साहसे हालहेड् साहबने एक ...भाषा-व्याकरण बनाया। हिन्दू और मुसलमानी कानूनकी ...पुस्तकें रची गयीं। और देशी भाषा, साहित्य तथा रीति नीतिकी ...चर्चा करनेके लिये बंगालेकी एशियाटिक सोसाइटी (The Royal Asiatic Society of Bengal) नामकी सभा स्थापित हुई। उर्दू भाषा सीखनेके लिये कलकत्ता मदरसा ...नामका एक स्कूल खोला गया।

कम्पनीके डाइरेक्टरोंने हेस्टिंग्सके कई एक कामोंका विरोध किया। इस लिये सन् १७८५ ई० में उसे नौकरी छोड़नी पड़ी।

हेस्टिंग्सका काम—जिन जिन लोगोंकी सेवाके द्वारा ...इस राज्य स्थापित हुआ है हेस्टिंग्स उनमेंसे एक है। ...उसकी चालचलन उन दिनोंके लोगोंसे कहीं बढ़कर थी। ...स्वार्थी तथा चोर न था और न सच बात बोलनेसे डरता ...था। उसने घूस लेकर अपना हाथ मैला नहीं किया। वह ...भक्त भी था। अपने स्वदेशकी सेवामें उसने अपना तन-मन-...धन सब सौंप दिया था।

यदि सच पूछो तो उसने रोहिलोंकी लड़ाइमें भाग लेना, ...काशीनरेश और बेगमोंपर अत्याचार करना आदि कई एक काम ...अनुचित किये। परन्तु इस बातका ध्यान रखना चाहिये कि ...उसने जितने अत्याचार किये वे सब कम्पनीकी भलाइके लिये ...अपने स्वार्थ साधनके लिये नहीं।

हेस्टिंग्स अच्छा शासक था। उसने बंगालकी गड़बड़ीका ...अन्त किया तथा उसके सुधारका परिणाम अच्छा ही हुआ।

सन् १७७६ से १७८२ ई० तक हिन्दुस्तानमें अंग्रेज़ोंपर बड़ी बड़ी आपत्तियां आ पड़ी थीं। पश्चिममें सिन्धिया, पेशवा आदि और दक्षिणमें हैदरअली, निज़ाम, भोसले, फरासीसी आदि, सभी कोई कम्पनीके शत्रु बन गये थे। ऐसी आपत्ति आ पड़नेपर भी हेस्टिंग्सने बहादुरीके साथ हर एकका सामना किया और कम्पनी की रियासतको टूटने न दिया।

ऐसी अच्छी रीतिसे काम करनेके बदले ब्रिटिश पार्लमेन्टने उसके विरुद्ध हिन्दुस्तानमें अत्याचार करनेका मुकद्दमा चलाया। सात वर्ष लड़नेके बाद कहीं उसको छुटकारा मिला।

पिटका इंडिया बिल (१७८४ ई०)—सन् १७८४ ई० इंगलडके वज़ीर पिट साहबने पार्लमेन्टसे एक नया कानून जारी किया (Pitt's India Bill)। इसके अनुसार उस समयसे हिन्दुस्तानकी अंग्रेज़ी सरकारके कामकाजकी देखभाल करनेके लिये पार्लमेन्टसे ६ मेम्बरोंकी एक कमेटी स्थापितकी गयी। जिसका नाम बोर्ड आफ कन्ट्रोल (Board of control) पड़ा। यह बात तय हुई कि इस कमेटीकी रायके अनुसार कम्पनीको राजकाज चलाना पड़ेगा। इसका व्यापारसे कोई सम्बन्ध न था। इसके सभापतिके हाथमें कुल अधिकार दिये गये। इसी कमेटीकी ओर से गवर्नर जेनरल नियुक्त किये जाते थे। भविष्यमें गवर्नर जेनरलको बिना आज्ञाके किसी लड़ाईमें भाग लेनेकी मनाई की दी गई। १८५७ ई० तक इस देशका सब राजकाज इसी सभाकी ओरसे होता रहा।

सारांश

१७७४ ई०	हेस्टिंग्स गवर्नर जेनरल
१७७५ ,,	सूरतकी सुलह। मराठोंकी पहिली लड़ाई
१७७८ ,,	फरासीसियोंसे लड़ाई
१७८० ,,	ग्वालियर गढ़पर विजय

१७८० ई०	हैदर अलीने कर्नाटिक पर आक्रमण किया
१७८१ „	पोर्टोनोभोकी लड़ाई
१७८२ „	सालवाई की सन्धि
१७८४ „	टीपूसे सन्धि। पिटका इंडिया बिल
१७८५ „	हेस्टिंग्सकी बिदाई

(६) लार्ड कार्नवालिस और सर जान शोर।

लार्ड कार्नवालिस (१७८६–९३ ई०)—लार्ड कार्नवालिस (Cornwallis) विलायतके एक बड़ा ज़मींदार था। जिस समय अमेरिकाके रहने वाले अंग्रेज़ोंने अपनी मातृभूमिके विरुद्ध झगड़ा किया था तब उनसे लड़नेके लिये कार्नवालिस भेजा गया था। लेकिन उस लड़ाईमें उसकी हार हुई। तिसपर भी पार्लमेन्टने कार्नवालिसको गवर्नर जेनरल और सेनापतिके पद देकर १७८६ ई० में इस देशमें भेजा। उनको यहां तक अधिकार दिया गया था कि आवश्यकता होने पर वह कौंसिलकी रायके विरुद्ध भी काम कर सकेंगे।

सुधार—कार्नवालिसने कलेक्टर, जज, रेसिडेन्ट आदि कुल उच्चपदवालें अफ़सरोंके तनख्वाह बढ़ा दिये और उनको घूस लेने या निजी व्यापार करनेसे बिलकुल मना कर दिया। कार्नवालिसनेही पहिले पहल सारे देशको ज़िलोंमें बांटा था। हेस्टिंग्सके समयमें कलेक्टरही जजका काम करते थे। कार्नवालिसने कलेक्टरके अतिरिक्त हरएक ज़िलेके लिये एक एक जज भी नियुक्त कर दिया। साथही साथ अपील सुननेके लिये ऊंची अदालतें भी खोली गयीं। जज लोग ज़िले भरमें दौरा करके मुकद्दमे सुनते थे। उन दिनों ज़िलेकी पुलीसका भी प्रबंध जज

लोग करते थे। इनकी सहायताके लिये कुछ देशी दारोगः होते थे। कार्नवालिस हिन्दुस्तानियोंको ऊंचे पदकी नौकरी कभी
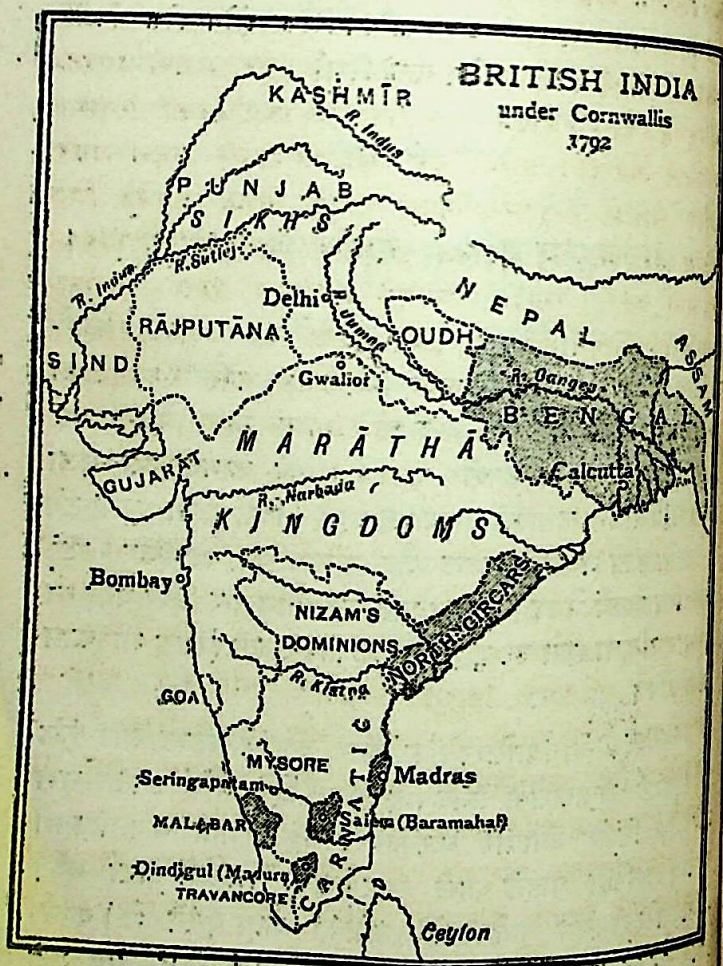
नहीं देता था। यह नियम सीधे लार्ड बेंटिंकके समय तक चलता रहा।

मैसूरकी तीसरी लड़ाई (१७९०–९२ ई०)—१७८४ ई० के कानूनके अनुसार गवर्नर जेनरल अंग्रेज़ी सरकारकी आज्ञाके बिना किसीसे लड़ झगड़ नहीं सकते थे। लेकिन टीपू सुलतान अंग्रेज़ोंका परम शत्रु था। अब समाचार मिला कि वह अंग्रेज़ोंके विरुद्ध फरासीसी व अफ़गानिस्तानके अमीर शाह ज़मनसे षडयन्त्र कर रहा है। इतनेमें टीपूने अंग्रेज़ोंके मित्र त्रिवांकुरकी रियासत पर चढ़ाई कर दी। इसपर लार्ड साहबने टीपूसे लड़ना अपना कर्तव्य समझा। कार्नवालिसने टीपूके विरुद्ध लड़नेके लिये निज़ाम और मराठोंसे सहायता ली, और मद्रासको डीपू बनाकर वह आगे बढ़ा। बम्बईकी फौजने मालावार जीता। कार्नवालिसने स्वयं इस लड़ाईमें भाग लिया था। १७९० ई० के अन्तिम भागमें उसने बंगलोर ले लिया और श्रीरंगपत्तनके निकट एक बार टीपूको १७९१ ई० में हरा दिया। दूसरे साल टीपू बेतरह हार गया और १७९१ ई० में उसको सन्धि करनी पड़ी।

श्रीरंगपत्तनकी सन्धि (१७९२ ई०)—टीपूको अपनी कुल रियासतके आधे हिस्सेसे हाथ धोना पड़ा। और ३३० लाख रुपया लड़ाईका हरजाना देना पड़ा। इस सन्धिके अनुसार अंग्रेज़ोंको पश्चिमके किनारे मालाबार और कुर्ग, दक्षिणमें डिण्डीगल और पूर्वमें बारमहल और वह घाटियां जिससे निकलकर हैदर कर्नाटिकपर बहुधा चढ़ाई किया करता था, मिलीं। मराठे और निज़ामको भी बराबर भाग मिले।

इस लड़ाईका परिणाम यह हुआ कि टीपूका जल-पथके द्वारा बाहरी किसी शक्तिका सम्बन्ध नहीं रहने पाया। और पूर्वकी ओर अंग्रेज़ोंके अधीन कुल दर्रे आगये, जिससे कि वे जब चाहते टीपूकी रियासत पर आक्रमण कर सकते थे।

इस्तमरारी बन्दोबस्त (१७९३ ई०)—पहलेही कहा जा चुका है कि हेस्टिंग्सने पंचसाला बन्दोबस्त किया और जिन

लोगोंने सबसे अधिक रुपया देना स्वीकार किया उन्हींको ज़मींदारी दे दी। इसका फल यह हुआ कि पुराने ज़मींदार हटा दिये गये और उनके स्थान पर स्वार्थी ठीकेदार ज़मींदार बने। ये लोग अपनी प्रजासे कुछभी प्रेम नहीं रखते थे। तिसपर भी मालगुज़ारीमें घाटा पड़ते देख हेस्टिंग्सने सालाना वन्दोवस्त करना आरम्भ किया। फिर भी मालगुज़ारी वसूल करनेमें घाटा पड़ने लगा। कार्नवालिसने यहां आकर देखा कि "खेती बारी और व्यापारकी घटती हो रही है, प्रजा और जमींदार गरीब बन रहे हैं। केवल महाजन मोटा रहे हैं" ।* अन्तमें १७८४ ई० में पार्लमेन्टने वन्दोवस्त इस्तमरारी करनेकी सम्मति दी।

१७८६ ई० में कम्पनीने दस सालके लिये वन्दोवस्त करनेकी आज्ञा दी और उसने यह भी आशा दिलाई कि यदि इस नियमपर काम अच्छी तरह चलता रहेगा तो पीछेसे वन्दोवस्त सदाके लिये कर दिया जावेगा। १७८६ ई० में दस सालके लिये वन्दोवस्त किया गया और १७६३ ई० में विलायतके वज़ीर पिट साहब और कम्पनीके अध्यक्ष डण्डास (Dundas) की सम्मतिसे इसी वन्दोवस्तको इस्तमरारी बना दिया गया।

इस नये नियमके अनुसार वङ्गाल और विहारके ज़मींदारोंको अपने अपने इलाकेका मालिक बना दिया गया। और उनकी सालाना मालगुज़ारी सदाके लिये नियत करदी गई जिसे सरकार कभी बढ़ा न सकेगी। पहिले पहल प्रजाका हक निश्चित रूपसे बताया नहीं गया था, इसलिये बहुत दिनों तक ज़मींदार उनसे मनमाना वर्त्ताव करते रहे। परन्तु १८५६ और १८८५ ई० के कानून लगान (Rent Acts) के द्वारा सब भूलोंका सुधार हुआ। १७६५ ई० में बनारस जिलेमें और १८ २ ई० में मद्रास हातेके कुछ हिस्सोंमें जमींदारोंके साथ पक्का बन्दोवस्त किया गया।

* Reports.

हानि-लाभ—बन्दोबस्त पक्का कर देनेसे भविष्यमें सर-कारी आमदनोकी घटती वढ़ती नहीं होने पाई। अब सरकार और प्रजाके बीच एक ऐसी राजभक्त और रोबोली जाति बनो जो सरकारके हानि लाभसे अपना भी हानि लाभ मानती है। इनकी आमदनी बंधी रहने के कारण उन लोगोंने समाज, साहित्य और कलामें सब प्रकार से उन्नति की है।

पुनः इस्तमरारी बन्दोबस्तमें कुछ दोष भी हैं। जैसे, अंग्रेज़ी सरकारकी कृपासे सुख शान्तिके साथ साथ भूमिका मूल्य बहुत बढ़ गया है। लेकिन तिस पर भी सरकार इससे कुछ लाभ नहीं उठाती वरन् जमींदार लोग ही लाभ उठाते हैं। १७९३ में उनके पुरखे जो मालगुज़ारी जमा करते थे वही आज भी जमा करते हैं। फिर सरकारको खर्चा चलानेके लिये दूसरे देशोंसे जहां कि पक्के बन्दोबस्तकी चाल नहीं है, अधिक लगान वसूल करना पड़ता है। इस हिसाबसे इस्तमरारी बन्दोबस्त अन्याय है।

विदाई—१७९३ ई० में कार्नवालिस अपने मित्र सर जान शोर (Sir John Shore) को अपनी गद्दी पर बैठा कर, घर चला गया। उसके चले जानेके पहले ही १७९३ ई० में यूरोपमें अंग्रेज़ और फरासीसियोंके बीच एक बड़ी भारी लड़ाई छिड़ी। इसलिये अंग्रेज़ोंने हिन्दुस्तानमें फरासीसियोंके कुल स्थान छीन लिये।

सर जान शोर (१७९३-०८ ई०): उसकी नीति—

सर जान शोर कम्पनीके पुराने नौकरोंमेंसे था। वह बड़ा ईमानदार और कार्यकुशल होता हुआ भी कुछ दब्बू स्वभावका आदमी था। वह देशी शक्तियोंसे लड़ना भिड़ना या उनकी घरकी बातोंमें हस्तक्षेप करनेसे दूर रहना चाहता था। वह पिट साहबके बनाये १७८४ ई०के कानूनके अनुसार काम चलाना चाहता था। देशी रियासतोंकी राजनीतिसे बिलकुल दूर रहनेके कारण उसकी

नीतका क्रम पीछेसे 'उदासीनताकी नीति' (Non-Interference Policy या Policy of Non-Intervention) प्रडा। पर इस नीतिका फल अन्त तक अंग्रेज़ोंके लिये अच्छा नहीं हुआ। क्योंकि देशी रियासतोंको इस बातका पता लगते ही वे आपसमें तथा अंग्रेज़ोंसे लड़ने लगे।

उसका फल—टीपूने मारीशस द्वीपके फरासीसी गवर्नरके पास, अफ़गानिस्तानके जमन शाहके पास और रूमके सुल्तान तक अंग्रेज़ोंसे लड़नेके लिये सहायता मांगी। स्वयं नेपोलियन को जो कि उस समय मिसरमें था, उसको एक चिट्ठी भेजी।

मराठोंने अवसर पाकर १७९५ ई०में निज़ामकी रियासत पर हमला किया, और खरदा (अहमदनगर जिलेमें) की लड़ाईमें हरा कर उससे बहुत से रुपये और उसकी रियासतका एक भारी हिस्सा छीन लिया। इसका फल यह हुआ कि अबसे दक्षिणकी शक्तियोंके बलकी बराबरी नहीं रह गई। मराठे बड़े शक्तिमान हो गये और देशी रियासतों की दृष्टि में अंग्रेज़की प्रतिष्ठा घट गई। अवसर पाकर टीपूने उनके साथ फिर लड़नेके लिये कमर बांधी। और जब निज़ामने देखा कि अंग्रेज़ोंने उसकी रक्षा न की तब विवश होकर उसने एक भारी फरासीसी सेना रख ली और अपनी रियासतसे अंग्रेज़ी सेना को निकाल दिया।

१७९७ ई० में आसफ-उद्दौलाकी मृत्युके बाद शोरने वज़ीर अली नामके एक नीच आदमी को गद्दी पर से उतार आसफ उद्दौलाके भाई सादत अली खां को नवाब बना दिया और इलाहाबाद को प्राप्त किया।

महारानी अहल्या बाई—जिस समय भारतवर्षमें चारों ओरसे स्वार्थ सिद्धिके लिये भाई भाई में शत्रुता चल रही थी, उस समय इन्दौरमें होल्कर घराने की महारानी अहल्याबाई अपने पुण्य प्रताप तथा प्रेमबलसे अपनी प्रजाका चित्ताकर्षण कर रही थी। अहल्याबाई का व्याह मल्हारराव होल्करके पुत्रसे हुआ था।

कि तीसही वर्ष की अवस्थामें सन् १७६५ ई० में परलोकवासी
। पश्चात् कोई सन्तान न होनेके कारण अहल्याबाई अपने
पति तुकोजी रावकी सहायतासे स्वयं राजकाज चलाती
। वह अपनी प्रजा की भांति पशुपक्षिओं को भी प्यार करती
वह खुले दरबारमें प्रजाकी पुकार सुनती थी। उसके राज्य
में किसी भी बाहरी शक्तिने होलकरपर आक्रमण नहीं किया।
आदि कई तीर्थ स्थानों में उसके बनवाए हुए हुये घाट,
र आदि उसकी कीर्ति की सूचना देते हैं। सन् १७९५ ई० में
की मृत्यु हुई।

शोरकी विदाई—१७९७ ई०के अन्तमें फौजी अफसर बलवा
के लिये तैयार हो गये। वे लार्ड कार्नवालिसके बताये हुए
विभागके सुधारोंके विरुद्ध थे। शोरने इस समय कुछ आगा
किया। इसीलिये वह १७९८ ई० में घर बुला लिया गया।

सारांश

१७८६ ई०	लार्ड कार्नवालिस
१७९० ,,	मैसूरकी तीसरी लड़ाई
१७९२ ,,	श्रीरंगपत्तनकी सन्धि
१७९३ ,,	इस्तमरारी बन्दोबस्त, सरजान शोर
१७९५ ,,	खरदाकी लड़ाई

(१०) लार्ड वेलेसली ।

(१७९८–१८०५ ई०)

लार्ड वेलेसली—शोरके चले जानेके वाद लार्ड वेलेसली (Wellesley) नया गवर्नर जेनरल हुआ । वह कई साल तक बोर्डआफ़् कन्ट्रोलका एक मेम्बर भी रह चुका था । इसलिये हिन्दुस्तानकी राजनीतिक दशासे भली भांति परिचित था।

उसका समय—तुमसे पहिलेही कह आये हैं कि लार्ड कार्नवालिसके जाते समय यूरोपमें अंग्रेज और फरासीसियों बीच १७९३ ई० में लड़ाई छिड़ी । इसी समय सारी फरासीसी जातिने अपने राजा और रानीको मारकर अपने देशमें एक प्रजातंत्र राज्य स्थापित किया । अंग्रेज लोग इनके पड़ोसी तथा राजतन्त्रके अनुयायी हैं । इसलिये फरासीसियोंसे अनवन हो गई । उन दिनों नेपोलियन वोनापार्ट (Nepolecn Bonaparte) नामका एक सेनापति धीरे धीरे फरासीसियोंका मुखिया बन गया । उसने बहुत देशोंको जीते और बहुतसे यूरोपीय राजाओं का हरा दिये । उसकी अभिलाषा वडी भारी थी । वह जर्मन वादशाह कैसरकी तरह सारी पृथ्वीको जीतकर शासन करना चाहता था । जब अंग्रेज़ोंके साथ उसकी लड़ाई छिडी तब उसने मिसर, हिन्दुस्तान आदि उनकी पूर्वी रियासतोंको जीतकर उनको बलहीन करनेकी आशासे मिसरपर चढ़ाई की । वहांसे चलकर वह हिन्दुस्तान जीतना चाहता था ।

देश की दशा—यह बात सत्य है कि उस समयमें इस देशमें फरासीसियोंके अधीन कोईभी स्थान न था । क्योंकि लड़ाई छिड़ते ही १७९३ ई० में कार्नवालिसने पांडिचेरी जीत लिया था पर देशी राज्योंमें फरासीसियों का रोबदाब बहुत बढ़ा चढ़ा था । चूंकि देशी रजवाड़ोंको यह बात मालूम थी कि फरासीसी अंग्रेजों

है, उनसे अप्रसन्न होते ही वे फरासीसी सेनापति और सिपाहीको नौकर रख लेते थे। लार्ड वेलेसली स्वयं अंग्रेज़ था, विद्रोही फरासीसियोंसे बड़ी घृणा करता था। इसलिये इस देशमें फरासीसियोंके रोबका अन्त करना वह अपना धर्म समझता था। इस प्रकार फरासीसियोंका दौर दौरा तोड़ कर उसने अंग्रेज़ोंको इस देशकी सबसे बड़ी शक्ति बना दी।

सर जान शोर साहबकी चलाई हुई उदासीनताकी नीतिका बुरा फल धीरे धीरे प्रकट हो रहा था। १७९५ ई० में निज़ामको सहायता न देनेके कारण उसने एक भारी फरासीसी सेना रख ली थी। मराठे निज़ामको लूट पाट कर बड़े शक्तिमान बन गए थे। उनके यहां भी बड़े बड़े फ़रासीसी सेनापति और कई एक फरासीसी पलटनें काम कर रही थीं। टीपू सुलतान फिर अंग्रेज़ोंके साथ लड़नेकी तैयारी कर रहा था और चुपके चुपके फरासीसियोंके साथ षड्यन्त्र रच रहा था। मराठोंके विरुद्ध निज़ामको सहायता न देनेके कारण उनके देशी मित्र रजवाड़े अंग्रेज़ों पर अविश्वास करने लग गये थे। उधर पश्चिमोत्तरीय कोनेमें अहमद शाह अबदालीका पोता, जमन शाहने चढ़ाई कर लाहौर तक जीत लिया था। १७९८ ई० में लार्ड वेलेसली जिस समय इस देशमें आया उस समय हिन्दुस्तानकी भीतरी अवस्था इसी प्रकार की थी।

उसकी राजनीति - यह सब देख सुनकर और यूरोप और हिन्दुस्तानकी राजनीतिक दशापर विचार कर वेलेसलीने अपने सामने दो कार्यक्रम रख लिये—(१) देशीय रजवाड़ोंके अत्याचारोंसे और अन्धेरके हाथसे गरीब प्रजाको बचाना। (२) इस देशमें फरासीसियोंके रोबदाबके स्थानमें अंग्रेज़ोंका प्रभुत्व स्थापित करना।

पहिला उद्देश्य सफल करनेके लिये उसने ऐसी देशी रियासतें जिनमें अन्धेर फैला हुआ था, कंपनीके राज्यमें मिला

लेना चाहा और दूसरे उद्देश्यकी पूर्तिके लिये उसने एक नई नीति निकाली जिसका नाम सहायक सन्धिकी नीति (Subsidiary Alliance) पड़ा।

इस नीतिके अनुसार स्वतन्त्र देशी रजवाड़ोंको अंग्रेजोंके साथ एक नई सन्धि करनी पड़ती थी। जिसके अनुसार उन्हें अंग्रेजोंका प्रभुत्व मानना पड़ता था। किसी यूरोपीयको वे अंग्रेजोंकी आज्ञा बिना नौकर नहीं रख सकते थे। और जिन्हें पहिलेहीसे रख लिये थे उनको छुड़ा देना पड़ता था। उनकी अनुमतिके बिना वे दूसरी किसी शक्तिके साथ किसी प्रकारका व्यवहार नहीं कर सकते थे और आत्म रक्षाके लिये अपने खर्चसे एक अंग्रेज़ी सेना (Subsidiary force) रखलेनी पड़ती थी।

अपने उद्देश्यकी पूर्ति करनेके लिये वेलेसली बलात् अथवा शान्तिसे जैसे बन पड़े काम लेनेके लिये तैयार था।

निज़ामके साथ नई सन्धि—तुमसे पहले ही कहा जा चुका है कि उन दिनों विशेष कर दक्षिणकी राजनीतिक अवस्था बड़ी बुरी थी। टीपू फरासीसिओंसे सहायता ले फिर अंग्रेज़ोंके साथ लड़नेकी तैयारी कर रहा था। निज़ामने अंग्रेज़ोंसे विरक्त हो कर एक भारी फरासीसी सेना रख ली थी। वेलेसलीने सोचा कि ऐसा न हो कि निज़ाम अपनी फरासीसी सेनाके साथ टीपूसे जा मिले और हमारे साथ लड़ जाय। इसलिये उसने सबसे पहिले निज़ामको ही ठीक राह पर लानेका निश्चय किया।

निज़ाम तो निर्बल था ही, अतः उसने बिना आपत्तिके १७९८ ई० में कम्पनीसे सहायक सन्धि (Subsidiary Alliance) कर ली। इस सन्धिके अनुसार उसने फरासीसी अफसरोंको विदा कर एक अंग्रेज़ी सहायक सेना रखली। मैसूरकी चौथी लड़ाईमें भाग लेनेके कारण मैसूरका जो कुछ अंश उसे मिला था उसने उसीको सहायक सेनाका खर्च चलानेके लिये अंग्रेज़ोंको दे दिया।

मैसूरकी चौथी लड़ाई—कई बार अंग्रेज़ोंसे हार खाकर मन ही मन जलता रहा और सदा बदला लेनेका अवसर करता था। अन्तमें जब नेपोलियन मिसर तक पहुंच और मारिशस द्वीपके फरासीसी गवर्नर टीपूकी सहायता रंगरूट भरती करने लगे, तब उसने सोचा कि लड़नेका उत्तम अवसर है। इस बातकी सूचना मिलते ही वेलेसलीने कहा कि तुम भी निज़ामकी तरह फरासीसी नौकरोंको दो। परन्तु टीपूके अस्वीकार करने पर वेलेसेलीने उससे का निश्चय किया।

घटनायें—बम्बईसे एक अंग्रेज़ी सेनाने पश्चिमकी मैसूर पर चढ़ाई की। टीपू पहले बम्बईकी सेनासे हार फिर मद्रासी सेनाने उसे हरा दिया। लाचार हो टीपूने पत्तनके किलेमें आश्रय लिया। अंग्रेज़ी सेनाने इस किलेको लिया और थोड़े ही दिनोंमें उसे ले भी लिया। इसी टीपू सुलतान मारा गया, और लड़ाई बन्द हो गयी।

प्रबन्ध—मैसूरका कुछ हिस्सा लेकर अंग्रेज़ोंकी अधीनतामें देशी रियासत स्थापित की गई जिसके राजा मैसूरके राजवंशके थे। श्रीरङ्गपत्तन, कनारा आदि आसपासके परगने कम्पनीको मिले। टीपूके लड़कोंको पेन्शन दे दी इस लड़ाईके बाद वेलेसलीको मारक्विस् (Marquis) उपाधि मिली।

लड़ाईका परिणाम—इस लड़ाईके बाद मराठोंके अतिरिक्त ोंका सामना करने वाली और कोई देशी शक्ति नहीं रह गया मराठा-लड़ाईका खर्चा मैसूर जीतनेसे मिला।

कम्पनीके राज्यका विस्तार—कर्नाटिकका नवाब बड़ा था। उसकी रियासतमें बड़ा अन्धेर मचा हुआ था। १७९९ ई० में उसने टीपू सुलतानको अंग्रेज़ोंके विरुद्ध सहा- दी थी। इसलिये सन् १८०१ ई० में कर्नाटिक राज्य सूबा

मद्रासमें मिला लिया गया। इसी प्रकार सूरत और तांजोरकी रियासतें भी ज़ब्त कर ली गईं। अब बताओ तो आजकलका मद्रास हाता कैसे धीरे धीरे बन गया?

अवधके नवावने कम्पनीसे जो सहायक सेना ली थी उसका खर्चा वह समयसे नहीं देता था। इसलिये कम्पनीको बड़ी कठिनाइयां उठानी पड़ती थीं। फिर अफगान सरदार ज़मनशाह ने सन १७९९ ई० में लाहौर तक जीता। उसके चले जानेके बाद उसका सूबेदार रणजीतसिंह पंजावमें एक नई सिख रियासत स्थापित कर रहा था। मराठे लोग अवधके आस पास लूटमार कर रहे थे। यह सब देखकर वेलेसलीने अवधके निकम्मे नवाब को एक नई संधि करनेके लिये बाध्य किया। इसके अनुसार नवाबको एक भारी अंग्रेज़ी सेना रख लेनी पड़ी और इसका खर्चा चलानेके लिये कम्पनीके हाथ गोरखपूर, आज़मगढ़, कड़ा, इलाहाबाद और रुहेलखण्ड परगने सौंप देने पड़े। इसी रीतिसे १८०१ ई० में सूबे आगराकी नींव पड़ी।

सहायक संधिके दोष—ऐसीही दशामें अवधकी नवाबी सन् १८५६ ई० तक चलती रही। पर समय जितना बीतता रहा, धीरे धीरे सहायक-सन्धि-नीतिके दोष प्रकट होने लगे। इतनी बात तो सच है कि कुप्रबन्धके कारण रियासत कितनीही निर्बल क्यों न हो जाय, दूसरी कोई देशी शक्ति उसे बलात् जीत नहीं सकती थी, तथापि इस नीतिमें गुणकी अपेक्षा दोष अधिक थे। इस सन्धिके अनुसार देशी रजवाड़ोंको अंग्रेज़ी सेना रख लेनी पड़ती थी। नौकरीसे छुटकारा मिलते ही देशी रियासतके सिपाही पेटके लिये डाका मारने लगे पुनः देशी रियासतोंको शत्रुओंसे बचानेका काम कम्पनीके हाथमें चले जानेसे देशी रज-वाड़े लड़ने भिड़नेका काम भूलकर सुख विलासमें अपने दिन काटने लगे। अंग्रेज़ी सेना रखनेके लिये उनको बहुत रुपये हर साल कम्पनीको देने पड़ते थे। नियमित रूपसे रुपया न देनेसे

कारण वे शीघ्रही कम्पनीके कर्ज़दार बन जाते थे और अन्तमें कम्पनी उनकी रियासतें जब्त कर लेती थी।

मराठोंसे दूसरी लड़ाई (१८०२-५ ई०)—सन् १८०० ई० में नाना फड़नवीसकी मृत्यु हुई। उसके मरनेपर मराठा जातिकी एकता और राजनीति भी नष्ट हो गई। इसका परिणाम यह हुआ कि मराठे सरदार आपसमें लड़ने झगड़ने लगे। इन सब सरदारोंमें यशवंत राव होलकर और दौलतराव सिन्धिया मुख्य थे। उन दिनों रघुनाथ रावका बेटा बाजीराव (दूसरा) पेशवा रहा जो कि बड़ा निकम्मा था। सारी मराठा जातिपर अपना प्रभुत्व जमानेके लिये होलकर और सिन्धिया हरएक उसको अपने वशमें करना चाहते थे। इस लिये ये दोनों सरदार आपसमें लड़ने लगे। सन् १८०२ ई० में होलकरने सिन्धियाको हरा दिया। भयभीत होकर पेशवा बाजीराव भागकर बेसिनमें अंग्रेज़ोंकी शरणमें गया। उधर होलकरने पूना ले लिया, और दूसरेको पेशवा बना दिया।

फन्देमें फंसतेही बाजीरावको १८०२ ई० में कम्पनीके साथ बेसीनमें एक सहायक सन्धि करनी पड़ी। इसके अनुसार उसे अंग्रेज़ोंकी प्रभुता माननी पड़ी, २६ लाख रुपया सालाना देनेपर एक सहायक सेना अपने रियासतमें रखनी पड़ी। अंग्रेज़ोंके शत्रुओंको नौकरीसे छुड़ा देना पड़ा और अंग्रेज़ोंके मित्र राज्योंसे छेड़छाड़ करनेसे दूर रहना पड़ा। इतना करनेपर कम्पनीने उसे पुनः पेशवा बना देना स्वीकार किया। अतः सन् १८०३ ई० में एक अंग्रेज़ी पलटनने पूनापर चढ़ाई कर बाजीरावको फिर पेशवा बना दिया।

लड़ाई छिड़ी—बाजीराव पेशवा बना। पर वह सुखी न था। वह सदा अंग्रेज़ोंके हाथसे छुटकारा पानेका अवसर ढूंढता रहा। अन्तमें लाचार होकर उसने भोसले, होलकर और सिन्धियासे सहायता मांगी।

(क) सिन्धिया और भोसलेके साथ—इस प्रार्थनाके अनुसार मराठा जातिकी शक्ति बनाये रखनेके लिये सिन्धिया और भोसले पेशवाके पक्ष लेकर अंग्रेज़ोंके साथ लड़नेको तैयार हुए। होलकर इस समय किसीका पक्ष न लेकर चुपचाप बैठा रहा। इधर गवर्नर जेनरलका भाई सर आर्थर वेलेसली (Sir Arthur Wellesley) दक्षिणी सेनाका सेनापति बनाया गया। और उत्तरीय हिन्दुस्तानमें लड़ाई चलानेके लिये लार्ड लेक (Lord Lake) सेनापति हुआ।

(१) दक्षिणमें लड़ाई लड़ाई छिड़ते ही सर आर्थरने अहमदनगर पर एकाएक चढ़ाई की और उसे ले लिया इसके लेनेसे निज़ामकी रियासतका पश्चिमोत्तरीय कोनेका बचाव हो गया और पूनासे सीधा सम्बन्ध भी स्थापित हो गया। सिन्धिया और भोसलेने तब निज़ाम की रियासत पर चढ़ाई की। वेलेसली ने सन् १८०३ ई० में असाई की भारी लड़ाई में उन दोनोंको हरा दिया। इसके बाद आरगांव की लड़ाई (अकोला जिलेमें) भोसले की हार होनेके कारण उसे देवगांव की संधि कर लेनी पड़ी, जिसके अनुसार उसने कम्पनीको कटक और निज़ामको बरार देश दे दिये। और अंग्रेजोंकी आज्ञा बिना किसी भी यूरोपीयनको नौकर न रखना स्वीकार कर लिया।

(२) उत्तरमें लड़ाई—उन दिनों अलीगढ़में सिन्धिया की फरासीसी सेना रहती थी। लार्ड लेकने बड़ी वीरताके साथ उसको ले लिया। इसके बाद उसने दिल्ली, आगरा आदि ले लिये, जिसका यह परिणाम हुआ कि सारा दोआब इस समय कम्पनीके हाथमें आ गया। बादशाह शाह आलम फिर कम्पनीके पेन्शन-भोगी बन गये और दिल्ली उन्हींको दे दी गयी। इसके बाद लेकने लसवारी (अलवर रियासतमें) में सिन्धियाको हराया (१८०३ ई०)। इस लड़ाईमें सिन्धियाकी ओर केवल देशी सिपाही लड़े थे। उनके बारेमें लार्ड लेक लिखता है कि

केवल वीरोंहीके ऐसे नहीं वल्कि दैत्योंके समान लड़े थे"। लाचार होकर सिन्धियाको भी अर्जुनगांव की संधि

लेनी पड़ी (१८०३ ई०)। इसके अनुसार सिन्धियाको

गांव, अहमदनगर, दो-आब और चम्बल नदीके भूभागसे हाथ

धोने पड़े और बादशाह शाह आलमको अंग्रेजोंके अधीन कर देना पड़ा। उसी समय अलवर, जयपुर, योधपुर आदि कम्पनीके अधीन हो गये।

(ख) होलकरके साथ लड़ाई—जब अंग्रेज़ और सिन्धिया एक दूसरेके साथ लड़ कर निर्बल हो गये थे तब होलकरने जो इतने दिन तक चुपचाप बैठा था, १८०४ ई० में लड़ाई आरंभ कर दी। वह मराठा जाति को प्राचीन युद्ध नीतिके अनुसार अनियमित रूपसे लड़ता रहा। इस लिये अंग्रेज़ोंको बड़े कष्ट उठाने पड़े। कर्नल मानसन (Col. Monson) ने जब उसकी रियासत पर चढ़ाई की तब होलकर उसे बड़ा सताने लगा। उसका खेमा लूट गया और खाने पीनेका सामान भी कुछ न रह गया। इस लिये कर्नलको आगराकी राह लेनी पड़ी। होलकरकी सेनाने उसका पीछा किया। इसके बाद होलकरने मथुरा ले लिया। अंग्रेज़ी पल्टन वहांसे भी हट गयी। इसी समय लार्ड लेक वहां आ पहुंचा और होलकरको दीघ (अलवर रियासतमें) की लड़ाईमें हरा दिया (१८०४ ई०) और भरतपूरके किलेको घेर लिया। पर वह किला ले न सका। और भी कुछ दिनों तक यह लड़ाई चलती रही और अन्तमें भरतपूरके राजाने अंग्रेज़ों के साथ सन्धि करली। लार्ड वेलसलीके चले जानेके बाद कम्पनी ने उसकी नीतिका अनुसरण नहीं किया। सन् १८०५ ई० में होलकरके साथ सुलह करली गई और जीते हुये स्थान उसे लौटा दिये गये।

लार्ड वेलेसलीके साथ कम्पनीके डाइरेक्टरोंकी बनती न थी। जब उसकी चलाई हुई लड़ाइयोंसे कम्पनीकी आमदनी घट गई तब वह १८०५ ई० में घर बुला लिया गया।

शिक्षा—लार्ड वेलेसली केवल लड़ाकूही नहीं था। कम्पनीके नौकरोंको देशी भाषा सिखानेके लिये उसने कलकत्तेमें एक कालिज स्थापित किया। उसने बाइबिलको देशी भाषाओं

लिखवाया और ईसाई धर्मको इस देशका शाही-धर्म बनाया। इन्हीं दिनों श्रीरामपूरके मिशनरी लोगोंने बंगलामें रामायण और महाभारतकी पुस्तकें छपवाईं।

वेलेसलीका काम—जिन जिन कामोंको करनेके लिये लार्ड वेलेसली इस देशमें आया था उन सबको उसने प्रायः पूरा किया। यदि एकाएक वह न बुला लिया जाता तो सम्भवतः कम्पनीको भविष्यमें फिर तलवार न उठानी पड़ती। उसने सारे हिन्दुस्तानसे फरासीसियोंका दबदबा बिलकुल उठा दिया। लड़-भिड़ कर और फुसलाकर उसने कम्पनीका राज्य दूना कर दिया था। निज़ाम, अवधके नवाब, पेशवा और मैसूरके हिन्दू राजाको कम्पनीके अधीन कर दिया, और भोसले, सिन्धिया और होलकरको बार बार हराकर उनके होश ठिकाने कर दिये। सच है, जिन सज्जनोंने भारतमें ब्रिटिश साम्राज्य स्थापित करनेमें अपनी शक्ति और बुद्धि लगाई थी उनमेंसे एक लार्ड वेलेसली भी था।

सारांश

१७९८ ई०	लार्ड वेलेसली गवर्नर जेनरल
१७९९ ,,	मैसूरके साथ चौथी लड़ाई
१८०१ ,,	कर्नाटिक और आगरा प्रदेश कम्पनीकी रियासतमें मिला लिये गये
१८०२ ,,	बेसिनकी सन्धि
१८०३ ,,	मराठोंसे दूसरी लड़ाई

(११) सर जार्ज बार्लो और लार्ड मिंटो (पहिला)

(१८०६–१३ ई०)

कार्नवालिस और सर जार्ज बार्लो (१८०६–७ ई०)-लार्ड वेलेसलीने अपनी नीतिका पालन कर सारे देशमें हलचल मचा दी थी। इसी लिये कम्पनीके डाइरेक्टरोंने वेलेसलीको बुला लिया और लार्ड कार्नवालिसको फिर गवर्नर जेनरल बनाकर भेजा। पर वह हिन्दुस्तान आनेके दोही महीने बाद मर गया। गाजीपूरमें उसका मक़बरा आज तक मौजूद है।

लार्ड कार्नवालिसके मरनेके बाद कौंसिलका प्रधान मेम्बर सर जार्ज बार्लो डेढ़ साल तक गवर्नर जेनरल रहा। बार्लो कम्पनीके एक पुराने नौकरोंमेंसे था। उसको आज्ञा पालन करनेकी आदतसी पड़ गई थी। इसलिये जब कम्पनीके मालिकोंने उदासीनताकी नीतिसे काम लेनेकी आज्ञादी तब वह बड़ी मुस्तैदीके साथ उसका पालन करने लग गया। लार्ड लेकने होलकरको इस समय तक बिलकुल हरा दिया था। पर बार्लोने उसकी कुल जीती हुयी जगहोंको उसे लौटा दिया। यहां तक कि जिन राजपूत रजवाड़ोंको मराठोंके हाथसे बचानेके लिये वेलेसलीने वादा किया था उन्हें भी उसने होलकरको लौटा दिया। इसी तरहसे उसने सिन्धियाको भी शान्त किया। इसका फल यह हुआ कि मध्य-भारत (Central India) में गड़बड़ी मच गई। राजपूतानाके रजवाड़ोंको मराठे और उनके मित्र पिण्डारी डाकू लोग लूटने लगे।

लार्ड मिन्टो (पहिला) (१८०७–१८१३ ई०)—बार्लोके बाद लार्ड मिन्टो (पहिला) गवर्नर जेनरल होकर आया। वह इसके पहले बोर्ड आफ़ कन्ट्रोलका सभापति था। इसे भी कम्पनीके डाइरेक्टरोंने उदासीनताकी नीतिके अनुसार काम करनेके लिये

था। इसी लिये उन दिनों राजपूतोंसे मराठोंकी जो लड़ाई रही थी। उसमें उसने भाग नहीं लिया।

लार्ड मिन्टो जिस समय हिन्दुस्तानका गवर्नर जेनरल था, समय नेपोलियन बोनापार्ट फ्रांसका सम्राट् बनकर चारों ओर फ्रांसीसियोंका दबदबा फैला रहा था। लार्ड मिन्टोको यह खबर मिला कि नेपोलियनने ईरानके शाहके पास एक दूत भेजा है। जिसे सुनते ही हिन्दुस्तानकी अंग्रेज़ी सरकारको पश्चिमी हिस्सेके राजाओंसे मित्रता करनेकी आवश्यकता हुई। इसलिये अंग्रेज़ोंके पक्षसे उसने ईरान, अफ़गानिस्तान और सिन्धमें एक एक दूत भेजा। पहिले पञ्जाबके सिख राजा रणजीत सिंहके पास एक एलची भेजा गया।

सिख जातिकी बढ़ती—मुग़ल साम्राज्यके अन्त होनेके उपरान्त जब अफ़गान और मराठे घुड़सवार सारे पञ्जाबको बारी बारीसे रौंद रहे थे जिसके कारण उस देशमें बिलकुल अन्धेरा छा हुआ था, उसी समय सिख जाति उस प्रदेशमें एक धर्म-राज्यके संगठन करनेमें लगी हुई थी। १७५६ ई० में जस्सा कुल्लाल ने लाहौर ले कर खालसा वा धर्म-राज्यकी नींव डाली। परन्तु अबदालीने जब लाहौर ले लिया तब वह वहांसे चल दिया। १७६१ के बाद सिखोंने बहुत गढ़ और परगने दबा बैठे। इनमेंसे रणजीत सिंहके दादा चरत सिंहने गुजरानवालाके निकट एक छोटी सी रियासतकी नींव डाल कर अबदालीके हाकिमको भगा दिया। १७६२ ई० में अबदालीने सिखोंको बेतरह हराया। इसके ही साथ उसने अलहा सिंहको पटियालाका राजा नियुक्त किया। उसके घर जानेके बाद सिखोंने अबदालीके हाकिमोंको भगा दिया और झेलम और सतलज नदीके बीच तथा दोआब तक के भूभागको बिलकुल रौंद डाला (१७६३ ६४ ई०)।

इन दिनों वास्तवमें सिखोंका एक धर्म राज्य ही रहा। वर्षा के पीछे अमृतसरमें प्रति वर्ष एक मेला हुआ करती थी। यहीं

कुल सिख एक साथ मिलते थे। लूटके माल और भूमि बांटी जाती थी। सरदारोंकी प्रबन्धकारिणी सभाका नाम "गुरुमुत्त" था। सारी सिख जाति इन दिनों बारह मिस्लोंमें विभक्त थी। प्रत्येक मिस्लके प्रधानका नाम सरदार था। इनमें फुलकिया मिस्लके अतिरिक्त सभी मिस्लोंका उदय सतलज नदीके उत्तरमें हुआ। पटियाला, नाभा, झिन्द आदि राज्योंके सिख फुलकिया मिस्लके थे। रणजीत सिंहके समय तक ये सब मिस्ल वाले आपसमें लड़ झगड़ रहे थे जब उसने मिस्ल रीतिका अन्त कर दिया। अकाली दल सिखोंकी धर्म सेनाका नाम है। वे नीले कपड़े और लोहके कड़े पहिनते हैं। धर्म स्थानोंकी रक्षा करना और जनताकी चाल चलन सुधारना ही इनके जीवनका व्रत है। ये सदा लूट मार करते फिरते थे।

रणजीत सिंह—चरतसिंह की मृत्यु होनेके उपरान्त उसका बेटा महासिंहने जम्मू पर चढ़ाई की और रावलपिण्डी तक लूट मार किया। महासिंहके पुत्र का नाम रणजीत सिंह था। १७८० ई० में उसका जन्म हुआ। रणजीत सिंहकी अवस्था जब कुल ११ वर्ष की थी तभी महासिंहका देहान्त हो गया। अतः कुछ दिनों तक सुकर चकिया मिस्लको दुर्दिनका सामना करना पड़ा। अन्तमें जब १७९८ ई० में अहमदशाह अबदालीके पौत्र शाह ज़मनने पञ्जाब पर चढ़ाई की तभी फिरसे उनका सितारा चमका। तब शाहके घर लौटते समय रणजीतने उसकें कुल तोपें झेलम नदीके उस पार पहुंचा दिये। इसके बदले शाहने उसे लाहौरका सूबेदार बना दिया। तभीसे उसने और और मिस्लवालोंसे लड़ भिड़ कर अमृतसर तक जीत लिया, पुनः शाह ज़मनके गद्दीसे परसे हटा दिये जाने पर उसने मुलतान पर भी चढ़ाई कर दी। इसी समय कुल मिस्लके सरदार लोगोंने उसकी प्रभुता मान ली। इसके बाद जब उसने सतलजके उसपार बसने वाली फुलकिया मिस्ल पर अपनी दृष्टि फेरी तब उन्होंने विवश होकर अंग्रेज़ोंकी

करली। वाध्य हो कर रणजीतने भी अंग्रेज़ोंसे इसी शर्त पर सन्धि कर ली (१८०६ ई०)। इसी प्रकारसे पञ्जाबके सिख राज्य की पूर्वीय सीमा सदाके लिये सतलज हो गई। इसके बाद रणजीतने धीरे धीरे कांगड़ा, काश्मीर, जम्मू, मुलतान, रावलपिंडी, पेशावर आदि स्थान जीत लिये। पश्चात् जब उसने सिन्ध जीतना चाहा तब अंग्रेज़ोंने उसे रोका, क्योंकि उस देश पर पूर्वहीसे उनकी दृष्टि थी। पुनः जब उसने शाह शुजाका पक्ष लेकर अफगानिस्तान जीतना चाहा तब भी सरहदी नीति की पाबन्दी करते हुए अंग्रेजोंने उसे रोका। इस लिये दिखौआ रूपसे अंग्रेज़ोंके मित्र होते हुए भी रणजीत उनसे मनही मनमें बड़ा जलता था। इसके कारण जीते जी उसने अंग्रेज़ व्यापारियोंको अपने इलाक़ेसे दूर रक्खा। अफ़गानिस्तानके पदच्युत अमीर शाह शुजासे उसने कोह इ-नूर हीरे पर अपना हाथ साफ किया था अफ़गानिस्तान पर चढ़ाई करके वहांसे सोमनाथ मन्दिरके फाटक वापस लानेका विचार भी उसने किया था। इसी प्रकारसे एक गंवार लड़ाकू जातिको संघ बद्ध करके महाराज रणजीत सिह सन् १८३६ ई० में स्वर्गधाम को सिधारा। यदि सच पूछो तो रणजीत सिह हिन्दू जातिका संगठन करने वालोंमें अन्तिम पुरुष था। वह बड़ा धूर्त्त भी था। सिखों की आंखोंमें धूल डालने के लिये वह सदा खालसा की दुहाई देते हुये अपना मतलब साधता था।

उसके स्थापित राज्यमें अधिक नियम कानूनके बन्धन नहीं थे। सिख किसानोंसे कम कर लिया जाता था। डकैती बन्द करवा दी गई। आपसकी लड़ाई में सरकार हस्तक्षेप नहीं करती थी। मालगुज़ारी वसूल करने वाले अफ़सरोंके अत्याचारी होने पर उन्हें कठिन दण्ड दिया जाता था। राज्य की अधिकतर आमदनी सेना विभागमें खर्चकी जाती थी। रणजीतने फरासीसी अफ़सर रख कर अपनी सेना को शिक्षा दिलाई थी। थोड़ेही

दिनोंमें सिख सिपाहियोंने यूरोपीय कायदे पर लड़नेके विषयमें स्वयं यूरोपीय शक्तियोंको भी नीचा दिखाया। चाहे कुछ हो, उन दिनों पश्चिमोत्तर कोने पर इस नवीन राज्यके स्थापित हो जानेसे अंग्रेज़ोंको बड़ा लाभ पहुंचा। क्योंकि जबतक वे मराठोंसे लड़ने भिड़ने तथा अपने राज्य-संगठन करनेमें लगे रहे, तब तक सिख-राज्य ही पश्चिमोत्तर कोने की रखवाली करता रहा।

उधर यूरोपमें नेपोलियनके साथ अंग्रेज़ोंकी लड़ाई चल रही थी। इङ्गलैण्डसे हिन्दुस्तानके आवागमनका जल-पथ खुला रखनेके लिये लार्ड मिन्टोने हिन्द महासागरमें मारिशस आदि द्वीपोंको जीत लिया। इसी समय नेपोलियनने हालैण्ड देशको जीत लिया। इस लिये डच लोगोंके पूर्वी द्वीप समूह भी फरासीसियोंके अधीन हो गये। चीनसे व्यापारका पथ खुला रखनेके लिये मिन्टोने जावा आदि द्वीपोंको भी जीता।

कम्पनीका नया आज्ञा-पत्र (१८१३ई०)—इसके पहले ईस्ट इण्डिया कम्पनीके अतिरिक्त और किसी अंग्रेज़का हिन्दुस्तानके साथ व्यापार करनेका अधिकार न था। इस नये आज्ञा-पत्रकेअनुसार कम्पनीके ऐसा अब अंग्रेज़ व्यापारियोंको इस देशके साथ व्यापार करनेकी आज्ञा दी गई, चीनके साथ केवल कम्पनी ही व्यापार कर सकेगी। हिन्दुस्तानके लोगोंको साहित्य और विज्ञान सिखानेके लिये कम्पनीको सालाना एक लाख रुपया खर्च करना पड़ेगा।

कम्पनीसे व्यापारका इज़ारा जब ले लिया गया तब उसने दुकानदारी छोड़ राज्य शासन करनेकी ओर अधिक ध्यान दिया।

सारांश

१८०५ ई०	लार्ड कार्नवालिस, सर जार्ज बार्लो
१८०७ "	लार्ड मिन्टो

१८०८ ई०	फ़ारस और काबुलमें एलची भेजे गये
१८०६ ,,	रणजीतसिंहसे सन्धि
१८१० ,,	फरासीसियोंके द्वीप छीन गये
१८११ ,,	जावा जीता गया
१८१३ ,,	कम्पनीको नया आज्ञापत्र मिला

(१२) लार्ड हेस्टिंग्स और आमर्स्ट

(१८१३–२८ ई०)

लार्ड हेस्टिंग्स (१८१३–१८२३ई०)—नया लाट विला-
के एक बड़े ऊंचे और पुराने घरानेका था। वारेन हेस्टिंग्ससे
का कुछ सम्बन्ध नहीं था। उसने लार्ड वेलेसलीके कामोंको
लिया और उसको पूरा किया। वेलेसलीकी तरह अंग्रेज़ी
कारको इस देशकी प्रधान शक्ति बनानेका विचार उसका भी
। इसलिये उसने भी देशी रजवाड़ोंको अंग्रेज़ोंकी प्रधानता
लेनेके लिये वाध्य किया।

देशकी दशा—उन दिनों देश की अवस्था बहुत बिगड़ी
थी। जब शत्रुओंने देखा कि अंग्रेज़ी सरकार उदासीनता
नीतिके अनुसार काम कर रही है, तब उन्होंने फिरसे ज़ोर
या। उत्तरकी ओरसे नैपाली लोग कम्पनीके राज्यपर चढ़ाई
लूट पाट कर रहे थे। दक्षिणमें पेशवा तथा भोसले अंग्रेज़ों
साथ छुटकारा पानेके उपाय सोच रहे थे। मध्य भारत और
पुतानेमें पिण्डारी डाकू लूट पाट कर उस देशको स्मशान सा
रहे थे। इस प्रकार देश भर में अशान्तिकी आग भड़क
थी।

नेपालके साथ लड़ाई (१८१४-१६ ई०)—पहिले पहिल नेपालमें बौद्धमतके राजा राज करते थे। इसके बाद गुर्खा लोगों ने उनको हरा दिया और सारी रियासत अपने अधीन कर लिया। ये लोग हिन्दू हैं और अपने को क्षत्रिय कहते हैं। इन दिनों सतलज नदीसे लेकर भूटान तक उनकी रियासत फैली हुई थी। अवधके नवावने जब कम्पनीके हाथ गोरखपुर ज़िला सौंप दिया तबसे नैपाली कम्पनीके राज्यके पड़ोसी बने। गुर्खा बड़े उपद्रवी होते थे। लार्ड मिन्टोके मना करने पर भी उन्होंने सन् १८१४ ई० में कई एक गांवोंको लूट लिया। इसी लिये लड़ाई की आवश्यकता पड़ी।

घटनायें तथा सन्धि—अंग्रेज़ी सेना इस समय तक बराबर हिन्दुस्तानके चौरस मैदान पर लड़ती थी। इसलिये उसको पहाड़ियोंके साथ लड़नेके नियम न मालूम थे। इसीलिये आरम्भमें अंग्रेज़ोंकी हार हुई। सन् १८१६ ई० में जेनरल आक्टरलोनी (Ochterlony) ने गुर्खोंको हराया। तब नैपालियोंको सन्धि करनेके लिये बाध्य होना पड़ा। इस सन्धिके अनुसार कमायूं और गढ़वालके ज़िले तथा तराई तक कम्पनीके रियासतमें मिला लिये गये। शिमला आदि स्थान भी इसी समय अंग्रेज़ोंके हाथ लगे। और नैपालमें इस समयसे अंग्रेज़ोंके एक रेसिडेण्ट रहने लगे।

लड़ाईका परिणाम—ऊपरकी जगहें अंग्रेज़ोंके हाथ आनेके बाद उनकी बड़ी उन्नति हुई। नैनीताल, देहरादून, मसूरी आदि जगहोंमें लोग गर्मीके दिनोंमें हवा खाने जाते हैं। इस समय बड़े लाट साहबकी राजधानी शिमलामें रहती है। तराईके जंगलोंसे सरकारको बहुत आमदनी होती है। सन्धि होनेके बादसे गुर्खा लोग अंग्रेज़ोंके मित्र बन गये। बहुतसे गुर्खे अंग्रेज़ी सेनामें भर्ती होने लगे।

पिण्डारी युद्ध (१८१७ ई०)—औरंगज़ेबके अत्या-

पिण्डारियोंको घेर लेनेका प्रबन्ध किया। इसलिये तीन बड़ी बड़ी सेनायें इकट्ठी की गयीं। जब मद्रासी सेनाने उनपर हमला किया तब वे उत्तरकी ओर भागे। पर उत्तरसे बंगालकी सेना तथा पश्चिमसे बम्बईकी सेना आगे बढ़ रही थी। ऐसा प्रबन्ध देख पिण्डारी घबड़ा गये और चारों ओर तितर बितर हो गये। बहुतसे अंग्रेज़ी सेना और देशी लोगोंके हाथ मारे गये। जिन लोगोंने अपनेको सरकारके हाथ सौंप दिया उनको खेती बारी करनेके लिये ज़मीन दी गयी। सरदार अमीरखांको टोंक (राजपुतानेमें) की नवाबी दी गई और चीतू सरदारको एक चीतेने खालिया। इसी तरह पिण्डारी डाकुओंको दबा कर लार्ड हेस्टिंग्सने मालवा और मध्य प्रदेशमें सुख शान्ति स्थापित की।

तीसरी मराठा लड़ाई (१८१७–१८ ई०)—पेशवा बाजीरावने जब अंग्रेज़ोंको पिण्डारियोंसे लड़ते देखा तब वह फिरसे स्वतंत्र होनेके लिये प्रयत्न करने लगा और साथ साथ सारी मराठा जातिकी गिरी हुई दशाको सुधारनेके लिये उसने सिन्धिया, होलकर, भोसले आदि मराठा सरदारोंको उभाड़ा। भोसले भी अवसर खोजही रहा था। वह तुरन्त राज़ी हो गया। सिन्धियाकी रियासतके सामने एक भारी अंग्रेज़ी पल्टन खड़ी कर दी गई जिसके होनेके कारण वह लड़ाईमें भाग न ले सका।

पेशवासे—पेशवा बाजीरावका अभिप्राय जान कर पूना दरबारके अंग्रेज़ रेसिडेन्ट एलफिन्स्टोन (Elphinstone) ने शहरसे चार मील दूर किरकी नामके एक सुदृढ़ स्थानमें जा आश्रय लिया। बाजीरावने एक बड़ी भारी सेना लेकर उस स्थान पर चढ़ाई की। पर हार खाकर उसे वहांसे लौटना पड़ा। इतनेमें एक अंग्रेज़ी सेना वहां आ पहुंची और एलफिन्स्टोनने १८१७ ई० में पूना लेलिया। पेशवा सन् १८१८ ई० में

(शोलापुरके जिलेमें) की लड़ाईमें फिर हार गया। अन्तमें उसने अपनेको अंग्रेजोंके हाथ सौंप दिया। पेशवाकी रियासत कम्पनीके राज्यके साथ मिला ली गई और बाजीरावको पेंशन दे दी गई। वह उस समयसे कानपुर जिलेके बिठूर गांवमें रहने लगा।

भोसलेसे—अप्पा साहब भोसले पेशवाकी देखादेखी वहांके अंग्रेज़ रेसिडेन्ट पर एकाएक टूट पड़ा। लेकिन उसने अप्पा साहबको हरा दिया और उसकी राजधानी नागपुर १८१७ ई० में ले लिया। इसके बाद अप्पा साहब लापता हो गया। सन्धिकी शर्तें तोड़नेके कारण अप्पासाहबको गद्दीसे उतार दिया गया और सागर और नर्मदाके ज़िले कम्पनीकी रियासतमें मिला लिये गये। नागपुरकी गद्दीपर रघूजी भोसलेका एक पौत्र बैठाया गया जिसके संरक्षक अंग्रेज़ रेसिडेन्ट बनाये गये।

होलकरके साथ—होलकर उन दिनों नाबालिग़ था। उसकी माता तुलसी बाई राजकाज चलाती थी। वह अंग्रेज़ोंके साथ सन्धि कर लेना चाहती थी, इसलिये उसकी सेना बिगड़ गई और उसने तुलसी बाईको मार डाला। इसपर अंग्रेज़ी सेनाने होलकरकी रियासतपर चढ़ाई करदी और १८१७ ई० में मेहदो-पुरकी लड़ाईमें उसकी सेनाको बिलकुल हरा दिया। रियासतका कुछ हिस्सा जब्त कर लिया गया और होलकर को अंग्रेज़ोंकी प्रभुता मान लेनी पड़ी।

संगठन—पेशवाकी रियासत जब्त कर लेनेके बाद बम्बई हाता बना। एलफिन्स्टन पहिले गवर्नर बनाये गये। शिवाजीकी सन्ततिमेंसे एकको सताराका राजा बनाया गया। नर्मदा और सागर ज़िले एक चीफ़ कमिश्नरके अधीन कर दिये गये। इस प्रकारसे मध्य-प्रदेशकी नींव पड़ी। राजपूतानेके रजवाड़े अंग्रेज़ोंके अधीनकर लिये गये। सिन्धियाने इसी समय उनको अजमेर दे दिया। इस प्रकारसे मराठा जातिकी स्वाधीनता का सूर्य सदाके लिये अस्त हो गया।

इस लड़ाईके बाद खास हिन्दुस्तानमें कोई देशी शक्ति स्वतन्त्र न रहने पायी। सभीको अंग्रेज़ोंकी प्रभुता मान लेनी पड़ी।
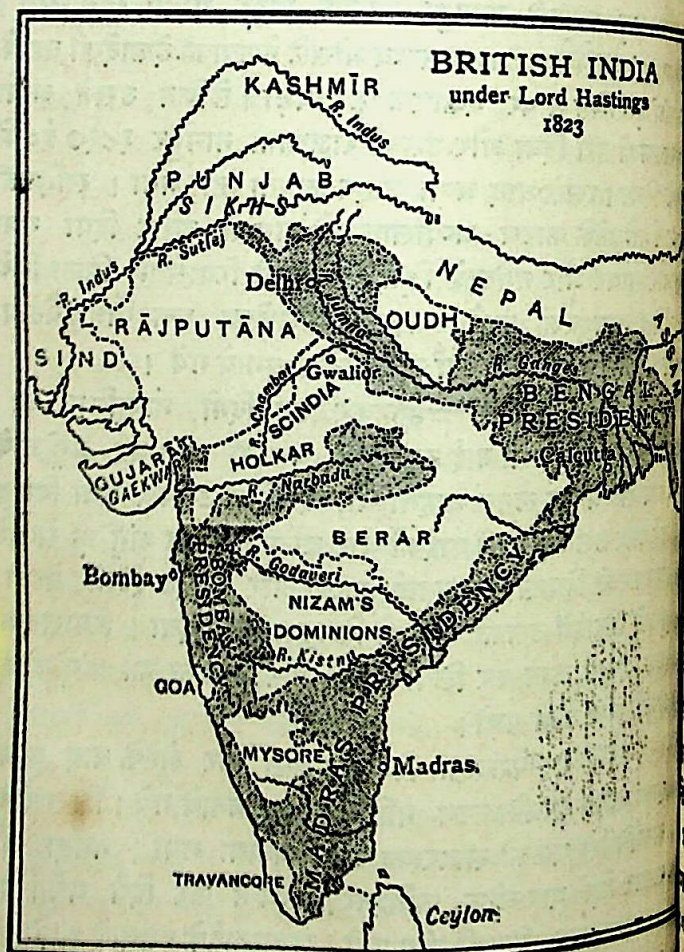
मराठोंकी घटतीके कारण—जबसे पेशवा मराठोंका मुखिया बना तभीसे मराठा राज एक संघ-राज्य (Confe-

racy) बन गया। इतिहासके पढ़नेसे मालूम होता है कि
राज्योंमें प्रायः छेड़छाड़ हुआ ही करती है। शिवाजीके
के बाद मराठा राज्यमें इस बात की कुछ भी कमी न थी।
ता की कमी होनेसे अंग्रेज़ोंने मराठा-संघ राज्यके एक एक
को आसानीके साथ जीत लिया। पेशवा जातिके ब्राह्मण
र संघ-राज्यके और और सरदार नीच जातिके थे। इस लिये
व है कि पेशवा की अधीनता उनको स्वीकार न रही हो।
पेशवा ही ने पहिले पहल मराठा राज्यमें जागीर देने की
चलाई। शिवाजी कभी किसीको जागीर नहीं देता था।
सभी को तनख्वाह देकर नौकर रखता था।

जागीर देनेकी प्रथाका फल यह हुआ कि जैसे जैसे पेश-
की शक्ति घटती गई वैसे वैसे जागीरदार लोग स्वतंत्र होते
। यहां तक कि सिन्धिया और होलकरने पेशवाको भी दबा
और यही मराठोंकी अवनतिका मुख्य कारण हो गया।*

शिक्षा और सुधार—बादशाह शाह आलम उन दिनों
-मात्रका बादशाह था। फिर भी कम्पनी उसको नज़र देती
और उसीके नामका सिक्का चलाती थी। लार्ड हेस्टिंग्सने
ना देना बंद कर दिया। लार्ड कार्नवालिसने मुकद्दमा फैसला
का काम जजोंको और मालगुज़ारी वसूल करनेका काम
टरोंको दिया था। लार्ड हेस्टिंग्सने ज़िलेके कलेक्टरको
ट्रेट भी बना दिया और उसको फौज़दारी मुकद्दमोंके फैसला
का भी अधिकार दे दिया। यही नियम अब तक प्रचलित
१८१९ ई० में डच् लोगोंसे सिंगापुर ले लिया गया। इसका
म यह हुआ कि अंग्रेज़ोंकी नई आबादी आस्ट्रेलियाका
य तथा चीन व जापानका कुल व्यापार अंग्रेज़ोंके हाथमें
या। इसी समय बंगला भाषामें 'समाचार दर्पण' नामका

* Dr. S. N. Sen—Maratha Administration.

पहिले पहल एक समाचार पत्र निकला। उन दिनोंमें मद्रास हातेके गवर्नर सर टामस मनरो (Sir Thomas Munro) ने अपने इलाकेमें प्रजाओंसे नया बन्दोबस्त किया। तहसीलदार मालगुजारी वसूल करके सरकारके खजानेमें जमा करते थे। इसीका नाम रैयतवारी बन्दोबस्त पड़ा। इसी प्रकार लार्ड हेस्टिंग्स हिमालयसे कुमारी अन्तरीप तक और सतलजसे ब्रह्मपुत्रा तकके भूभागपर अंग्रेजी सरकारकी विजय पताका फहराकर १८२३ ई० में अपने घरको सिधारे।

लार्ड आमर्स्ट (१८२३--२८ ई०)—हेस्टिंग्सके बाद लार्ड आमर्स्ट (Amherst) इस देशका गवर्नर जेनरल बनकर आया। वह बड़ा अनुभवी पुरुष था। ब्रह्माकी पहिली लड़ाई इसीके समयमें हुई थी।

ब्रह्माकी पहिली लड़ाई (१८२४--२६ ई०)—कुल ब्रह्मा देश (Burma) में पहिले पहल आवा, अराकान और पेगू नामकी तीन रियासतें थीं। इस देशके रहनेवाले बौद्ध मतके हैं। पन्द्रहवीं सदीमें पेगू और तनासरीममें व्यापार करनेके लिये दूर दूरसे व्यापारी लोग आते थे। इसके बाद पुर्तगीजोंने वहां पहुंचकर कुल व्यापार अपने हाथमें कर लिया। चटगांव भी उन लोगोंने जीत लिया। सन् १७५० ई० में एक नये राजवंशने सारे देशपर अपना प्रभुत्व जमा लिया। धीरे धीरे उसने अराकान भी जीत लिया। सन् १८२२ ई० में ब्रह्माके सेनापति बन्दूलाने आसाम, मणिपुर आदि देशोंको जीता। इससे ब्रह्मा रियासतकी सीमा कम्पनीके राज्य तक पहुंच गई। तबहीसे सीमान्तमें छोटी छोटी लड़ाइयां आरम्भ हो गई। एक बार ब्रह्माके राजाने लाट साहबको लिखा कि चटगांव, ढाका, मुर्शिदाबाद आदि स्थान हमारे हैं, उनको हमें लौटा दो। उसके ऐसा कहनेपर लाट साहबने उसकी बड़ी हंसी उड़ाई। इसलिये बन्दूलाने बंगालपर चढ़ाई करनेकी तैयारी की।

घटनायें—बंगालसे एक देशी पल्टन असामकी ओर भेजी गई, और मद्रासले एक भारी सेना जल-पथसे रंगून रवाना की गई। दो साल तक लड़ाई चलती रही। ब्रह्मा बड़ा जंगली है और वहां पानी भी बहुत बरसता है। इस लिये ब्रह्मामें बीमारियां बहुत फैलती हैं। अंग्रेजी पल्टनके बहुत लोग इस बीमारीसे मर गये। फिर भी अंग्रेजोंने रंगून ले लिया, इस लिये बंदूलाको उत्तरसे दक्षिण आना पड़ा। पर वह लड़ाईमें मारा गया। अन्तमें अंग्रेज़ोंने प्रोम ले लिया और राजधानी आवा पर धावा किया। तब ब्रह्माके राजाने तुरन्त सुलह कर ली।

सन्धि—याण्डाबूकी सन्धि (१८२६ ई०) के अनुसार ब्रह्माके राजाने अंग्रेज़ोंको असाम, अराकान और तनासरम दे दिया। आवामें अंग्रेज़ोंका एक रेसिडेन्ट तबसे रहने लगा और राजाको एक करोड़ रुपये हरजाना देने पड़े। इस लड़ाईमें कम्पनीको १५,००,००० खर्चने पड़े थे। तथा पहिले पहल स्टीमर यहां प्रयोगमें लाया गया था।

भरतपुरकी विजय लार्ड लेक भरतपुरके किलेको न ले सका था। तब लोगोंका ऐसा अनुमान था कि वह किला अजेय है। भरतपुरके जाट राजाके मरनेके बाद उसके कुमारको कैद कर उसका भतीजा दुर्जनशाल राजा बन बैठा। कुमारके मित्रोंने लाट साहबकी शरण ली। दुर्जनशालने कहा कि "मैं अंग्रेज़ोंसे डरता नहीं"। लार्ड आमर्स्टने उसका अभिमान चूर्ण करनेके लिये कोम्बरमियर (Combermere) को भेजा। उसने किलेको फतह किया। दुर्जनशाल कैद कर लिया गया और कुमारको गद्दी दी गई। एक अंग्रेज़ रेसिडेन्ट उसका संरक्षक बनकर राजकाज चलाने लगा। सन् १८२८ ई० में लाट साहबने कामसे इस्तीफा दे दिया।

सारांश

१८१३ ई०	लार्ड हेस्टिंग्स गवर्नर जेनरल
१८१४—१६ ई०	नैपालसे लड़ाई
१८१७—१९ ,,	मराठोंसे तीसरी लड़ाई
१८१९ ई०	सिंगापुर की विजय
१८२३ ,,	लार्ड आमर्स्ट गवर्नर जेनरल
१८२४—२६ ,,	ब्रह्मासे लड़ाई
१८२६ ,,	भरतपुरकी विजय, याण्डाबूकी सं

(१३) लार्ड बेण्टिंक।

(१८२८-३५ ई०)

लार्ड विलियम बेण्टिक (Bentinck) कुछ दिनों त मद्रासके गवर्नर रह चुके थे। लार्ड आमर्स्टने जब नौकरी छो दी तब बोर्ड आफ कन्ट्रोलने उसको गवर्नर जेनरल बना हिन्दुस्तान भेजा। इन दिनों विलायतमें राजनैतिक सुध के लिये आन्दोलन मच रहा था। अन्तमें १८३२ ई० में पहि सुधार कानून जारी भी हो गया। इसके द्वारा बहुतसे म वित्तिवाले लोग पार्लमेन्टके मेम्बर चुने गये। उन्हीं लोगों उत्साहसे सर्व साधारणकी भलाईके लिये बहुतसे कानून ब उन्हीं सुधारोंसे प्रेरित होकर बेण्टिकने भी हिन्दुस्तानमें औ और अनेक प्रकारके सुधारोंके द्वारा देशकी भलाई की।

सुधार—ब्रह्माकी पहली लड़ाईमें कम्पनीके बहुतसे रु पानीमें मिल गये थे। इसलिये कम्पनीको कर्जा लेना पड़ा खर्च घटा लार्ड बेण्टिकने आरम्भमें इसी ओर ध्यान दिया।
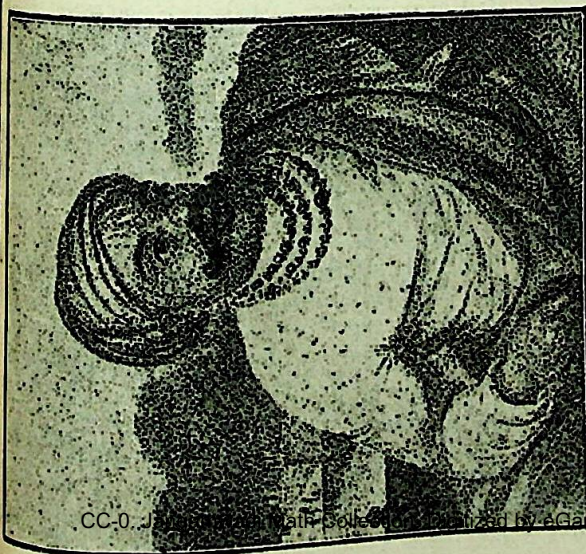
(Chap. 8.)

Madhavrao Scindia.

(Chap. 13.)

Lord Bentinck.

आमदनी बढ़ाकर कर्ज़ा घटानेका प्रयत्न किया। सेना विभाग अफसरोंका भत्ता बन्द कर दिया। उसने मालवाके अफ़ीम कर लगाया और उसको वसूल करनेका ठीक ठीक प्रबन्ध भी । बंगाल, मद्रास आदि सूबोंमें बन्दोवस्त करते समय स्थानोंपर कर नहीं लगाया गया था। लार्ड बेंटिंकने स्थानों पर भी कर लगाये। हिन्दुस्तानियोंको उसने बड़ी नौकरियां दीं। इससे भी बहुत खर्च घट गया। पश्चि- प्रदेश (संयुक्तप्रदेश) एक अलग सूबा बना दिया गया। देशकी मालगुज़ारी वसूल करनेके लिये एक रेवेन्यू बोर्ड त हुआ। वहांकी रियायाके साथ तीस साला बन्दोबस्त गया।

लार्ड कार्नवालिसने जिलेको शासन प्रबन्धका मूल स्थान ा। लार्ड बेण्टिंकने कई एक जिलेके काम काजकी देख करनेके लिये एक एक कमिश्नर नियुक्त किया। लार्ड उसने किसी किसी स्थानके कलेक्टरको मैजिस्ट्रेट भी दिया था। लार्ड बेण्टिंकने सबके सब कलेक्टरोंको मैजि- बना दिया। इस समयसे मैजिस्ट्रेटको मालगुज़ारी वसूल पड़ती है और फौजदारी मुकद्दमोंमें राय भी देनी पड़ती ी लोगोंको अच्छी अच्छी नौकरी देनेके लिये उसने कलेक्टर और सदरआला (सब जज) नामके नये पद । लार्ड कार्नवालिसके समयसे हिन्दुस्तानियोंको नौकरी नहीं मिलती थी। बेण्टिंकने उस नीतिका अन्त दिया।

सी प्रकारसे बेण्टिंकने केवल मालिककीही भलाई नहीं की स देश वासियोंका भी बड़ा उपकार किया। जिन जिन के लिये बेण्टिंकका नाम इस देशमें चिरस्थायी रहेगा एक यह भी था कि उसने सती होनेकी प्रथाका अन्त या। लार्ड वेलेसलीने पहिले पहल इस विषय पर ध्यान

दिया था। लार्ड मिन्टोके समयसे सती होनेके पहिले उसके कुटुम्बियोंको मैजिस्ट्रेट या पुलीसके पास सूचना देनी पड़ती थी। इसके बाद सरकार यह जांच करती थी कि विधवा स्वेच्छासे मरती है या नहीं। ऐसा प्रबन्ध करने पर भी सन् १८१६ ई० से लेकर १८२६ ई० तक केवल बंगालमें प्रायः डेढ़ हजार स्त्रियां जल मरीं। ऐसी दशामें कोई उपाय निकालनेकी आवश्यकता पड़ी।

अन्तमें बेण्टिंकने हिन्दू अफसरोंकी, सेना विभागके लोगोंकी और हिन्दू समाजके मुखियोंकी अनुमति लेकर सन् १८२९ में एक कानून बना दिया। इसके अनुसार हिन्दू विधवाओंका जल मरना अपराध गिना जाता है। सती होनेमें सहायता देने पर आजकल हत्याका अपराध लगता है।

ठगी—मुग़ल साम्राज्यकी घटतीके समय कुल हिन्दुस्तान में गड़बड़ी फैल गई थी। अवसर पाकर बहुतसे डाकू दल बांधकर अपना पेट पालते थे। इनमेंसे ठग नामके एक तरहके डाकू थे। ये भेष बदले चारों ओर घूमा करते थे और भोलेभाले राहियोंके साथ चलते चलते जब उनको निश्चिन्त पाते थे तब वे उनके गलेमें रूमालका फन्दा लगा कर मार डालते थे। फिर उनको वहीं गाड़ कर उनकी वस्तु लेकर चल देते थे। इनका झुंड बड़े नियमित ढंगका बना रहता था। इनमेंसे कुछ तो आगे बढ़कर खबर लाते थे (Scout), कुछ क़ब्र खोद रखते थे और कुछ सौदागर, या राजा, या साधू बन कर लोगोंको फंसाते थे। इनके झुंडमें हिन्दू और मुसलमान एक साथ मिल जुलकर काम करते थे। इनकी एक गुप्त भाषा भी थी। इनमेंसे कोई कोई नौकरी या खेतीबारी भी करता था। परन्तु यह सब केवल दिखौआ था। उनका असली पेशा ठगी था। उन दिनों अच्छी सड़कें न होने और पुलीसका प्रबन्ध ठीक ठीक न रहनेसे लोगोंके पौ बारह थे।

कम्पनीकी रियासत जब देशके आर पार फैल गई तब-
कटकसे कर्नाटिक तक और सतलज नदीसे ब्रह्मपुत्र तक ठग
दिखाई पड़े। लोगोंका देशाटनादि करना कठिन हो गया था।
हर साल प्रायः दश हज़ारके लोग इनके हाथसे मारे जाते थे।
यह सब देख सुन कर लार्ड बेण्टिकने ठगोंके पकड़नेके लिये एक
नया विभाग खोला। कप्तान स्लीमन् (Sleeman) इस
विभागके अफ़सर बनाये गये। उन्होंने सात बरस तक लगातार
यत्न करके लगभग डेढ़ हज़ार ठगोंको पकड़ा। और इस
तरह कुछ दिनों तक बराबर काम करनेके बाद ठगोंका उपद्रव
कम हुआ। इसी समय डकैती बन्द करनेके भी बहुत कुछ
उपाय किये गये।

कम्पनीका नया आज्ञा-पत्र (१८३३ ई०)— बेण्टिंकके समयमें
कम्पनीको पार्लमेन्टसे एक नया आज्ञा-पत्र मिला। इसके अनुसार
कम्पनीके व्यापार करनेका अधिकार बिलकुल रद्द कर दिया गया
और उसको २० सालके लिये राज्य करनेका अधिकार दिया गया।
इसी समय यह भी ठीक हुआ कि कौंसिलके साथ मिल कर
गवर्नर जेनरल कुल हिन्दुस्तानके लिये कानून जारी कर सकेंगे।
उनकी कौंसिलमें जंगी लाटके अतिरिक्त और चार मेम्बर रहेंगे।
चौथा ला-मेम्बर विलायतसे चुना जावेगा और वह कानून
तैयार करेगा। पश्चिमोत्तर (आगरा व अवध) सूबे पर शासन
करनेके लिये लेफ्टेनेन्ट गवर्नर होगा। हिन्दुस्तानियोंको सब
सरकारी नौकरियां मिलेंगी। इस आज्ञापत्रके अनुसार कम्पनीवालों
का अधिकार घटाकर बोर्ड आफ़ कन्ट्रोलका अधिकार बढ़ा
दिया गया। लार्ड मेकाले (Lord Macaulay) पहिला 'ला'
मेम्बर बन कर इस देशमें आया। इसने ताज़िरात हिन्द (Indian
Penal Code) नामकी कानूनी पुस्तक बनाई।

शिक्षा—सन् १८१३ ई० के एक्टके अनुसार कम्पनीको
सालाना एक लाख रुपया हिन्दुस्तानियोंकी शिक्षाके लिये खर्च

करना पड़ता था। इस समय तक वह रुपया लोगोंको संस्कृत, फ़ारसी, बंगला आदि भाषाओंकी शिक्षा देने तथा उन भाषाओंमें पुस्तकें छपवानेमें खर्च किया जाता था। सन् १८३३ ई०के आज्ञा-पत्रके अनुसार जब बड़े बड़े पद हिन्दुस्तानियोंको दिये जाने लगे तब स्वभावतः यह प्रश्न उठा कि जब सरकारी काम काज अंग्रेज़ी भाषामें होता रहेगा तब शिक्षाका माध्यम कौनसी भाषा हो? अनेक लोगोंके भिन्न भिन्न मतोंके अनन्तर राजा राम मोहन राय तथा लार्ड मेकालेने अंग्रेज़ी भाषाहीको शिक्षाका माध्यम होनेकी सम्मति दी। तदनुसार लार्ड बेण्टिकने अंग्रेज़ी भाषाहीको माध्यम मानकर शिक्षा देनेका निश्चय किया। इसके अनन्तर अंग्रेज़ी सिखानेके लिये चारों तरफ स्कूल खोले गये। सन् १८३५ ई० में लार्ड बेण्टिकने यूरोपीय चिकित्सा शास्त्र सिखानेके लिये कलकत्तेमें एक 'मेडिकल कालेज' खोला।

देशी रियासतोंके साथ बर्ताव—कम्पनीके डाइरेक्टरोंने लार्ड हेस्टिंग्सके बाद उदासीनताकी नीतिका अनुशीलन करना चाहा। उन लोगोंका यह अनुमान था कि लार्ड हेस्टिंग्स सब गड़बड़ीका नाश कर आये हैं। लार्ड बेण्टिकने भी इसी नीतिके अनुसार काम करनेकी इच्छा की। इसका फल यह हुआ कि अवध, हैदराबाद, राजपुताना आदि देशी राज्योंमें बड़ा अन्धेर मच गया। फिर भी विवश होकर लार्ड बेण्टिंकको दो एक स्थानोंमें हस्तक्षेप करना पड़ा। उसका फल अच्छाही हुआ। प्रजापर अत्याचार करने तथा बदचलनीके कारण१८३० ई० में बेण्टिकने पचास सालके लिये मैसूरके राजासे राज्य प्रबन्ध लेकर अंग्रेज़ अफ़सरोंके हाथमें दे दिया। बेण्टिंकके समयमें केवल कुर्ग और कछार (असाममें) कम्पनीके राज्यमें मिला लिये गये।

और और घटनायें—पहिले ही कहा जा चुका है कि ब्रह्माकी पहिली लड़ाईमें पहिले पहल उस देशमें स्टीमरका प्रयोग हुआ था। लार्ड बेण्टिकने बड़ी बड़ी नदियोंमें स्टीमर

चलानेका प्रबन्ध किया जिससे व्यापार तथा आवागमनके लिये बड़ा सुभीता होगया। जनताको धन संग्रहमें सुभीता होनेके लिये लार्ड बेण्टिकने पहिले पहल कलकत्तेमें एक सेविंग्स बैंक (Savings Bank) खोला। आजकल हर एक डाकखानेमें सेविंग्स बैंक है। थोड़ेमें, एक शान्तिमय तथा हरा भरा साम्राज्य स्थापित करनेके लिये उन दिनों जिन जिन प्रबन्धोंकी आवश्यकता थी लार्ड बेण्टिकने सब कुछ किया।

लार्ड बेण्टिकके चले जानेके बाद (१८३५ ई०) सर चार्ल्स मेटकाफ़ (Sir Charles Metcalfe) साल भरके लिये गवर्नर-जेनरल हुये। उसने समाचार पत्रोंको अपनी अपनी राय प्रकट करनेकी आज्ञा दी।

सारांश

१८२८ ई०	लार्ड बेण्टिंक गवर्नर जेनरल
१८२९ „	सती होनेकी प्रथाका अन्त
१८३३ „	कम्पनीका नया आज्ञा-पत्र

(१३) लार्ड आकलैण्ड और एलेनबरा।

(१८३६–४४ ई०)

लार्ड आकलैण्ड (१८३६–४२ ई०)—सन् १८३६ ई० में लार्ड आकलैण्ड (Aucland) गवर्नर जेनरल बने। दूसरे साल १८३७ ई० में महारानी विक्टोरियाको राजगद्दी मिली। लार्ड बेण्टिकके साथही साथ शान्तिकालका अन्त हो गया। फिर आकाशमें बादल छा गये और बिजली चमकने लगी। आकलैण्डके अर्थ लड़ाईमें फँस गये। इसका परिणाम यह हुआ कि देशका

बहुत सा धन नष्ट हुआ और बहुतसे लोग व्यर्थ मारे गये।

अफ़गान-युद्ध—उन्नीसवीं सदीके प्रारम्भमें नेपोलियनका हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करनेकी अभिलाषा सुन अंग्रेज़ लोग जैसे घबड़ा गये थे, वैसेही उस समय रूसकी चढ़ाई करनेकी ख़बर सुनकर ब्रिटिश सरकार बहुत घबड़ा गई। यह बात तो सच है कि उन दिनों रूसका ज़ार बड़े उत्साहके साथ एशियामें अपनी रियासत बढ़ा रहा था। उसके एलची ईरान और अफ़गानिस्तान तक पहुंचे थे। फिर ईरानके शाह रूससे सहायता ले पश्चिमी अफ़गानिस्तान पर चढ़ाई करनेका विचार कर रहे थे। इन सब बातोंको सुन कर ब्रिटिश सरकारने रूसके ज़ार को आगे बढ़नेसे रोकनेके लिये कुछ कार्रवाई करनाही ठीक समझा। इसीसे अफ़गानिस्तानके साथ १८३८ ई० में पहिली लड़ाई छिड़ी।

अहमदशाह अबदालीके मरनेके बाद उसका राज्य टूट गया। इधर रणजीत सिंह पञ्जाब, काश्मीर, पेशावर आदि दबा बैठे, उधर ईरानके शाहने और रूसके ज़ारने अफ़गानिस्तान के पश्चिमी और उत्तरी हिस्से जब्त कर लिये। अफ़गानिस्तानमें अबदालीकी सन्तान आपसमें लड़ने लगी। इसलिये उन दिनों अफ़गानिस्तानमें बड़ा हल चल मच गया। इसी लड़ाईमें दोस्त महम्मद नामका एक सरदार अहमदशाहके पौत्र शाह शुजाको निकालकर स्वयं अफ़गानिस्तानका अमीर बन बैठा। शाह शुजा वहांसे भाग कर लुधियानेमें रहने लगा और रणजीत सिंह और अंग्रेज़ोंके साथ अपना राज्य लेने का प्रबन्ध करने लगा।

सन् १८३६ ई० में आकलैण्डने अमीर दोस्त महम्मदके साथ मित्रता करके अफ़गानिस्तानमें रूसी एलचियोंकी कार्रवाई व्यर्थ करनेके लिये अपनी ओरसे एक दूत भेजा। अमीरने कहा कि रणजीत सिंहसे कहकर मुझे पेशावर लौटा दो तो मैं तुम्हारे साथ मित्रता करूंगा। रणजीत सिंह अंग्रेज़ोंके मित्र थे अतः

आकलैण्ड उससे यह प्रस्ताव न कर सका। उधर दोस्त महम्मद अंग्रेज़ोंके मनमें जलन पैदा करनेके लिये रूसी एलचीकी आवभगत करने लगा। यह समाचार पातेही लाट साहब घबड़ा गये और अफ़गानिस्तानमें रूसी लोगोंके प्रभावका अन्त करके अंग्रेज़ोंका प्रभुत्व स्थापित करना चाहा। इसलिये शाहशुजाको अमीर बनानेका प्रबन्ध होने लगा। उस कारवाईमें रणजीत सिंहने भी भाग लिया। लेकिन उसने अपनी रियासतसे होकर अंग्रेज़ी सेनाको जाने न दिया। इसीलिये अंग्रेज़ोंको सिन्धमें बोलन दर्राके निकट डीपू बनाना पड़ा। पर सिन्धके स्वतंत्र होनेके कारण सब बातोंका ठीक ठीक प्रबन्ध न हो सका। फिर बम्बई, कलकत्ता वगैरः बड़ी जगहों (Base) के दूर होनेके कारण अंग्रेज़ी सेनाको और भी आपत्तियां झेलनी पड़ीं।

घटनायें—प्रायः बीस हज़ारकी एक अंग्रेज़ी सेना सिन्धसे होती हुई बहुत कष्ट सहकर शाहशुजाके साथ अफ़गानिस्तानमें जा पहुंची। यह सेना आसानीसे कन्दहार लेकर गज़नीकी ओर बढ़ी। अंग्रेज़ सेनापतिको पता लगा था कि गज़नी लेनेके लिये लड़ना न पड़ेगा अतः वह बड़ी बड़ी तोपें अपने पीछे छोड़ गया। गज़नी पहुंचनेपर एक बड़ा भारी गढ़ दृष्टिगोचर हुआ। उसकी सेनाके साथ बहुत अधिक दिनके लिये रसद न थी कि वे उस किलेको घेर कर पड़े रहे। अन्तमें बारूदसे उस किलेका एक अंश उड़ा दिया गया। किला तोड़नेके बाद १८३६ ई० में गज़नी शहर भी अंग्रेज़ोंने ले लिया। यह समाचार पातेही दोस्त महम्मद काबुल छोड़कर भागा और अंग्रेज़ोंने उसे ले लिया। सन् १८३६ ई० में शाह शुजा फिर अमीर बनाया गया। पर वह नाम मात्र अमीर बना, क्योंकि राजकाज सब कुछ म्याकनाटन (Macnaghton) नामका एक अंग्रेज करने लगा। कुछ दिनोंके बाद दोस्त महम्मद पकड़ लिया गया और कलकत्ता भेज दिया गया।

जीत होनेके बाद धीरे धीरे कुछ अंग्रेजी सेना वहांसें हटा ली गई। यद्यपि अंग्रेजोंने शाहशुजाको अफ़गानिस्तानका राज्य दिला दिया, किन्तु वह प्रजाकी प्रीति और भक्ति प्राप्त न कर सका। वास्तवमें जब अफ़गानोंने देखा कि शाहशुजाने अपनी जन्मभूमिको परदेशियोंके हाथ सौंप दिया है तब वे बड़े बिगड़े। तब तक अंग्रेजोंकी आधी सेना वहांसे चली गई थी। अवसर पाकर सारी अफ़गान जाति दोस्त महम्मदके बेटे अकबर खां को अगुआ बना अंग्रेजोंसे लड़नेके लिये तैयार हो गई। चारों ओर लोग विद्रोही बन गये। म्याकनाटन आदि बड़े बड़े अंग्रेजोंको उन्होंने मार डाला, रसद और लड़ाईका सामान लूट लिया। संख्यामें अधिक न होनेके कारण अफ़गानिस्तान छोड़ देनेकी प्रतिज्ञा कर अंग्रेजोंको सन्धि कर लेनी पड़ी। उसके बाद अंग्रेजी सेनाने घरकी राह ली। उनके लौटते समय जंगली अफ़गानोंने सन्धिकी शर्त तोड़ दी और अंग्रेजोंको पीछेसे सताने लगे और जिसको पकड़ पाया उसीको मार डाला।

अन्तमें अंग्रेजी सेना खुर्द काबुलके दर्रेमें आ पहुंची। तब हजारों अफ़गान पहाड़परसे पत्थरके बड़े बड़े ढोंके लुड़काने और बन्दूक चलाने लगे। पीछेसे एक अफ़गानी सेना अंग्रेजों पर टूट पड़ी। तीन तरफसे हमला होनेपर और सड़क तंग होनेके कारण अंग्रेजी सेनाके पांव उखड़ गये और अपने अपने स्थानपर खड़े रहकर जान दे दी। चार हज़ार सिपाही और बारह हज़ार नौकर चाकर काबुलसे चले थे। उनमेंसे केवल डाक्टर ब्राइडन (Doctor Brydon) जीवित लौटे और सबके सब वहींपर मरकर ढेर हो गये। इस दुर्घटनाके बाद ही लार्ड आकलैण्डने १८४२ ई०में नौकरीसे इस्तीफा दे दिया।

लार्ड एलेनबरा (१८४२-४४ ई०)—लार्ड एलेनबरा (Elenborough) जब गवर्नर जेनरल बनकर कलकत्ता पहुंचा

तब सेनापति सेल (Sale) को काबुलियोंने जलालाबादमें और जेनरल नाट (Knott) को कन्दहारमें घेर लिया था, इसके अतिरिक्त उन्होंने गज़नी शहर ले लिया था। नये लाट साहबकी नीति बिलकुल उल्टी ही थी। वह इस लड़ाईके पक्षमें न था और शीघ्रही उसका अन्त करना चाहता था। तथापि आते ही पहले उसको सेल और नाटको बचानेका प्रयत्न करना पड़ा। इसलिये उसने जेनरल पोलक (Pollock) को भेजा जिसने जलालाबाद और काबुल ले लिया। उधरसे जेनरल नाट शत्रुओंको हराकर काबुल पहुंचा। दोनोंने मिलकर अंग्रेज़ कैदियों को छुड़ाया और काबुलका सुन्दर बाज़ार तोड़कर हिन्दुस्तानको लौट आये। उधर काबुली लोगोंने शाहशुजाको मार डाला। अंग्रेज़ी सेनाके इस देशमें लौटते ही गवर्नर जेनरलने दोस्त महम्मदको मुक्त कर दिया। वह घर लौटकर १८४२ ई० में फिर अमीर बन बैठा।

सिन्धकी विजय (१८४३ ई०)—अफ़ग़ान लड़ाईके समय सिन्ध रियासतको डीपू बनाना पड़ा था। इसलिये लार्ड आकलैण्डने सिन्धको प्रायः कम्पनीकी रियासत में मिला ही लिया था। उन दिनों सिन्ध कई रियासतोंमें बंटा हुआ था। इन पर कई एक विदेशी अमीर शासन करते थे। व्यापारके सुभीते के लिये सिन्धु नदी (Indus) अंग्रेज़ोंके अधिकारमें रखनेकी आवश्यकता हुई। फिर पश्चिमी सीमाको सुदृढ़ बनानेके लिये सिन्ध देशका जीतना बहुत उपयोगी समझा गया। इसलिये चार्ल्स नेपियर (Sir Charles Napier) को सिन्ध जीतनेके लिये भेजा गया। नेपियरने अमीरोंको लड़नेके लिये बाध्य किया। जब वे हार गये तब उनकी रियासत कम्पनीके राज्यमें मिला ली गयी।

सिन्ध जीत लेनेके बाद ब्रह्मदेशमें तनासरिमसे लेकर सिन्ध तकके समुद्र तटके मालिक अंग्रेज़ हो गये। उसका परिणाम

यह हुआ कि उस समयसे किसी देशी शक्ति का किसी वाहरी शक्तिके साथ सम्बन्ध नहीं रहने पाया और विदेशी शत्रुओंसे समुद्र तटकी रक्षा करना इस समयसे अंग्रेजी जंगी जहाजोंका काम हो गया।

ग्वालियरकी गड़बड़ी—दौलत राव सिन्धिया निःसन्तान था। इसलिये उसने जनकजीको गोद लिया। जनकजीके मरनेके बाद (१८४३ ई०) ग्वालियरके दरबारमें गड़बड़ी मची। अवसर पाकर सेना विभागके लोगोंने ज़ोर बांधा और मनमानी करने लगे। सिन्धियाकी सेना बड़ी भारी थी। फिर रणजीत सिंहके मरनेके बाद पञ्जाबमें बड़ा हलचल मचा था। उस देशमें भी सेना विभागकी यही दशा थी। सिख लोगोंके साथ मिलकर कम्पनीको रियासत पर चढ़ाई न कर सकें, इसलिये लार्ड साहबने ग्वालियरकी सेनाको पहले दबाना चाहा। और उसे महाराजपुर और पुनियारकी लड़ाइयोंमें १८४३ ई० में हराया। ग्वालियरकी सेना घटा दी गयी और एक अंग्रेज रेसिडेन्ट नाबालिग़ सिन्धियाका संरक्षक बनाया गया। इस लड़ाईका फल यह हुआ कि जब सिख लोगोंसे लड़ाई छिड़ी तब अंग्रेज़ोंको ग्वालियरकी सेनाकी निगरानी नहीं करनी पड़ी।

सन् १८४४ ई० में लार्ड एलेनबरा बिदा हुए और लार्ड हार्डिञ्ज गवर्नर जेनरल बने।

सारांश

१८३६ ई०	लार्ड आकलैण्ड गवर्नर जेनरल
१८३७ ,,	महारानी विक्टोरियाको गद्दी मिली
१८३९ ,,	रणजीतसिंहकी मृत्यु; काबुल व गजनीकी विजय
१८४० ,,	अफ़ग़ानिस्तानमें विद्रोह

१८४२ ,,	अंग्रेज़ोंकी हार। लार्ड एलेनबरा गवर्नर जेनरल। काबुल व जलालाबाद ले लिये गये।
१८४३ ,,	सिन्धकी विजय। ग्वालियर से लड़ाई

(१५) लार्ड हार्डिञ्ज (पहिला)

(१८४४–४८ ई०)

अभी थोड़े ही दिन पहले जो लार्ड हार्डिञ्ज (Hardinge) हमारे वाइसराय रह चुके हैं, पहले लार्ड हार्डिञ्ज इन्हींके दादा लगते थे।

सुधारादि—हार्डिञ्ज आते ही सिक्खोंके झंझटमें पड़ गया। सदा उसी ओर उसको ध्यान रखना पड़ता था। फिर भी जो कुछ अवकाश मिला उसमें उसने कई बातोंका सुधार किया। उसके समयमें बंगालमें करीब सौ नये स्कूल खोले गये। पश्चिमोत्तर प्रदेश (युक्त प्रदेश) के रुड़कीमें एक इञ्जिनियरिंग कालेज स्थापित हुआ और गंगाजीकी नहर बनने लगी। उसने रेल चलानेकी भी चेष्टा की थी।

पंजाबमें हलचल—सन् १८३९ ई० में महाराज रणजीत सिंहकी मृत्यु हुई। उसकी सेना बड़ी उपद्रवी थी। शान्त रखने के लिये ही रणजीत सिंह उसे सदा लड़ाई भिड़ाईके काममें नियोजित रखता था। उसके मरनेके बाद वे मनमानी करने लगे। उन्हें रोकने वाला भी कोई न था। उन्हींकी इच्छानुसार दरबारका कामकाज चलाना पड़ता था। दरबारकी दशाभी बड़ी शोचनीय थी। रणजीतके मरनेके बाद छः सालके अवकाश

में कमसे कम तीन राजा गद्दीपर बैठाये गये और मार डाले गये। अन्तमें सेना विभागके लोगोंने रणजीतके एक नावालिग बेटे दिलीप सिंहको गद्दीपर बैठाया। उसकी माता उसके नामसे राजकाज चलाती रही।

रणजीत सिंहके जीते जी सिखोंसे अंग्रेज़ोंकी मित्रता थी और सतलज नदी जो कि १८०६ ई० की सन्धिके अनुसार कम्पनीके राज्य और रणजीत सिंहके राज्यकी सीमा थी निश्चित रही। परन्तु उसकी मृत्यु होनेपर उस सन्धिकी शर्त तोड़ दी गई।

सिखोंके साथ पहिली लड़ाई (१८४४-४६ ई०)— लाहौर दरबारने जब देखा कि सिपाहियोंका प्रभाव बहुत बढ़ गया है, तब घरेलू झगड़ा कम करनेके लिये उनको अंग्रेजोंसे लड़ा देना उचित समझा। उनसे दिल्ली लूट कर धन सम्पत्ति लानेकी बात भी कही गयी। लालच वश सन् १८४५ ई० के दिसम्बर महीनेमें करीब पचास-साठ हज़ार सिख सिपाहियोंने सतलज नदी पार कर अंग्रेजी रियासत पर चढ़ाई कर दी। इसलिये लार्ड हार्डिञ्जको बाध्य होकर उनसे लड़ना पड़ा।

घटनायें—फिरोज शाहमें अंग्रेजोंकी एक छावनी थी। सिख सेनापतिने इसी जगहके आसपास अधिकतर सेना रख कर आप दक्षिणी राह ली। सेनापति सर ह्यू गफ़ (Sir Hugh Gough) उसी रास्तेसे आ निकला। सन् १८४५ ई० में मुद्कीमें पहिली लड़ाई हुई जिसमें सिख लोग हार गये। पर अंग्रेज़ोंकी भी बड़ी हानि हुई। इसके बाद लार्ड हार्डिञ्ज स्वयं सेनापति बन कर लड़ने लगा।

तीन दिनके बाद अंग्रेजोंने फीरोज शाहमें फिर सिखोंका सामना किया। दिनभर लड़ाई होती रही किन्तु सिख लोग अपने स्थान पर अटल रहे। रातके समय वे बागी हो गये और अपने सेनापतिका खेमा लूट कर सतलज नदीके उसपार चले गये।

[इ]स प्रकार प्रातः काल बची खुची सेना पर अंग्रेज़ोंने विजय पाई।

सन् १८४६ ई० के जनवरी महीनेमें सिखोंने फिर सतलज [पा]रकर अंग्रेज़ी रियासत पर चढ़ाईकी। पर अंग्रेज़ोंने अलीवालकी [ल]ड़ाईमें उनको हरा दिया। कुछ दिनोंके बाद सोब्राओंकी लड़ाई [में] सिखोंकी फिर हार हुई। बाद इसके अंग्रेज़ी सेनाने सतलज [को] पार कर मियांमीरमें छावनी गाड़ी। तब लाहौरके दरबारने [स]न्धि कर ली।

सन्धि—इस सन्धिके अनुसार सतलज और व्यास [न]दियोंके बीचका दोआब कम्पनीकी रियासतमें मिला लिया गया, [ला]हौर दरबारकी सेनाकी संख्या घटा दी गई और उसे डेढ़ [क]रोड़ रुपये हरजानेके देने पड़े। पर खज़ानेमें उतने रुपये न थे। [इस]लिये दरबारके वज़ीर गुलाब सिंहको एक करोड़ रुपये पर [का]श्मीर बेच दिया गया। वह काश्मीरका स्वतन्त्र राजा बना [औ]र उससे एक अलग सन्धि की गई। काश्मीरके महाराजा [इन्ही]की सन्तान हैं। सर हेनरी लारेन्स (Henry Lawrence) [पं]जाबके रेसिडेन्ट बनाये गये। यह बात भी निश्चित हुई कि [ज]बतक महाराज दिलीप सिंह नाबालिग़ रहेंगे तबतक लाहौर [दर]बारको रेसिडेन्टके कहनेके अनुसार काम करना पड़ेगा। [दर]बारकी सहायताके लिये एक अंग्रेज़ी सहायक सेना लाहौरमें [रख] दी गई।

इसी तरह पञ्जाबकी सिख रियासतकी शक्ति मिटा कर लार्ड [हा]र्डिञ्ज सन् १८४८ ई० में घर सिधारे। जाते समय वह लार्ड [डल]होसीसे कह गया कि "जहां तक मेरा विश्वास है सात बरस [तक] और किसीसे लड़ाई न छिड़ेगी"। पर उसकी यह बात ठीक [न] निकली।

सारांश।

१८४४ ई० लार्ड हार्डिञ्ज गवर्नर जेनरल

१८४५ ई०. सिखोंकी पहली लड़ाई.

१८४६ ,, लाहौरकी सन्धि.

(१६) लार्ड डलहौसी।

(१८४८—५६ ई०)

लार्ड डलहौसी स्काटलैण्ड के एक अच्छे घरानेके थे। ३६ बरसकी अवस्थामें वे इस देशके गवर्नर जेनरल बन गये। लार्ड बेण्टिंककी तरह उन्होंने भी नानाप्रकारके सुधार किये तथा प्रत्येक विभाग पर अपनी निगाह रक्खी। युद्ध प्रिय न होने पर भी उनको लड़ाई भिड़ाईके काममें कुछ समय बिताना पड़ा।

सिखोंके साथ दूसरी लड़ाई (१८४८—४९ ई०)—लार्ड डलहौसीके आये छः महीने भी न बीतने पाये थे कि सिखोंके साथ दूसरी बार अंग्रेजोंको लड़ना पड़ा। वास्तवमें पहिली लड़ाईके बादही कुल पञ्जाब अंग्रेजोंके हाथमें चला गया था। ऐसा होनेके कारण सारी सिख जातिकी स्वतन्त्रता बिलकुल जाती रही। इसको बचानेके लिये इस बार सारी सिख जातिने अपनी कमर बांधी।

मूलराज नामका एक सिख सरदार मुलतानका जिलेदार था। लाहौर दरबारसे उसका कोई सम्बन्ध न था। वह स्वतन्त्र राजाकी भांति मुलतानपर शासन करता था। लाहौर दरबारका कामकाज जबसे अंग्रेज़ रेसिडेन्टकी देखरेखमें होने लगा तबसे वहां कोई भी अनुचित काम नहीं होने पाया। अन्य जिलेदारोंकी तरह मूलराजको भी आज्ञा दी गई कि वह अपना बहीखाता लाकर हिसाब दे। पर मूलराजने ऐसा करना अस्वीकार किया और नौकरी छोड़ दी। रेसिडेन्टने एक दूसरे आदमीको मु

(*Chap. 14*)

Ranajit Singh.
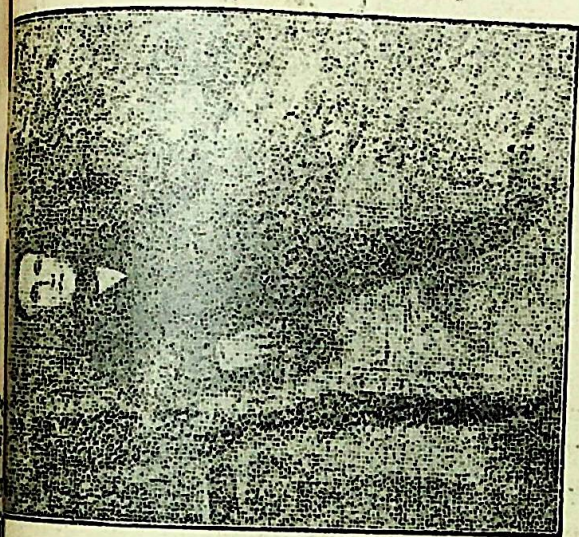
(*Chap. 16*)

Lord Dalhousie.

उनकी नौकरी दे दी और शहरपर शासन करनेके लिये दो अंग्रेज अफ़सरोंके साथ एक छोटीसी फौज भी रख दी। असली बात तो यह थी कि मूलराज उस शहरको छोड़ना नहीं चाहता था। इस लिये उसने षड्यन्त्र रच कर अंग्रेज अफ़सरोंको मार डाला और १८४७ ई० में अंग्रेज़ोंके साथ लड़नेके लिये सबको उभाड़ा। लाहौर दरबारमें कुछ दिन पहलेहीसे अंग्रेज़ोंके प्रतिकूल कानाफूसी चल रही थी। इसके लिये बड़े बड़े सरदारोंको निर्वासित कर दिया गया था।

घटनायें—मुलतानमें हलचल मचतेही सारे पञ्जाबमें गड़बड़ी फैल गयी। चारों ओर बड़े बड़े सिख सरदार पदच्युत किये गये सिपाहियोंको अपनी अपनी सेनामें भरती करने लगे। लाहौर दरबारने भी उनकी हर प्रकार से सहायता की। पेशावर वापस लेनेकी आशासे काबुलियोंने भी उनके साथ इस लड़ाईमें भाग लिया।

इधर लाट साहबने भी सिखोंसे लड़नेकी पूरी तैयारी की। लार्ड गफ फिर सेनापति बनाये गये। २०,००० सिपाही और [illegible] तोपोंके साथ वे आगे बढ़े। दूसरी एक और भारी फौज [illegible]की ओरसे आने लगी। लाट साहब अब पश्चिमी सरहदपर [illegible] गये।

प्रारम्भमें तो मूलराजने बड़ा जोर बांधा। पर हार होनेके कारण १८४७ ई० में मुलतानके किलेमें उसे आश्रय लेना पड़ा। उसने दस महीने गढ़की रक्षा की। अन्तमें १८४७ ई० में उसे किले को अंग्रेज़ोंके हाथ सौंपना पड़ा। लाट साहबने उसे पञ्जाबसे निकाल दिया। सेनापति गफ़ने सिखोंको कई एक छोटी छोटी लड़ाइयोंमें हराकर १८४६ ई० में चिलियानवालामें उनकी बड़ी फौजका सामना किया। सिख सेनापतिने अपनी सेनाको बड़ी अच्छी जगह पर खड़ा किया था। उनके सामने एक घना जंगल था और पीछे झेलम नदी बहती थी। इस बार सिख लोग अपने

देश और अपनी स्वतंत्रताकी रक्षा करनेके लिये लड़े। इस लड़ाईमें पहिले दिन उन्होंने अपनी जान लड़ा दी। अंग्रेज़ोंकी ओर बहुतसे लोग मारे गये और उनकी कई तोपें छीन ली गयीं। रात हो जाने पर लड़ाई बन्द कर दी गयी। हार-जीतका निश्चय नहीं हो सका। किन्तु सवेरा होतेही सिख सेना उस जगहको छोड़ पूरबकी ओर चली गई। उधर मुलतान ले लिया गया था। पश्चात् वहांकी सेना आकर गफ़के साथ मिल गयी।

एक महीनेके बाद लार्ड गफ़ने चनाब नदीके करीब गुजरातमें उनका सामना किया। लगातार नौ घण्टे तक लड़नेके बाद सिख सेना हार कर भागने लगी। अंग्रेज़ी सेनाने पेशावर तक उनका पीछा किया और बहुतोंको मार डाला। इस लड़ाईमें अंग्रेज़ोंने सिखोंसे लड़ाईका सारा सामान छीन लिया था। इसके बाद सिखोंकी शक्ति बिलकुल टूट गयी और उनका लड़नेका साहस न रहा।

फल—लार्ड डलहौसीने सारा पञ्जाब प्रदेश कम्पनीकी रियासतमें मिला लिया और महाराज दिलीप सिंहको पंशन-भोगी बना दिया। इसके बाद हाल जीते हुये देशके शासनका प्रबन्ध किया गया। उसे एक बोर्डके अधीन कर दिया गया। बोर्डको गवर्नर जेनरलकी राय लेकर काम करना पड़ता था। बाहरी शत्रुओंकी चढ़ाइयोंसे देशको बचानेके लिये पश्चिमी सीमापर कई एक गढ़ बनाये गये और छावनी बनाकर एक सेना भी रख दी गयी। उपद्रव शान्त करनेके लिये वहांके निवासियोंसे तलवार बन्दूक आदि छीन ली गयी। नयी सड़कें बनीं और किसानोंके साथ नया बन्दोबस्त किया गया। बहादुर सिख सिपाहियोंको कम्पनीकी सेनामें भर्ती कर लिया गया। इसी रीतिसे डलहौसीने नयी जीती हुई रियासतका शासन-प्रबन्ध किया।

ब्रह्माकी दूसरी लड़ाई (१८५२ ई०)—पहिली लड़ाईके बाद ब्रह्मामें अंग्रेज़ व्यापारी जाकर व्यापार आदि करते थे।

राजाने पहिले पहल इन्हीं विचारोंपर अत्याचार करना आरम्भ किया। इनके माल लूटे जाते थे और वे स्वयं कैद किये जाते थे। लाचार हो कर वहांके व्यापारियोंने लाट साहबसे शिकायत की। डलहौसीने राजाको समझानेके लिये एलची भेजा। पर राजाने उसका बड़ा अपमान किया। इसीलिये १८५२ ई० में ब्रह्मासे दूसरी लड़ाई छिड़ी।

अंग्रेज़ी जंगी जहाज़ोंने आसानीके साथ रंगून ले लिया। इसके बाद बेसीन और प्रोम भी ले लिये गये। अन्तमें डलहौसीने पेगू प्रदेश कम्पनीकी रियासतमें मिला लिया। इस लड़ाईका फल यह हुआ कि चटगांवसे सिंगापुर तकका समुद्र-तट भी अंग्रेज़ोंके अधिकारमें हो गया। और ब्रह्माके आस पास अंग्रेज़ी रियासत हो जानेके कारण उससे अब कुछ भी डर न रहा, क्योंकि बाहरी किसी शक्तिके साथ उसका तबसे किसी प्रकारका सम्बन्ध नहीं रहने पाया।

१८५३ ई० का आज्ञा-पत्र—१८५३ ई० में ईस्ट इण्डिया कम्पनीको पार्लमेन्टकी ओरसे एक नया आज्ञा-पत्र मिला। यह उसका अन्तिम आज्ञापत्र था। इसके अनुसार बंगालके लिये एक स्वतंत्र लेफ़्टेनेन्ट गवर्नर नियुक्त किया गया। इसके पहिले इसका काम गवर्नर जेनरलको करना पड़ता था। और यह बात निश्चित हुई कि अच्छी सरकारी नौकरी मिलनेके लिये विलायतके लोगोंको सिविल सर्विस परीक्षा पास करनी पड़ेगी। इसके पहिले कम्पनीके डाइरेक्टर लोग अपने संबन्धियोंको अच्छे अच्छे पद देकर इस देशमें भेजा करते थे।। इसी समय यह भी निश्चित हो गया कि जब चाहे पार्लमेन्ट ईस्ट इण्डिया कम्पनी का अन्त कर दे सकेगी।

डलहौसीका देशी रियासतोंके साथ बर्त्ताव—वेलेसलीकी भांति डलहौसीको भी यह पक्का विश्वास हो गया था कि देशी रियासतोंकी अपेक्षा अंग्रेज़ी राज्यमें प्रजाको अधिक सुख शान्ति

मिलती है क्योंकि वहां राज्य-शासनकी शैली बिगड़ने नहीं पाती। तुमने पहले पढ़ लिया होगा कि किसी राज्यकी नींव डालने वाला कितना योग्य पुरुष होता था। पर उसकी सन्तान प्रायः निकम्मी निकलती थी। जैसे शेरशाह और उसकी सन्तान, शिवाजी और उसका बेटा शम्भुजी आदि। इसका फल यह होता था कि निकम्मे बादशाहको हटाकर दूसरा कोई योग्य पुरुष स्वयं बादशाह बन बैठता था और कुछ दिनों तक वह अच्छे प्रकारसे काम-काज चलाता था। फिर वही दशा जारी रहती थी और देशी रियासतोंमें ऐसी घटनायें प्रायः हुआ करती थीं।

पर जिस समयसे देशी रियासतोंने अंग्रेज़ोंकी प्रधानता मान ली तबसे कोई भी सुयोग्य पुरुष दूसरे किसी अयोग्य राजा को हराकर स्वयं राजा नहीं बन सकता था। पुनः जब देशी रजवाड़ोंको लड़ने भिड़नेसे छुट्टी मिली तब उनका अत्याचार रियाया पर अधिकतर होता गया। पुत्र अथवा दत्तकपुत्र पिता की देखा देखी वही क्रम जारी रखता। ऐसा होनेसे अंग्रेज़ी राज-नीति पर आक्षेप होता कि वे प्रज़ाके हितोंकी अपेक्षा राजाओंके अधिकारों पर अधिक ध्यान देते हैं। यह सब देख सुन कर लार्ड डलहौसीने एक नई नीति जारी की, जिसका नाम "The Doctrine of Lapse" वा "ज़ब्तकी नीति" पड़ा है।

इसके अनुसार जब कोई देशी राजा निःसन्तान मर जाता तब गरीब प्रजाको दत्तक पुत्रके अत्याचारसे बचानेके लिये वह रियासत कम्पनीकी ओरसे जब्त कर ली जाती थी। अर्थात् किसी निःसन्तान राजाको किसी नाबालिग़को गोद लेनेकी आज्ञा नहीं दी जाती थी। इस रीतिके अनुसार डलहौसीने छोटी बड़ी कई एक देशी रियासतोंको जब्त कर लिया। सताराके राजा जो शिवाजीकी सन्तानके थे, मर जानेपर उनका राज्य कम्पनीकी रियासतमें सन् १८४८ ई० में मिला लिया गया। इसी तरह सम्बलपुर और झांसीकी रियासतें भी ज़ब्त कर ली

गई। सन् १८५३ ई० में नागपुरके भोसलेकी मृत्यु हुई॥ रानीको गोद लेनेकी आज्ञा नहीं दी गई और उसका राज्य कम्पनीकी रियासतमें मिला लिया गया। इस रियासतके मिला-लेनेसे बम्बईके साथ कलकत्ताका सीधा सम्बन्ध स्थापित हो गया। इसी नीतिके अनुसार कर्नाटिकके नवावकी और बिठूरमें रहने वाले पेशवाके मरनेके बाद उनकी सन्तानकी पेंशन बन्द कर दी गई। निज़ामके यहां कम्पनीके बहुतसे रुपये बाकी थे॥ इसलिये उसने कम्पनीको बरार प्रदेश आदि देकर अपना ऋण चुकाया। बरारकी रूई तभीसे अंग्रेज़ व्यापारियोंके हाथ लगी॥

अवधपर अधिकार (१८५६ ई०)—अवधमें बहुत दिनोंसे अन्धेर फैला हुआ था। दरबारमें एक अंग्रेज़ रेसिडेंट रहनेपर भी प्रबन्ध ठीक ठीक न हो सका। लाट साहबकी चेतावनी देने पर भी नवावने कुछ ध्यान नहीं दिया। अतः अवधकी रियासत कम्पनीके राज्यमें मिला ली गई। अन्तिम नवाब वाजिद अली शाहको पेन्शन देकर बिदा कर दिया गया।

जब्त-नीतिके दोष—परन्तु जब्त-नीतिका फल कम्पनीके लिये अन्तमें अच्छा न हुआ। यह बात मानी जा सकती है कि इस नीतिपर काम करनेसे उन दिनों कम्पनीकी रियासत बहुत फैल गई और आमदनी भी बढ़ गई। साथही साथ गरीब प्रजा देशी रजवाड़ोंके अत्याचारसे बच गई। परन्तु जिन राजाओंको गद्दीसे उतार दिया गया उनके संबन्धी और मित्रोंने सन् १८५७ के गदरमें भाग लेकर बड़ी निर्दयताके साथ अंग्रेजोंसे वर्ताव किया। अन्तमें गदरके बाद ब्रिटिश सरकारने इस नीतिको रद्द कर दिया।

देशकी भलाई—डलहौसी केवल लड़ाई या कम्पनीका राज्य बढ़ानेमेंही नहीं फंसा रहा, वरन् उसने प्रजाकी भलाई करने और उनकी सुख-शान्ति देनेकी ओर ध्यान दिया। इसके लिये उसने बड़ा परिश्रम किया। सरकारी काम-काज ठीक रीतिसे

चलानेके लिये उसने दफ़्तरमें अनेक प्रकारके सुधार किये। सड़क, सरकारी मकानात आदि बनाने तथा इनकी देख रेख करनेके लिये हर एक सूबेमें पब्लिक वर्कस डिपार्टमेन्ट (The Department of Public Works) नामका एक अलग विभाग खोला गया। कलकत्तेसे पेशावर तक एक नई सड़क बनी और नदियों पर पुल बनवा दिये गये। दूसरी एक सड़क पूर्वी बंगालसे होती हुई बर्मा तक बनायी गयी। देशके चारों ओरसे खबर आने जानेके लिये तार लगवाये गये। सन् १८५३ ई० में बम्बईसे थाना तक और दूसरे साल कलकत्तेसे रानीगंजके कोयलेकी खानों तक दो रेलवे लाइनें बनायी गयीं और हज़ारों मील भूमि नापी गयी। नयी नयी नहरें बनायी गयीं। इनमेंसे गोदावरीकी और बारी दोआबकी नहरें प्रसिद्ध हैं।

पहिले पहल गरीब लोगोंके लिये चिट्ठी आदि भेजना बड़ा कठिन काम था। क्योंकि चिट्ठी भेजने वाले को दूरीके हिसाबसे महसूल देना पड़ता। डलहौसीने चिट्ठी भेजनेके लिये एक स्वतंत्र डाक विभाग खोल दिया और हर चिट्ठीके लिये, चाहे वह कितनी ही दूर क्यों न जाय, दो पैसे महसूल लगाये। डलहौसीने शिक्षा-प्रचारके लिये भी कम चेष्टा न की। सन् १८५४ ई० में विलायत से सर चार्लस उड् (Sir Charles Wood) ने देशी लोगोंको शिक्षा देनेके लिये एक सरकारी कार्यक्रम भेजा। लाट साहबने उसीको मान लिया और उसके अनुसार काम करना आरम्भ कर दिया। हर सूबेमें देशी भाषामें प्रारम्भिक शिक्षा देनेका प्रबन्ध किया गया। इसके बाद अंग्रेज़ी सिखानेके लिये स्कूल, कालेज स्थापित किये गये और यूनीवर्सिटी आदि खोलनेका प्रबन्ध किया। हर एक पाठशालेको सरकारकी ओरसे रुपयेकी सहायता मिलने लगी। और इनके कामकाजकी देख भालके लिये इन्स-पेक्टर, डाइरेक्टर आदि नियुक्त किये गये। पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागरके प्रबन्धसे हिन्दू विधवा-विवाहका कानून जारी

गया। देशी लोगोंकी हर प्रकारसें भलाई करनेके कारण डलहौसीका नाम बड़ा विख्यात है। वास्तवमें डलहौसी निक भारतवर्षके बनाने वालोंमेंसे एक था।

डलहौसीका काम—इसी तरह छोटी छोटी रियासतोंको करके उन रियासतोंके निवासियोंको एक ही सरकारके कर, उन्हें शिक्षा देनेका प्रबन्ध कर, रेल, तार और चिट्ठी द्वारा एक दूसरेको अच्छी तरहसे परिचित होनेका उपाय कर लार्ड डलहौसीने हिन्दुस्तानकी रहनेवाली असंख्य योंके सम्मेलनसे एक महाजाति बना दी। उसीकी नियत ई नीतिसे आज हमलोग लाभ उठा रहे हैं। राष्ट्रभाषा के द्वारा भारतवासियोंने आज दूर दूरके प्रान्तके भाइयोंसे कर लिया है। सन् १८५६ ई० में लाट साहब अपने घर और वहीं चार बरसके बाद उनकी मृत्यु हुई।

सारांश

१८४८ ई०	लार्ड डलहौसी गवर्नर जेनरल
१८४८ ,,	सिखोंसे दूसरी लड़ाई
१८४६ ,,	पञ्जाबकी जीत
१८५२ ,,	बर्मासे दूसरी लड़ाई
१८५३-५६ ई०	सुधारादि
१८५६ ई०	अवधपर अधिकार
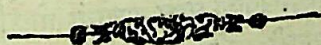
ईस्ट इन्डिया कम्पनीका अन्त—

(१७) अर्ल कैनिंग

(१८५६–५८ ई०)

कैनिंग (Canning)के बाप विलायतके वज़ीर रह चुके थे। कैनिंग भी स्वयं पार्लमेन्टके मेम्बर रह चुके थे। ये बड़े अच्छे स्वभाव के आदमी थे। इनके समयमें इस देशके रहनेवाले अंग्रेज़ोंपर एक ऐसी विपत्ति आपड़ी जिसका सामना करनेके लिये एक धीर और गम्भीर पुरुषकी आवश्यकता थी। जिसके लिये कैनिंग उपयुक्त थे। इनके आनेके एक ही साल बाद हिन्दुस्तानमें सिपाही-गदर हुआ।

देशकी दशा—जैसे एक भारी तूफान आनेके पहले चारों ओर सन्नाटा छा जाता है वैसेही लार्ड कैनिंग जिस समय हिन्दुस्तानमें आये तब ऊपरसे कुछ भी गड़बड़ नहीं मालूम पड़ता था। लार्ड डलहौसीने प्रजाको सुख शान्ति देनेके लिये बहुत कुछ किया था। शिक्षा देनेके लिये पाठशालाएं स्थापित कीं, नहरें खोदवाईं, रेल और तार बनवाया। विधवा-विवाहका कानून आदि जारी किया था। उन्होंने बहुतसी देशी रियासतोंको जब्त कर लिया था और वहांके बसने वालोंकी सुख शान्तिका उपाय किया था। उन दिनोंकी जनता रेल, तार, मदरासे, बिधवा-विवाह आदि का उद्देश्य नहीं समझती थी। उनका अनुमान था कि अंग्रेजी सरकार अनेक प्रकारकी कारवाइयां करके हमको ईसाई बनानेकी चेष्टा कर रही है। इसका फल यह हुआ कि थोड़े दिनोंमें कम्पनीकी रियासतकी प्रजा अशान्त हो गयी।

फिर ईसाई पादरी लोग भी इन दिनों बड़ा ज़ोर बांधे थे। इस समय वे उत्साहमें आकर मूर्त्ति-पूजा आदिके विरुद्ध खुल्लमखुल्ला बहुत कुछ बातें कहने लगे। सरकार उनको ऐसा करनेसे रोकती न थी। लोगोंने समझा कि पादरी साहब सर-

आदमी हैं। सरकार इन्हें भेजकर हमें अपने बापदादेका छोड़नेको कहती है। इसलिये वे बहुत घबराये।

यह पहले ही कहा गया है कि लार्ड डलहौसीकी जब्त-का फल अच्छा नहीं हुआ। झांसीकी रानी लक्ष्मीबाईको गोद लेनेकी आज्ञा न दी। रानी बदला लेनेके लिये जलती उधर अन्तिम पेशवा बाजीरावके मरनेके बाद उनके दत्तक नाना साहबकी पेन्शन बन्द कर दी गई। नाना साहब बदला अवसर खोजने लगा। दिल्लीके नाम-मात्रके बादशाह ता) बहादुर शाहका राजपाट कुछ न था। जब उसने देखा धीरे धीरे उसका पहलेका रोब भी घटा दिया जा रहा है तब भी अंग्रेज़ोंके विरुद्ध हो गया।

डलहौसीने अवधके नवाबसे उसकी रियासत छीन ली ऐसा करनेसे वहांके तालुकेदारोंको और अमीर मुसलमान सियोंको बड़ी हानि उठानी पड़ी। तालुकेदारोंको बाध्य दंगा फसाद करनेसे दूर रहना पड़ा। नये नियमपर होनेके कारण उन्हें अधिक मालगुज़ारी देनी पड़ी। इस-वे अंग्रेजी राज्यके विरुद्ध हुए और बेचैन रहे। अवधकी सत जब्त कर लेनेके बाद नवाबके ५०,००० सिपाहियोंको से छुड़ा दिया गया, वे बेकार बैठे थे और सारे देशमें फसाद मचाते फिरते थे। नवाबी ज़मानेमें अवधमें मुसल-का रोब दाब अधिक था। अंग्रेज़ोंने जब उसे ले लिया उनको कोई पूछता न था। इसलिये वे भी सरकारसे अप्रसन्न अतः अप्रसन्नता और अशान्ति अवधमें सबसे अधिक थी।

इन दिनोंकी सरकारसे अप्रसन्न होनेवाली एक शक्ति और थी। वे थे देशी सिपाही। उनमेंसे प्रायः लोग जातिके वा क्षत्रिय थे। वे अपनी जातिके नियमोंको और अपने बहुत बढ़कर मानते थे। सौ साल तक लड़ भिड़कर कुल हिन्दुस्तान पर कम्पनीकी विजयपताका फहरा

दी थीं। उनका यह विश्वास था कि हिन्दुस्तानमें अंग्रेज़ी राज्यको उन्होंने स्थापित किया है। ऐसा विश्वास होनेके कारण वे बड़े अभिमानी बन गये थे। फिर भी उनको अधिक तनख़्वाह नहीं दी जाती थी। न उनका अधिक आदर किया जाता था। इसलिये वे भी उन दिनोंकी अंग्रेज़ी सरकारसे अप्रसन्न थे। सिपाहियोंने भी आम लोगोंसे सुना था कि अंग्रेज़ी सरकार उन्हें नया नया कानून जारी कर ईसाई बनानेकी चेष्टा कर रही है।

इन्हीं सब कारणोंसे हिन्दुस्तानी सिपाही उन दिनों अपने अफ़सरोंको मानते न थे और नियमके विरुद्ध काम करते थे। इसी समय यूरोपमें अंग्रेज़ोंसे रूसके साथ क्रिमिया (Crimea) के प्रान्तमें तथा ईरान और चीनके साथ भी लड़ाइयां छिड़ीं। अतः इस देशसे कई अंग्रेज़ी पलटनें उन देशोंमें भेजी गईं। इससे देशमें हिन्दुस्तानी सिपाहियोंकी संख्या अंग्रेज़ोंकी पंचगुना हो गई। फिर उन दिनों देशी पलटनोंके अफ़सर भी अच्छे न थे। वे सब नौसिखिये थे। पुराने अफ़सरोंको नयी जीती हुई, जब्त की हुई रियासतों पर शासन करनेके लिये भेज दिया गया था।

गदरके कारण—जब हिन्दुस्तानी सिपाही अंग्रेज़ी सरकारसे अप्रसन्न थे, जब्त की हुई रियासतोंके और विशेषतः अवधके लोग सरकारसे अप्रसन्न थे, तब दिल्लीके नाम मात्रके बादशाह, नाना साहब, झांसीकी रानी आदि सिपाहियोंको सरकारके विरुद्ध उभाड़ने लगे। लोगोंने यह भी खबर उड़ा दी कि अंग्रेज़ी राज्य हिन्दुस्तानमें सौ ही वर्ष रहेगा और सन् १८५७ ई० उसका अन्तिम साल था। सिपाहियोंको उभाड़ने के लिये दिल्लीसे बारकपुर तक, ग्वालियरसे अवध तक चपाती और कमलके फूल भेजे गये। जब चारों तरफ़ अशान्तिकी हवा बह रही थी तब एकाएक सन् १८५७ ई० के जनवरी महीनेमें

अंग्रेज़ी पाहियोंको एक नये प्रकारकी बन्दूक मिली। इसके टोटे सूअर कारण और गायकी चर्बीसे चिकने किये हुए लिफ़ाफेमें बन्द रहते थे। ख़्वाह टा निकालनेके समय सिपाहियोंको यही काग़ज दांतसे काटना था। ड़ता था। जब हिन्दू और मुसलमान सिपाहियोंको यह बात थे। मालूम हो गई तब स्वभावतः उन्होंने ऐसे टोटेंका व्यवहार रकार करना अस्वीकार कर दिया क्योंकि ऐसा करना उनके धर्मके चेष्टा विरुद्ध था। दमदम और बाराकपुरसे लेकर अम्बाला तक की पल्टनोंने अपनी अप्रसन्नता प्रकट की। इसलिये उनपर सख्ती अपने की गई। तब वे बिगड़ गये और अपने अफ़सरोंका अपमान थे। करने लगे और मकान आदि जलाने लगे। उधर स्वार्थी लोग ८५७) उनको उभाड़नेका प्रयत्न करने लगे। अवसर पा शहर और छेड़ी। गांवके बदमाश पल्टनके साथ जा मिले। बस! गदरकी आग इससे १८५७ ई० में भड़क उठी।

वगुला **गदरका विस्तार**—सन् १८५७ ई० के मईमें मेरठकी देशी अच्छे पल्टनने खुल्लमखुल्ला सरकारके विरुद्ध विद्रोह किया। सिपाहि-जीतो योंने जेल तोड़ दिया और कैदियोंको अपने साथ ले उस शहर दिया रहने वाले अंग्रेज़ोंको मार डाला और उनका घर जला दिया। वहांसे गोल बांध वे दिल्ली पहुंचे। दिल्लीके सिपाही अंग्रेज़ी उनके साथ हो गये। वहांके अंग्रेज़ोंको उन्होंने मार डाला और मुसलमानोंको साथ ले उन्होंने बाबरके वंशज बहा-दुरशाह (दूसरा) को दिल्लीका बादशाह बनाया। देशी लोगों योंको उस समय तक भी दिल्लीके बादशाहका प्रभाव कम न था। बड़ा दी बागियोंका केन्द्र दिल्ली बनी और वहांके बादशाह उनके सरदार नेता बने। बहुतेरे अंग्रेज मारे गये और कुछ क़ैद कर लिये गये। उन दिनों दिल्लीमें एक बड़ा भारी बारूदखाना था। उसमें लड़ाईके सामान भी बहुत रक्खे थे। कप्तान उइलोबी हवा (Willoughby) ने उसमें आग लगा दी। इससे दो हज़ार सिपाही उड़ गये। फिर भी सिपाहियोंने अंग्रेज़ोंके हाथसे

दिल्ली छीन ली। तथापि एक छोटी सी सेना दिल्ली घेर कर पड़ी रही (८ जून)। तीन महीने तक उन्होंने दिल्ली वापस
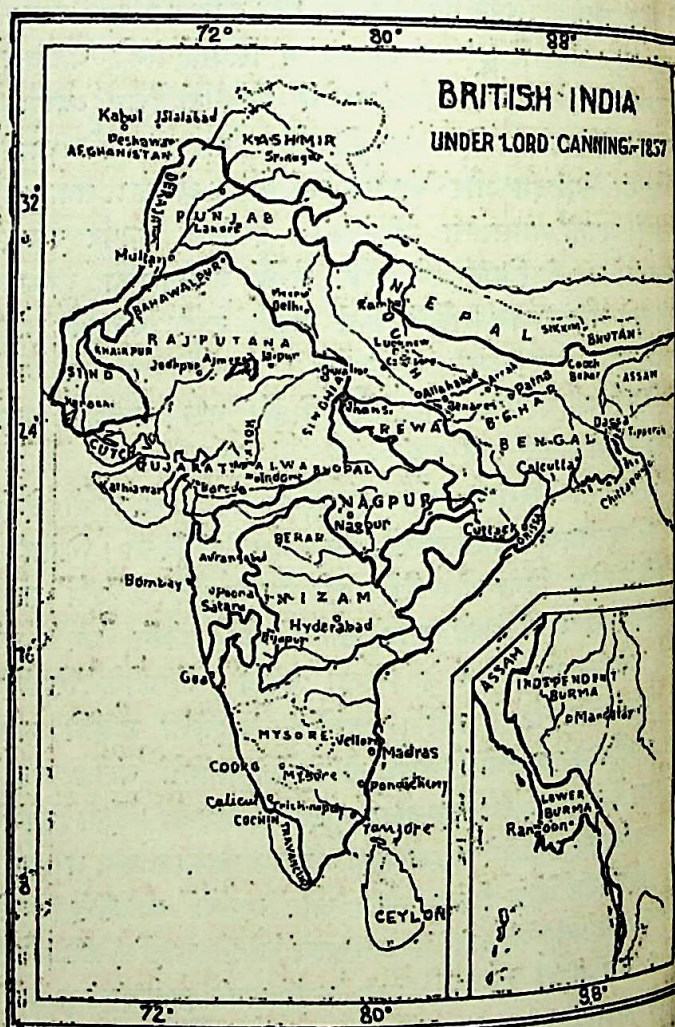
लेनेका प्रयत्न किया, पर ले न सके। अन्तमें पञ्जाबसे कप्तान निकलसन् (Nicholson) एक भारी सेना ले वहां पहुंचा।

सितम्बरमें उसनें विद्रोहियोंको हराकर दिल्ली लें लिया। बूढ़े बादशाहको कैद्कर लिया गया और उनके शहज़ादोंको मार डाला गया।।

देखते देखतें चारों ओर गदरकी आग फैल गई और हर एक छावनीमें सिपाहियोंने विद्रोह कर दिया। साधारणतया पहले अपने अंग्रेज़ अफ़सरोंको मार डालते थे। फिर जेल तोड़कर कैदियोंको छुड़ा लेते थे। तब वे उस शहरके निवासी अंग्रेज़ और ईसाइयोंको मार डालते थे, उनके घरमें आग लगा देते थे, खज़ाना लूट लेते थे, और वहांसे गोल बांधकर चल देते और किसी विद्रोही सरदारके अधीन काम करने लगते। दिल्लीके बादशाह, झांसीकी रानी, अवधकी बेगम, कानपुरके नाना साहब, मध्य भारतके तांतिया तोपे आदि विद्रोहियोंके अगुए थे। पर उन दिनों भी इस देशमें ऐसे लोग थे जिन्होंने अंग्रेज़ी राजकी योग्यतायें समझ ली थीं और उसे स्थिर रखनेकी चेष्टाकी। ऐसे लोगोंने बड़े उत्साहके साथ उन दिनों अंग्रेज़ी सरकारकी सहायता की। इनमें सिख लोग मुख्य हैं। उनमेंसे बहुतसे लोग नई पल्टनमें भरती होकर विद्रोहियोंके साथ लड़े। नैपाल और हैदराबादके वज़ीरोंने उस समय बड़ी सहायता की देशी रजवाड़ोंने भी अंग्रेज़ोंकी सहायता की। इन सब बातोंसे प्रकट है कि उन दिनों भी अंग्रेज़ी राजकी नीव हिन्दुस्तानकी ज़मीन ही में नहीं पड़ी थी—पर हिन्दुस्तानियोंके हृदयमें भी पड़ी थी। पर भी गदरकी आग जलती ही रही।

लखनऊ व अवध—कई एक कारणोंसे अवधमें विद्रोह ज़ोरोंसे हुआ। प्रारम्भमें ही इस विषयका वर्णन हो चुका है। उस देशके हर एक आदमी धनी तथा निर्धन, सभीने इसमें भाग लिया। तालुक्केदार लोग अपने अपने किलोंमें स्वतन्त्र बन गये और देश भरमें लूट पाट करते रहे। लखनऊ [illegible] प्रधान स्थान था। यहां अवधकी बेगम इनकी मुखिया

बनी और बाग़ी उनके नामसे काम करने लगे। सर हेनरी लारेन्स (Sir Henry Lawrence) वहांके चीफ़ कमीशनर थे। उन्होंने लोगोंका अभिप्राय समझ लिया और शहरके कुल अंग्रेज़ और ईसाई निवासियोंको बटोर कर रेसिडेन्सीमें जाकर आश्रय लिया। तुरन्त हज़ारों सिपाहियोंने उनको वहां घेर लिया। फिर भी अंग्रेज़ोंने लड़ी वीरताके साथ उस स्थानको तीन महीने तक बचाया। अन्तमें जब संख्यामें वे घट गये तब हेवलाक (Havelock) और आउटराम (Outram) ने लड़ भिड़कर कुछ नई सेना उनके पास पहुंचाई। फिर भी सिपाहियों की संख्या अधिक होनेसे इससे कुछ भी लाभ न पहुंचा और नवम्बर तक अंग्रेज़ोंको लखनऊ विद्रोहियोंके हाथ छोड़ देना पड़ा। सन् १८५७ के मार्चमें अंग्रेज़ोंके नये सेनापति कालिन केम्बेल (Colin Campbel) ने तीन सप्ताह तक लड़कर लखनऊ शहरको छीना। इसके बाद अवधका विद्रोह शान्त हो चला।

कानपुर—कानपुरके निकट बिठूर गांवमें अन्तिम पेशवा बाजीरावका दत्तकपुत्र नाना साहब रहता था। उसकी पेन्शन बन्द कर दी गई थी। इस लिये वह बदला लेनेका अवसर ढूंढ़ता था। जूनके प्रारम्भमें जब कानपुरके सिपाही बिगड़े तब नाना अंग्रेज़ोंका मित्र बन वहां पहुंचा। परन्तु उसका अभिप्राय कुछ और हो था। अन्यान्य स्थानोंकी भांति यहां भी सिपाहियोंने ख़ज़ाना लूट लिया और जेलके कैदियोंको छुड़ा लिया। इसके बाद जब गोल बांध कर वे दिल्लीकी ओर चले तब नानाने उनको बुला भेजा और स्वयं पेशवा बन बैठा। ७ वीं जूनको सिपाहियोंने बारूदखाना पर अधिकार जमा लिया। इसके बाद उन्होंने बारिक पर, जहां अंग्रेज़ोंने आश्रय लिया था, चढ़ाई की। बड़ी वीरताके साथ उन्नीस दिन तक वहांके अंग्रेज़ लड़ते रहे। उसके बाद जब उनकी रसद चुक गई तब लाचार हो उनको नाना साहबके हाथ अपनेको सौंपना पड़ा। पुरुषोंको तो उसने मरवा डाला और

ीब डेढ़ सौ स्त्रियों और बच्चोंको कैद कर लिया। जुलाईके
व हेवलाक एक सेना लेकर वहां पहुंचा। उसने विद्रोही
पाहियोंको दो लड़ाइयोंमें हरा दिया। जब जीतकी और कोई
ा न रही तब नानाने उन मेमों और बच्चोंको मरवा डाला
र उनको एक कूएंके अन्दर डाल कर स्वयं भाग गया। कानपुर
र पर अधिकार करतेही वहांका विद्रोह शान्त नहीं हुआ। इसके
 वहां अंग्रेजोंको बहुत दिनों तक विद्रोहियोंसे लड़ना पड़ा।
लखण्डमें भी बड़ी अशान्ति फैली हुई थी। उस समय
ी शहर विद्रोहियोंका प्रधान स्थान बना था। सन् १८५८ ई०
सर कालिनने उस शहरको ले लिया।

झांसीकी रानी—मध्य भारतमें भी विद्रोहकी आग बड़ी
ोंसे भड़की थी। झांसीके राजा गङ्गाधररावकी मृत्युके बाद
की छोटी रानी एक लड़का गोद लेना चाहती थी। पर
ौसीने उनको आज्ञा नहीं दी और उनकी रियासत भी
ने जब्त कर ली। इस लिये रानी लक्ष्मीबाई बदला लेना
ती थी। जूनके प्रारम्भमें झांसीके सिपाहियोंने विद्रोह
ा। रानी लक्ष्मीबाई उनकी मुखिया बनी। उस समय अंग्रेज
 उत्तरी हिन्दुस्तानमें फंसे थे इस लिये रानीने आठ महीने
 बड़े ठाटबाटके साथ राज्य किया। सन १८५८ ई० के
लमें सर हिउ रोज़ (Sir Hugh Rose) ने पन्द्रह दिन
कर झांसी पर अधिकार कर लिया। रानी हारकर काल्पीको
ी और वहां पर नाना साहबके सेनापति तांतिया तोपेसे जा
ी। दोनोंने मिल कर ग्वालियर ले लिया। सिन्धियाने भाग
अपना प्राण बचाया और उसकी सेना रानीके साथ जा
ी। जूनके महीनेमें जब रोजने ग्वालियर पर चढ़ाई की तब
 पुरुष वेषमें बड़ी वीरताके साथ लड़ती रही। उसके मरनेके
 तांतियाको ग्वालियरसे भागना पड़ा। कुछ दिनोंके बाद
ो अंग्रेजोंने पकड़ लिया और फांसीपर लटका दिया।

इनके अतिरिक्त और भी कई स्थानोंमें गड़बड़ी मची थी पर वे सब सुगमतासे दबा दी गई। बम्बई, मद्रास और बंगालमें शान्ति थी, बिहारमें कुंअर सिंहने बलवा किया था, पर वह भी हार गया। ऐसेही धीरे धीरे सन् १८५८ ई० के अक्तूबर महीने तक गदरका चिह्न मात्र न रहा।

कैनिंगकी नर्मी—लार्ड कैनिंगने इन दिनों बलवाइयोंके साथ बड़ी दयाका बर्ताव किया। गदरकी आग भड़कतेही उसने चीन, फारस आदि देशोंसे कुल अंग्रेज़ी सेना मंगवा ली और कुछ सेना विलायतसे भी बुलवा ली। इस प्रकार बलवाइयोंको बिलकुल हरा कर उसने उनके साथ भलमनसाहतका बर्ताव किया। बहुतोंको उसने क्षमा कर दिया और बहुतसे ज़मींदारों और तालुकेदारोंको ज़मीन लौटा दी। उन दिनों कुछ उग्र स्वभाव वाले अंग्रेज़ोंकी राय यह थी कि हिंदुस्तानियोंको क़तल करो, उनका घर जला दो। पर कैनिंगने उनके कहने पर कुछ ध्यान न दिया। इसलिये वे उसपर अप्रसन्न हो गये और "दयानिधान कैनिंग" (Clemency Canning) कह कर हंसी उड़ाने लगे।

परिणाम—एक अंग्रेज़ सर लेपेल ग्रिफिन (Sir Lepel Griffin) की यह राय है कि १८५७ ई० के गदरका परिणाम अच्छा हुआ। क्योंकि उस घटनाके बाद आलसी देशी सिपाहियों की संख्या घट गयी, बनियोंके हाथसे राजपाट लेकर पार्लमेन्टकी सहायतासे इंगलैण्डकी सम्राज्ञी स्वयं राज काज चलाने लगीं। सिख अंग्रेज़ोंके मित्र बन गये और अंग्रेज़ोंने अपनी शक्ति संसारको दिखा दी।

सन् १८५८ ई० के अगस्त महीनेमें पार्लमेन्टने एक नया कानून जारी किया जिसका नाम "An Act for the Better Government of India" पड़ा। इसके अनुसार इंगलैण्ड... और बोर्ड ... महारानी विक्टोरिया हिन्दुस्तान की सम्राज्ञी ...

र्डोके स्थान में १४ मेम्बरोंकी इण्डिया कौंसिल (India Council) नामकी एक सभा स्थापित हुई, जिसके सञ्चालक सेक्रेटरी आफ़ स्टेट फ़ार इण्डिया (The Secretary of State for India) हुये। उस समयसे गवर्नर जेनरलका नाम वाइसराय (Viceroy) वा राज-प्रतिनिधि पड़ा, जिसको सेक्रेटरी आफ़ स्टेटकी राय लेकर काम करना पड़ता है। दिल्ली शहर पञ्जाब प्रदेशमें मिला दिया गया। दिल्लीके बूढ़े बादशाहको रगूनमें निर्वासित कर दिया गया।

शाही घोषणा पत्र (The Queen's Proclamation) महारानी विक्टोरियाने कुल हिन्दुस्तानकी सम्राज्ञी बननेसे एक शाही घोषणा पत्र निकाला। सन् १८५८ ई० की १ ली नवम्बरके दिन लार्ड कैनिंगने इसे इलाहाबादके दरबारमें स्वयं पढ़ा। इस घोषणा पत्रमें इंग्लैण्डके बादशाहका हमारे प्रति क्या कर्तव्य है तथा रियायाके क्या क्या अधिकार हैं इनका पूरा पूरा वर्णन किया है। इसीलिये आज तक बहुतसे लोग इस घोषणा पत्र को एक महान आज्ञा पत्र वा The Magna Charta कह कर पुकारते हैं। उसका सारांश नीचे दिया जाता है।

वाइकाउन्ट कैनिंग महारानी विक्टोरियाके प्रथम वाइसराय हुए। जिन्होंने खुल्लमखुल्ला विद्रोहमें भाग लिया था उनके अतिरिक्त और सबोंको क्षमा कर दिया गया। किसीके धार्मिक विश्वासोंमें हस्तक्षेप न किया जायगा। सबके साथ एक सा न्याय किया जावेगा। राजाओंसे संधि, रियायाका अधिकार और देशकी रीति नीति आदि ज्योंकी त्यों बनी रहेगी। जाति, धर्मका कुछ विचार न कर, योग्यताके अनुसार हिन्दुस्तानियोंको सरकारी नौकरियां दी जावेगी। उस घोषणापत्रका उपसंहार यह था—

मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि जब ईश्वरकी दयासे देशमें शान्ति होगी तब हिन्दुस्तानमें शिल्प कलादिके प्रचारमें उन्नति की जायगी। प्रजाकी भलाईके कार्य आरम्भ किये जायँ तथा प्रजाकी उन्नतिके

साथ साथ मेरी शक्ति बढ़ेगी और उनकी प्रसन्नतासे हमारा कल्याण होगा तथा उनका धन्यवाद ही मेरे लिये बहुत बड़ा पारितोषिक होगा।"

सारांश

१८५६ ई०	लार्ड कैनिंग गवर्नर जेनरल
" "	क्रिमिया, ईरान और चीनकी लड़ाइयां
१८५७ "	गदरकी आग भड़की
१८५८ "	" शान्ति
	शाही घोषणा पत्र। कंपनीका अन्त
" "	The Act for the Better Government of India.

चतुर्थ खण्ड।

ब्रिटिश साम्राज्य।

(१) सम्राज्ञी विक्टोरिया।

(१८५८–१९०१ ई०)

(पूर्वार्द्ध)

(१) लार्ड कैनिंग (१८५८-६२ ई०) सुधार—जिस प्रकार [illegible]के भारी झोंका आनेके बाद किसी स्थानका रंग रूप बिलकुल [illegible] जाता है उसी प्रकार सन् १८५७ ई० के गदरके बाद भारत [illegible]कार की भी दशा हुई। ख़जाना बिलकुल खाली हो गया [illegible]-४० करोड़ रुपये कर्ज़ लेने पड़े थे—मालगुज़ारी ठीक ठीक [illegible] नहीं होती थी—पुरानी सेना बिलकुल नष्ट हो गई थी—और [illegible]ने प्रबन्ध में सैकड़ों दोष आ गये थे। लार्ड कैनिंगने अत्यन्त [illegible]श्रम करके इन सब दोषोंके सुधार करनेका प्रयत्न किया।

आमदनी—गदरके समय विद्रोहियोंके साथ लड़नेमें बहुत [illegible]ये खर्च हो गये थे। लार्ड कैनिंगको इसलिये पहिले पहल [illegible]मदनी बढ़ानेकी ओर ध्यान देना पड़ा। इस देशका और और [illegible]ोंके साथ व्यापार बढ़ानेके लिये उसने इस देशसे बाहर जाने [illegible]ी वस्तुओंका महसूल उठा दिया, और बाहरसे आने वाली [illegible]तुओंका महसूल [illegible] दिया। इन्हीं दिनों पहिले पहल रिया- [illegible]को आमदनी पर कर (Income-tax) लगाया गया।

नशेकी चीज़ोंके बेचने वालों पर (Excise) और बन्दूक आदि रखने वालोंपर (License) भी कर लगाया गया, और नोट चलाया गया।

सेना विभाग—सेना-विभागका भी सुधार किया गया। देशी सिपाहियोंकी संख्या घटा कर गोरे पल्टनकी संख्या बढ़ा दी गई। कम्पनी और विलायती सरकारकी सेनायें एक साथ मिला दी गईं। देशी सिपाहियोंको गोलन्दाज़के कामसे अलग रक्खा गया।

इण्डियन कौन्सिलस् एक्ट—सन् १८६१ ई० में The Indian Councils Act नामका एक नया कानून जारी हुआ। इस कानूनके अनुसार वाइसरायकी कौंसिलके दो विभाग हो गये। एकका नाम प्रबन्धकारिणी सभा (The Executive Council) और दूसरेका नाम व्यवस्थापक सभा (The Legislative Council) पड़ा। प्रबन्ध कारिणी सभाके प्रत्येक सभ्य एक एक विभागके प्रधान हैं। देशी रियासतों तथा विदेशी राज्योंके साथ सम्बन्ध रखने वाले विदेशीय विभाग (The foreign Department) के प्रधान स्वयं वाइसराय हैं। ऐसेही घरेलू विभाग, (Home Department), मालगुजारी और खेतीबारी (Revenue & Agriculture), आमदनी और तिजारत (Finance & Commerce), सेना-विभाग (Military) नहर, सड़क, मकानादि (Public Works) तथा कानून बनाने (Legislation) आदि विभागके अध्यक्ष एक एक मेम्बर होते हैं। इन सब मेम्बरोंको वाइसरायकी आज्ञासे काम करना पड़ता है। ये सब मेम्बर सरकारी नौकर हैं। व्यवस्थापक सभामें ऊपर लिखे हुए मेम्बरोंके अतिरिक्त कई एक गैर सरकारी मेम्बर होते हैं। इनमेंसे कुछको सरकार स्वयं चुन लेती है और कुछ जनताके चुने हुए होते हैं। वाइसरायकी व्यवस्थापक सभा सारे हिन्दुस्तानके लिये कानून बनाती है।
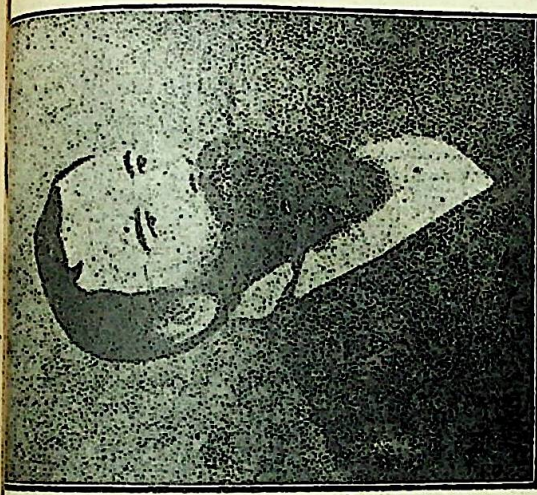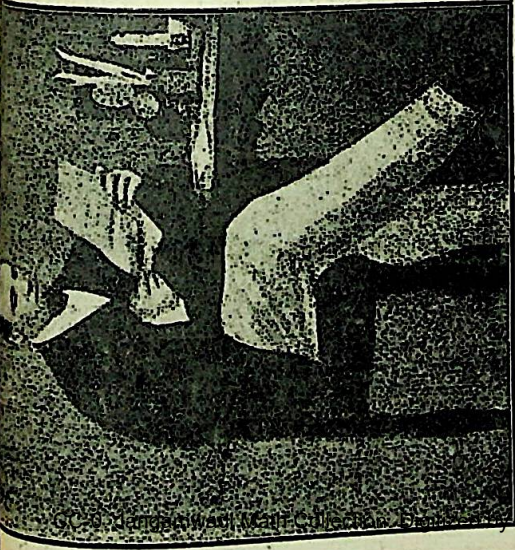
(*Chap. 1.*)

Lord Canning.

(*Chap. 2.*)

Lord Ripon.

इसके अनुसार बंगाल, बम्बई और मद्रासकी व्यवस्थापक भाको अपने अपने हालेके लिये कानून बनानेकी आज्ञा मिली। कौंसिलोंमें भी ग़ैर सरकारी मेम्बर हुए और आवश्यकता नसे अन्यान्य प्रदेशोंमें भी ऐसी सभायें स्थापित की जायंगी। कानूनके आधार पर १८८६ ई० में पश्चिमोत्तर (संयुक्त) ामें, १८६७ ई० में पञ्जाब में, पश्चात् ब्रह्मा, मध्यप्रदेश, बिहार-ीसा आदि देशोंमें स्वतन्त्र व्यवस्थापक सभायें स्थापित ं। इस प्रकारसे इस देशमें राष्ट्रीय जीवनका प्रारम्भ हुआ।

अदालती—पिनल कोड (Penal Code), सिविल व मिनल कोड (The Civil Code and the Criminal ode) नामकी कानूनी किताबें सन् १८६० ई० में बनीं। उसी कम्पनीके समयकी सदर अदालत और सुप्रीम कोर्ट उठा उनकी जगह सरकारकी ओरसे हर प्रदेशके लिये एक एक ग हाईकोर्ट (High Court) खोला गया।

शिक्षा आदि—सन् १८५४ ई० के सरकारी कार्य क्रमके ुसार हर ज़िलेमें, हर तहसीलमें और गांव गांवमें देशी भाषा ानेके लिये पाठशालायें स्थापित होती रहीं। पर देशी लोगों उच्चशिक्षा देनेका प्रबन्ध उस समय तक ठीक ठीक नहीं था। सन् १८५७ ई० में कलकत्ता, बम्बई और मद्रासमें तीन श्वविद्यालय (Universities) खोले गये। सन् १८६१ ई० ईस्ट इण्डिया रेलवे कलकत्तासे इलाहाबाद तक पहुंच गई। क्षिणमें भी कई एक रेलवे लाइनें बन रही थीं। सन् १८६२ ई० 'दया-निधान' कैनिंग घर सिधारे। घर पहुंचनेके बाद ही की मृत्यु हुई।

(३) लार्ड लारेन्स (Lawrence) (१८६४—६९ ई०)

ानसे लड़ाई—भोटियोंने कई बार सरकारी राज्यमें लूट मार । उनको चेतावनी देनेके लिये एक अंग्रेज़ एलची भेजा

गया। पर भोटियोंने उसे कैद कर लिया। कैदी एलची वहां से भाग आया और लड़ाई छिड़ी। लड़ाईमें भोटिये हार गये और उन्हें १८६५ ई० में संधि कर लेनी पड़ी। इसके अनुसार भोटियोंको 'द्वार प्रदेश' और दार्जिलिंगके आस पासके भू-भाग से हाथ धोना पड़ा। द्वारप्रदेशमें कई एक दर्रे हैं। इनपर अंग्रेज़ोंका अधिकार होना आवश्यक था। आजकल वहांपर बहुतसे चायके बगीचे लगे हैं।

सन् १८६६ ई० में उड़ीसा देशमें एक भारी अकाल पड़ा। बहुतसे कुएं खुदवाये गये और बाहरसे अन्न लाकर जमा किया गया और गरीब किसानोंकी मालगुज़ारी माफ़ कर दी गई। अकाल पीड़ितोंकी सहायताके लिये सरकारकी ओरसे भी प्रबन्ध होने लगा। नहर खोदनेके लिये एक अलग विभाग खोला गया। नई नई रेलवे लाइनें बनाई गईं। उड़ीसामें नई सड़कें और नहरें निकाली गईं।

सन् १८६३ ई० में अफ़गानिस्तानके अमीर दोस्त महम्मद मर गये। सिंहासनके लिये उनके बेटे आपसमें लड़ने लगे। लार्ड लारेन्सने इस बार अफ़गानिस्तानके बारेमें उदासीनता की नीतिके अनुसार काम किया। अन्तमें शेर अलीने अपने भाइयोंको हरा दिया और स्वयं अमीर बन बैठा। लारेन्सने उसीको अमीर कह कर मान लिया और कुछ रुपये और हथियार दे कर उसकी सहायता की। सन् १८६९ ई० में लार्ड लारेन्स हिन्दुस्तान से चले गये।

(४)लार्ड मेयो(Mayo) (१८६९—७२ ई०)—उन दिनों रूसी लोग बड़े उत्साहके साथ मध्य एशियामें अपना साम्राज्य बढ़ा रहे थे। हिन्दुस्तानको रूसी लोगोंकी चढ़ाईसे बचानेके लिये पड़ोसी रियासत अफ़गानिस्तानसे मित्रता रखने और उसको सुदृढ़ बनानेकी आवश्यकता हुई। इसलिये सन् १८६९ ई० में अमीर शेर अली जब लाट साहबसे मिलनेके लिये हिन्दुस्तानमें

ा तब लाट साहबने उसकी बड़ी आव भगत की और शेर
ंको अधिकतर रुपये और हथियारकी सहायता देनेकी
ा की। उसी समय रूसके ज़ार (Czar) के साथ कारवाई
यह बात तय की गई कि आमू दरिया रूसी साम्राज्यकी
णी सीमा होगी।

सुधार आदि—खेती बारीकी देख भाल करनेके लिये एक
त्र कृषि विभाग खोला गया। प्रजाके उपकारके लिये
नई रेलवे, सड़कें, और नहरें निकाली गईं। तथा उच्च
ाकी अपेक्षा प्रारम्भिक शिक्षापर अधिक ध्यान दिया गया।
कम्पनीके युगमें कुल आमदनी भारत सरकारके खज़ानेमें
होती थी और खर्चा भी उसके हाथसे होता था। कम्पनीका
होनेपर भी अब तक उसी नियमसे काम चलता रहा। लार्ड
ने हर एक प्रदेशका कोई कोई खर्च जैसे शिक्षा, पुलीस आदि
ीय सरकारोंके अधीन कर दिया। उसके लिये उन्हें भारत
ारकी ओरसे रुपये मिलते थे। प्रयोजन होनेसे टैक्स लगा
आमदनी बढ़ानेका भी अधिकार उनको दिया गया। इस
का नाम Financial Decentralisation पड़ा है।

सन् १८७२ ई० में लार्ड मेयो आण्डमन द्वीपमें सैर करनेके
गये थे। वहीं एक वहाबी सम्प्रदायके अफ़गान कैदीने
े मार डाला।

(५) लार्ड नार्थब्रुक (Northbrook) (१८७२—७६ ई०)

लियोंके उपद्रव मचानेके कारण रूसियोंने खीवापर अपना
ार जमा लिया। लार्ड नार्थब्रुकने उस समय अमीरकी
ना नहीं की। शेर अली इसलिये अंग्रेज़ोंसे अप्रसन्न हो
और उसने रूससे मित्रता कर ली। नार्थब्रुकने फिरसे उच्च
का प्रचार किया। और आमदनीका महसूल (Income
) घटा दिया।

सन् १८७५ ई० में मलहर राव गायकवाड़ने अंग्रेज़ रेसि-

डेण्टको ज़हर खिलाकर मार डालनेका प्रयत्न किया। इसलिये वह गद्दीपरसे उतार दिया गया। नार्थब्रुकने उसी वंशके एक लड़केको जिसका नाम सयाजी राव था गद्दी दी। उसी साल सम्राज्ञी विक्टोरियाके ज्येष्ठ पुत्र प्रिन्स आफ वेल्स (The Prince of Wales) जो पीछेसे सम्राट् सप्तम एडवर्ड हुए, इस देशमें आये। उसी समय आसामको बंगालसे स्वतन्त्र कर एक चीफ़ कमिश्नरके अधीन कर दिया गया। हाईकोर्टमें एक हिन्दुस्तानी जज रखा गया और अवध, पश्चिमोत्तर प्रदेशके साथ मिला दिया गया। सन् १८७६ ई० में नार्थब्रुकने हिन्दुस्तानसे बिदाई ली।

सारांश

१८५७ ई०	विश्वविद्यालय खोले गये
१८६१ ,,	India councils Act.
१८७५ ,,	बरोदाकी गड़बड़ी

(२) सम्राज्ञी विक्टोरिया (१८७६–१९०१ ई०)

(उत्तरार्द्ध)

(६) लार्ड लिटन (१८७६-८०)—१८७७ ई० की पहिली जनवरीके दिन दिल्लीमें बड़े ठाट बाटके साथ एक दरबार हुआ उसमें सब राजा महाराजा उपस्थित थे। उस दरबार(में) महारानी विक्टोरियाको सारे हिन्दुस्तानकी सम्राज्ञी की उपाधि दी गयी। और तबसे इंग्लैण्डके बादशाह "कैसर-इ-हिन्द" कहलाते हैं। इसी समय इंग्लैण्डके बादशाहकी उपाधियोंके साथ 'हिन्दुस्तानके सम्राट' (Emperor of India) शब्द भी जो(ड़ा)

गये । लार्ड लिटनने लार्ड मेयोका चलाया हुआ Financial centralisation और भी बढ़ाया ।

अफगानिस्तानकी दूसरी लड़ाई (१८७८–८० ई०)–
र शेर अली रूसियोंके साथ मित्रता कर ली जिससे अफ़-
स्तानमें रूसियोंका प्रभाव बढ़ गया। ऐसा होनेसे हिन्दु-
की अंग्रेज़ी सरकार बहुत भयभीत हो गयी। उसने
के पास अपना एक एलची भेजा। अमीरने अंग्रेज़
ोंको अपनी रियासतमें रखनेसे इन्कार किया। इसलिये
लिटनने अफ़गानोंसे लड़नेका निश्चय किया।
अंग्रेज़ी सेना खैबर, बोलन और कुर्रमके दर्रोंमेंसे होती हुई
ानिस्तान पहुंची। अमीर शेर अली डरकर उत्तरको
भागा और वहीं मर गया। अंग्रेज़ सेनापति ने शेर
के बेटे याकूब खांके साथ संधि कर ली।
े अनुसार काबुलमें एक अंग्रेज़ रेसिडेण्ट रहने लगे। पर
ी दिनोंके बाद काबुलियोंने अंग्रेज़ रेसिडेण्ट और उसके
नौकरोंको मार डाला। इसलिये फिर लड़ाई छिड़ गयी।
्रेडेरिक राबर्टस (Sir Frederick Roberts) ने अफ़-
ानपर चढ़ाई कर काबुल और कन्दहार ले लिया और
खां को कैद कर हिन्दुस्तान भेज दिया। कुछ दिनोंके
सारी काबुली जाति अंग्रेजोंसे लड़नेके लिये तैयार
ी और उनको बहुत छेड़ने लगी। इसी बीच इंग्लैण्डके
ोमें कुछ हेर फेर हुआ और लार्ड लिटनने १८८० ई० में
ा दे दिया।

(७) लार्ड रिपन (Ripon) (१८८०-८४ ई०)— लार्ड रिपन
विलायतका एक मंत्री रह चुका था। लार्ड रिपन पार्ल-
ा मेम्बर तथा सेक्रेटरी आफ स्टेट (Secretary of State)
ह चुका था। उन दिनों विलायती पार्लमेन्टमें उदार
(Liberals) लोगोंने ज़ोर बांधा। लार्ड रिपन भी इन्हीं

लोगोंमेंसे था। उसने अपनी नीतिके अनुसार लार्ड लिटनके कामोंमें बहुत कुछ उलट फेर कर दिया और हिन्दुस्तानियोंको स्वराजकी पहिली सीढ़ी तक पहुंचा दिया।

अफ़गानिस्तान—जब लार्ड रिपन इस देशमें पहुंचा तब काबुलियोंने अंग्रेज़ी सेनाको कन्दहारमें घेर लिया था। पर जेनरल रावर्टस्‌ने उनको हरा दिया और कन्दहार छीन लिया। इतनेमें लार्ड रिपनने अपनी नीतिकी पैरवी कर अंग्रेज़ी सेनाको बुलवा भेजा और शेर अलीके भतीजे अबदुर्रहमानको अमीर बना दिया।

परिणाम—अफ़गानिस्तानकी पहिली लड़ाईकी तरह यह लड़ाई व्यर्थ नहीं हुई। लार्ड लिटनने केलाट (बिलोचिस्तान) पर अच्छी तरहसे अङ्गरेज़ोंका प्रभाव जमा दिया तथा वहांके खांसे क्वेटा ले लिया। इससे बोलन दर्रे पर अंग्रेज़ोंका अधिकार जम गया और साथ साथ कन्दहारका रास्ता खुल गया। कुछ दिनोंके बाद कुर्रमकी घाटीपर भी अंग्रेज़ोंका अधिकार हो गया। इस लड़ाईके बाद अफ़गानिस्तानके अमीरके साथ बाहरी किसी शक्तिका कुछ सम्बन्ध न रहा। सन् १९१९ ई० तक यह नियम चलता रहा। इसके बदले अंग्रेज़ी सरकार अमीरको सालाना कुछ रकम देती रही। उन दिनों रूसी सरकारकी नीति साम्राज्य बढ़ाने की थी किन्तु आज दिन उसकी वह नीति नहीं है। अतः उन दिनों अफ़गानिस्तानसे ऐसा समझौता करनेकी आवश्यकता हुई थी। संक्षेपमें हिन्दुस्तानमें अंग्रेज़ी राज्यकी सीमा सिन्धु नदी और पेशावरसे हटकर सुलेमान पहाड़के पश्चिम तथा क्वेटा तक पहुंच गई।

स्वराज्यका प्रथम सोपान—सन् १८४२ और १८५० ई० के कानूनोंके अनुसार बम्बई, मद्रास और कलकत्तेमें म्युनिसिपलटियां खोली गई थीं। गदरके बाद धीरे धीरे और भी बहुत से स्थानोंमें म्युनिसिपलटियां बनीं। परन्तु इनमें करीब करीब

मेम्बर सरकारके चुने हुये होते थे। सन् १८७० ई० में लार्ड ने एक कानून जारी किया कि हर एक शहरके बाशिन्दे कुछ आपसमें कर लगा कर शहरकी सफाई, स्वास्थ्य, , अस्पताल आदिका प्रबन्ध कर सकेंगे। देख भालका काम शहरके निवासियोंकी चुनी हुई एक कमेटीके द्वारा होता ा। परन्तु रुपये पैसे एक सरकारी अफ़सरके पास जमा रहेंगे। सन् १८८३-८५ ई० के बीच लार्ड रिपनने कई एक नये न जारी किये जिससे उसने हिन्दुस्तानियोंको स्वराज्यके सोपान तक पहुंचा दिया। उसने हर शहरमें एक एक निसिपलिटी और हर ज़िलेमें एक एक ज़िला-बोर्ड (Dis- t Board) स्थापित किया। इन संस्थाओंसे सरकारका झ्थ घटा दिया गया और लोगोंके अधिकार बढ़ा दिये । फिर भी बहुत दिनों तक मैजिस्ट्रेट इन संस्थाओंके सभा- बनते थे। १९१६ ई० में ऐसा कानून बनाया गया है कि कारसे इस संस्थाओंका कोई सीधा सम्बन्ध नहीं रहेगा। कल म्युनिसिपलटी तथा डिस्ट्रिक्ट बोर्डके सभापति ग़ैर कारी लोगोंमेंसे ही चुने जाते हैं।

अन्यान्य घटनायें—लार्ड लिटनने समाचार पत्रोंके राय र करनेपर कुछ रोक टोक किया था पर लार्ड रिपनने उनको बातोंमें अपनी अपनी राय प्रकट करनेका अधिकार दे । शिक्षाके सुधारके लिये उसने एक कमीशन नियत किया। की सम्मतिके अनुसार प्रारम्भिक तथा स्कूली शिक्षाके प्रचार अधिक ध्यान दिया गया। देशी कारीगरोंका उत्साह बढ़ा- लिये उसने सरकारी दफ्तरोंमें देशी माल व्यवहार करने आज्ञा दी और देशी कारीगरोंको नमूना दिखानेके लिये ने कलकत्तेमें एक भारी प्रदर्शिनी खोली। इसमें सारे ोंकी चीज़ें इकट्ठी की गई थीं। जमींदारोंके अत्याचारसे प्रजाको बचानेके लिये उसने १८८५ ई० में एक नया

कानून जारी किया उसके अनुसार रियायाको अपनी अपनी भूमिका मालिक बना दिया गया।

लार्ड रिपनने १८८३ ई० में इलबर्ट बिल (Ilbert Bill) नामका एक ऐसा कानून जारी करना चाहा जिसके अनुसार अंग्रेज़ अपराधियोंका विचार हिन्दुस्तानी जजोंके इजलासमें हो सके। पर इस देशके रहने वाले अंग्रेज़ोंके विरोधके कारण यह कानून जारी न हो सका। और अभी तक अंग्रेज़ अपराधियोंका मुकद्दमा अंग्रेज़ जूरीके सामने होता है। इन्हीं दिनों इस देशके लोगोंने इस कानूनका समर्थन कर भारतीय अंग्रेज़ोंके विरुद्ध पहिली बार आन्दोलन किया था। इसी प्रकार रियायाकी भलाई करनेके लिये लार्ड रिपनका नाम बहुत विख्यात है।

(८) लार्ड डफरिन (Dufferin) (१८८४-८८ ई०)

ब्रह्माकी तीसरी लड़ाई (१८८५-८६ ई०)—ब्रह्माके राजा थीबो उन दिनों फरासीसियोंके साथ षड़यन्त्र रचते थे और अकारण अंग्रेज़ व्यापारियोंपर अत्याचार करने लगे। इसलिये लड़ाई छिड़ गई। अंग्रेज़ी सेनानें आसानीके साथ ब्रह्माकी राजधानी पर अधिकार जमा लिया। सन् १८८६ ई० को पहिली जनवरीके दिन सारा ब्रह्मा देश अंग्रेज़ी रियासतमें मिला लिया गया। राजा थीबो पेन्शन भोगी बनकर मद्रासमें रहने लगा। आजकल ब्रह्मा एक लेफ्टेनेन्ट गवर्नरके अधीन है और वह हिन्दुस्तानका एक सूबा गिना जाता है।

सरहद्दी मामले—अफ़गानिस्तानके साथ दूसरी लड़ाईके बाद रूसी लोग फिर मध्य एशियामें बड़े ज़ोर शोरके साथ अपनी सलतनत बढ़ा रहे थे और वहां उनको रोकने वाला भी कोई न था। धीरे धीरे उन्होंने १८८५ ई० में हिरातके उत्तर पंचदह ज़िला भी दबा लिया। वह ज़िला अफ़गानिस्तानका एक हिस्सा था। अमीर अब्दुर्रहमानके साथ लार्ट साहबने मित्रता कर ली

।। इसलिये रूसियोंको आगे बढ़नेसे रोकनेके लिये अंग्रेज़ी कारने लड़ना निश्चय किया। परन्तु रूसी लोगोंने मुंह मोड़ था, अतः लड़ाई नहीं छिड़ी। अन्तमें सीमा बांधनेके लिए शन बैठाया गया। इसी कमिशनने अफ़ग़ानिस्तान और सियोंकी सीमा बांध दी।

इण्डियन नेशनल कांग्रेस—इलबर्ट बिल पर आन्दोलन होने बाद आर्य समाजके संस्थापक महात्मा दयानन्द सरस्वती, थोसोफिकल सोसाइटीके कर्नल आलकाट तथा मैडेम ब्लेवेस्की दिके व्याख्यानोंसे प्रोत्साहित होकर तत्कालीन भारतीय कोंने प्राचीन भारतकी गौरव-गाथाकी ओर अपनी दृष्टि फेरी। लोगोंके प्राचीन युगको आदर्श मानकर चलनेसे ही देश भक्ति भाव की नींव पड़ी। यह भाव हमारे देशके लिये आधुनिक तथा पाश्चात्य देशोंकी नकल है। इसी समयसे सरकारी रवाइयोंपर आलोचना करने, देशके प्रति भक्तिभावके उदय ने तथा भारतीय जनतामें जागृति उत्पन्न करनेके लिये भिन्न न प्रान्तोंमें कई एक सभायें स्थापित हुईं, जिनमें कल-की ब्रिटिश इण्डियन एसोशियेशन, लाहौरका अंजुमन, और का सार्वजनिक सभा प्रख्यात हैं। इन सभाओंके भाव रोंका संगठन कर एक वृहत् संघशक्तिकी उत्पत्ति करनेके ह्यूम (A. O. Hume) साहबके उत्साहसे सन १८८५ में इण्डियन नेशनल कांग्रेस (Indian National con-ss) की प्रथम सभा बम्बईमें हुई। प्रथम वर्ष जिन जिन गोंने फीस दी थी सभी इसके प्रतिनिधि बना लिये गये, परन्तु रे वर्षसे सर्व साधारणकी सभामें प्रतिनिधियोंका चुनाव होने । आजकल यही कांग्रेस भारतकी सर्वमान्य एक मात्र य संस्था है।

अन्यान्य घटनायें—१८८७ ई० में महारानी विक्टोरियाको करते पचास वर्ष व्यतीत हो गये। इस लिये हिन्दुस्तानमें

बड़े धूमधामके साथ जुबिली उत्सव मनाया गया। लड़ाइयोंमें बहुत खर्च हो जानेके कारण लार्ड डफरिनने कई एक कर बढ़ा दिये।

(९) लार्ड लान्सडौन (Lansdowne) (१८८८-९४ ई०) लार्ड लान्सडौनने भी अमीरके साथ मित्रता स्थिर रखी और चित्रालके "मेहतर" को अंग्रेज़ोंके अधीन कर लिया।

कौंसिल ऐक्ट (१८९२ ई०)—इस ऐक्टके अनुसार व्यवस्थापक सभाओंमें मेम्बरोंकी संख्या बढ़ा दी गई। इनमेंसे कई एक मेम्बर जिला बोर्ड, म्युनिसिपलटी, यूनिवर्सिटी आदिके द्वारा चुने जाते थे। देशी मेम्बरोंको उस समयसे सरकारके कामों पर आलोचना करनेका अधिकार दिया गया।

(१०) लार्ड एलगिन् (२) (१८९४-९९ ई०)

(११) लार्ड कर्ज़न (Curzon) (१८९९-१९०५ ई०) लार्ड कर्ज़न जब वाइसराय नियुक्त किया गया तब उसकी अवस्था चालीस वर्षकी भी नहीं थी। पर वह बड़ा विद्वान् बुद्धिमान और परिश्रमी था। उसमें काम करनेकी विचित्र शक्ति थी। वह हंसते खेलते लगातार बारह-चौदह घण्टे काम करता था। वाइसराय बननेके पहले उसने स्वयं ईरान, अफ़गानिस्तान श्याम, अनाम, कम्बोडिया आदि देशोंमें भ्रमण किया था। और इसके पहले चार बार हिन्दुस्तानमें भी आया था। उसी समय पश्चिमोत्तरके कोनेको उसने अच्छी तरहसे जान लिया था। इसके अतिरिक्त उसने एशियाके बड़े बड़े रजवाड़ोंसे मित्रता भी कर ली थी। लार्ड कर्ज़न छः वर्षमें बहुतसे काम किये। सरकारी या गैर सरकारी ऐसा कोई विभाग न रहने पाया जिसमें उसने कुछ न कुछ हेरफेर न किया हो।

सरहद्दी मामले—लार्ड कर्ज़नने सरहदपर रहनेवाली जातियोंसे कुछ भी सम्बन्ध न रखा। पर उनके पास लड़ाई

लड़ाईका सामान पहुंचाना बन्द करवा दिया। पश्चिमोत्तरी प्रान्त की कुल रेलवे लाइन उस समय तक बन गयीं और उन जातियों पर दृष्टि रखनेके लिये १९०१ ई० में पश्चिमोत्तर प्रांतका एक अलग सूबा बनाया गया, जिसका नाम The North-Western Frontier Province (पश्चिमोत्तरी सीमान्त प्रदेश) पड़ा। इसी समय पश्चिमोत्तर प्रदेशका नाम बदल कर संयुक्त प्रदेश आगरा व अवध (The United Provinces of Agra and Oudh) रक्खा गया। उसी साल अमीर अब्दुर्रहमानकी मृत्यु होगई। नये अमीर हबीब-उल्लाके साथ भी लाट साहबने मित्रता स्थिर रक्खी।

सन् १९०१ ई० के जनवरी महीनेमें सम्राज्ञी विक्टोरिया स्वर्गधामको सिधारीं। सारे देशमें शोक फैल गया और उनकी स्मृतिमें कई स्थानोंमें उनकी मूर्ति स्थापित की गई। अभी थोड़े दिन हुए कलकत्तेमें सारे देशकी ओरसे उनके नामसे एक स्मृति भवन (Victoria Memorial Hall) बना है।

सारांश

१८७७ ई०	दिल्ली दरबार
१८७८ ,,	अफ़गानोंसे दूसरी लड़ाई
१८८० ,,	अफ़गानोंकी हार
१८८४ ,,	जिला बोर्ड और म्युनिसिपलटी स्थापित की गयी
१८८५ ,,	बर्मासे तीसरी लड़ाई
१८८७ ,,	विक्टोरियाकी जुबली
१९०१ ,,	संयुक्त प्रदेश आगरा व अवध बना, पश्चिमोत्तरी सीमान्त प्रदेश बना, सम्राज्ञी विक्टोरियाकी मृत्यु,

(३) सम्राट सप्तम एडवर्ड और पञ्चम जार्ज।

(१९०३ ई०........)

सम्राट सप्तम एडवर्ड (१९०३-१० ई०) लार्ड कर्जन—सन् १९०२ ई० के अगस्त महीने में विलायतमें सप्तम एडवर्डका राज्याभिषेक हुआ। १९०३ ई०की पहिली जनवरीको लार्ड कर्जनने बड़े ठाट बाटके साथ दिल्ली दरबारमें इस बातकी घोषणा की। इस दरबारमें सम्राट एडवर्डके भाई और सारे देशके रजवाड़े उपस्थित थे। लार्ड कर्जनने सम्राटका लिखा हुआ नया घोषणा पत्र पढ़ कर सुनाया। इसमें उन्होंने अपनी माताकी प्रचलित नीतिका पदानुसरण करनेकी प्रतिज्ञा की थी।

सरहदी मामले—ईरानकी खाड़ी पर उन दिनों यूरोपकी कई एक शक्तियां अपना अपना दबदबा जमानेका प्रयत्न कर रही थीं। ऐसा होनेसे अंग्रेज़ोंके भारतीय साम्राज्यका भय बढ़ता। लाट साहबने इसीलिये वहां अंग्रेज़ोंका सामुद्रिक बल बढ़ाना चाहा। वे स्वयं ईरान गये और दूसरी दूसरी शक्तियों को धता बताये।

उधर १९०३ ई० में यह समाचार मिला कि रूसी लोग तिब्बतमें कारवाई कर रहे हैं। तिब्बत नाम मात्रके लिये चीनी सम्राटके अधीन था। वास्तवमें उस देश पर दलाई लामा नामके एक पुरोहितका अधिकार था। यह रियासत हिमालय पहाड़ पर बसी हुई है। इसलिये बाहरी दुनियाके साथ इसका कोई सम्बन्ध नहीं था। सन् १९०३ ई० में कर्जनने तिब्बतके विरुद्ध एक छोटी सी सेना भेजी। उस सेनाने लामाको हरा दिया और उससे लासा छीन लिया। दलाई लामा गद्दी परसे उतार दिया गया। और नये लामाके साथ १९०४ ई० में संधि कर ली गयी। रूसियोंके साथ यह बात निश्चय कर ली गयी कि तिब्बत
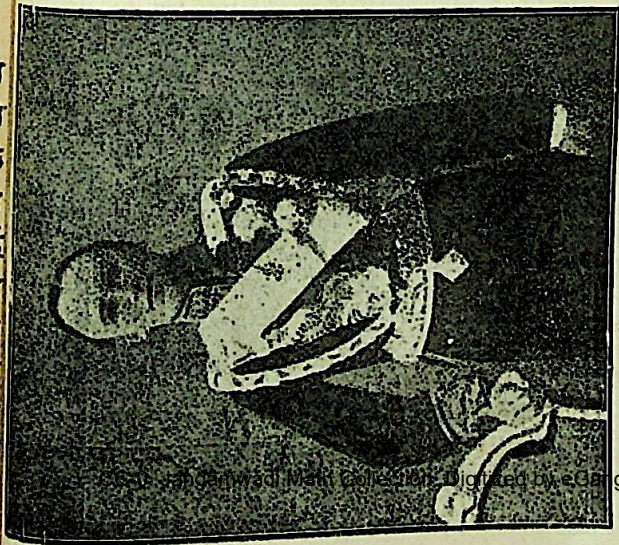
(Chap. 3.)

Lord Curzon.
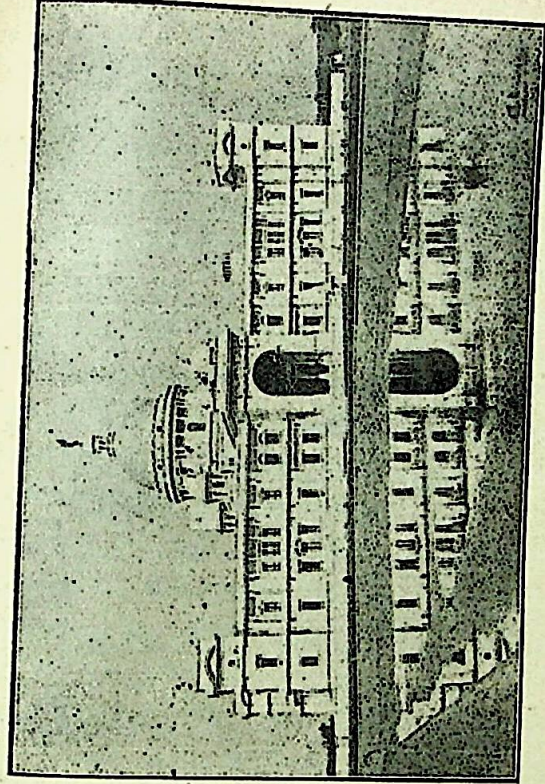
(Chap. 3.)

Victoria Memorial.

के साथ उनका कोई सम्बन्ध नहीं रहेगा । इस लड़ाईके बाद तिब्बतके बारेमें हम लोगोंको बहुतसी बातें मालूम हो गई हैं, जिसका प्रभाव भौगोलिक और ऐतिहासिक दुनिया पर भी पड़ा है ।

अन्यान्य घटनायें—पञ्जाबके किसानोंको सूदखोर महाजन और मालगुज़ारीके अफसरोंके अत्याचारसे बचानेके लिये एक नया कानून जारी किया गया। वहां नई नई नहरें बनानेका प्रबन्ध किया गया। जिन देशोंमें इस्तमरारी बन्दोबस्त जारी नहीं है उनमें नया बन्दोबस्त शीघ्र समाप्त करनेका प्रबन्ध किया गया। प्राचीन समयकी बनी हुई इमारतें जैसे ताजमहल, अशोकके स्तूप, स्तम्भ आदिके मरम्मत करनेका और सरकारकी ओरसे उनकी रक्षा करनेका एक अलग विभाग (Archaeological Department) स्थापित किया गया।

शिक्षा विभागमें सुधार—लार्ड कर्जन स्वयं बड़े विद्वान थे इसलिये शिक्षाकी ओर उनका विशेष ध्यान था। उनकी आज्ञासे प्राइमरी स्कूलोंमें बहुत कुछ सुधार किये गये। प्राइमरी परीक्षायें बन्द कर दी गईं। पहले पहल परीक्षा फल देखकर सरकारी सहायता दी जाती थी किन्तु इस समयसे यह नियम किया गया कि जिस स्कूलकी शिक्षाका प्रबन्ध अच्छा होगा उसीको सरकारी सहायता मिलेगी। उन्हीं दिनों प्राइमरी स्कूलोंमें Nature Study, Manual Training, Object Lesson आदि सिखानेका प्रबन्ध किया गया। कर्जनने यूनिवर्सिटियोंकी हुई शिक्षाकी जांच करनेके लिये एक कमिशन नियत किया। उसकी रिपोर्टसे मालूम हुआ कि सस्ती शिक्षा मिलनेके कारण बहुतसे ही अयोग्य लोगोंको डिग्री मिल रही है तथा नौकरी न मिलनेके कारण वे लोग देशमें अशान्ति फैला रहे हैं। इसलिये उन्होंने एक नया कानून जारी किया जिससे यूनिवर्सिटियां सरकारी कर ली गयीं और स्कूल और कालेजोंका यूनिवर्सिटीसे

सम्बन्ध रखना आवश्यकीय हो गया। कालेज और स्कूलोंकी फीस बढ़ा दी गई। सारे हिन्दुस्तानकी शिक्षाकी देखभाल करने के लिये एक शिक्षा-मंत्री (Director General of Education) नियुक्त किये गये।

बङ्गालके पढ़े लिखे लोगोंने इस कानूनका बड़ा विरोध किया परन्तु उनकी बातें नहीं सुनी गईं। इससे वहांके लोग कर्जनसे असन्तुष्ट हो गये।

देशी रियासतोंके साथ बर्त्ताव—लाट साहबने देशी रियासतोंको भी नहीं छोड़ा। उन्होंने करीब करीब सभी रियासतोंमें भ्रमण किया और रजवाड़ोंको ठीक रीतिसे राजकाज करनेके लिये बाध्य किया। इसका फल यह हुआ कि तभीसे कई एक देशी रियासतें बहुत अच्छी बन गई हैं। निज़ामको सालाना २५ लाख देनेकी प्रतिज्ञा कर लाट साहबने बरार प्रदेश को मध्यप्रदेश (Central Provinces) के साथ मिला दिया। यह निज़ामके लिये असन्तोषका कारण हुआ।

बंग भंगका आन्दोलन—सन् १६०४ ई० में लार्ड कर्जन कुछ दिनोंके लिये विलायत चले गये। वहांसे वापस आने पर उन्होंने शासन प्रबन्धके सुभीतेके लिये बंगाल प्रदेशको १६०५ ई० में दो भागोंमें बिभक्त कर दिया। हालमें आबादी बहुत बढ़ जानेके कारण सारे बंगाल, बिहार और उड़ीसेका प्रबन्ध एक लेफ्टेनेन्ट गवर्नरसे सपरता नहीं था। यह देख कर्जनने आसाम और ब्रह्मपुत्रके पूर्वी जिलोंको ले पूर्व बंगाल और आसाम (Eastern Bengal and Assam) नामका एक नया प्रदेश बनाया और पश्चिमी बंगाल, बिहार, उड़ीसा, और छोटा नागपुर दूसरा प्रदेश रहा। पहिलेकी राजधानी ढाका हुई और दूसरेकी कलकत्ता। दो प्रदेशों में दो लेफ्टेनेन्ट गवर्नर राजकाज करने लगे। बंगालियोंने इसका बड़ा विरोध किया फिर भी सरकार ने उनकी बातें न सुनी। इस पर बंगालियोंमें भारी आन्दोलन करना

आरम्भ किया। गांव गांवमें कमेटी किया, ज़ोर शोरके साथ व्याख्यान दिये गये, फिर भी कुछ नहीं हुआ। सरकारने १६०५ ई० के अक्तूबर महोनेमें बंगालको विभक्त करही दिया। इससे बंगालके रहनेवालोंके हृदयमें आग भड़की। उन्होंने विलायती वस्तुओंका वहिष्कार कर देशी वस्तुओंका व्यवहार करना आरम्भ किया। सारे बंगालमें अशान्ति की आग जल उठी। इसी आन्दोलनका नाम पीछेसे स्वदेशी आन्दोलन वा The Boycott Movement पड़ा।

बिदाई—इसके बाद एक महीना भी नहीं हुआ कि लार्ड कर्जन और जंगी लाट किचनर (Kitchener) की रायोंमें अन्तर पड़ा। कर्जन वाइसरायकी कौन्सिलमें सेना विभागके मन्त्री (Military Member) का पद रखना चाहता था, ताकि वह जंगी लाटके मनमाना कामोंको रोक सके। पर जंगी लाटकी राय यह थी कि सेना विभागके लिये दो बड़े अफसरोंकी आवश्यकता नहीं है। जंगी लाट ही Military Member का काम कर सकते हैं। सेक्रेटरी आफ स्टेट ने जंगो लाट का कहना मान लिया। इसलिये लाट कर्जनने इस्तीफा दे दिया।

(१२) लार्ड मिन्टो (दूसरा) (Minto II)—(१९०५-१०ई०)

सन् १६०५ ई० में सम्राट सप्तम एडवर्डके बड़े बेटे प्रिन्स आफ वेल्स (सम्राट पञ्चम जार्ज) इस देशमें आये। वे हिन्दुस्तानके प्रत्येक बड़े बड़े शहरोंमें गये।

राजनीतिक उपद्रव—बंगालको केन्द्र मान कर १६०५ ई० का उपद्रव सारे देशमें फैल गया। आसामसे पञ्जाब, और पूना मद्रास तक लोग आन्दोलन मचाने लगे। देशमें बड़ी अशान्ति फैल गई। समाचार पत्रभी सरकारके विरुद्ध लिखने लगे। बहुत शिक्षित लोग सरकारके विरुद्ध हो गये और पाश्चात्य साहित्यसे स्वतन्त्रताका स्वाद चीखते हुये इस बातकी शिकायत

करने लगे कि शक्की होनेके कारण सरकार देश शासनके कामोंमें हम लोगोंकी सहायता नहीं लेती।

जब प्रति वर्ष नेशनल कांग्रेस सरकारके पास अर्ज़ियां भेजती रही और कोई फल नहीं हुआ, तब इस प्रकारके रोने धोनेको व्यर्थ समझ कर कुछ लोगोंने कार्य करने पर अधिक ज़ोर दिया। इस प्रकारके भाव विचार वाले लोगोंका नाम "गरम-दल" पड़ा, जिसके नेता लोकमान्य बाल गङ्गाधर तिलक हुये। कांग्रेस पार्टीके लोग "नरम-दल"के कहलाये। इनके मुखिया गोपाल कृष्ण गोखले, सुरेन्द्र नाथ वैनरजी आदि हुये। १९०७ ई० में गरमदल वालोंने कांग्रेस पर अपना अधिकार जमा लिया। पुनः पाश्चात्य देशोंके राज विद्रोहियोंका अनुकरण करता हुआ एक नवीन दल स्थापित हुआ, जिसने बंगाल, पूना आदि स्थानोंमें गुप्त समितियां बनाई और विद्रोहके षड़यन्त्र आदि रच कर, वम्ब फेंक कर और डकैती करके कुछ देशी तथा अंग्रेज़ी अफसरों को मार डाले। रेलवे लाइनें उखाड़ने, तथा देशी सिपाहियोंको भड़कानेकी भी चेष्टायें कीं।

इस समय सरकार की नीति ऐसी हुई कि गरम दल वालोंको दबानेके लिये कठिनसे कठिन कानून बनाए गये तथा नरम दल वालोंको सुधार आदिके द्वारा सरकारके पक्षमें लाने का प्रयत्न किया गया। अतः सभाओंमें सरकारके विरुद्ध व्याख्यान देना और समाचार पत्रोंमें सरकारके विरुद्ध लिखना, स्कूल और कालेज के विद्यार्थियों को राजनीतिमें किसी प्रकारका भाग लेना बन्द कराया गया। पुलिस-विभागके अफसरोंने उस समय बड़ा ज़ोर किया और बहुतोंको पकड़ लिया। उनको कठिन दण्ड मिला तथा बहुतोंको निर्वासित कर दिया गया। हर्षकी बात यह है कि ऐसे विचारके लोग संख्यामें बहुत कम थे। बुद्धिमान लोग इनके कामोंका तिरस्कार करते थे। पर ये भी सरकारके प्रबन्धसे सन्तुष्ट नहीं थे। ये शिकायत करते रहे कि सरकार

शासन-कार्यमें हमसे सहायता नहीं लेती। मुसलमान लोग भी इसी समय जागे और १९०८ ई० में मुसलिम लीगकी प्रथम सभा हुई।

कौन्सिल ऐक्ट (१९०९ई०)—लार्ड मिन्टो और उस समयके सेक्रेटरी आफ स्टेट, लार्ड मार्ले (Morley) ने नरम दल वालोंको प्रसन्न करने के लिये पार्लमेन्ट से एक नया कानून जारी किया। इसका नाम सुधारक कानून या India Councils Act पड़ा (१९०९ ई०)। इसके अनुसार वाइसरायकी व्यवस्थापक सभामें साठ मेम्बर कर दिये गये। इनमें पचीस मेम्बर लोगोंके चुने हुए थे। हर प्रदेशकी व्यवस्थापक सभाओंमें भी मेम्बरोंकी संख्या बढ़ा दी गई। वाइसराय की प्रबन्धकारिणी सभामें एक हिन्दुस्तानी मेम्बर हुआ। सेक्रेटरी आफ स्टेटकी इण्डिया कौन्सिलमें दो हिन्दुस्तानी मेम्बर लिये गये। इसी कानूनके आधार पर मुसलमानोंने अपने लिये स्वतंत्र प्रतिनिधि चुननेका अधिकार प्राप्त किया।

यह बात माननीही पड़ेगी कि इस कानूनके द्वारा हिन्दुस्तानियोंको थोड़ा बहुत लाभ पहुंचा। फिर भी लोगोंने कहा कि यह सुधार किसी कामका नहीं है, क्योंकि व्यवस्थापक सभाओंमें अधिकतर सरकारी मेम्बरोंके होनेके कारण सरकार वोटके द्वारा मनमाना काम करेगी। इसलिये वे आन्दोलन करते ही रहे।

सम्राट पञ्चमजार्ज—सन् १९१० ई० के मई महीनेमें सम्राट सातवें एडवर्डका देहान्त हुआ। वे बड़े शान्तिप्रिय सम्राट थे। इसलिये उनका नाम The Peace-Maker पड़ा है। उनके मरनेपर पञ्चम जार्ज २२ जूनको हमारे सम्राट बने। उसी साल लार्ड मिन्टो विलायत वापस गये।

(१३) लार्ड हार्डिञ्ज (दूसरा) (१९१०–१६ ई०)—लार्ड हार्डिञ्ज (दूसरा) के राज्य-कालमें दो घटनायें ऐसी हुई जिनको

हम लोग कभी नहीं भूल सकते। पहिली बात तो यह हुई कि हमारे सम्राट इस देशमें आये और दूसरी यह कि १९१४ ई० में जर्मनीसे लड़ाई छिड़ी। लार्ड हार्डिञ्ज इस देशके लोगोंसे बड़ा प्रेम रखते थे और हर बातमें हिन्दुस्तानियोंको सहायता पहुंचानेके लिये तैयार रहते थे। उन्होंने बहुतसी बातोंका सुधार कर आन्दोलनकारियोंको शान्त किया और हिन्दुस्तानियोंको राज-काजमें अधिक अधिकार देनेकी प्रतिज्ञा कर उनका उत्साह बढ़ाया। तथापि राजद्रोहियोंका उपद्रव शान्त नहीं हुआ। १९१२ ई० में दिल्ली प्रवेश करते समय लार्ड हार्डिञ्ज पर बम्ब फेंका गया परन्तु हर्षकी बात यह है कि उससे उनको हानि नहीं पहुंची।

सम्राट्का राज्याभिषेक—सम्राट जार्ज १९११ ई० की ११ वीं नवम्बरको विलायतसे चलकर ७ वीं दिसम्बरके दिन दिल्ली पहुंचे। उसी दिन बड़े ठाट बाटके साथ उन्होंने दिल्ली शहरमें प्रवेश किया। १२वीं दिसम्बरको वहां एक दरबार हुआ। राजा महाराजाओंने उनको अपना सम्राट माना। इसके बाद देशकी समस्त जनताको सम्राटने दर्शन दिया। उसी दिन हिन्दुस्तानके हर एक शहरमें एक एक दरबार हुआ था। स्कूली लड़कोंको मिठाई बांटी गई और हर एक विद्यार्थीको एक एक मेडल मिला। राजभक्तिकी तरंगें देशके एक प्रान्तसे दूसरे प्रान्त तक लहराने लगीं। लोगोंके मनमें सरकारके विरुद्ध जो बुरे भाव पैदा हुये थे उन्हें राजभक्तिके उमंगने दूर कर दिया। साथ साथ हिन्दुस्तानियोंको यह भी मालूम हो गया कि बादशाह उनसे कितना प्रेम रखते हैं तथा ब्रिटिश साम्राज्यमें भारतका स्थान कितना उच्च है।

शासन प्रबन्धमें उलट फेर—सम्राटने उसी समय साम्राज्यके शासन प्रबन्धमें कुछ उलट फेर कर दिया। हिन्दुस्तानकी राज-धानी कलकत्तेसे दिल्ली चली गई। बंग-भंग रद्द करके बंगाल

…े एक गवर्नरके तावेमें कर दिया गया। आसाम पहलेकी …ह एक चीफ़ कमीश्नरके अधीन कर दिया गया। बिहार, …ा नागपुर और उड़ीसा मिलाकर एक नया प्रदेश बना …सका नाम विहार व उड़ीसा पड़ा। सर्व साधारणके बीच …ा फैलानेके लिये सम्राटने ५० लाख रुपये दिये।

यूरोपीय महायुद्ध (१९१४-१८ ई०)—अभी थोड़ेही दिन …ए कि यूरोपीय महायुद्धमें विजय पानेके उपलक्षमें हमारी …कारकी ओरसे आनन्दोत्सव मनाया गया था। यद्यपि यूरोपीय …ायुद्धसे भारतका कोई सम्बन्ध नहीं, तथापि हिन्दुस्तानने भी …य संसारका एक भाग होने एव अपने सम्राट तथा ब्रिटिश …म्राज्यकी रक्षाके विचारसे इस महायुद्धमें सम्मिलित होना …ला कर्तव्य समझा और अपने भरसक इस कर्तव्यको …त तक निबाहा।

लड़ाईमें हिन्दुस्तानियोंकी सहायता—सम्भवतः जर्मनोंने …सोचा होगा कि ज्योंही लड़ाई छिड़ेगी त्योंही हिन्दुस्तानके …हमारे पक्षमें होकर वहां एक बलवा कर देंगे और इस प्रकार …दुस्तान पर हम लोगोंका अधिकार हो जावेगा। पर लड़ाई …ते ही बात कुछ और ही देखनेमें आई। हिन्दुस्तानके हर …से और हर प्रदेशसे लाखों आदमी अपने सम्राटके लिये …देने को तैयार हो गये। गांव गांवसे लोग लड़ाईका …चलानेके लिये सरकारको रुपये दिये। देशी रजवाड़ोंने …रुपये देनेके अतिरिक्त अपनी अपनी सारी सेना सरकारके …न कर दो। रीवांके महाराजने अपने भण्डारके कुल रत्न-…रण सरकारको दे दिये। महाराज बीकानेरने सैकड़ों … दिये, महाराज होलकर और भूपालकी बेगमने एक …ताल-जहाज, और महाराज सिन्धियाने मोटरगाड़ीका …गोल दिया। महाराज बनारसने आहत सिपाहियोंके …एक अस्पताल खोला। साधारण लोगोंने रुपये सरकारको

कर्ज़ा दिये। हिन्दू और मुसलमानोंने एक स्थानपर मिलकर कमेटी कर अपनी अपनी राजभक्ति प्रकट की।

इसके अतिरिक्त ५० लाख सिपाही एशिया, यूरोप, अफ्रिका आदि महादेशोंमें जर्मनीके विरुद्ध चार साल तक लड़ते रहे। भारतीय सिपाहियोंने वीरताके लिये ११ विक्टोरिया क्रास तथा सैकड़ों पुरस्कार प्राप्त किये। जोधपुर, बीकानेर, पटियाला, किशनगढ़ आदि रियासतोंके महाराज स्वयं लड़ाईमें सम्मिलित हुये। हर प्रदेशके युवक दल India Defence Force में भर्ती हुए। यह उत्साह, ऐसी राजभक्ति और ऐसा आत्मत्याग देख हमारे बादशाहकी छाती फूली न समाई और उन्होंने हिन्दुस्तानियोंके कामोंकी प्रशंसा कर उनका उत्साह बढ़ाया। साथ ही सार राज विद्रोहियोंके उपद्रवको तत्काल शान्त करने तथा युद्धके कामोंमें सहायता पहुंचानेके लिये १९१५ ई० में भारत-रक्षा कानून (Defence of India Act) जारी किया गया। वह समय बड़ा संकटमय था। अतः इस कानूनके जारी करनेमें सरकारको कुछ भी कठिनाइयां नहीं झेलनी पड़ीं।

परिणाम—इस लड़ाईसे हिन्दुस्तानको बड़ा लाभ पहुंचा। पहले हमारा देश अंग्रेज़ी साम्राज्यका एक अधीन राज्य (Dependency) समझा जाता था। संसारके राजनीतिक क्षेत्रमें इस देशकी कोई पूछताछ न थी। पर इस लड़ाईके बाद रंग कुछ और ही हो गया। इंग्लेन्ड हिन्दुस्तानको केनाडा, आस्ट्रेलिया आदि अंग्रेज़ोंकी बड़ी बड़ी आबादियोंके बराबर समझने लगा। इंग्लेन्डने उन देशोंकी भांति हिन्दुस्तानको भी स्वराज्य देनेकी प्रतिज्ञा की। सन् १९१७ ई० की २७ वीं अगस्तको विलायती पार्लमेन्टकी ओरसे सेक्रेटरी आफ स्टेटने इस बातकी घोषणा की कि धीरे धीरे हिन्दुस्तानको स्वराज्य मिलेगा। दुनिया और और स्वतन्त्र जातियोंके ऐसा हिन्दुस्तानसे भी लार्ड (तब सर सत्येन्द्र सिंह) और महाराज बिकानेर भांति सम

र बन कर फ्रान्स गये और वहां अपनी राय देकर इस देशका
व बढ़ाया। हिन्दुस्तानको जब इंग्लैण्डने अपने बराबरका
लिया तब संसार की दूसरी दूसरी जातियां भी हिन्दु-
नियोंका बड़ा आदर करने लगीं और अपने बराबर समझने
। तभीसे भारतवर्षके प्रतिनिधि सभी आन्तर्जातिक सम्मेलन
लीग आफ नेशन्स, लेबर कान्फरेन्स, डिस-अर्मामेन्ट
रेन्स आदिमें सम्मिलित होने लगे। बड़ी बड़ी नौकरियां
पहले हिन्दुस्तानियोंको नहीं मिलती थीं,- आज कल वे सब
मिलने लगी हैं। लार्ड सिंह Under Secretary of
te बने और वे हमारे सम्राटके मन्त्रियोंमेंसे एक हुए। लार्ड
कुछ दिनोंके लिये वाइसरायके ला मेम्बर थे पश्चात् बिहार
ड़ीसा प्रदेशके गवर्नर भी हुए।

लड़ाई छिड़ने पर जब यूरोपसे व्यापारिक सम्बन्ध रुक गया
हमारे देशी भाइयोंको इस बातका पता चला कि हम लोग कहां
राधीन हो गये हैं। अतः लड़ाई बन्द होते ही प्रति दिन
ये कल और कारखाने खुलने लगे और हमारे देशके धनी
ने व्यापारकी ओर अधिक ध्यान दिया। मेसोपोटेमिया
ोंके अधीन हो जानेसे अब कोई भी यूरोपीय शक्ति स्थल
हमारे देश पर चढ़ाई नहीं कर सकती।

हिन्दू विश्वविद्यालय—जब सन् १९१६ ई० के अप्रेलमें
हार्डिञ्ज अपने घरको सिधारे तब तक लड़ाई चलती ही
जानेके पहिले उन्होंने काशीमें हिन्दू विश्वविद्यालयकी नींव
। यही हिन्दुस्तानकी पहिली गैर-सरकारी युनिवर्सिटी है।

लार्ड चेम्सफोर्ड (Chelmsford) (१९१६-२१ ई०)—

सी महीनेमें लार्ड चेम्सफोर्ड इस देशमें वाइसराय होकर
स समय तक लड़ाई हो रही थी। अतः राज विद्रोहियोंको
के लिये उनको कई एक कठोर कानून जारी करने पड़े,
कुछ लोग इनके विपक्ष हो गये। तथापि उन्होंने अपना

कर्तव्य पालन करनेसे अपना मुंह न मोड़ा। सन् १९१८ ई० के ११ नवम्बरको लड़ाई बन्द हुई।

राजनैतिक स्थिति—उधर राजनीतिक आकाशमें घन घोर घटा छाई हुई थी। लोगोंके बहुत विरोध करनेपर भी सरकारने राजविद्रोहियोंको तुरंत दबानेके लिये रौलट एक्ट नाम का एक कानून जारी किया। इन्हीं दिनों इस देशके मुसलमान लोग "खिलाफत" आन्दोलन आरम्भ कर दिये थे। मोहनचन्द कर्मचन्द गांधी (महात्मा; जन्म १८६९ ई०) ने इसी समय हिन्दू और मुसलमान आन्दोलन-कारियोंको एक साथ जुटाकर एक बड़े भारी आन्दोलनकी सृष्टि कर दी। इन्होंने प्रथम प्रथम 'सत्याग्रह' (जान बूझकर विशेष विशेष कानूनों का उल्लंघन करना) आरम्भ किया। इसके कारण बहुतसे लोग जेल भेजे गये। फिर भी इस आन्दोलनका अन्त नहीं हुआ। बढ़ात्रेमें आकर लोगोंने अमृतसर, लाहौर. दिल्ली, अहमदाबाद आदि स्थानोंमें दंगा किया परन्तु निरस्त्र लोगोंके ये दंगे आसानीसे दबा दिये गये। इनमें अमृतसरके दंगेको दबानेमें जेनरल डायरने अनावश्यक बड़ी कठोरता की। उसने जलयानवाला बागकी प्रसिद्ध सभामें आये हुये बहुतसे लोगोंपर गोली चलाई और साथही साथ शान्ति स्थिर रखनेके लिये सरकारने मार्शल ला जारी किया। इन दिनों अमृतसर तथा लाहौरके लोगोंपर बड़े बड़े अत्याचार हुये। पुनः सरकारने इन अफसरोंके दोष मोचनके लिये माफीका एक एक्ट (Indemnity Act) पास करवा लिया। इससे देश भरमें असन्तोष भी अशान्तिकी आग भड़क उठी।

अफ़गानिस्तानसे तीसरी लड़ाई (१९१९ ई०)—१९१९ ई०के आरम्भमें षड़यन्त्र द्वारा अफ़गानोंने अमीर हबीबुल्लाको मार डाला। इसके बाद उस देशमें बलवा हुआ और अमानउल्लाने गद्दी प्राप्त की। अफ़गानिस्तानकी भीतरी गड़बड़ीसे बचाने तथा रौलट ऐक्टके द्वारा हिन्दुस्तानी मुसलमानों

०के हो उनपर आनेवाली धार्मिक आपत्तियोंसे बचानेके लिये
ने सीमान्त प्रदेशपर चढ़ाई की। पर अंग्रेज़ी सेनाने उनको
घन जगहोंमें बेतरह हराया। उन्होंने खैबर दर्रेसे काबुलियोंको
सर- दिया और दक्का शहरपर अधिकार जमा लिया। इसी समय
म का जोंके हवाई जहाज़ोंने काबुल और जेलालाबाद शहरों पर बहुत
लोग बम फेंके। इसके उपरान्त अमीर अमान-उल्लाने सन्धि
कम ली।

हिन्द इसके निर्बल होजानेके कारण आजकल अफ़गानिस्तानकी
एवं भी मर्यादा नहीं है। इसीलिये अंग्रेज़ी सरकारने अमीरको
त्या के सहायता पहुंचाना तथा लडाईका सामान देना बन्द कर
ना। साथही साथ अमीरको बाहरी शक्तियोंसे सीधा सम्बन्ध
र की पूर्णतया स्वतन्त्रता दी गई।

अम सन्धिका आनन्दोत्सव—१९१९ ई० के दिसम्बरके बीचों
किय यूरोपीय महायुद्धमें जीत होनेका आनन्दोत्सव बड़ा धूम
इन से मनाया गया। परन्तु गरम दलवालोंने इस उत्सवमें कुछ
भाग नहीं लिया।

मा १९१९ का सुधार कानून—इसका वर्णन पहिले ही
या है कि लड़ाईके समय हिन्दुस्तानियोंकी राजभक्ति और
दि आत्मत्याग देख हमारे सम्राट तथा अंग्रेज़ जातिको
प्रसन्नता हुई थी। इसलिये पुरस्कारके स्वरूपमें हिन्दु-
नियोंको स्वराज्य देनेका प्रबन्ध होने लगा। हिन्दुस्तानियोंमें
स्वतन्त्रता होनेकी क्षमता न होनेके कारण पार्लमेन्टने
स्तानको धीरे धीरे स्वराज्य देनेकी प्रतिज्ञा की। १९१७ ई०
० वीं अगस्तको पार्लमेन्टकी ओरसे सेक्रेटरी आफ स्टेट
इण्डिया मि० मान्टेगु (Montague) ने खुली पार्लमेन्टमें
की कि "सम्राटकी ओरसे पार्लमेन्ट हिन्दुस्तानमें धीरे
ऐसी संस्थाएं स्थापित करेगी जिनका कुल प्रबन्ध
देशके लोग कर सकें और इसी प्रकार धीरे धीरे कुछ

दिनोंमें उस देशमें स्वराज्य स्थापित हो जायगा" ।

उसी साल अक्तूबर महीनेमें मिस्टर मान्टेगु स्वयं हिन्दुस्तानमें आये और बड़े लाट साहबको साथ लेकर देश भरमें भ्रमण किया तथा इस विषयमें बड़े बड़े लोगोंकी राय ली। विलायत लौट जाने पर मान्टेगुने पार्लमेन्टके सामने एक रिपोर्ट उपस्थित की। इस रिपोर्टका नाम Montague-Chelmsford Report या 'Montford' Report पड़ा। उस रिपोर्टके अनुसार पार्लमेन्टने सन् १६१६ ई० का सुधार कानून (The Government of India Act of 1919) जारी किया। इस कानूनके जारी होनेसे भारत सरकारमें बहुत कुछ उलट फेर हुआ।

शासन प्रबन्ध—इसके अनुसार "बंगाल, बम्बई और मद्रासके ऐसा संयुक्त प्रदेश, पंजाब, बिहार व उड़ीसा मध्यप्रदेश और आसाम पर शासन करनेके लिये एक एक गवर्नर नियुक्त होंगे। प्रत्येक गवर्नर को सहायता पहुंचानेके लिये एक छोटीसी प्रबन्ध-कारिणी सभा होगी, जिसके आधे मेम्बर हिन्दुस्तानी होंगे। नये नये कानून जारी करने कर लगाने, तथा सालाना बजट पास करनेके लिय, हर एक प्रदेशमें व्यवस्थापक सभा होगी। इस सभाके अधिकतर मेम्बर गैर- सरकारी तथा चुने हुए (Elected) होंगे। देशकी शिक्षा व्यापार व कारखाने, स्वास्थ्य, म्युनिसिपलटी, जिला बोर्ड, और सरकारी इमारतें, सड़क, नहर आदि (Public Works) के देख भाल करनेके लिये व्यवस्थापक सभाके मेम्बरोंमेंसे दो तीन देशी अफसर नियुक्त किये जायेंगे। इन अफसरोंके नाम (Ministers) होंगे। उनको गवर्नरकी राय लेकर काम करना पड़ेगा। इसी समयसे प्रान्तीय सरकारोंको आमदनी व खर्च करनेका पूरा पूरा अधिकार होगा" । इसी प्रकारसे प्रान्तीय सरकारोंमें द्वैत शासनकी रीति प्रचलित हो गई। शासनका काम कुछ तो सरकार करने लगी और कुछ मिनिस्टर।

इस कानूनके द्वारा भारत सरकारमें भी बहुत कुछ उलट
र हो गया। "वाइसरायकी प्रबन्ध-कारिणी सभामें कमसे कम
न हिन्दुस्तानी मेम्बर होंगे और बाकी तीन अंग्रेज। सारे हिन्दु-
नके लिए कानून बनाने, सालाना बजट पास करने, टैक्स लगाने,
बाहरसे आये हुए मालों पर कर लगानेके लिये एक बड़ी
स्थापक सभा (Legislative Assembly) स्थापित
। इस सभाके अधिकतर मेम्बर चुने हुए होंगे। इस सभाके
किये हुए कानूनोंको दोहरानेके लिये The Council of
ate या रियासती सभा होगी इसमें भी कुछ मेम्बर गैर-
कारी होंगे, वाइसरायसे इन सभाओंका कोई सम्बन्ध नहीं
। आवश्यकता पड़ने पर वाइसराय वा प्रान्तीय गवर्नरको
स्थापक सभा द्वारा अस्वीकृत बिलके पास करनेका अधिकार
। देशी रियासतोंकी भलाईके लिये The Council of
nces नामकी एक सभा स्थापित होगी। कुल देशी रजवाड़े
सभाके मेंम्बर होंगे।"

विलायतकी इण्डिया कौन्सिल (India Council) में
स्तानी मेम्बरोंकी संख्या कुछ घटा दी जायगी। अबसे सेक्रेटरी
स्टेट और इण्डिया आफिसका कुछ खर्च विलायती सरकार
" इसका फल यह हुआ कि पार्लमेन्ट इण्डिया आफिसके
काज पर अधिक दृष्टि देने लगी "सारी भारत सरकारके
काज पर दृष्टि रखनेके लिये पार्लमेन्टकी ओरसे एक
कमीटी होगी। तथा सेक्रेटरी आफ् स्टेट और भारत
रकी सहायता करनेके लिए एक हाई कमिश्नर (High
missioner) नियुक्त किये जायंगे।"

की घोषणापत्र (२३ दिसम्बर १९१९ई०)—सन् १९२१
पहिली जनवरीसे इस नये कानूनके अनुसार कामकाज आरम्भ
। उसी समय सम्राटने एक नवीन घोषणा पत्र जारी किया।
हिन्दुस्तानियों की भलाई के लिये विलायती सरकारने जो

कुछ किया है उसका वर्णन करते हुये सम्राटने इस देशके शासन प्रबन्धमें सहायता पहुंचानेके लिये हिन्दुस्तानियोंसे अनुरोध किया और उन्होंने सरकारी और गैर-सरकारी लोगोंको एक साथ मिल कर काम करनेको कहा, जिससे लोग पूर्व शासनकी कठोरताओंको भूल जायं, इसलिये उन्होंने सब विद्रोहियोंको क्षमा कर दिया।

राजनैतिक स्थिति—इस प्रकार सम्राटके अनुरोध करने पर भी राजनैतिक स्थितिमें कुछ भी परिवर्तन नहीं हुआ। गरम दल वालोंने सुधार कानूनके अनुसार काम करना अस्वीकार किया। मार्शल ला तथा खिलाफतके प्रति जो वर्ताव किया गया था उसके विरुद्ध महात्मा गान्धीने असहयोगका महान आन्दोलन आरम्भ कर दिया। इस आन्दोलनके करते हुए उन्होंने जनता को विलायती वस्त्रका बहिष्कार कर खद्दरके बने हुए कपड़े पहिनने, अछूतोद्धार करने, तथा "शयतान" सरकारके स्थापित स्कूल-कालिज, अदालत, उपाधि तथा नौकरी आदियों सभी प्रकारके सम्बन्धसे दूर रहनेको कहा। यदि सच पूछो तो ऐसी अद्भुत लड़ाई पृथिवीके इतिहासमें और कभी नहीं हुई। इस आन्दोलनका मूल मन्त्र काय, मन और वचनसे अहिंसा व्रतके पालन करनेका था। तथापि नरम दल वाले और मरा[illegible] उनके कार्यक्रमके विरोधी थे। १९२० ई० में पं० बाल गंगाधर तिलककी मृत्यु होने पर गरम दलके एक मात्र नेता गान्धी बने। उसी वर्ष नागपुर कांग्रेसने भी महात्माजीका कार्य-क्रम स्वीकार कर लिया।

उधर सुधरे हुए कौंसिलका चुनाव समाप्त हुआ। असहयोगियोंने इसमें भाग नहीं लिया। नरम दलके कुल बड़े बड़े नेता मिनिष्टर आदि बन गये तब उस दलका प्रभाव बिलकुल [illegible] गया। इसी समय लार्ड (सत्येन्द्र प्रसन्न) सिंह बिहार-उड़ीसा प्रदेशके गवर्नर नियुक्त किये गये। १९२१ ई० की फरवरीमें [illegible]

कनाटने सुधरी हुई व्यवस्थापक सभाका उद्घाटन किया। घटनाके बादही लार्ड चेम्सफोर्ड घर सिधारे। भारतके से उन्होंने सिपाही, रुपये तथा लड़ाईके सामान आदि आ कर जर्मन लड़ाई जीतने में बड़ी सहायता की। इन्हींके ासे आन्तर्जातिक सम्मेलनोंमें भारतवर्षके प्रतिनिधियोंको न मिले, साम्राज्यके भिन्न भिन्न अंशोंमें (अफ्रिकाके सिवाय) न अधिकार मिले, तथा सेना विभागमें भी भारतीयोंको उच्च मिलने लगे।

(१५) लार्ड रेडिंग (Reading) (१९२१—१९२६ ई०)

की अवस्था—जिस समय लार्ड रेडिंग इस देशमें आये तब का रंग ढंग कुछ औरही था। बड़े ज़ोरों से असहयोगका ोलन चल रहा था। खिलाफतको चिरस्थायी करनेके लिये लमानोंने हिन्दू आन्दोलनकारियोंका साथ दिया था। सारे तवर्षमें बड़ा हलचल मचा हुआ था। परन्तु अहिंसात्मक हयोगका प्रतिपालन करना सत्यके पालन जैसा बड़ाही न है। जनता, पुनः अशिक्षित तथा अशिष्ट जनताके मनमें के भावका उत्पन्न होनाही स्वाभाविक है। और हुआ भी ही। गुरुद्वाराके सुधार करते समय सिख अकालियोंने तारन आदि स्थानोंमें बड़ी हत्याएं कीं तथा हिन्दू महन्तों ूब लूटा। मलाबारके अरब जातिके मोपला मुसलमानोंने ज्य स्थापित कर हिन्दुओं पर बड़े बड़े अत्याचार किये। ली भाई" सीधे सादे नादान मुसलमानोंमें कट्टर धार्मिक भाव न करने तथा उनको सरकारके विरुद्ध उभाड़ने लगे और रकी सहायतासे भारतवर्षमें "मुसलमानी साम्राज्य" स्थापित नेका सपना देखने लगे। एकता स्थिर रखनेके लिये गान्धी ी मुसलमानोंको जो अधिकतर अधिकारादि दिये थे, उनके द हिन्दू कुड़कुड़ाने लगे।

ऐसी अवस्थामें हमारे वर्त्तमान प्रिन्स आफ़ वेल्सका आगमन

हुआ (१९२१ ई०)। असहयोगी लोगोंने उनका स्वागत तक नहीं किया तथा उसी दिन बम्बईमें एक भारी उपद्रव हो गया। देशभरमें अशान्तिकी आग बड़े ज़ोरोंसे भभकती हुई देखकर लाट साहब गान्धीजोसे समझौता करनेके लिये प्रस्तुत हुये। इसके पूर्वही "अली भाई" सिपाहियोंको उभाड़नेके अपराधमें दो वर्षके लिये जेलमें भेजे गये थे। इन्हीं दिनोंमें गुजरातके बरदौली तहसीलमें सविनय अवज्ञा (Civil disobedience) की तैयारी हो रही थी कि गोरखपुरके निकट चौरी चौरामें जनताने विद्रोह की पताका फहरादी (१९२२ ई०) उसी समय सत्यके अवतार गान्धीजीने अपनी अक्षमता विचार करते हुए असहयोग आन्दोलनके राजनैतिक अंशोंको बन्द कर दिया। इसके कारण वह पूर्व जैसे लोक-प्रिय नहीं रह गये। अवसर पाकर सरकारने राजद्रोहके अपराधमें उनको छः वर्षकी सज़ा दे दी। इसी प्रकार बिना शस्त्रके केवल आत्मिक बलपर निर्भर होकर स्वराज जीतनेकी आशा निर्मूल हो गई।

इसी समयसे असहयोग आन्दोलनमें शिथिलता आती हुई देख कर बंगालके चित्तरञ्जन दासने कौन्सिलमें जाकर लगातार विरोध करते हुए द्वैत-शासनका अन्त करनेके उद्देश्यसे स्वराज दल स्थापित किया। स्वराज दल वाले बंगाल तथा मध्य प्रदेशमें बड़ी सफलताके साथ काम करते रहे, यहां तक कि कुछ दिनोंके लिये उन्होंने प्रान्तीय सरकारोंको अकर्मण्य कर दिया। परन्तु १९२५ ई० में दास साहबकी मृत्यु होने पर स्वराज दल वालोंके कार्यक्रममें भी शिथिलता आगई है। उधर असहयोग आन्दोलनमें कुछ शिथिलता आते ही राजविद्रोहियोंने ज़ोर किया। बंगालमें कई एक स्थानोंमें डाका मारा, गुप्त हत्याएं कीं, डाकखाने लूट लिये तथा बम फेंके। इनको दबानेके लिये सरकारने बहुतसे लोगोंको देश-निकाला कर दिया।

धार्मिक झगड़े—असहयोग के दिनोंमें गांधीजीने सब

नहीं अपने अपने धार्मिक विश्वासों को बड़ी दृढ़ताके साथ पालन
या ने को कहा था। अतः हिन्दू मुसलमान दोनों धर्मके मानने-
देखों में कुछ धर्मान्धता आ गई थी। इसी लिये असयोग आन्दो-
स्तुतमें शिथिलता आते ही हिन्दू मुसलमानोंमें जो दिखौआ
ड़नेकेता स्थापित हुई थी उसका भो अन्त हो गया। चारों ओर
दुनोंमेंदू मुसलमान धर्मके नाम पर आपसमें लड़ मरने लगे।
obeहाटके उपद्रव (१९२४ ई०) के उपरान्त गान्धीजी ने २१ दिन
चौरी उपवास रखा। इसपर देश के बड़े बड़े लोगों ने दिल्ली में
०) प सभा की, तथापि कुछ भी फल नहीं हुआ। हिन्दू शुद्धि और
पठन करने लगे, और मुसलमानों ने तंज़ीम और तबलीग़
ोंकाने में अपनी सारी शक्ति भिड़ा दी। अभी बंगाल में हालमें बड़ी
रही लड़ाइयाँ हो गई हैं (१९२६ ई०)। अवस्था देखकर ऐसा
छांत होता है कि जब तक नीच साम्प्रदायिक भावों का विसर्जन
मव हिन्दू मुसलमान देश और दस की भलाई के लिये एक साथ
काम करने लगें तब तक शान्ति स्थापित होनेकी कुछ भी आशा
हुां। हिन्दू मुसलमानों में एकता धर्मनीति में नहीं, राष्ट्र नीति
ताद्वारा ही स्थापित हो सकती है।

ाज अन्यान्य घटनाएं—लड़ाईके बाद आर्थिक दशापर विचार
शनेके लिये इञ्चकेप कमेटी स्थापित की गई थी। इसने खर्च
ोंवें कमीके उपाय बताये। ली कमिशनके आधार पर सिविल
न्विंस वालोंकी तनख्वाह बढ़ा दी गई। सेना विभागमें भार-
ीयों को उच्च पद देनेके कारण सरकारने देहरादूनमें एक फौजी
ालिज स्थापित किया तथा साण्डहर्स्टके फौज़ी विद्यालयमें
ी भारतीय विद्यार्थियोंके लेनेका प्रबन्ध हुआ। १९२३ ई० में
भा और पटियाला राज्योंमें परस्पर झगड़ा हुआ, जिसके लिये
भा राजका पद त्याग करना पड़ा। १९२५ ई० में होलकरने भी
त्याग कर दिया।
१९२६ ई० में लार्ड रेडिंग घर सिधारे। तथा लार्ड आरविन

(Irwin) उनके पदाभिषिक्त हुए।

अब तक राजनीतिक आकाश मण्डलमें जो काले बादल घिर आये थे वे सब हट गये। देशके चारोंओर सुख शान्तिकी शीतल वायु बहने लगी है अब देखना है कि १९२९ ई० में हमें कौनसे नये अधिकार प्राप्त होते हैं जिसकी आशालता अभीसे लह-लहा रही है।

सारांश

१९०३ ई०	सम्राट सप्तम एडवर्ड, तिब्बतपर चढ़ाई
१९०५ ,,	बंग-भंग
१९०९,,	सुधार कानून
१९१० ,,	सम्राट पञ्चम जार्ज
१९११ ,,	सम्राटका आगमन, दिल्ली दरबार
१९१४ ,,	यूरोपीय महायुद्ध
१९१८ ,,	लड़ाईकी समाप्ति
१९१९ ,,	अफगानोंसे तीसरी लड़ाई, सुधार कानून, असहयोग आन्दोलन,
१९२१ ,,	प्रिंस आफ वेल्सका आगमन
१९२२ ,,	आन्दोलनका अन्त

(४) अंग्रेज़ी शासनकालमें देशकी दशा।

यह पहिले ही कहा जा चुका है कि हमारे पुरखोंने मुग़ल राज्यकी नींव सुदृढ़ करनेमें जो सहायता दी थी उसका कारण यही था कि उनको अच्छा शासन मिले। एक बातमें ..ल साम्राज्य उनकी राजनैतिक आवश्यकताओंको पूरी करने के लिये स्थापित हुआ था। मुग़लोंने एकही तरहकी कारी-.., साहित्य, भाषा आदि चलाकर उत्तरीय और दक्षिणी भारत मिला दिया था, और हमारे देशके निरालेपनका अन्त करके ..जगत्‌के साथ उसका मेल जोल करवा दिया। तुमसे यह भी ..जा चुका है कि अंग्रेज़ोंने मुग़लोंके अधूरे कामको पूरा ..ा। सच बात तो यह है कि इस देशमें अन्धेरका नाश करके ..शान्ति फैलाने ही के अभिप्रायसे दैवकी ओरसे वृटिश राज ..पित हुआ। अंग्रेज़ी शासनके कारण हम लोग आज दिन ..ानही नहीं कर सकते कि विदेशियोंकी चढ़ाई होनेसे ..र कैसी आपत्तियां आ पड़तीं। आज कल लोग तैमूर या ..रशाहकी चढ़ाइयां सपनेकी तरह भूलसे गये हैं। छोटी ..ी देशी रियासतोंका अन्त हो जानेसे देशमें अशान्ति नहीं ..ी हुई है। पिंडारी या मराठे घुड़सवार गरीब रियायोंको सता सकते। गरीबकी जान व मालपर कोई हमला नहीं कर ..ता। सरकार रियायाके धर्म और रीति-नीतिमें हस्तक्षेप करती। अंग्रेज़ी राज होनेके कारण आज जंगली जातियोंने ..ड़ी उन्नति कर ली है।

अंग्रेज़ी राज्यकी विशेषताएं—अंग्रेज़ी राज मुग़ल साम्रा-..ी तरह इस देशकी राजनैतिक आवश्यकताओंको ही पूरा करनेके नहीं स्थापित हुआ है। इसके अतिरिक्त ब्रिटिश साम्राज्यके ..से हम लोगोंने और भी बहुत कुछ लाभ उठाया है। रेलकी ..कें, तारघर, डाकखाने, समाचार पत्र और सबके ऊपर

अंग्रेज़ी शिक्षाके फैलनेसे देश भरमें एक जातीय एकता स्थापित हो गई है। आज भारतवर्षके स्वार्थमय जीवनका अन्त होकर सार्वजनिक भावका उदय हो गया है, जिससे आज दिन यह भी संसारकी और और जातियोंके साथ बराबरी करनेमें प्रस्तुत हुआ है। अंग्रेज़ी शिक्षाके द्वारा हमारे देशमें देशभक्तिका उमंग आ गया है। संकीर्ण प्रादेशिकताके स्थानमें एक-देशिक भारतीय भाव आ गया है। यह भाव हमारे देशके इतिहासमें बिलकुल नया है। अंग्रेज़ी राज्यमें रियायाका अधिकार (Civil rights) के होनेके कारण छोटेसे छोटे आदमियोंके चित्तमें स्वाधीन भावों की उत्पति हुई है।

प्राचीन समाज—आरम्भमें बौद्धधर्मके साथ और पीछे मुसलमान धर्मके फैलावके साथ बराबरी करनेके लिये हिन्दुओंकी अपनी रीति-नीति बहुत कठिन कर दी थी। ऐसा भी समय था जब कि घरके बाहर जानेसे लोगोंको प्रायश्चित्त करना पड़ता था, समुद्र-यात्रा करनेसे, चोटी कटवा डालनेसे या अंग्रेज़ी दवा पीनेहीसे लोग जातिसे च्युत हो जाते थे।

परन्तु १८३५ ई० की ७ वीं मार्चको, जिस दिन लार्ड वेंटिंकने अंग्रेज़ी शिक्षा देनेका प्रबन्ध किया, वह दिन भारतवर्षके इतिहासमें सुनहले अक्षरोंमें लिख रखने योग्य है। यह बात माननी पड़ेगी कि आरम्भमें अंग्रेज़ी शिक्षाका फल हमारे देशके नव हालोंके लिये अच्छा न हुआ। अंग्रेज़ी पढ़े लिखे लोग विचार स्वतन्त्रतापर अधिक ज़ोर देने लगे। हिन्दू धर्म और उस रीति-नीतिकी ओरसे मन खींचने लगे। शास्त्रमें लिखी बातोंका बिना जाने ही हंसी उड़ाने लगे। प्राचीन आचार व्य हारोंको वे व्यर्थ समझ कर उसके तोड़नेमेंही अपना बड़ समझने लगे। धीरे धीरे विचारकी स्वतन्त्रताका अर्थ मनमा काम करने का हो गया, और सुधारका अर्थ नाश करनेका गया। तैंतीस कोटि देव देवियोंके साथ साथ एकही

पित रको भी माननेमें वे संदेह करने लगे। कमसे कम बंगालके
कर नये अंग्रेज़ी शिक्षितोंकी यही दशा थी। 'इनमेंसे बहुतोंने
यह राब पीना, निषिद्ध वस्तुओंका खाना तथा ईसाई व मुसलमा-
तुत के साथ खाने पीनेको सुधार समझने लगे। कुछ लोग दल
मंग कर निषिद्ध मांस खा कभी कभी उनकी हड्डियां पड़ोसियोंके
ार फेंक देते थे।' और हिन्दू धर्मके आचार व्यवहारोंका खुल्लम
फुल्ला विरोध करनेमेंही अपनी वीरता समझने लगे।

) उन्हीं दिनों दो बड़ी बड़ी बातों पर देशके विचारवान लोग
वो दलोंमें बंट गये थे। 'पहिली बात तो यह थी, कि शिक्षा
ग्रेज़ीमें दी जाय या संस्कृत अथवा अरबी-फारसीमें, दूसरी
ात यह कि सती होनेकी प्रथा बंद करदी जाय या प्रचलित
क्खी जाय। जब दो विरोधी दल आपसमें लड़ने झगड़ने लगे
मय हिन्दूधर्मकी पोल खुलने लगी। लोग अंग्रेज़ी भाषाके
तने होकर देशी भाषाओंकी चर्चा करना भूल ही गये। वे
कोलीज़ और एगेमेमनन आदिके परदादाओंका नाम ले सकते
, पर युधिष्ठिर कौन थे यह पूछने पर मुंह ताकते ही रह जाते
। अवसर पाकर ईसाई पादरियों ने अच्छे अच्छे लोगोंको
पने धर्ममें फंसा लिये।

धार्मिक आन्दोलन—उन दिनों जिन जिन लोगोंने हिन्दू-
र्मका सुधार करके और भी दूसरे लोगोंको ईसाई होनेसे
चाया उनमेंसे आर्य समाजके स्वामी दयानंद (१८२७—१८८३
०), ब्राह्म समाजके राजा राममोहन राय, (१७७४—१८३३ ई०)
था केशव चन्द्र सेन (१८३८—१८८४ ई०) और प्रार्थना
माजके महादेव गोविन्द रानाडे (१८४२—१९०१ ई०) थे।
ाधारणतया ये सब सम्प्रदाय वाले एकेश्वरवादी हैं तथा
ूर्तिपूजा निरर्थक समझते हैं। वे विधवा विवाह, स्त्री स्वाधीनता
था सामुदायिक प्रार्थना आदि में विश्वास करते हैं। आर्य
माजी वैदिक सिद्धांतोंमें हवनकी उपयोगिता मानते हैं साथही

साथ इन्होंने शिक्षाके प्रचार तथा अछूतोद्धार और शुद्धि आदिके काम कर देशका बड़ा उपकार किया है। हिन्दूधर्मके रामकृष्ण परमहंस (१८३३—१८८६ ई०) और उनके शिष्य स्वामी विवेकानन्द (१८६२—१९०२ ई०) और थियोसाफिकल सम्प्रदायकी ब्लेवेस्की (Blavatsky) (१८३१—१८९१ ई०) और कर्नल आलकाट (Col. Olcott) (मृत्यु १९०७ ई०) के नाम प्रसिद्ध हैं।

ये सब महात्मागण बहुत प्रयत्न करके तरह तरहके सुधार कर लोगोंके धार्मिक जीवनमें एक नया उत्साह पैदा कर गये हैं। सरकारने भी कानून आदि जारी कर नाना प्रकारके कुसंस्कार यथा जगन्नाथजीके रथके पहियेके नीचे दबमरनेकी प्रथा तथा गंगा-सागर सङ्गममें प्राण देनेकी प्रथा आदि तथा दासत्व सती आदि प्रथाएं बन्द करवा दीं।

इसलाममें भी इस युगमें वहावी तथा अहमदिया नामके दो नवीन सम्प्रदायोंकी उत्पत्ति हुई है। साधारणतया वे पैगम्बरका बड़प्पन नहीं मानते। वहावी अपने धर्मके बड़े कट्टर होते हैं। राजद्रोह करनेके अपराधमें इन लोगोंको कईबार कठिन दण्ड भी मिले हैं। अहमदिया लोग कुछ उदार मतके होते हैं।

अर्वाचीन समाज—परन्तु प्राचीन हिन्दू समाजकी रीति नीतिके विरुद्ध ये विद्रोह बिलकुल व्यर्थ नहीं हुए। आज जो हिन्दू धर्ममें उदारता समाई है वह इसी बलवेका फल है। आज परदेकी प्रथा पहिले जैसी नहीं मानी जाती। आज दिन अच्छे अच्छे घरकी स्त्रियां भी घूंघट काढ़कर जन सभामें आया जाया करती हैं तथा कोई कोई सभाके कामोंमें भी भाग लेती हैं। रेल आदि के होनेसे तथा अंग्रेजी शिक्षाके फैलावके साथ साथ जातिभेद की जटिलता भी दूर होती जा रही है। यहां तक कि हालमें गायकवाड़ने अपनी रियासतमें इस प्रथाका अन्त भी कर दिया है। जातिको अच्छी बनानेके लिये अच्छी माताकी आवश्यकता है

दके विचारसे स्त्री-शिक्षाके प्रचारके लिये ब्रिटिशराज बहुत कुछ
रणती है। पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर (१८२२-१८९१ ई०)
के उद्योगसे सरकारने बिधवा-विबाहका जारी कर दिया हैं
की५६ ई०)। आन्तर्जातिक विबाह क़ानून आदि जारी करनेके
तेल विचार हो रहे हैं। तथापि सरकारके विदेशीय होनेके कारण
बतक जनताकी सम्मति न हो तवतक वह ऐसे मामलोंमें हस्त-
नहीं कर सकती।

ार शिक्षाके प्रचारके साथ साथ लोगोंके मनमें साम्य भावकी
ई पत्ति होती है और उच्च नीचका विचार कम होता जा रहा है।
ाहले जो लोग नीच जातिके माने जाते थे वे आजकल नाना
प्रकारसे अपनी उन्नति करते हुये तरह तरहके अधिकार प्राप्त
ती रहे हैं। इसलामी समाजमें भी परदेके विरुद्ध आन्दोलन
ा स्त्री शिक्षाका प्रचार हो रहा है।

दी अंग्रेज़ी राजमें जैसे जैसे और बातोंमें उन्नति होती गयी
ही हम लोगोंकी आवश्यकतायें भी बढ़ती गईं। आमदनी
नेके साथ साथ हम लोगोंका खर्च भी बढ़ गया। आजकल
ी लोगोंके रहन-सहनके नियम पहलेसे बहुत बदल गये हैं।
न बढ़ जानेसे फजूलखर्ची अधिक बढ़ गयी है। लड़ाईके बाद
हम लोगोंका खर्च तिगुना होगया है। हम लोगोंके पुरखे साल
में जितना खर्च करते थे, उतनाही खर्च हम लोग महीने भरमें
ते हैं।

शिक्षा—मुसलमानोंके समयमें सरकारकी ओरसे लोगोंको
क्षा देनेका कोई ठीक ठीक प्रबन्ध नहीं था, केवल ब्राह्मण और
छे अच्छे घरानेकेही मुसलमान लिखे पढ़े होते थे। आजकल
कारकी ओरसे लोगोंको शिक्षा मिलती है और तरह तरहकी
क्षा देनेके लिये नाना प्रकारकी पाठशालायें खोली गई हैं।
म्भिक (Primary) शिक्षा देनेके लिये प्राइमरी स्कूल हैं, हर
सीलमें हिन्दी या उर्दू मिडिल (Middle) स्कूल हैं। जिलोंमें

अंग्रेज़ी सिखाने या उच्च शिक्षा देनेके लिये हाई स्कूल (High School) या कालेज (College) खुले हुए हैं। इनके अतिरिक्त कलकत्ता, ढाका, रंगून पटना, बनारस, इलाहाबाद, अलीगढ़, लखनऊ, आगरा, लाहौर, हैदराबाद, मैसूर, नागपुर, बम्बई और मद्रासमें विश्वविद्यालय भी हैं। इनमें काशीका हिन्दू विश्वविद्यालय तथा अलीगढ़का मुसलिम विद्यालय जातीय संस्थाओंमेंसे हैं। साथही साथ प्राचीन ढंगपर शिक्षा देनेके लिये बोलपुरकी विश्वभारती, कांगड़ी का गुरुकुल और ऋषिकुल भी हैं।

जगतको भारतीय शिष्टताका परिचय देनेके लिये डा० रवीन्द्रनाथ टगोर तथा डा० जगदीशचन्द्र बोसका पृथ्वी पर्यटन विशेष उल्लेखनीय है। विश्वभारतीके स्थापित होनेके अनन्तर पाश्चात्य देशके बड़े बड़े अध्यापक नियमित रूपसे आन जाने लगे। इसी प्रकारसे पूर्वीय और पश्चिमीय जगतके पारस्परिक भाव विचारोंके आदान प्रदानसे एक दूसरेसे परिचय होनेका शुभ अवसर प्राप्त हुआ है। शिल्पकला, कानून, व्यापार, इंजिनियरिंग, चिकित्सा शास्त्र आदि सिखानेके लिये भी अलग अलग स्कूल और कालेज हैं। लिखे पढ़े लोगोंको उत्साहित करनेके लिये पुस्तकालय, अजायबघर, प्रयोगशाला तथा विद्वत्सभाएं भी हैं।

साहित्य—अंग्रेज़ी शिक्षाके फैलावके साथ साथ वर्तमान समयमें देशी भाषाओंकी बड़ी उन्नति हुई है। १७७४ ई० में जिस दिन कैरी (Rev Kerry) आदि पादरियोंने श्रीरामपुरमें पहिला पहल छापाखाना खोला था वह दिन स्मरणीय है। उस दिनसे देशी भाषाओंमें लिखी हुई अगणित पुस्तकें प्रतिदिन निकल रही हैं। बंगला भाषामें 'वन्दे मातरम्' के ऋषि बंकिमचन्द्र चटर्जी (१८३८–१८९४ ई०) और नोवल प्राईजके पाने वाले (१९१३) विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टगोर (जन्म १८६२ ई०), हिन्दीमें प्रेमसाग

लिखनेवाले लल्लूलालजी (१८०० ई०) और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (जन्म १८५० ई०) के नाम उल्लेख योग्य हैं। मराठी भाषामें लावनों के लिखने वाले रामजोशी (मत्यु १८१२ ई०), और अनन्त फंदे (मत्यु १८१९ ई०) और उर्दू में व्यंग कवि सौदा (मत्यु १७८० ई०) मीर तक़ी (१८१० ई०), और वली महम्मद (१८२८ ई०) बड़े प्रसिद्ध हो गये हैं।

शिल्पकला—आधुनिक कालमें अनेक प्रकारके कल मेशीनों आदि होनेके कारण देशकी प्राचीन सूक्ष्म कलाओंका प्रायः लोपसा हो गया है। प्राचीन कालके मुसलमान नवाब बादशाह या हिंदू राजाओंके जैसा अंग्रेज़ी सरकार शिल्प कलादिमें लोगोंको उत्साह नहीं देती। इसकी उन्नतिका कोई उपाय न होनेपर भी हर्षकी बात है, कि अभी थोड़े दिन हुए प्रचीन हिन्दू चित्र-विद्याके आधारपर कलकत्तेमें एक नये ढंगकी चित्र-विद्या चालू हुई है। इसका नाम Calcutta Sohool of Arts पड़ा है। लाहोर तथा जयपुर आदि रियासतोंमें Indo Saracenic तथा राजपूत चित्रविद्याकी अभीतक थोड़ी बहुत चर्चा होती है।

व्यापार — ब्रिटिश राजके स्थापित होनेके पहिले ही इस देशका कुल व्यापार परदेशियोंके हाथमें चला गया था। तबसे देशी लोग छोटे मोटे व्यापारमें लगे रहते हैं। बड़े बड़े सौदागर परदेशी हैं। तथापि देशी लोगोंमें बम्बईके जमशेद जी ताताके वंशज और करीम भाई बड़े नामी व्यापारी हैं। ब्रिटिश राज्यके स्थापित होनेके बाद इस देशमें पहिले पहल रेलकी लाईनें, स्टीमरकी लाईनें, तारबरकी, डाकघर तथा नाना प्रकारके कल-कारखाने आदि खोले गये। लाखों मनुष्य इन सब विभागोंमें काम करके अपना पेट पालते हैं। साथ साथ कोयले, मिट्टीके तेल, नमक आदिकी खानोंमें भी बहुतेरे आदमी काम करके पेट पालते हैं।

उपसंहार—सन १९१६ ई० हमारे देशके इतिहासमें सुन-

हले अक्षरोंमें लिखे जाने योग्य हैं। क्योंकि इसी वर्ष हिन्दु-स्तानियोंको स्वराज देनेका निश्चित रूपसे प्रबन्ध किया गया। इस परिवर्तन युगके नव प्रभातमें जब तरुण आशाके अरुण रागसे हृदयाकाश रञ्जित हो रहा है, हम अपने देशकी चित्ता-पहारिणी गाथाकी समाप्ति करते हैं। तुमने भी ५००० वर्षका इतिहास पढ़ा। पर इतना पढ़नेके बाद सीखा क्या? यही प्रश्न यदि मुझसे पूछा जाय तो मेरा उत्तर यह होगा कि भारतवर्षका इतिहास पढ़नेसे हम लोग बहुत कुछ सीखते हैं। अति प्राचीन कालके आरम्भमें ब्राह्मणोंने हमारी मातृभूमिकी विचित्र शोभा सम्पदा देख, वेगवती नदियोंकी गतिमें, वायुके प्रचण्ड झोंकेमें तथा गरजते हुये मेघ मण्डलमें अमृतकी अभय वाणी सुनी। उनके दूर दूर तक फैले हुए जंगलोंकी शान्तिमें, आकाशको चूमने वाले पहाड़ोंकी उंचाईमें और महान् रेगिस्तानोंके अनन्त विस्तार में उन्हींकी बड़ाई देख पायी। इसी लिये उन्होंने ईश्वरकी प्रशंसा वेदोंमें और उपनिषदोंमें गायी और देश-माताको "तत्त्वमसि" कह कर प्रणाम किया। पर उन्होंने एक भारी भूल की थी। उन्होंने समस्त जातिका अधिकार अपने अधीन कर लिया था और और जातिके लोगोंको पद दलितकर, उन्हें दासत्वकी श्रृङ्खला में जकड़कर उसी वेदी पर अपनी बड़ाईका सिंहासन स्थापित किया था। शरीरको भूखों मार उन्होंने मस्तिष्ककी उन्नति की थी। यह कहना बिलकुल भूल नहीं होगा कि भारतवर्षके आगेके ६०० वर्षका इतिहास ब्राह्मणोंकी की हुई उसी भूलको सुधारनेका इतिहास है। विजयी मुसलमानोंके हाथ सभीकी दशा एक सी हुई। ब्राह्मण और चाण्डालमें कोई भेद न रह गया। सभीकी पिसाई-कुटाई होने लगी। जाति भेदकी प्रथा की कठोरता जाती रही। पर इससे लाभ यह हुआ कि ब्राह्मणों में मनुष्यता का भाव लौट आया। उन्हें मनुष्यमात्रमें समानता के भाव का ज्ञान उत्पन्न हुआ। फिर आये अंग्रेज़। इन्होंने